प्रकाशक
डॉ० मोतीलाल मेनारिया
संचालक
राजस्थान साहित्य अकादमी
उदयपुर।

प्रथम संस्करण
१९६१

मूल्य
तीन रुपये पच्चीस नये पैसे

मुद्रक
जगन्नाथ यादव
अध्यक्ष
केशव आर्ट प्रिण्टर्स
अजमेर।

समर्पण

त्वदीय वस्तु गोविन्दे तुभ्यमेव समर्प्यते

प्रकाशकीय निवेदन

*

स्व० रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कृतियाँ आज भारतीय वाङ्मय में ही नहीं, अपितु विश्व-साहित्य में समादरणीय हैं। विभिन्न भाषाओं में उनके अनुवाद हुए हैं। इतना ही नहीं, कई विद्या-व्यसनी तो रवीन्द्र, शरत् और बंकिम का साहित्य समझ पाने के लिये ही बंगला सीखते हुए देखे गये हैं।

साहित्यकार चाहे किसी भी भाषा में रचना करे, वह साहित्य मात्र उसी भाषा-भाषी क्षेत्र के लिये न होकर समूची मानवता के लिये होता है। इसीलिये उसकी आवाज को जन-जन तक पहुँचाने का दायित्व निभाया जाता है और इसीलिये भाषा और लिपि के एकीकरण की बात सोची जाती है।

राजस्थान साहित्य अकादमी ने रवीन्द्र शताब्दी-समारोह के अवसर पर यह आवश्यक और उपयुक्त समझा कि विश्व-कवि की कुछ रचनाओं का राजस्थानी-अनुवाद प्रकाशित किया जाय। प्रस्तुत प्रकाशन उसी निश्चय की क्रियान्विति है। अनुवाद या रूपान्तर का काम वस्तुतः बड़ा कठिन है। भाषाओं का जन्म और विकास वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधारों पर होता है। अतः एक भाषा की अभिव्यंजना किसी दूसरी भाषा में पूर्णरूपेण समाहित नहीं हो पाती। फिर भी श्रेष्ठ रचनाओं के अनुवाद किये जाने के महत्त्व से असहमति प्रकट नहीं की जा सकती।

प्रस्तुत प्रकाशन अपने उद्देश्य में कितना सफल रहा है, इस मूल्यांकन की अपेक्षा हमसे नहीं, पाठकों से ही की जानी चाहिये।

डॉ० मोतीलाल मेनारिया
संचालक,
राजस्थान साहित्य अकादमी,
उदयपुर।

रवि
ठाकर
री
वातां

सूची

१	मानी रा ममला में	१
२	डाकबाबू	१३
३	जासूस	१९
४	अणव्हेणी वात	२८
५	छुट्टी	३६
६	रासमणि रो बेटो	४३
७	सजा	७१
८	काबली	८१
९	बदलो	८९
१०	उद्धार	१०२
११	उलट फेर	१०६
१२	त्याग	११०
१३	दाळिया	११७
१४	संस्कार	१२७
१५	हारजीत	१३३
१६	भूंखा पाखांण	१४३
१७	दुराशा	१५६
१८	देन लेन	१७०
१९	राजतिलक	१७७
२०	पुन दृस्टि	१८७
२१	संपूरण	१९४

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर

आधी रा अमला में

'डॉक्टर ! डॉक्टर !'

'जीव ग्याय गिया, यो ई कोई समै है आवा रो आधी रात रा ।'

आँखियां उघाड़ी तो ठाकरसा दीखिया, दक्षिणाचरण बाबू । चमक ने उठियो । जूनी टूटोड़ी कुरसी खांच ने सरकाई, वांने विराजवा ने कियो । घबरायोड़ो मूंडो कानी नाळवा लागियो ।

घड़ी आडी ने नाळूं तो अढाई बजरिया ।

वांरो मूंडो धोळो फट्ट पड़रियो, मांखिया रा डोळा बारे निकळरिया जांणे छटक न नीचे आय पड़ेला । वे घबरायोड़ा कैवण लागा, 'आज पाछो ऊधम व्हेण लागियो । डॉक्टर, थांरी ओखद काई कार नीं करे ।'

म्हूं थोड़ोक रुकतो रुकतो बोलियो, 'आप दारू री छाकां क्यूंक बत्ती लेवा लागगिया हो ।' ठाकरसा बोला ई वेराजी व्हिया । बोलिया, यो थांरा मन रो भरम है भरम दारू नीं, आद मूं अंत तांई थां विगत नी सुणोला जतरे थांरी समझ में ई नी आवाने है के ईं री जड़ काई है ।

माळ्या मायने घासलेट रा तेल री चिमनी री बाती टमटम कर री ही, म्हें वीं बाती ने छनीक ऊंची कीधी । बाती थोड़ीक बत्ती निकळगी, धूंवो निकळवा लागो । चोड़ री पेटी पै अखबार रो पानो बिछाय, ढील पै धोवती रो पल्लो न्हाकर म्हूं बैठगियो ।

दक्षिणाचरण बाबू कैवण ढूकिया, 'म्हारी पैलोडी परणी जेड़ी
गिरस्थी ने सांभणी लुगाई, दीवो ले'र हेरियां लाधे। जां दिनां म्हूं धक जवा
में हो। थां जांणो वा ओस्या ई एड़ी व्हे। जठी ने चोधो जठी ने रंग र रस
रस दीखे। म्हारा तो घटता में पूरा व्हेवा ने कविता र सास्तर पढियोड़ा हा
म्हने रैय रैय काळीदासजी रो स्लोक चींता आवतो, 'गृहणी सचिवः सखीमि
प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।' और तो सो क्यूं ठीक हो पण म्हारी परणी
वी ललित कलाविधि री कांई सीख नीं चालती। म्हूं तो चावतो रान रिझावण, दि
बतलावण। म्हूं कदी रसरंग री वातां करतो, हेताळू रो हिवड़ो चीर ने बताए
लागतो तो वा दांत काढवा लाग जावती। गंगाजी री धारा में ज्यूं इन्दर रो एराव
हैरानगत व्हेगियो हो, ज्यूं वीं री हांसी सूं टकराय रस मूं भीज्योड़ा रंग मूं
भीन्योड़ा म्हारा गीत, दूवा भर गल्लां, चूंथ्यो चूंथ्यो व्हे उड जावता। सांच कैं
याने, उणरी हांसी में गजब री तागत ही।

पछे, आज चार बरस व्हिया, म्हारे एक खोड़ीली मांदगी लागगी। पैलां
तो होठां माथे फ़ेरीलो गूमड़ो व्हियो, पछे सन्निपात आयगियो। मरवा में कांई नीं
घटियो। घरनियां उनार लीधो। डॉक्टरां ई ना कर दीधो। एक कोई ब्रिरमचारी
आयोड़ो हो। म्हारे एक लागती रो वीं ब्रिरमचारी ने पकड़ लायो। वीं एक जड़ी
गायरा घी सागे दीधी। जड़ी ने जस जावो के म्हारा दिन घटता जोने पूरा करणा
हा। म्हूं ऊठ बैठियो।

वीं मांदगी में म्हारी परणी रातदिन ऊभी री ऊभी रैगी। एक पल वा नीं
सूती। खावणो, पीवणो, सोवणो कि नीं। म्हारे सिवाय जगत में कांई व नीं
दीखतो वीने। थथाक चाकरी, पूरो परेम देय, रात दिन री दौड़ां दौड़, मां
धाती रे बाळक ने चिरकाय न बचावै ज्यूं म्हारा पराण ने वीं बचाय लीधा।
यूं जांणजावो के बारणां पै ऊभा जम रा दूतां मूं वा लड़ती री।

छेवट में जमरा दूता ने, हारियोड़ा न्हार री नाई म्हने छोड़ न जावणो
पड़ियो। जावता जावतां वे म्हारी परणी पै हायळ मारता गिया।

वां दिनां वा मामा मूं ही। मरियोड़ी बेटी व्ही। जद मूं ई भांत भांत
रा रोग उण रै लैर पड़गिया। पछे म्हूं उणरी चाकरी करतो। वा म्हनें चाकरी
करतो देख त्रिवळाय जावती कैवा लागती, 'ओ म्हारा कांई करो। मिनख कांई
कैवैला। यूं घड़ी घड़ी रा म्हारा ओवरा में मत आवो।'

रात ने म्हूं म्हारा हाथ में पंखो ले यूं समजतो के ताव में म्हूं म्हारे ई व करतो
कर लियो हूं। वा पंखो हाथ मांयनूं खोस लेवती। म्हूं वीं रा चनै बैठ जावतो,
टेवी पंखा लैं क्यूंक वैन व्हे जाती तो वी रो जीव दौरो व्हेवा लागतो। वा

जीमवा री मनवारा करवा लागती। थोड़ीक ई क्यूं चाकरी कर लेवती तो वा ग्रोळमो देवा लाग जावती। वा कैंवो करती, आदमियां ने या ग्रतरी 'मति' नी करणी चावै।

म्हांको वो बराहनगर वाळो घर तो थांरो देख्योड़ो होसी। घर रे मूंडागे ई ज बाग है, बाग रे मूंडागे गंगाजी बेवरिया है। म्हांका खास ऊठ बैठ रा कमरा नीचे ई दिखणांद कानी थोड़ीसीक जमीं यूं ई ज पड़ी है। वठे म्हारी परणी ग्रापरा हाथ सूं म्हेंदी रा गोड़ रोप न, वारी ग्राड कर न फूलवाद लगाय दीधी। ग्राखा ई बाग में एक वा ई ज जायगा ही जाबक ग्रापणा देसी ढंग री। नुवां ढंग रा बागा री नाई, सुगंध री जायगा भांत भांत रा रंगां रा फूल, फूलां नाम ई पत्ता री मोकळायत, वी में नीं ही। वठे तो ग्रापणी देसी फूलवाद जूही, मोगरा, बेलकी, गुलाब रा ठाठ हा। एक मोटो पसरियोड़ो बौळसरी रो रूंख हो। उण नीचै मकराणा रा भाटा रो चूंतरो हो। वा मादी नीं पड़ी जठा पेलां, दिनऊगां रा ग्रर संभया रा, ऊभी रैय वी नै धोवावती। ऊनाळा रा दिनां मे सांझ रा कामधाम सूं निपट न बैठवा री मरजी री जायगा हो। वठा सूं गंगाजी तो दीखे, पण नावड़ा मे स्हेल करवा वाळा ने वा बैठी थकी नीं दीखती।

माचा पै वा घणां दिना सूं पड़ी ही। एक दिन चैत म्हीनां री चांदणी रात मे वी कहियो, 'घर मायने पडी-पड़ी म्हूं ग्रमूजगी। म्हने वारे बगीचो में तो ले चालो। थोड़ी ताळ वठे बैठूंला।'

म्हू सावचेती सूं हाथ सांभ न वीने बौळसरी नीचै लेय गियो। धीरेकरी चूंतरा माथे सोवाय दीधी। म्हू तो म्हारी साथळ माथे ई वीं रो माथो मेल देवतो पण म्हूं जाणतो वीने या वात ग्रनोखी लागेला। जो म्हैं तकियो लाय सिराणां लगाय दीधो। एक दो एक-दो बौळसरी रा फूल झड़ रिया हा। पत्ता मायनूं चांदणी ग्राय वींरा पीळा पड़ियोड़ा मूंडा पै पड़ री ही। चारूं कानी थिरता ही, सुगध सूं गेह डवर व्हियोडा ग्रंधारा में बैठियो म्हूं वींरा मूंडा साम्हो चोघ रियो हो। कजाणां क्यूं म्हारी ग्रांखिया जळजळायगी।

म्हैं धीरे धीरे म्हारा दोई हाथां सूं वीरो म्वायो हाथ उठाय लीधो। वीं मना नीं कीधो। थोड़ी ताळ यूं ई बैठियो रियो। म्हारा हिवड़ा में हिलोळो सो उठ्यो, म्हारा मूंडा सूं ग्रचाणचक निकळ गियो, 'थारी प्रीतड़ली म्हारा सूं भूलणी नीं ग्रावेला।' म्हूं उणीज वगत घमकियो, या वात कैवा री नीं पण कैंवणी ग्रायगी। म्हारी परणी मुळकी। उणरी मुळक में सरमनी पड़ जावै जेड़ी लाज

ही, सुग्न ही, पाणंद ही पर क्यूं'क कण भगोमा री सळक ई ही। व्यंग री तीखो वाड़ व्हैनो ई अचरज नीं।

म्हारी बात रा पडूत्तर में वी धूं'कारो नीं कीधो पण मुळक ने जवाब दीवो के 'नीं भूलोला, या तो व्हेणी नी। नीं म्हूं एड़ी आस ई करूं।'

वीं मीठी, कंवळी पण कटारी जेड़ी तीखी मुळक सूं डरपने थके म्हे कदी प्रीत री बातड़लियां हिवड़ो खोल न नीं कीधी। उण री पूठ पाछे घणी प्रीतड़लो री बातड़लियां मन में उकळती पर मूंडा पे नी कंवणी आवती। छापा रा छपियोड़ा आखरां में जां बातां ने पढ़तां पढ़तां आंखियां सूं धारवा छूट जावे वां बातां ने मूंडा सूं कंवा में हंसणों क्यूं आय जावे। म्हारी समझ में यो भेद नी आयो, अनरी मौस्या लेय लीधी तोई।

जीभ सूं कोई कंवे तो उण रो उत्तर पडूत्तर ई देवणी आवे। पण मुळकवा रो कोई कांई जुवाब दे। ज्यूं ई ज वी वगत म्हने चुप्प रैवणो पड़ियो। भटीने एक कोयलड़ी तो कूकू री झड़ी लगाय राखी। वीरी कूकाट सूं म्हारे हिवड़ा में हूल पड़गी, बैठियो बैठियो सोचवा लागो एड़ी दूधां धोई रातड़ी में म्हारी कोयलड़ी रा कान क्यूं बैहरा व्हैगिया।

घणां घणा इलाज कराया पण वो रोग तो कटियो नी। डाक्टरां सल्ला दीधी, एक दांण बारे लेजाय हवा पाणी बदलाय दो, फरक पड़े तो पड़ जावे।

म्हूं परणी ने लेय इलाहाबाद आयो।

अठे आय न कंवता कंवता दक्षिणाचरण बाबू ठम गिया, चोज री नजर सूं म्हारा साम्हा जोवा लागा। पछे दोई हथेळियां में माथो लगाय कजाणां कांई सोच में पड़ गिया। माळ्या में धासलेट री चिमनी टमडम कर री ही। कमरा में छांछर मांछर रो भणणाटो सुणीज रियो हो। एकणदम मून तोड बोलिया—

वठे डॉक्टर हारानचन्दर म्हारी परणी री दवा करवा लागा। घणां दिना इलाज चालियो पण फरक कांई पड़ियो नी। छेवट में थाक न म्हांने ई आय न डॉक्टर जुवाब देय दीधो। म्हूं जाण गियो या सूल व्हेण ने नीं, या ई परणी के माचा पे ई वीं ने ऊमर काढणी है।

एक दिन म्हारी परणी म्हने केय दीधो, 'मांदगी तो मिटवाने है नीं, नी ई झट वजा आवती दीखे। फेर थां कटा ताई अधमरी अधजीवी रे लारे थांरो जमारो बिगाड़ो। दूजो बियाव करलो।'

वीं इण बात ने मनरा सूधा पणा सूं कही जांणे वा एक अकल री सल्ला देय री व्हे। कोई त्याग करी व्हे के कोई बडापणो जताय री व्हे एड़ी कोई बात वीरी भावना ने भींटी ई नी ही।

अबै मौसरो हो म्हारे मुळकवा रो। पण म्हारा में वसी मुळक मुळकवा री सगती कठै? म्हूं तो उपन्यास रा नाम माटा ज्यूं अबापणा सूं ऊंचा साद में बोलियो 'जब लग घट में सास . ' वी बीचै ई म्हारी बात काट दीधी, 'बस, बस रैवादो, बोल्या जोई घणा। थांरी बातां सुण न तो म्हारो मरजावा रो जीव करे।'

म्हूं तुरन्त हार मानवावाळो नी हो, 'ई जमारा में तो कोई दूजो ने प्रीत करणी आवे नीं।'

सुण ने म्हारी थण जोर सूं हँस दीधो। म्हने बोलनां ने हरणो पड़ियो।

अजाणा वां दिनां म्हूं मन मे मानतो के नीं पण अबै म्हूं मानूं। उण री माथो छोड़वा री आस नीं री जो सेवा चाकरी करता, म्हने थकेलो दीसवा लागगियो, काम-चाकरी करवा रो म्हें आळसो कदी नी लीधो, पण आखो जमारो मांदा रा माथा री ईंस कण ने काढ़वा रो विचार काळजा में कांटा ज्यूं सालतो। अड़ता जोवन में जदी म्हूं मागली माडी ने भाळतो तो म्हारी जिंदगी म्हने वेडाट करता फूलड़ा जेड़ी लागती जि मांयनूं सुगंध री डंबरां फूट री व्हेती। अबै म्हने म्हारी जिंदगी सपाट, बिना छाया री मरुभोम जेड़ी लागी। म्हारी चाकरी रे नीचे लुकयोड़ा थकेला ने वीं देख लीधो दीसतो। म्हूं म्हने नीं समझियो पण वीं म्हने समझ लीधो। जिमे मिन्दोरा आस्सर नीं व्हे, एड़ी रावरा री पैनी पोर्या रो नाई वी म्हने बांच लीधो। म्हूं म्हारा उपन्यास रा नाडा री नाई कविता छांटवा लागतो तो वा एड़ी गैहरी प्रीत सूं, कोमर सूं मुळकती के म्हारा मूंडा सूं धूंकारो नीं निकळतो। म्हारा हिवड़ा मायली बात ने, जि ने म्हूं नी जाणतो वा अन्तरयामी री नाई जाण जावती। वे बातां छोडूं म्हने थोड़ो आवे तो कटार पेट ने मरजावा रो मन करे।

डॉक्टर हाजन म्हारी आज रा हा। बारे घरे म्हने थीमता ने मूंनवो करतो। थोड़ा दिन अरणो [illegible] पछै वांरी बेटी रो म्हारूं था सेंद- [illegible]
विस्तण करार दीधी। [illegible] ने रा काम फराक रो। डॉक्टर [illegible]
कैबड़ा हा के [illegible] वां हूंन विचार नी कीधो।
[illegible] है।
[illegible] हो। वेरी फूटगे हो केड़ो [illegible]
[illegible] मे, देगु कोठन

में, मान मुलायजा में सब भांत सरावा जोग ही। कदी कदी म्हूं वीं रे लारे वातां करवा बैठ जावतो तो मोड़ो व्हे जावतो। परणी नैं दवाई पावा रो टेम ई टळ जावतो। वा जाणती के म्हूं डॉक्टर रे घरे हूं पण कदेई वीं आंख रे फणकारे नीं जतायो के म्हूं मोडो क्यूं आयो।

म्हूं जिंदगी रा मरूधोम में पाछी भ्रिगतिसणा देखवा लागियो। तिरस लाग री ही। आंखियां रे आगै तीरां तांई भरियो तळाव उझाळा खाय रियो है। निरमळ सीळो जळ ल्हेराय रियो हो। म्हूं म्हारा मनड़ा री वाग ने खेंचतो पण मन मतंग हाथा बारे भाग्यां जायरियो।

मांदी लुगाई रो कमरो पैला सूं दूणो अणखावणो लागवा लागियो। रोज ई चाकरी में चूक पड़वा लागी। ओखद पावा में, सुवावा में खलल चालवा लागी।

डॉक्टर हाथन म्हने केवो करता, 'जीं री मांदो छोड़वा री आस नी, वी री मरजावा में ई मुगती है। वां रे जीवता रियां नी वे सुखी रे नीं घरवाळा सुखी रे।'

चालती वात में यूं कैय देवता जदी तो कोई वात नीं पण म्हारी परणी मांदी इसारो करन नीं केणो चावतो। जीवा मरवा री वातां में डॉक्टरां रो मन भाटा री नाई करड़ो पड़ जावे। मनरो हूठ व्हे जावे के वे समझे ई नीं के मांदा मिनख रा घरवाळा ने कस्यो मवड़ो लागतो व्हैला।

एक दिन म्हैं पागती वाळा कमरा में सुणियो, म्हारी परणी कैय री ही, 'डॉक्टर सा'ब, क्यूं दवायां पाय पाय हकनाक खरचो लगावो। मांदगी छूटवा वाळी तो है नीं क्यूं नीं म्हने एड़ी दवाय दो के जीव निकळ जावे। म्हारी मोखम व्हे जावे।'

'राम राम ! एड़ी वातां नीं करणी।'

सुण न म्हारा काळजा में झटको पड़ियो, चित भंग व्हैगियो। डॉक्टर वठा सिरा तो ढोल्या री ईस पे आर न बैठ गियो, परणी रे माथे हाथ फेरवा लाग्यो। वीं कियो, 'थने तो [illegible] है। था वारे आवो। थांरे टेनसा ने बाता री कसर व्हैगियो। थोड़ी देर टैर जावो तो सुख लागै तो क्यूं ओस घूंट लेवांला।'

टेनसा ने जाता री मरम हो डॉक्टर रे घरे आवतो। म्हैं ई अबी में अन-अतर [illegible] ईस न [illegible] सुख सुख थावे। अठे म्हूं भरोसा रे साथे केवूं के वा म्हारा ई [illegible] डाकधरो मरम समझती। म्हूं ई ज बताव हो थो वीं रे [illegible]।'

[illegible] बाबू हवेली रे मायने टेर न छाना [illegible] बैठ गिया। [illegible], 'एक [illegible], [illegible] मारी है।'

पाणी पी न बैठणो मांडियो,

एक दिन डॉक्टर री बेटी मनोरमा म्हारी परणी सूं मिलवाने आवा रो कहियो। राम जाणे क्यूं म्हारे या बात मन नी भाई। म्हूं जेड़ी बात ई कोयनी ही। एक दिन, दिन आथ्यां री वा म्हाके अठे आई। वीं दिन म्हारी भखी री मोर दिनां सूं मांदगी बत्ती ही। जि दिन मांदगी जोर पै व्हेती उण दिन वा घणीज सांत रैवती। बीचे बीचे मुट्ठियां भींचाय जावती, मूंडो लीलो पड़ जावतो। या ऐहनाणा सूं ई कस्ट रो बेरो पड़तो। कठी ने ई कोई खड़खड़ाटो नी हो। म्हूं माचा री ईस पे छानी मानो बैठ्यो हो। वीं दिन उण में मतरी आसंग नीं ही कै म्हनें टंलवाने जावा रो कैवती के कस्ट बत्ती होणे री वजे सूं मन में सावती व्हेला के म्हूं कने बैठियो रेवूं। मांय में चलको नीं पड़े ज्यूं लालटेण ने बारणा रे ओले राख दीधी ही। कमरा में अंधारो हो, सुणसाण व्हेयरियो हो। बीचे बीचे पीड़ा ओछी पड़ियां वीं रो गैरो सास सुणीज जातो हो।

ठीक वीं वेळा मनोरमा आय बारणां कने ऊभी री। पसवाड़े पड़िया लालटेण रो चानणो वीरा मूंडा पे पड़ियो। वी अंधारा रे मांयने काई दीख्यो नी जो वा ऊभी ऊभी अठीने-वठीने झांक री ही।

म्हारी परणी चमकी। म्हारो हाथ पकड़ न पूछ्यो 'या कुण है?' निरव्ळाई में एकणदम अणजाण मिनख नें देख न वा डरपगी। पाधरो तो नी बोलणो आवरियो हो पण दो तीन दाण पूछियो।

'या कुण? या कुण?'

म्हारा सूं एड़ी जबरदस्त भूल व्ही के म्हैं झट देणी रो कैय दीधो, 'म्हूं नी जाणूं।' सहज मूंडा बारे निकलिया ई हा के जाणे कोई मन पे लाकड़ो बाह्यो, दूजे ई पल म्हूं बोलियो, 'अरे ये तो आपणे डॉक्टर साब'री बेटी दीखे।'

म्हारी परणी एक दाण म्हारा मूंडा साम्ही रिसान सूं झांकी। म्हारा सूं आंख उठाय ने वीरे साम्हो देखणो नीं आयो। दूजे ई पल वा धीरे धीरे घर में आवोरी पोरणी सूं बोली, 'आवो मांयने आवो।' म्हारा सूं बोली, 'लालटेण तो ऊंची करो थोड़ी।' मनोरमा मांयने आय न बैठगी। वीं रे साथे वा धीमे धीमे बातां करबा लागी। इतराक में डॉक्टर ई आयगिया। लारे वे ओसद री दो सीसीयां लेता आया हा। वां दोई सीसीयां ने म्हारी परणी ने झेलाय न कईयो, 'ई नीली सीसी में तो मसलबा री दवाई है, ई दूजी सीसी में पीवा री

घोखर है। दे जो, या में भोळप मत कर जावजो। या जेरीली घोखर है।' म्हनें ई वां सावचेत कर दीधो। जावती वेळा म्हारी बेटी ने सागै चालवाने कहियो।

*मनोरमा बाप ने पूछ्यो, 'म्हूं अठै ई ज रेय जावूं? अठै कोई है नीं थारी टैल चाकरी कुण करैला?'

म्हारी परणी एकदम विचळायगी, बोली, 'नीं, नीं, श्राप फोड़ा मत देखो। म्हारे लारे भरोसा री माणस है, वा श्राछी तरे सूं म्हने सवेरे सवेरे।'

डॉक्टर हँस न बोलिया, 'बेटी, ये सती है, लिछमी है लिछमी। यां श्राखी ऊमर दूजा री सेवा कीधी। दूजां सूं सेवा यां सूं लिरीजे नीं।'

बेटी ने लेय न डॉक्टर जावा वाळा ई ज हा के म्हारी परणी बोली, 'डॉक्टर साब, ई श्रमूजा मे ये घणो ताळ सूं बेठिया है, यांने श्राप बारै ले जाय, टैलाय लावो।'

डॉक्टर म्हां सूं बोलिया, 'श्रावो, चालो, थोड़ा नंदी माथे टैल श्रावां।'

म्हू थोड़ीक नटा नटी कर न जावा लागियो। बारै निकळती दांण डॉक्टर एक दांण श्रोजूं वां सीसीयां बेई म्हारी परणी ने सावचेत करता गिया।

वीं दिन म्हूं डॉक्टर रे घरै ई जीम्यो चूट्यो। पाछा फिरतां मोड़ो व्हेगियो। घरे श्राय न देखूं तो म्हारी परणी ने तांणां श्राय री। लाज एडी श्राई के धरती फाटे तो मांयने बळ जावूं। पूछ्यो, 'पीड़ घणी व्हेवा लागगी कांई? उण सूं बोलीज्यो कोनी। टुगर टुगर म्हारो मूंडो देखवा लागगी। वीं री जीभ रुकगी ही।

वीज वगत भाग न, डॉक्टर रे घरे जाय न बुलाय लायो। पेलां तो घणी ताळ ताई डॉक्टर रे धियान में कांई नी बेठियो। पछे वा पूछी, 'पीड़ घणी वधगी? एक दांण उण दवा री मालस कर न देखां।' यूं केय मेज माथे पड़ी लीली सीसी ने उठाई तो रीती पड़ी।

वां म्हारी परणी ने पूछ्यो, 'भूल में ई दवाई ने पी गिया हो कांई?'

वीं माथो हलाय हामळ भरी।

डॉक्टर वीज वगत गाड़ी पे चढ़ न भागिया घरे पंप लावाने। म्हनें तो भांक श्रायगी, वीं रा ढोल्या माथे गुड़क गियो।

मा, वीरा मांदा टाबर ने काळजा रे लगाय हेजको करे ज्यूं री ज्यूं वीं म्हारा माथा ने काळजा रे लगाय दोई हाथां ने हेत सूं पड़ाय, म्हनें मनड़ा री बात कैवारी कोसिस कीधी। म्हनें लाग्यो वा हेत सूं हाथ लगाय म्हनें केय री है, 'सोच मती करो, चोखो ई व्हियो थां तो सोरा रेवोला, या जांण ने ई म्हारी श्रातमा मुगत व्हे जाय।'

डॉक्टर पंप ले न आवे आवे जतरे तो पींजरो खाली पड़ियो हो ।'

दक्षिणाचरण एक दाण फेर पाणी पीयो, 'ओह, तपत घणी ।' यूं केय वे वारे बरामदा में जाय थोड़ा टैल, ठंडा व्हेय न मांयने आया। परतख दीखरियो के वे काई कैवणो नीं चावे पण कोई मांडाणी वा मूं कैवाय रियो है। वा पाछी वात मांडी ।

मनोरमा ने परण न म्हूं पाछो घरे कलकत्तो आयो। मनोरमा वी रा बाप रा कैवा मूं म्हनें परणी ही । पण जदी म्हू वीं मूं लाड प्यार री वातां कर, वी रो मर म्हारो हिवड़ो एक करणो चावतो तो नी वा हँसती नीं मुळकती । ठावी ठावी बैठी रैवती । म्हनें काई ठा पड़ती के वी रा चित्त में कांई कांटो है ।

यां दिनां म्हे दारू पे घोड़ा उठाय दीधा । सरद रुत लागी ज ही, दिन आथियां रा म्हूं मनोरमा रे लारे बराहनगर वाळा बाग मे टैलरियो हो। अंधारो गैहरो व्हेतो जायरियो हो। पंखेरुवां रा पाखड़ा रा फड़फड़ाट अबे धूंवाळा मायनूं नी मुणीज रिया हा । भाड़ापाड़ा रा रूंखा री डाळा वायरा मूं हाल री ही ।

टैलता टैलता थोड़ीक थाकगी जो मनोरमा वीं बोळसरी वाळा चूंतरा पे बांवट्या रो सिराणो लगाय न, डोडी व्हेगी । म्हू ई भडे जाय न बेठगियो ।

अंधारो छायगियो । वठा मूं तारां छायो आभो दीखरियो हो ।

वीं दिन सांझ रा म्हारी दारू री छाक लियोड़ी ही । आख में कुछ रगत ही । रूंख री छाया नीचे, पीळा रंग री ओढ़णी ओढ्यां, ढीळांग बामणी रो काया, म्हारा हिवड़ा ने उथल पुथल कर दीधो । म्हने लागियो, या वा छाया है जो कदी बाहां में नीं बांधणी आई म्हामूं ।

अतराक में रूंखा री छाया में वासदी रो गोळो दीखियो । अंधारा पख रो बूढ़ो, पीळो चंदरमा पूं'वाखियो । धीरे धीरे चालतो वो रूंखा रे मथारे आयगियो। थोड़ा मकराणां रा भाटां पे सूती आंमण रा मूंडा पे किरणां पडीं । म्हारा मूं नीं रैवणी आयो । दोई हाथा मूं वीं रा हाथ पकड़ न बोलियो, 'मनोरमा, थूं म्हारा पे भरोसा नीं करे पण म्हूं थनें प्यार करूं । जीव मूं चावूं थनें । थारी प्रीतड़ली म्हारा सूं कदी भूलणी नीं आवेला ।'

मूंडा मूं ये लफज निकळताई म्हूं थमक गियो । चौंतां आयो, या ई वा वात म्हैं एक दाण किने ई एक ने ओरने ई कही ही । वींज वेळा हा""हा हा"हा कर न कोई हँस्यो । वो बोळसरी रा रूंख, ऊपरे व्हे, अंधारा पख रा पीळा खाडा चंदरमा रे नीचे व्हे, गंगाजी रा ई तट मूं लेय पेला तट तांई वा हँसी भाग"ग

झटदेणी रे ऊठतां ई म्हैं दीवासळाई बाळ दीवो सळगायो। दीवो बाळतां ई गायब। म्हने लाग्यो म्हारी मच्छरदानी धुजावती, बोट ने हलावती, पसीना मूं भोज्योड़ी म्हारी देही रा लोहिया ने जमावती, हा हा हाःहाः हंसती, सँपट्ट भागगी। पैला वा पदमा रै पार म्ही, पछै रेता ने पार कीधो, पछै आखा देस रा गामा ने, सहरा ने, परवता ने, चौगाना ने पार करती गी। देस देसान्तर, लोक परलोक ने पार करती झीणीं झीणीं व्हैती उड़ती गी। म्हने लागियो वा जीवण मिरतु रा देसा ने ई पार करगी। वीरी अवाज झीणीं व्हेती गी, व्हेती गी। अतरी झीणीं अवाज म्हैं कदी नीं सुणी नीं सोची। म्हारा माथा में जाणे वा अवाज भरगी। वा अवाज झीणीं झीणीं व्है कठै री कठै परी गी, पण म्हारा माथा ने छोड़ियो नी। छेवट में कायो व्हेगियो, नींद आई ज नीं तो सोची दीवो बुझाय र सोवूं तो आख लाग जावे। दीवो बुझाय न सूतो न वा मच्छरदानी कने आय ऊभी रैगी। रुंध्या कंठ सूं म्हारा कान रे कने आय बोली, 'या कुण ? या कुण ? या कुण ?' म्हारी देही रो रूम रूम वीं ताळ पे ताळ लगाय बोलवा लागियो, 'या कुण, या कुण, या कुण ?

वो सूनी रात में जाणे म्हारी घड़ी सरजीवत व्हैगी, वा ई वींरा कांटा ने मनोरमा री आडी ने कर ताळ पे ताळ देवती बोलवा लागी, 'या कुण, या कुण, या कुण ?'

कैंवतां कैंवता दक्षिणाचरण बाबू रो मूंडो पीळो पड़गियो, कंठ रुक गियो। म्हैं वां रा डील रे हाथ अड़ायन कहियो, 'पाणी पीलो।'

अतराक में म्हारी चिमनी दप दप करन बुझगी। निजर बारै पड़ी तो सन्दूरी फूटरी, कागला बोलरिया, सूनी सीटूटी देयरी। घर आगली सड़क माथे भैंसागाडी रा पेड़ा खड़ खड़ कररिया। उजाळा में देखिया तो दक्षिणाचरण बाबू रा मूंडा रा भाव बदलियोड़ा। दीख्या डर रा के कोई संका रा सैहनाण मूंडा पे नी हा। रात रा माया जाळ में, वैम री धुन में जो वां अतरी वातां कैय दीधी ही जो मन में उणां नैं भोलज आय री ही। मन में बेराजी व्हैरिया दीसता बो सिस्टाचार री काई बात नीं कीधी। ऊठ ने परा गिया।

दूजे दिन कोई आय न आधी रा समना में म्हारो आडो भड़भड़ायो, 'डॉक्टर, डॉक्टर !'

डाक बाबू री तनखा घणी थोड़ी। हाथां सूं पोय न खावे। गांम री एक मां बाप बायरी छोरी प्राय हाथछोड़ो कर जावे। वीं ने ई दो रोटी देय देवे।

छोरी रो नाम रतन, बारा तेराक बरसा री व्हेला। ब्याव री कोई सतूनो दीखतो नी।

सांझ री वेळा गुवाळियां रा घरां सूं गैरो गैरो धूंवो निकळतो, चारूंकानी भींभरी झणकारा नेग लागती, गांव रे बारे गैरमां में नसोकीवां छोरां री टोळी ढोल मंजीरा वजाय गावा लागती अंधारी ओवरी में बैठा अकेला डाकबाबू रा जीव में ई झोला खाता रूंखड़ा ने देख ताड़ातोड़ी लागती तो घर रा कूणां में दीवो बाळ डाक बाबू हेलो पाड़तो, 'रतन'।

रतन बारणा आगे बैठी बुलावा री वाट नाळती रेती। पण एक दांण हेलो पाड़ियां मांयने नी जावती, पूछती 'कांई है बाबूजी, क्यूं बुलावो?'

डाक बाबू कैवतो, 'थूं कांई कर री है।'

रतन कैवती, 'चूल्हो बाळवा जाऊं रसोड़ा में।'

डाकबाबू कैवतो 'रोटी पछे करजे, जा पैला हुक्को भर लाय दे।'

थोडी देर में दोई गाल फूलाय चिलम पै फूंक देती रतन मांयने आवती।

हाथ मांयने सूं हुक्को ले डाक बाबू झटदेणी रो पूछतो 'है, रतन, थनें थारी मां याद आवे?'

उण री मा री कें'णी घणी लाबी है। थोड़ी घणी याद है थोड़ी घणी चितां उतरगी। मा बिचै ई बाप उणरो वत्तो लाड राखतो। बाप री थोड़ी थोड़ी वीं ने याद है। मजूरी कर दिन आथियां रा बार घरे आवतो, वा मांयली कोई सी क संभ्या उणरा मन पै तसबीर ज्यूं मंडियोड़ी है। कैं'णी सुणाती सुणाती रतन डाक बाबू रा पगां कने भागणी बैठ जावती वीं ने याद आवती, वीं रे एक छोटो भाई हो। घणां दिना री बात है, चौमासा रा दिनां में तळाई मायं दोई भाई बैन मिल न डाळी रो मच्छी पकड़वारो कांटो बणाय अभ्यास या रा माछळा पकड़ वारी रम्मत रमता। घणी सारी मोटी मोटी वातां में सूं एक या खास बात वीं ने घणी याद आवे। यूं ई वातां करतां करतां कदेई घणी रात परी जाती तो डाक बाबू रोटी बणावा रा आळगस कर जातो। सुबै री जो बासी दाळ साग बची रेवती, रतन चूल्हो सुलगाय दो चार रोटी पोय ले आती, दोय जणां पेट वीं सूं भर लेता।

कदे ई कदे ई संभ्या रा ओवरी रा कूणां में दफ्तर रा पाटा पै बैठ डाक बाबू ई आपरा घर री बातां करतो, छोटा भायां री, मां री, बैन री, पराया गाम में अकेला घर में पड़िया सगळे जिण री याद आवती उणांरी बातां करतो। जो बातां'ई रैह मन में आवती, वां बातां नै मील कोठी रा गुमास्ता सूं, लोगां सूं ई वीं

कंवणी आवती। वां ई ज वातां ने छोटीसीक अणभणी छोरी ने कंवणो छोटो नी लागतो। अठा तक व्हेगी के वाता करती वेळा छोरी डाक बाबू रा घरवाळा ने मां, जीजी, भायो, केवा लागगी, उण रा छोटा सा मन रा पाठा पै वी कल्पना सूं उणारी तसवीरां माड लीवी।

एक दिन चौमासा रा दिनां में वादळा नी हा, साफ दुपैरी ही, नवायो नवायो सुवादणो वायरो वाज रियो हो। बनसपती मांयनूं सोरम आय री ही। यूं लागरियो हो जाणे धरती री छोडी लगी ऊनी ऊनी सास डील रे आय मड़ री है। एक वादीली चिड़कली मरी दुपैरी में, कुदरत रा दरवार में आपरी सारी सिकायतां री गळगळी व्हे घडी घडी फरियाद कर री ही। डाक बाबू कनै कोई काम नी हो। मेह सूं धुपियोड़ा रूंखड़ा बरखड़ा, हालता कंवळा कंवळा पानडा, म्हेल माळिया जेड़ा धोळा धोळा वादळा तावडा मे चमकता घणा फूटरा लाग रिया। देखवा लायक हा। डाक बाबू उणां ने देखता जाय रिया हा अर मन मे सोचता जाय रिया हा 'जे इण वगत म्हारी ई कोई म्हारा कनै व्हेती। हिवडा में हेत भरियोड़ी कोई जीवती जागती फूतळी व्हेती।' सोचतां-सोचतां उण ने लागियो जाणे चिड़कली या ई ज वात कंय री है, सुनसान दुपैरी में पानडा ई या ई ज वात कैयरिया है। किने ई भरोसो तो नीं आवे, किने ई खबर ई नीं पड़ै पण सुणसाण दुपैरी में छुट्टी रे दिन, गांमडिया गांम रा छोटी सी तनखावाळा डाक बाबू रो मन एड़ाई भंवर जाळ में भंमतो रैवतो।

डाक बाबू एक नीसकारो न्हाक हेलो पाडियो, 'रतन।'

रतन जामफल रा गोड नीचे बैठी काचा जामफल खायरी ही। हेलो सुणियो तो भागी आई, सांस भरियोड़ी बोली, 'बाबूजी, म्हने बुलाई के ?'

डाक बाबू कियो 'थनै भणावूं चाल।' पछे आखी दुपैरी उण ने अ, आ, इ, ई भणावतो रैवतो। थोड़ा दिनां में मिन्योड़ा आखर भणाय दीवा।

सावण रो म्हीनो, बरखा विलूंब री। तळाव, नाळ, खाडानाडा, वाळा खाळा पाणी सूं थवोळा खाय रिया। रात दिन मीडका री डरडर, बरखा री रमझम सुणीजती रैवनी। गांव रा गेला मे आवणो जावणो रुक गियो। नावडिया पै चढ हाटां पै सौदो लाणने जावणो पड़तो।

सुबै सूं ई घटाटोप वादळा व्हेय [illegible] ग्या कदरी बारणा आगै बैठी बुलावा री [illegible] हेलो नीं पड़ियो, छेवट में [illegible] गी। देखियो, डाक [illegible] धीरेकरी पाछी बारै

रतन तो आंगणे घूटा में मोश्गी, पग पकड़ ने बोली, 'बाबूजी, थारे पगां पड़ूं, पगां पड़ूं। म्हने कांई मत दो। थांरे पगां पड़ूं। म्हारे सारू किणी ने ई कांई मत कैवजो।' यूं कैय रतन तो भागगी।

जूनो डाकबाबू एक गैरो नीसासो भर हाथ में बैग लटकाय, कांधा पे छतरी मेल, मजूर रे माथे लीला रंग री अर धोळा रंग री पटड़ियां वाळी पेटी मेलाय धीरे धीरे घाट कानी चालियो। नावड़ा पे चढ़ियो, नावड़ो चालियो। बरखा रा पाणी सूं चौड़े पाट पड़ी नंदी, धरती रा आंसू री नांई चमकवा लागी तो डाकबाबू रा मन में ऊंडी पीड़ा सी व्हेवा लागी। गांव री एक छोरी रो कदणा भरियो मूंडो, उण सूं ई इधक मांनू भरियोड़ा नैण, मरम री पीड़ा बण उणरा काळजा में सालवा लागा। एक दांण तो मन में आई चालो पाछा चालां, संसार री खोळा सूं छटक पड़ियोड़ी टाबरी ने साथे लेता चालां। पर जतरे नाव रा पाल में हवा भरणी आयगी। नदी जोर सूं बैय री ही। नाव गांम सूं आगे निकळगी। नंदी रे किनारा परळो मसाण दीख रियो हो। नंदी री धारा में बैवता थका मुसाफिर रा पसतावता मनड़ा में विचार हलोळा लेवा लागा, "जिंदगी में कताणा कतराई विजोग, कतरी मौतां आवती रैवेला, पाछा जावा सूं कांई लाभ। संसार में कुण किण रो व्हियो है?'

पण रतन रा मनड़ा में कोई एड़ो विचार नीं आयो। वा डाकखाना रे एड़े छेड़े आंसूड़ा टळकावती फिर री ही। उणरा मन में टमटमाती आसा अबे ई ही के कदाच बाबूजो पाछा आय जावे।

हाय रे, बिना बुद्धि रा मानव हिड़दा, थारी भरांति कदे ई मिटे ई ज कोयनी। युक्ति सास्तर रो कायदो घणो दोरो थारी समझ में बैठे। सरासरी ई आंख्यां सूं देखे उण मायें ई थनें भरोसो नीं आवे। झूठी आसा ने दोई हाथां सूं बांथ छाती रे चैंठाया राखे। छेवट में एक दिन वा आसा, नस नस ने काट, छाती रो लोही पीय ने लोप व्हे जावे, जदी चेतो आवे। मोटो अचंभो तो यो है के एक फाळ सूं निकळ तुरंत ई दूजा भरांति रा फाळ में फंसवा ने मन आगतो व्हे जावे।'

म्हूं पड़ूत्तर देतो, 'वैम करणो म्हारो धंधो नीं। घर में तो म्हूं वैम ने वळवा ई नीं दूं।'

परणी कैवती, 'वेम करणो म्हारो ई धंधो कोयनी, यो तो म्हारो सुभाव है। म्हनें जो राई रा दाणां जतरो ई थारां पे वैम रो कारण मिल जावे तो म्हूं तो सैंग थोकं करवा नें त्यार व्है जावूं।'

डिटेक्टिव लैण में म्हू सब सूं ऊंची तरक्की करूं'ला, नाम कमावूं'ला यो म्हे प्रण कर राखियो हो। ई लैण रे बारे में जतरी पोथियां म्हने मिली म्हें बांच लीधी। जतरा उपन्यास हाथे लागा सगळा ने पढिया। ज्यूं पढ़तो ज्यूं मन रो संतोख व्हीर व्हेतो जातो धीरज छूटतो जातो। क्यूं के आंपणां देस रा गुन्हैगार कम हीमत अर नासमझ है। वे कसूर करे जां में कोई तत ई नीं, मामूली सा गुन्हा। पेचीला, गांठ गंठायला तो वे व्हेवे ई नीं के म्हारा जेड़ा ऊरमावाळा जासूसां ने कि काम कर न नाम करवा रो चानस तो मिले। आदमी रो खून करवा री जोरदार उत्तेजणा तो आपारा देस रा खूनिया सूं दबावणी नीं आवे। जाळ रचणिया जाळ फैलावे उण में वे आप ई फंस जावे। गुन्हा कर न वां सूं भाग छूटवा री चतराई नाम री चीज तो वांने आवे ई नी। एड़ा देस में जठै मड़दपणो ई कोयनी, छाती चल्ला मिनख ई नीं वठै खुफियागीरी करवा में नीं मजो ई आवे नी आंजसणो ई।

कलकत्ता रा मारवाड़ी जुवां रमणियां ने चटकी बजावतां पकड़ लेवनो तो मन में कैवतो, 'गुन्हैगार कुळ रा कळंका, दूजा रो जड़ा मूळ सूं नास करणो तो चतर चोरां रो काम है। था जेड़ा बोदा ढाढां ने भगमा पैर लेवणा चावे।' हत्यारां ने पकड़तो तो ई म्हारो मन यूं ई कैवतो 'नाजोगां, अंगरेज सरकार री फांसी रो तख्तो था जेड़ा आंजस बायरा मिनखा सारू है कांई। थां रा में नीं तो सोचवा रो सागत है नीं मन पे थारो करड़ो कांवू है। नालायको, कि ऊरमां पे थां हत्या करवा री गलती कीधी।'

म्हूं सपना देखतो लंदन अर पेरिस रा मिनखां सूं भरियोड़ा, चौड़ा चौड़ा मारगां रा। जां मारगां रे दोई पसवाड़े सियाळा रा सी सूं ठरियोड़ा, आभा रे माथे आड़ायोड़ा, ओळवार मोटा-मोटा घर ऊभा है। म्हारा रू गटा ऊभा व्है जाता। सोचवा लागतो, या डीगा डीगा म्हेलां जेड़ा घरां में, गड्ढां में, मिनखा रा रेला, काम रा रेला अर उच्छवां रा रेला रात-दिन बेवता रैवे। जां में बदूताद, धाड़-धाड़, परताड़ नामी नामी चोर कठ्ठा रा जाणकार बैठा है। खून अर काळस जेड़ा काळा पाप रा रेला ई वां रे नीचे नीचे बेवता आयरिया है। वी रे माड़े ई

विलायती समाज रा मिस्टाचार, नाच गाणां, हंसी, खेल, आणंद मंगळ रा उच्छव रंग राग उडरिया है। एक है आपणो सहर कलकत्तो। जि मे सड़कां मे घर गळिया मे कांई व्हे ? घरां मे रोटी साग, घर रो काम धंधो के पढाई रा इमतिहान। तास चौपड़ रमलो के धणी लुगाई भचेड़ा खावलो। घणो करे तो भाई भाई झोड कर मुकदमा लड़ ले। बस ई सूं सिवाय कांई है ई नीं।

म्हूं सड़कां मे र गळिया कूं च्यां मे फिरता बटाऊआं रे लारे पड जावतो वा रा मूंडा ने गौर कर न देखतो, हाली चाली देखतो। भाकवा मे बोलवा में थोड़ोक ई वेम पड जावतो तो वारे लारे लारे जावतो, खबर लगावतो, कांई नाम, कठै रैवे। छेवट में निरास व्हे केवणो पड़तो, बुद्ध नी, दागीला कोयनी ये, भला आदमी निकळिया। और तो और वांरा लागती रा भाईबंद ई कांई दोस नी लगावे वारे माथे। गैलारडुवां मे जीं पै सब सूं ज्यादा वेम बदमास व्हेवा रो व्हैतो, देखता ई पक्को भरोसो आय जावतो के यो सखस अबारूं अवार कि रो ई खून कर, भेस बदल न खुफिया पुलिस री आखिया मे काजळ घाल रियो है, वीं रे लारे लागतो तो आखर खबर पड़ती के यो तो धरमादा रा स्कूल रो मास्टर है। छोरां ने भणाव परे जायरियो है। पछे सोचतो, जो ये ई ज कि दूजा देस में जनम लेवता तो नामी चोर धाड़ायत निकळता। खाली आपणो ई ज देस एड़ो भागहीण है जठै हींमत अर मरदपणो नी व्हेवां मूं पडताई करता ई ये जमारो काड़ देय, पेन्सन खावतां मर जाय। म्हूं घतरी कोसिसां अर छाग बीण कीधी न यो निकळियो धरमादा स्कूल रो मास्टर। म्हारा मन में उण सारूं मतरीक सया ईं नीं री जतरीक बापड़ा गरीब वाळी लोटियों चोरणिया चोर सारू व्हेती।

एक दिन री वात है, रात रा कोई साढाक आठ बजिया व्हेला, म्हूं म्हारा घर कनै देखियो, बिजळी रा थांबा हेटे एक आदमी ऊभो। बीचे बीचे भागतो व्हे, एक ई जगा भटी नूं वठीने गरड़का मार रियो। वीने देख म्हने पतियारो आय गियो के यो वो न को छाना रा पड़पंच मे है जरूर। अंधारा में लुक न वीरो उणियारो म्हूं खूब आछी तरह मूं देखियो। मोल्या छोटी, दीवण में सन रो, रूपा ळो। म्हे मन में कियो, साजस करवा रो ऊमर ई या है, उणियारो ई एड़ो ई ज है। घणी देर तांई तो म्हूं मनोमन सरायो वीनें। पछे वीव कैवा लागो, 'भगवान ई ने जो सिफत बखसी है वीं ने काम में लेवे जदी तो तारीफ है नी तो कांई।'

म्हूं अंधारा मूं बारे आय, वीं रा मोर थेपड़ न पूछियो, 'को, राजी तो हो?' वो चमकियो जोर मूं, मूंडो पडगियो थोळो फट्ट। म्हूं कियो, 'माफी दीजो। गलती व्हेगी, म्हे जाणियो।'

लाग रियो है पण वा तो म्हांरी साम्ही झाकै ई नीं।'

पैलां तो वो चमकियो पछै म्हां श्राडी ने नाळ ने मुळकियो, या कोई श्रणव्हेणी वात तो है नीं। ई तरै रा तमासा देखवा ने ई तो कौरकी बिरमा श्रम्ही पुरुष न्यारा न्यारा सिरजिया है।

'म्हूंने सल्ला ई दे श्रर मदद ई दे।'

वो राजी व्हेगियो।

म्हे मूठी जोड न पूरी ब्यान बणाय लीधी। वो घणा चाव सूं सुणतो रियो, पण घणो बोलियो नी। म्हारी तो धारणा है के कोई संगीडा साथीडा ने प्रीत री वात, खास कर न एडी मोटी प्रीत री वात केवो तो दोसती गैरी व्हे जावे। मित्रता झट गाढी व्हेवती दीखे। पण श्रवार तांई एडा कोई ऐहनाण नी दिखिया। मनमथ पैलां नाम ई बत्तो थोड़बोलो व्हे गियो। यूं ई लागियो के म्हारी सैंग वातां ने गांठ बांध न राख लीधी व्हे। मोटयारड़ा पै म्हारी सधा बधगी।

श्रठी ने मनमथ रोजीना श्राडो श्रड़काय न मायने कांई कांई पड़पंच रचे, फटाक तांई वीरा पडपच श्राणै वध रिया है जिरी म्हनें कांई ठा नीं लागो। पण ईं में कोई संका नी के वे श्रागे तो जरूर ई वधरिया है। वीरो मूंडो देखतांई दरपण ज्यूं दीख जावतो के वो कि न कि ऊंडा मामला मे गरक है, श्रर वो मामलो बस पाकियो ई जाणो। म्हे पड्कूंची बणाय वी री डेस्क ने खोली। मांय ने एक तो घणी ज भद्दी कवितां री कापी, कालेज रा लेक्चरां रा नोट, घरवाळां रा मामूली कागद पत्तर, बस श्रौर कांई नी लाधियो। घर रा कागदां सूं मतरीक ई ठा पड़ी के घर वाळा तो घरे श्रावा ने कैयरिया है श्रर वो जाय नीं रियो है। पण क्यूं ? जरूर कोई खास वजे व्हेला।। जे वो साचो व्हेतो तो श्रापसरी रा वाद में कदी न कदी तो पड़दो श्रळगो व्हेतोई। ई मोटियारड़ा रो हाल चाल, विवरण जांणवा ने म्हूं श्रनरो इच्छुक व्हे गियो के जिरो लेखों नी।

छेवट में म्हने वातां री नी सरीर वाळो श्रस्त्रो ने परगटावणो पडी। पुलिस में नोकर हरमनी म्हारी मदद पै श्राई। मनमथ ने म्हें कैय दीधो, ईं हरमती रो म्हूं करमहीण प्रेमी हूं। वीं रे सागै गोलदिग्गी जाय जाय तळाव री पाळ पै दोव में बैठ, हरमती रो नाम लेय लेय म्हूं गळगळा कण्ठां सूं कविता बोलवो करतो, 'चांद थूं है, चांदणी थूं है!' हरमनी क्यूंक तो मायला घर क्यूंक बारला मन सूं बनावती के वी रो हिवड़ो मनमथ चोर लीधो है। पण श्रासा हो जेड़ो कोई फळ नी मिलियो। मनमथ दूर सूं ई, मापा मोढ़ में बिलमिया बिना तमासो देखतो रेवतो।

एक दिन दुपैरी रा म्हैं देख्यो के वी रा कमरा रा कूणां में एक फाटियोड़ी पत्तरी पड़ी है। म्हे फाटियोड़ी चगथियां ने जमाय न वांचवा री चेस्टा कीधी। पण अतरी सी क अधूरी ओळ बाचणी आई, 'आज संभया रा सात बजियां लुक न थांरे अठै' बस घणी माथा फोड़ी कीधी पण आगै जुड़ियो नी।

म्हारी आतमा परफुल्ल व्हेगी। जूना जमाना रा दुरलभ पराणी रा हाडकियों लाधवा सूं जीवतत्व री सोध करणियो पिंडत आणंद सूं उछळ जावे वा ई गत म्हारी व्ही।

म्हूं जाणतो के आज रात रा दस बज्यां रा हरमती रे आपणे अठै आवा री है। बीचै ई यो सात बजियां वाळो मामलो कठा सूं आय रियो है! जुवानड़ा री अकल री र छाती री तारीफ करणी होसी। कोई छाना रो काम करणो व्हे तो वो ई ज औसर आच्छो रे जि दिन घर में भाड़ भीड़ व्हे। पैलो फायदो तो यो व्हे के वीं दिन सगळां रो धियान खास काम पै व्हे। दूजो फायदो यो के जि दिन कोई खास काम व्हेतो व्हे वी दिन कोई छाना रो काम करैला ईं पै किरो ई वेम नीं जावे।

एकणदम म्हारा मन मे एक नुवो वेम उठियो। म्हारली मिनखा अर हरमती रे सागे प्रीत री रम्मत ने, ईं तो आपरो काम काढ़वा रो गेलो बणाय लीधो है। अदी ज तो नीं तो वो आपां ने भेळा रावे नीं मळणा ई करे। वो जांणे के म्हांका मे ढंग ढाळा वीं रा छाना रा काम पै पड़दो न्हाकता रे, दूजा जणां याई ज सोचता रेय जावे के मनमथ तो या लोगा रे मारै ई ज लागियो रे। वो ईं भरम ने बणाया राखणो चावै।

बारलूं मगसाने आयोड़ो, घरवाळां री हाथाजोड़ी पै ई, छुट्टियां में घरे नी जावै। होस्टेल में अकेलो पड़ियो रै। ईं रो मतलब के वो एकांत चावै। म्हूं उणरा कमरा में रेय वीं रा एकमाड़ा पणा मे भांगो न्हाक रियो हूं। बरो सारे एक मुगाई ने लाय एक नुवो छानीबूटो जोव ने मगायो है पण वो आवक बेरणी नीं। या ई मात्र है के हरमती माथे उण रो कोई लाग लगाव नीं, नीं म्हारी बातां में ई कोई इणरो लाग मन रमै। म्हूं तो मनो मन खूब सोच समता न ई नतीजा पै पूग्यो के मनमथ री म्हा दोखा माळ पिरता ई वजी ही।

ईं रो तो एक ई कारण निकळियो के जिनड़ी ने तो अनाडो रैवै के वो एकलो नीं रैवै, ईं रे मार्ग घोर ई कोई है। रावे आंपणा वने म्हारा जैड़ा बूढा आदमी ने तो दिखाव कांई आळे ई नीं। वीं ने ई कोई लुगाई सूं मतलब रावे। जि ने ई एकमन म्हे कड़ी ने ई मतलब देखणो व्हेतो लुगाई सूं बत्ती कोई चीज नीं।

मनमथ री चाल ढाल, पैला फोकट भर वैम करावणो हो, पण म्हांके आयां पछै वा बात नी री। मतरी आगळी बात विचार लेणो कोई छोटी बात नीं है, उण री ई विलच्छण बुद्धि पै म्हूं तो फिदा व्हैगियो। सोचवा लागो, आपंरा मुलक में ई एड़ा दूर री सोचणिया, तुरत बुद्धि बाळक जनम तो ले। फोड भूं हिवडो भरीज गियो। मनमथ मन में कि नी विचारतो तो म्हूं वीं नैं पकड़ न छाती रे लगाय लेतो।

उण दिन मनमथ सुं मिलता ई म्हूं बोलियो 'आज सांझ री सात बजियां होटल पे जंमवा चाला।' सुण न वो चमकियो, पछै सावचेत व्हेय न बोलियो, 'आज तो भाई, पेट मांयने जायगा ईं कोयनी।'

होटल रो खाणो खावा ने मनमथ कदी नीं नटतो, आज कांई बात है ? भांर गियो म्हूं आज मनड़ो कठो ने ई उळझ रियो है।

यूं तो म्हूं संझ्या री वेळा होस्टल में नीं रेंवतो पण आज तो बातां रो एड़ो छप्पर बाधियो के उठवाई ज नी दीवो। मनमथ रो मन मांयनूं विचळाय रियो। जो म्हूं केंवतो उण बात पे ई हुंकारा भरतो जायरियो आगे व्हेन कोई हरफ नीं बोलियो।

छेवट में काथो व्है न घड़ी देख न बोलियो, 'हरमती ने लेवाने नीं जावणो है कांई ?'

म्हूं चमक न बोलियो, 'अरे हां, बीसर ई गियो। एक काम करो, थां खाणो बांणो बणाय न त्यार राखजो, म्हूं एन साढा दस बजियां वीं रे सागे आठे आय ऊभो रेवूंला।' यूं वैय चालतो व्हियो।

म्हूं उमगाय गियो, म्हारी नस-नस में खुसी री ल्हैर ल्हैरावा लागी। सांझ रा सात बज्यां ने मनमथ उडीक रियो हो, उण सूं कम उडीक म्हारे थोड़ी हो। म्हूं होस्टल रे कने एक जायगा लुक गियो। खिण खिण घड़ी देख रियो। विजोगी प्रेमी अभिसारका रो उछळते काळजे गैलो देखे ज्यूं म्हूं देख रियो हो। गधूळी वेळा आई, अंधारो गैरो व्हैतो जाय रियो। सड़क परळा दीवा जुप गिया। देख्यो, एक पालकी, बंद पालकी होस्टल रा बारणा में बळी। ई पालकी में व्हैला कांई घूंघटा में लुकियोड़ो छिपियो पार ! उडिसा देस रा उड़िया भोयां रा कांधा पे चढ़ियोड़ो, कॉलेज रा होस्टल में यूं एड़ी सोरो सोरो बळ जाय,—यूं विचारतां म्हारा तो रूंगटा ऊभा व्है गिया। सागे ई डील में खुसी री फरूकरी भायगी। म्हारा सूं रेवणो नीं आयो। बगत ने गमायो नीं। होस्टल में पटकाणियो, धीरे-धीरे घड़ी चढ़ न ऊपरे गियो। मन में तो हो के लुक न देखूंला पण काम पार न

पड़ियो। मनमथ माळ रे मूंडागला कमरा में ई ज साम्हो साम्ह बैठियो। दूजे पासे बैठी घूंघटा वाळी लुगाई। दोई मीठा मीठा धीरे धीरे वात कर रिया। म्हैं देखियो के मनमथ म्हनैं देख.लीधो तो चट देणी रो कमरा में वळ न बोलियो 'मेज माथे घड़ी भूल गियो हो लेवा ने आयो हूं।'

मनमथ तो बाको फाड़ियां हो ज्यूं रो ज्यूं रैगियो। यूं लाग्यो के यो आप खाय न हेटो जाय पड़ी। खुसी सूं म्हारी कळी कळी खुल री। म्हैं आगते व्हैय न पूछी, 'अरे, यो कांई व्हैगियो, जीव तो सोरो है?'

उण रो तो चूंकारो नीं निकळियो।

पछे म्हूं पूतळी री नाई थिर बैठियोड़ी लुगाई कानी.फिर न धियान सूं देख न पूछियो, 'आप मनमथ रे कांई लागो?'

किं पडूत्तर नीं। पण देखियो के मनमथ रे तो वा कांई नीं लागे। म्हारे लागे। म्हारी ज परणी है।

पछे कांई व्हियो जि रो अंदाजो तो सैंग ई लगाय लेय।

या है म्हारी जासूसी जीवणी री पैलोड़ी तारीफ!

घणां दिनां पछे म्हारे एक साथी जो ई खुफिया हो म्हने कियो, 'मनमथ रे सागे थां री लुगाई रो खोटो ताल्लुक नीं व्है तो ई अचरज नीं।'

म्हैं कियो, 'थां सांच कैवो।' म्हैं हेर हेराय परणी री पेटी मायनूं एक कागद काढ़ियो हो जो वीं रा हाथ में दीधो। कागद यूं हो—

'सुचरिता,

करमहीण मनमथ ने तो थां भूल गिया व्होला। बाळपणा में म्हूं नानेरे काजीवाड़ी आवतो जदी थां रे घरे आवो करतो, आपां भेळा खेलता रमता। आपणो वो खेलवा रमवा रो ताल्लुक खतम व्हे गियो। थां जाणो कै नीं, पण म्हैं लाज सरम छोड़, कांण कायदो छोड़ ने थांसू परणाय देवारी अरदास घरवाळां ने कीधी ही। पण थांरा घर रा अर म्हांरा घर रा दाना बूढ़ा मट गिया के दोई एक कोस्या रा है।

पछे थांरो विवाह व्हे गियो। चार पांच बरसां ताई तो म्हने वीं रा नीं लागी के थां कठै हो। अबै बेरो पड़ियो के थां रो धणी पुलिस में काम करे, पांच महिना व्हे गिया, थांरो बदली अठै कलकत्ता में ई ज व्ही है। म्हे थाप घर रो पतो लगाय लीधो।

थां सूं मिलण री अरणूं तो आस तो राखूं ई नी। वो अन्तरजामी जांणे, म्हूं थांरी भली चंगी गिरस्थी में पग देवणो ई नीं चावूं, थांरा घर ने भागवा री वाछा म्हारा मन रे अड न नीं निकळी है।

संभया री वगत म्हूं थांरा घर आगला फुटपाथ पे बिजळी रा थांबा नीचे, सूरज भगवान रा दरसणारथी री नांई ऊभो रेवूं। सात साढा मान बजियां दिखणादू कमरा में थां रोज दीवाणिया में तेल घाल, बात्ती संजोय, वठे बारी रे मूंडागे राखवा ने आवो। उण वगत एक पुळ सारूं, दीवा रा चानणा में थांरा दरसण कर लेवो करूं। समझो तो बस म्हारो यो ई कसूर है।

या दिनां में संजोग सूं थांरा परणियोड़ा रे अर म्हारे ओळखांण व्हेगी। थांरो चलण म्हे देखियो उण सूं म्हें सतूनो लगाय लीधो के थां सुखी कोयनी हो। या पे म्हारो कोई जोर नीं। पण जि वेमाता आंक लिखिया के थारे पूछड़े म्हूं ई दुख देखूं, बीज वेमाता थारो दुख दूरो करवा रो भार ई म्हारे माथे न्हाकियो है।

म्हारा गुन्हा पे धियान मत देवजो पण सुकरवार ने संभया रा सात बजिया या छानेकरा एक दाण पालकी मे बेठ न अठे आय जावजो। म्हूं थाने थारा परणिया री छाना री वातां बताऊं। जो थां रो म्हारा पे पतियारो नीं व्हे तो म्हूं था ने आखियां देखाय देवूं। सागे ई थाने की सल्ला ई देवूंला। म्हूं भगवान पै भरोसो कर न कंवूं के वी सल्ला पे चालियां थांरो दुख ओछो पड़ेला।

म्हारो कोई लोभ लालच नीं है जो वात नीं है। म्हूं म्हारी आंखियां सूं थांने देख लूंला, थारी बोली सुणूंला, थांरा चरणा रा परस सूं म्हारी या अंधारी खोवरी पवित्तर व्हे जाय। बस, या अतरी सीक ऊणायत है मनड़ा में। जो थाने म्हारा पे एतबार नो है, अतरोक सुख ई नीं देवणो चावो तो थांरी मरजी। पाछो लिख दीजो। म्हूं सॅग हकीगत लिख भेजूंला। जो म्हने थां कागद रो जुबाब देवा जोगो ई नीं समझो तो थांरा परणिया ने या पत्तरो बंचाय देवजो। पछे जो म्हने केवणो सुणणो है वो ने ई कंवूंला सुणूंला।

थांरो

सदा भलो चावणियो

मनमथकुमार मजूमदार

अणव्हेणी वात

एक हो राजा।

बस, जां दिनां इण सूं बेसी जाणवा री जरूरत ई कठै ही ? कठा रो राजा, कांई नाम, ये सैंग सवाल पूछ पूछ जमतो कैणी रो रस कोई नी बिगाड़तो। राजा रो नाम सिलादीत हो के सालीवाहन, राजा कासीजी रो हो के कनोज रो, अंगदेस रो हो के बंगदेस रो के कलिंगदेस रो हो। तवारीख, भूगोल अर तरक ने जां दिनां कोई खास अहमियत नी देवता। असली बात तो वा बात ही के जिण ने सुण रस रा गुटकळिया भरणी आय जावे, बात सुणवा ने मन भागियो जावे, हाथे नीं रेवे। वा बात ही 'एक हो राजा।'

आजकाल रा सुणवावाळा तो कमर कस न सवाल पूछण ने अड़ जावे। कैणी सरू नी करो जठा पैलां ई मान लेवे कैणी मन री जोड़ियोड़ी है। आप बड़ा ठाठ सूं न मूंडो मचकाय न पूछे, 'थां कैणी केयरिया हो 'एक हो राजा' री। वा बतावो वो राजा हो कुण ?'

कैणी केवणिया ई चतर व्हे गिया आजकाले। वे ई तवारीखां रा मोटा जाणकार री नांई मूंडा ने चोगणो चौड़ो कर न बोले, 'एक हो राजा, वीं रो नाम हो अजातसत्रु।' सुणवावाळा आंख मींच न चट देणी रो पूछ ले, 'अजातसत्रु ? अच्छा हां, बताओ, कस्यो अजातसत्रु ?'

कैणी केवणियो अभिमान ई मूंडो छोटो कर न [illegible] सूं कैवतो जावे, 'अजातसत्रु व्हिया है तीन। एक तो ईसा सूं तीन हजार बरस पैलां जनमिया, दो

बरस आठ म्हीना री उमर में सुरग सिधार गिया। बड़ा अफसोच री वात है के वां री जीवणी री पूरी हकीगत कोई पोथी में नीं लाधे। पछे दूजा अजातसत्रु री दस ख्यातां लिखणिया रा नांम गिणावे। वां री जुदा जुदा दस राय मांये आपरी राय जाहिर करे पछै तीजा अजातसत्रु री हकीगत पे आवे। सुणवावाळा मन ई मन में दाद दीधा बिना नी रेवे, गजब रो पिंडत है! एक कैणी मांयने कतरी सीखवा जोग वातां बताई। एडो आदमी जो कैवे वो सांच ई कैवे। पछे पूछे, अच्छा सा, वी रे पछे कांई व्हियो?'

आदमी ठगावणो चावे, ठगावणो आछो समझे। पण कठे ई कोई मूरख नीं समझले यो संको ई मन में बेठियो रे। ईं वास्ते वो चित्त मन सूं चतर व्हैवा री कोसिस करे। पळ कांई मिले, छेवट में वो ठगीजे अर बड़ी ढोफर सूं ठगीजे अंगरेजी में एक केणावत है, 'सवाल मती करो नीं तो भूठो पडुत्तर सुणणो पड़सी।' टावर तो समझे इण बात रो मरम। वो कदे ई कोई सवाल नीं पूछे। ईं वास्ते जूनी कैणियां रो रूपाळो भूठ टावर रे आगे साफ है, सांच जेड़ो सहल है, झरणा भरणां री नांई निरमळ है। आजकाल री चतराई रो भूठ पड़दा मांयलो भूठ है। जे कठे ई राई रा दाणा जितरो ई छेकलो रैय जावे तो मांयलो भाडो फूट जावे। सुणवावाळा मूंडो फेर दे, कैवावाळा ने भाग छूटवा ने ई गैलो नी लाधे।

टाबरपणा में म्हा सांचीला रस रा रसिया हा। जद कदी कैणी सुणवा ने बैठता तो ग्यान सीखवा रो मन में तिल मात्तर ई भाव नीं रेवतो। अण भणियो, सूधो सरल मन वीं कैणी रो मरम समझ जावतो के ईं में सार कांई है। आजकाले तो अतरी नवरी बिना काम री वातां मसणी पड़े के थाक जावा। छेवट मे आय न ऊभी रैणो पड़े बीज असल मुद्दा पे 'एक हो राजा'। म्हने चोखी तरै याद आवै वीं दिन सांझ पड़ियां हूंग आय री, मेह बरस रियो। यूं लागरियो कलकत्तो पाणी में बैय जाय। सेरियां में गोडां-गोडां ताईं पांणी भर रिह्यो। म्हने पूरो भैरूसो हो के आज मास्टरजी आवा ने नीं। पण तोई वांरे आवा रो वगत व्हो जतरे धड़कते काळजे तिबारा में बैठ्यो गैला साम्हो न्हाळतो रियो।

बरखा थोड़ी रुकती दीसती न तो म्हूं चितमन सूं भगवान ने सुमरवा लागतो, हे ठाकुरजी बापजी, थोडो देर और सात साढा सात बज्या ताईं तो बरसतो रीजो।' म्हने यूं लागरियो हो के नगर रा कूंणा मे रेवणिया ई एक आकळ बाकळ टावर री भूत जेड़ा भैंकर मास्टर रा हाथ सूं रिच्छा करवा रे अलावा मेह री संसार में कांई जरूरत ई नीं। एकदाण जूना जुगां में देस अंदर *व्हियोड़ो एक यख ई या ई जाणतो के असाड रा बादळा रे कने कोई मोटो काम* रो है नीं। रामगिरि रा डूंगरां मांये बेठयोड़ा विजोगी री सनेसो दुनिया रे पैले

दोरे पनकापुरी रा म्हेलां रा झरोखा झांकती विजोगण कांई सेनाणगो कोई दोरो काम थोड़ो ई है। दोरा व्हे जेड़ो काम ई कांई गैलो केड़ोक रळियावणो है।

टाबर री अरदास गूं तो मीं पण पवन रे पांण बरसा बरसाती री, दर्श मीं। बरखा मीं दरी पण मास्टरजी रो आवणो ई मीं दरयो। गळी रा मूणा में, ठीक टैम पै जाणो विद्याणी छतरी निजर पाई। सारी आसावां एक छिण में धूळा भेळे मिलगी। म्हारो काळमो मूंडो रे आव पड़ियो। पराई आतमा ने संतावणो पाप है। पाप रो फळ भुगतावणियो कोई व्हे तो ई रो एक ई न दंड है यो दंड है आगला जनम में म्हूं मास्टरजी बणूं अर मास्टरजी म्हांमूं पढ़वावाळा।

छतरी देखतो ई म्हूं तो भागियो वठा गूं। मांयने मां अर नानी दीवा रे उजाळे तास रम री। हूं तो छानोमानो एक माची ने पड़ गियो। मां पूछियो, 'कांई व्हियो ?'

म्हूं मूंडो सोवड़ा जेड़ो करन बोल्यां 'म्हारी मासंग कोयनी, म्हूं आज भणूंला मीं।' मांदो बणगियो।

भागा तो है के कोई अपकड़ आदमी म्हारी मा केंणी मांनेगा मीं, अर मी कोई मदरसा री पोथी में ई ईं ने पावेगा। कयूं म्हें जो काम कीधो कायदा रे खिलाफ हो, जिरो म्हने कोई दंड मीं मिणियो। मान्हो म्हारो मनचाहो व्हे गियो। मां नौकर ने केय दीधो, 'आज रेवादे। मास्टरजी ने केदे वो परा जावे।'

मां मधीसी व्हियां तास रम री, मां ने मन में हंसणो तो आयो व्हेला के पेटे मांदा व्हेवा रा छैन केड़ाक कीधा। म्हूं ई तकिया में मूंडो घाल घणो हंसियो। म्हां दोवां रो ई मन दोवां सूं ई छानो मीं रियो।

ई तरे रा रोग ने जिनग सूं घणी देर तांई निभावणी मीं आवे। थोड़ी देर पछे ई ज म्हूं तो नानी रे लारे पड़ गियो 'नानी, कैणी के' नानी, कैणी के! दो दांण चार दांण कियो जतरे तो कोई सुणाई व्ही मीं। मां बोली, 'उतावळ मत कर, बाजी खतम व्हेवा दे।'

म्हें कियो, 'मीं मां, बाजी पाछे खतम करजो, पेलां तो नानी ने कैणी केवा दे।

मां तास रा पत्ता फेंक न बोली, 'जाओ, बाकी, कुण ई रे लारे माथो पीतो करे।' अबर मन में मां थोड़ी ज सोची व्हेला, 'मारा रे तो भाजे मास्टर मीं आवे, मारां तो भाजे ई तास लेम लेवां।'

म्हूं नानी रो कांवट्यो खेन्चा खेंचा बिछावणा पे लेग्यो र पेला तो तकिया रे विराट म, पगां ने पछाट म, बिछावणा पे लोट म मन री खुशी दरसावणी रियो,

पछे बोलियो, 'नानी केणी केवो नीं।

बारे झमाझम झमाझम छांटा पड़ रिया। नानी मिसरी घोळती बोली, 'एक हो राजा, बी रे ही एक राणी—

ग्रोह, थाई चोखी व्ही नी तो एक मानेतण ग्रर कुमानेतण राणी रो नाम सावतां ई छाती धड़का करवा लागे। पैलां ई जाण जातो बापड़ी कुमानेतण राणी पै दुख ग्रावा वाळो है। जीव जाणवा ने ग्रागतो व्हे जावे देखा कांई व्हे, कांई दुख ग्रावे।

जदी सुणियो के ग्रठे कांई दुख री वात नी। राजा रे कोई बेटो नीं हो जो राजा घणां दुखी रेवता, दान कीधा, वरत कीधा, जप कीधा, ग्रबे तप करवा रो ग्रोसरो ग्रायो। वन में तपस्या करवा ने चालिया। ग्रबे जाय न जीव सोरो व्हियो। म्हारी समझ मे बेटा रो नी व्हेणो तो काइ एड़ो दुख री वात नीं। हां, ग्रतरीक जरूर जांणतो के वन में जावा री जरूरत ग्राय पडे तो बस मास्टरजी सूं पिंड छुड़ावा ने भलाई ग्रावो।

राजा, राणी ने ग्रर एक छोटी सी बेटी ने छोड वन में तप करवा चालिया। एक बरस व्हियो, दो बरस व्हिया, यूं करतां बारा बरस व्हेय गिया। राजा नीं ग्राया।

ग्रठी ने कंवरी सोळा बरसां री जोधजवान व्हेगी। परणवा री ग्रोस्था ग्राई। पण राजा तो नीं ग्राया।

बेटी ने देख देख राणी तो ग्रंन पाणी छोड 'दीधा म्हारी एड़ी सरब सुलखणी कन्या कुंवारी ज जमारो काढेला कांई? हे भगवान, म्हारा परालबध में कांई लिखियो है।'

छेवट में राणी राजा ने हाथ जोड न कंवायो, 'म्हने राजपाट, ग्रन्नधंन कांई नीं चावे। ग्राप एकदांण म्हेलां पधार म्हारे ग्रठे जीमलो।'

राजा हामळ भरी 'ग्राच्छो।'

राजा ग्राया। राणी तो वी दिन घणी चतराई सूं तेरा तींवण छप्पन भोजन बणाया। कंचन रा थाळ, रतन कटोरिया में जीमण परूस्यो। चंदण रो पाटो ढाळियो। कंवरी ने हाथ मे चंवर दे ऊभी कर दीधी। राजा ग्राज बारा बरसा सूं म्हेलां मे पग दीधो। कंवरी रा रूप सूं म्हेल जगमग कर रियो। राजा कन्या रो मूंडो देखता रेगिया, जीमणो भूलगिया। राजा पूछियो 'राणी, या सरब ग्रंग सोना री साट जेड़ी किण री कन्या है।'

राणी बोली, 'राजा, या तो थांरी कन्या है।'

राजा ग्रचंभा मत व्हेगिया, 'ग्ररे, सांची! म्हूं ग्रतरीक छोटी ने मेलगियो,

या अतरी मोटी व्हेगी।'

राणी नीसासो भरियो, 'हां, राजा, वा कांई काल री बात थोड़ी है। थांने गियां ने तो पूरो जुग बीत्यो, बारां बरस व्हेगिया।'

राजा पूछियो, 'ई रो बियाव नीं कीधो ?'

राणी बोली 'थां तो हा नीं। बियाव कुण करतो ? वर हेरवा ने म्हूं जावती कांई ?'

सुणताई राजा मखरायगिया। बोलिया, 'राणी, सोच मत करो काले ई कंवरी रो बियाव रच दूंला। दिन ऊगतां ई जिरो मूंडो देखूंला वीं रे लारे ई परणाय दूंला।'

कंवरी चंवर कर री, वीं रा हाथ री चूड़ियां खण खण कर री। राजा जीम चूट कीधो।

दूजे दिन राजा सूता ऊठ गाम बारे निकळिया। आगे एक बामण रो बेटो बांकड़ में छाणां बींणवा आयो। बरस सात आठेक री उमर व्हेला।

राजा हुक्म दीधो, 'ई लारे कंवरी रो बियाव करदो।'

राजा रो हुक्म कुण टाळे। वीज बगत आगा लीना बाम कटाय कंवरी ने बामन रा बेटा लारे फेरा खवाय दीधा।

अठा तक सुणता सुणता म्हूं नानी रे लिपट ने बैठ गियो। म्हारा मन आगे जाणवा री आस री, हां नानी, पछे ? बामण रा छाणां बीणणियां भागवान छोरा री जगा म्हूं व्हेतो या इच्छा म्हारा मन में कियां नीं आवती ? वीं बगत [illegible] पड़ती रात ही। घर रा कूंणा में टम टम करतो दीवो बळतियो मच्छरदानी में बैठो नानी धीमे धीमे कैं'णी कैय री। वीं बैठा म्हारा बाळक मन री [illegible] कूंटां में या तसवीर किया नीं आवती के म्हूं ई एक दिन यों [illegible] राजा रा देस में [illegible] बारे छाणां बीण रियो हूं। अचाणचक [illegible] कंवरी रे लारे म्हारा फेरा फिर गया। वीं रा माथा री मांग में सिंदूर हुं, कानां में करणफूल लटकिया, गळा में चन्दर हार, हाथ में हाथी दांत रो चूड़ो, कमर में करधनी। म्हेंदी सूं रचियोड़ा पगां में छमाछम [illegible] रुणझुण बाजरिया।

[illegible]

१६

रा बेटा लारे कराय केणी लिखणियो जरूर जात पांत रे खिलाफ परचार कर रियो है। केणी वाचणियां, सुणणियां एड़ा भोळा नीं है, जो कैवे ज्यो मान लेवे। वे अखबारां में आलोचना करता। ई ज वास्ते तो म्हूं चित मन सूं भगवान ने अरदास करूं के हे भगवान, 'नानी, दूजा जनम में नांनी व्हेय नीं ज जनम लीजो। थीं रा करमहीण दीयता री नाई लेखक री जूण मे मत जनम जो।'

म्हूं घणो राजी व्हेय कापते काळजे पूछियो, 'हां, नानी, पछे?' नानी केवा लागी—

'पछे कंवरी चित भंग व्हे छोटा सा बींद रे लारे परी गी। घणी दूरी, दूजे देस जाय कंवरी नो खंडियो म्हेल चुणायो। वठे छोटा सा क बींद ने पाळ पोस मोटो करवा लागी।'

म्हू थोड़ो अठीने वठीने लौट, तकिया ने काख में घाल, छोर सूं दबाय न पूछियो, 'पछे?'

नानी कंवती गी—

'पछे वो लड़को पोथियां हाथ में ले पौसाळ जावा लागो। पिंडता कने पढ़वा लागियो। पढता विद्या सीख गियो। बामण रो बेटो मोटो व्हेगियो। वी रे साथे पढणिया गोठी पूछे, 'नो खंडिया म्हेल में रेवावाळी थारे काई लागे?'

वीं ने खबर नीं के कांई लागे। कोई जुवाब बामण रा बेटा सूं नी देवणो आयो। वी ने थोड़ी थोड़ी याद आवती। वो छोटोसोक टाबर हो। एक दिन राजा रे दरवाजा बारे छाणां चुगवा ने गियो। छाणा चुगरियो हो पछे कजांणा कांई व्हेयो। पछे कांई व्हियो याद नी। घणा दिनां री वात व्हेगी।

चार पांच बरस यूं ओजूं बीत गिया।

साथे पढणिया बाळ गोठिया पूछे, 'वा नो खंडिया म्हेल में रेवे जो थारे कांई लागे?

बामण रो बेटो विलख्योड़ो पौसाळ सूं घरे आयो। कंवरी ने पूछियो, 'म्हारा साथीड़ा, बेलीड़ा म्हने रोज पूछे के नो खंडिया म्हेल में रेवावाळी थारे कांई लागे। म्हने बता थूं म्हारे कांई लागे?' कंवरी बोली, 'आज नीं कंवूं, पछे बताऊं।'

रोज राजा री कंवरी यूं कैय टाळ दे।

यूं चार पांच बरस ओजूं निकळ गिया। छेवट में एक दिन बामण रो बेटो रोस कर न बोलियो, 'आज जो थें नीं बतायो के म्हूं थारे कांई लागूं तो म्हेल छोड़ न परो जावूं।'

राजा री कंवरी बोली, 'थाने थांने जरूर बताय दूं ला।'

दूजे दिन बामण रे बेटे पीमाळ सूं आवनांई पूछ्यो, 'बना, थूं म्हारे कांई लागे ।'

कंवरी बोली, 'आज संध्या रा थां जीम न पोढोला जदी बताऊं ।' बामण कियो, 'वा ।' अबे बेठो वो घड़ियां गिणे कदी दिन आंथे कदी वतावे ।'

राजा री कंवरी सोना रा हिंगळाट पें, घोळा फूलांरी सेज बिछाई, सोना रा दीवा में तेल भर न संजोयो, मायो गूंथियो, केसरिया मखमल पेर, सोळा सिणगार कर बाट नाळे कदी दिन आंथमे ।'

रात पड़ी बामण रो बेटो जीम न सूणेट री ओवरी में आयो । हिंगळाट पें आय ने सूतो । मन में सोचिरियो, 'आज वैरो पड़ेला ईं नौ खंडिया म्हेल री रूपवंती नार म्हारे कांई लागे ।'

राजा री कंवरी पति रा परसाद रो थाळ खाय वठे आई । आगे देखे तो बामण रो बेटो मरियो पड़ियो । फूला मांयनूं सांप निकळ बीने डस लीघो जो मरगियो । मृत देह सोना रा हिंगळाट पे फूलों री सेज पे पडी । सुणतां ई म्हारो काळजो घड़कतो थको, जाणें ठम गियो ।

रूम्भ्या गळा सूं उदास व्हेन पूछ्यो, 'पछे कांई व्हियो ? नानी वेंवा लागी । पण अबे उण री जरूरत कांई है, या तो ओर ई अणव्हेणी बात है । केंणी जिण रे गेल ही वो तो सांप रा डसवा सूं मर गियो । फेर ई 'फेर' ? जा दिनां म्हूं टाबर हो, जाणतो ई नी, के मरयां पाछे ई कोई 'फेर' व्हे । वीं 'फेर' रो जुवाव तो नानी कांई नानी री नानी आय जावती तो ई नीं देवणी आवतो । विस्वास रा जोर माथे सांवत्री, जमराज रो लारो कीघो । टाबर रो विस्वास ई मजबूत व्हे । ईं वास्ते वो ई मरियोड़ा नायक ने पाछो जीवावणो चावे । नींठ नींठ तो या रात मांई जिमे मास्टर सूं पिंड छूटियो । उण रे समझ में ई नीं आवे के इतरा सौक सूं वेंवाई केंणी अचाणक साप रा डस जावा सूं खतम व्हे जावे । जदी तो नानी ने केंणी पाछी मोड़ ने लावणी पड़े । केंणी ने अर केंणी रा नायक ने सरजीवत करणो पड़े ।

पण वो काम अनरो आपे आप व्हे जावे के भमझम करती वरखा री रात में टम टम करता दीवला री जोत में या कजा ई डरावणी नीं रे वे । अबे कजा कजा कठे री । केंणी रो नायक जीवतो व्हे जियो । केंणी आगे चालगी, सुणता सुणता टाबरिया री आंखडलियां में नीदड़ली घुळगी । नानी रा माळ्ना, परियां रा देस रा सपना देखता सोयगिया । पछे परभात री सोळी लेहरां हुलराय हुलराय जगाय दे ।

टाबर पणां में सात समंदर पार जाय, काळ ने जीत ने जठै कै'णी खतम व्हेती वठै मोटा सुर में गुणता हा,

इत्ती कांणी, बोदी राणी।
बूझ बूझक्कड़, चूल्हा में लक्कड़।
चूल्हा चूल्हा माथे चक्टी।
नान्हा री सासू नकटी।

अबे और वात व्हेगी। अबे कैणी रे बीचां बीच कोई करड़ो कठोर कंठ सुर सुणीजै।

बस, इतनी ही कहानी, लेखक की नानी।
लेख लिक्खकड़, माथे पे लक्कड़।
माथे पे चक्टी, लेखक की............

बस, भाई! अबे आगे नी कैवा। कजाणा कोई आप रे ऊपरे वात घटाय ले तो?

छुट्टी

गांम रा छोरां रा सरगणा फटिकचन्द्र ने एकणदम एक नुवी कुलंग सूझो । नंदी रे तीर माथै सांखू रा रूंख रो एक मोटो लट्ठो पड़ियो । नावड़ा रे मस्तूल वणावण खातर राख मेलियो हो । छोरां सोची ईं ने नंदी में बैवाय दां ।

काम पड़ेला जदी घर धणी ने लट्ठो अठै नीं लाधेला जदे उण ने केड़ीक अचंभो आवेला, केड़ीक रीस आवेला वीं वगत रा मजा रो मजो लेवतां छोरां ने फटिक री वात आसे आयगी । कमरां बांध, पट्ठा उच्छाव सूं काम करण ने त्यार व्हेगिया । अतराक में फटिक रो भाई माखणलाल, टावो मूंडो कर लट्ठा पै जाय न बैठ गियो । वीं ने रंग में भंग करतां देख दूजा छोरा दबक गिया ।

एक छोरे धीरे धीरे वीं रे कने जाय धक्को दे दीधो पण माखण हाल्यो नीं । चारूं कानी छोरां वळावळी ने परो ऊठवा ने कैयरिया पण वो यूं रो यूं खैर रा खूंटा री नांई बैठ्यो रियो । वीं री आमंग नीं पड़ी के उठाय दे ।

छेवट में फटिक डोळ काड न बोलियो, 'देख, ऊठ जाव नीं तो मार खाय ।'

माखण और ई चत्तो जम न काठो बैठियो ।

अबै फटिक रो धरम व्हेगियो के डंड देवे । फौज रे मूंडागे, फौज रा आफी रो सिपाई हुकम टाळ दे तो पछे राज किया चाले । मालड़ा पे धम्मड़ मारणे री फटिक विचारी पण छाती नीं पड़ी । वीं एड़ो मूंडो बणायो जाणे, वीं रो मन व्हे तो अबारूं माखण रा हाड़किया भांग राळे पण चाह कर न भांग

नीं रियो है, वीं ने दूजी एक अछूती रम्मत सूझी है जो वा रमां। वीं अछूती रम्मत बताई के मांखण सूधी लट्ठा ने नंदी में गुड़काय दां।

माखण जाणियो, ईं में तो वीं रो मोर ई मड़दपणा है। पण वी ने या नीं सूझी के ईं मड़दपणां रे लारे लारे नंदी में पधार जावा री जोखम ई है।

छोरां तो वांध कमरो न गुड़कावा लागा, 'हां, मड़दा, थोड़ो ओर, सावास मोट्यारां।' लट्ठ गुड़ियो नीं खाधो जठां पैली माखण ऊंधे मूंडे धम्म।

रम्मत सरु व्हेतां ई कस्योक मजो आयो, छोरा राजी व्हिया। फटिक थोड़ोक घबरायो। माखण तो पड़ियो पछे उठियो पैना, फदकतां ई फटिक रे झूम गियो। हाथां मारे दांतां खावे, गालड़ा लवूर लीधा। रोवतो रोवतो घर रो गेलो लीधो रम्मत खतम व्हेगी।

फटिक थोड़ीक कांस उपाड़ ले आयो। एक नाव आधीक पांणी में डूब री जिरी कोर पे बैठ गियो, कांस चावबा लागो।

मनराक में दूजा गाम रो एक नावड़ो आय घाटे लाग्यो। वीं माय सूं एक अधवड़ आदमी उतरियो, मूंछ्यां वाळो, माथो धोळो हो। वो फटिक ने पूछ्यो, 'चक्रवर्तियां रो घर कठीने है रे, छोरा ? कांस चावते चावते वीं कियो, 'वो रियो।', पण वीं कठीने बतायो जिरी ठा नीं पड़ी।'

वीं पाछो पूछियो, 'कठीने है ?'

पडूत्तर मिनियो, 'म्हनें खबर नीं।' पाछो कांस चावबा लाग गियो।

पैलारयु बापड़े ओर कि दूजा ने पूछ डिकाणे पूगियो।

थोड़ीक ताळ व्ही न, घर सूं आवर माय न बोलियो, 'फटिक! मां बुलाय रिया है।'

फटिक बोलियो, 'नीं, आवूं, था।'

पण बाघो पूरो आय हो, वीं जीभ री लागानोळ नीं कीधी, पकड़नां ई बांधटिया, सोळपां पे लटकाय, चालतो व्हियो। फटिक रीस कर हाथ पग पछांटतो ई रैगियो।

फटिक ने देखताई मां रीस करवा लागी, 'फेर थें माखण ने टोकियो ?'

फटिक बोलियो, 'म्हें नीं टोकियो।'

'फेर कुण कोने।'

'म्हें नीं मारियो। पूछलो वीं ने।'

'माखण ने पूछियो तो वीं पैला वाळी सिकायत दुहराई हो, मारियो।'

अबे फटिक सूं नीं रैवणी आयो। धमक न माखण रा गालड़ा माथे थोक न एक रैपट री मारी, 'फेर कूड़ बोलरियो।'

गा, माखण रो पुखण सीधो फटिक ने जोर सूं मंझेड़ न्हाकियो दो र तीन धंगणा मूं डा पे मारी तो फटिक मां ने पाछो धक्को देय दूरी कर दीधो।

मां बरळाई, 'हैं, थूं मां रे साम्हो हाथ करे।'

मतराक में वो आदमी माय पूगो जो नावड़ा सूं उतर फटिक ने चक्रवर्तियां रा घर रो गैलो पूछियो हो। घर में वळना ईं पूछियो, 'हैं, यो कांई व्हेय रियो है ?'

फटिक री मा अचंभा सूं भर आणंद में भर न बोली' अरे ये तो भाई आय गिया, कदी आया भाई ?' भाई रे हाय जोड़िया।

घणां दिना पैलां फटिक रो मा रा भाई पच्छम कानी वारे चाकरी पे गिया हा। पाछा नूं फटिक री मां रे छोरा ई व्हेगिया न मोटा ई व्हेगिया। पाछलो छोरो व्हियो न थोडा दिनां पछे वी में दुख आय पड़ियो। विधवा बैन सूं मिलण ने एकदांण ई भाई नी आया हा।

आज बरसां सूं छुट्टी लेय, विसंभर बाबू बैन सूं मिलण ने आया। थोडा दिन रिया, आळछोल मे निकळ गिया। जावा लागा जदी विसंभर बाबू बैन ने छोरा री भणाई पढाई सांऊ पूछियो तो ठा पड़ो के फटिक तो घणो नसरड़ो, जी भायनो व्हेगियो। भणे न पढे। नान्हकियो माखण स्याणो, सूधो है। आखर वांदवा मे ई जीव लागे वी रो तो।

बैन बोली, 'फटिक तो म्हारा काळजा बाळ न्हाकिया।' सुण न विसंभर कियो, 'फटिक ने म्हू म्हारे लारे लेय जावूं वठै कलकत्तो ई भणावूं।'

वा भटदेणी री राजी व्हेयगी, फटिक ने पूछियो 'क्यूं रे फटिक, मामाजी सागे कलकत्तो जाय ?'

फटिक तो फदकवा लागी 'हां जावूं।'

यूं तो फटिक री मां ने कलकत्तो भेजण में अवकाई जेडी बात नीं ही। वीं रा मन में संका बैठयोड़ी ही के कठैई यो फटिक, माखण ने किं दिन नंदी में नीं धक्को दे दे। कठै ई मायो नीं फोड़ दे कै कोई और कुचमाद नीं कर दे। पण तो ई कळकत्तो जाणं रा नाम सूं वीं रो मन भारी व्हैग्यो। वठो ने फटिक 'मामाजी कदी चालो, मामाजी कदी चालो' पूछते पूछते मामाजी ने बाया कर दीधा, एड़ो हरख चढियो के नींद नीं आवतो।

कलकत्तो जावेरे पूगतांई फटिक ने मामीजी मिल्या। परवार में आगे यूं ई तीन छोरा हा। पटता में पूरो व्हेवा ने यो एक और बधियो, मामीजी ने यूं मानो। वां री गिरस्यी लीक लोक पे चाल री ही, बीचे एक तेराक बरस रा

मणियो। विसंभर अतरी ऊमर लेय लीधी पण लखण नीं आया।

सांच पूछो तो तेरा चवदा बरस रा टाबर सूं बत्ती कोई आफत नी। या ऊमर ई एड़ी व्हे के नीं तो उण सूं कोई सोभा ई व्हे नीं कोई वो काम रो व्हे। नीं तो वीं रा लाड ई आवे, नीं वींरे सागे कोई वातां चीतां रो ई मजो आवे। जो वो थोड़ो तोतळाय न बोले तो लागे इतराय रियो है। जो गैहरा साद सूं टाबो बात करै तो लागै बडां बूढां री देखादेखी कर रियो है। उणरो बोलणो ई बकवाद करणो है। बोलवा में ई कांई, गाबा छीतरा री भाड़ी सूं ई वो गोभियो है। पंदरा काट न गाबा सीवावो, वो लड़ाक देणी रो लाबो बधे एकदम, गाबो आवे ई नीं। टाबर रा मूंडा पे भोळापणो रेवे जो तो खतम व्हे जावे, कएठ भारी पड़ जावे जो लोगां ने कजाणां कस्यो रो कस्यो लागे। बाळपणां री अर जवानी री तो कतरी खोडां ने माफी बगस दीधी जावे पण ई उमर वाळा री मामूली खामी, मोटी व्हे न दीखे।

देखवा वाळो ई ज नी खुद ई उमर रो टाबर ई मन मे अणमणो रेवे के वो कठै ई टीक बंचे ई नीं। नी टाबरां में नी बडां में। मन में आपरी हस्ती पे वो खोटाखो करे। एक गोभणो और है, ईं औस्था मे बाळक रा मन मे घणो ऊमायन रेवे के कोई वी रा लाड राखे। जो कोई भलो मिनख वो ने हेजाय लेवे लाड करे तो वो हुकम रो ताबेदार बण जावे। पण व्हेवो कांई करे के कोई वीं रा लाड प्यार करे नी, यूं जाणे के ई औस्था मे लाड लडावणो तो माथै चढावणो है। व्हे कांई के बाळक आपने बिना धणी धोरी रो गळी रो गेडकड़ो समझवा लाग जावे।

एड़ी हालत में, मां रा घर री जगां ने छोड़ न दूजी जयगा तो नरक जेड़ी व्हे जावे। कठी ने मूं ई वीं ने मोह नी मिले जो काळजा में करोळां चालती रे। ईण औस्था वाळा ने लुगाई जात, सुरग लोक री परी अमोलक वसत दीखै। ई वास्ते जे कोई लुगाई उण रो अणादर कर दे तो घणो ई ज दुख व्हे।

मामी रा नेणां में फटिक सारू कोई अपणायत नी ही, वो तो खारो लागतो। फटिक ने ई ण बात री अबकाई घणी आवती। कदी मामी हेतो पाड़ न कोई काम भळाय देवती तो फटिक री छाती चौड़ी व्हे जाती। हरख ई हरख में दूणो काम कर देतो। पण मामी वीं रा हरख ने ठएडो कर देवती, 'वा घणो, वा कएो, रेवा दो, जावो, पढो।' फटिक ने लागतो, मामी रो यो जुलम है।

घर रे मांयने तो अाव आदर हो ई नीं, भाग सूं बारे ई कोई जगा एड़ी नी कठे दो घड़ी मन ने मोळावे। और नीं तो दो घड़ी जीव भर न खाळो ई वाले। घर री भींतां रा जेळखाना में रेवतां रेवतां वीं ने आपणो गांम चेतां आवो। वीं गांम ने चीतारतो रेवतो जिमें कनूक न, पणा कोट सूं सहर में

पँइसो बगाड़ रियो है वो। वीं ने मां बाप पै गुमान ई आयो न रीस ई आई। बाप री दसा पै वो लजाय गियो।

स्कूल सूं आवता ई फटिक रो मायो दूखवा लागो, माय नूं जीव अमूजवा लागो। वीं ने लागियो ताव आय रियो है। मन में यो ई सोच आयो के मांदो पडगियो तो मामी रा जीव ने खोशियो व्हे जाय। वीं री मांदगी, मामीजी रा जीव ने कसी सालेला जो वो जांणतो हो। मांदगी में उण जेड़ा फटोळ, मूरख, नवरा छोरा री चाकरी, मां सिवा दूजी जणी कुण करै। दूजी जणी सूं चाकरी करावा जोगो वो है ई कठै।

दूजे दिन फटिक तो भाग गियो। एड़े मेड़े पाड़ पोड़ोस रा घरां में खबर कं धी, कठे ई नी लाधियो।

उण दिन, रात री बरखा बरस री ही, मोजूं धार खांडी नीं व्ही। सावण भादवा रा मेह री नांई जम न बरस रियो। वीं ने हेरता मिनख भोज्या, हकनाक ई हैरान व्हिया। कठै ई नी लाधो तो छेवट में विसंभरबाबू जाय थांणा में रपट कर दीधी।

आखो दिन यूं ई निकळियो। सांझ रा एक गाडी विसंभरवाबू रे घर रे बारणे आय न ठमी। बरखा यूं री यूं बरस री ही, गोडा गोडां तांई गैला में पाणी भरियो हो।

दो सिपाया भेळा व्हे न फटिक ने उतारियो, चोटी सूं लगाय ने एडी तांई पांणी सूं भींज रियो हो, आखो डील कादा सूं लथपथ व्हेय रियो मूंडो र आंखियां लाल चट्ट व्हेरिया। सी सूं थरथर धूजरियो। विसंभरवाबू दोई हाथां में तोक न म्हांयने लेय गिया।

मामी देखता ई फुणकारो कीधो, 'क्यूं पराया टाबर ने राख दुख मोल लेयरिया हो। भेज दो परो ई ने ईं रे गाम।'

विसंभर आखो ई दिन चिंता फिकर करता रिया, कांई खाधो पीधो नी, भ्रळ में आप वांरा टाबरां पै चिड़ता रिया।

फटिक रोवते थके कियो, 'म्हूं तो मां कने जायरियो हो। ये धींगाणी म्हनें पकड़ न ले आया अठै।'

औचवोच ताव में पड़्यो रियो, आखी रात सीतांगी वातां करतो रियो। विसंभरबाबू डॉक्टर ने बुलाय लाया।

फटिक एक'र राती राती आखियां खोल, न छात साम्हो टकटकी लगाय न पूछियो, 'मामाजी, म्हारी छुट्टी व्हेगी कांई?' विसंभरबाबू अंगोछा सूं आंसू पूंछ ने, ताव में बळता बाळक रा मवळ्या हाथ हेत सूं गोद में राख न बैठिया रिया।

फटिक वळे बड़बड़ावा लागो, 'मां, म्हने मार मती म्हैं कांई नीं कीधो।' दूजे दिन, थोड़ो दिन चढ़ियां, थोडीक ताळ सारू फटिक ने चेतो आयो, कणांई कि ने देखवा री उम्मेदवारी में घर रा कूणां कूणां ने आंखियां फाड़ न देखवा लागियो। नफाफड़ व्हे, आस छोड़ भींत आडी ने मूंडो फेर न सूयगियो।

विसंभर बाबू वीं रा मन री बात ने भटकळी, कान रे कड़े मूंडो लेजाय न धीरेकरा, मिठास सूं बोलिया, 'फटिक बेटा' थारी मां ने बुलाई है, आती व्हेला।'

दूजो दिन ई यूं ई निकळ गियो। डॉक्टर उदास व्हेय, फिकर करतो बोलियो, 'ढंग ढोळ फोड़ा है।'

विसंभरबाबू टमटम करता दिवला रा चांनणा में, माचा रे कनें बैठ फटिक री मां रे आवा री बाट देखरिया।

फटिक जहाज रा खलासियां री नांई बांरी राग में बड़बड़ाय रियो, एक बांव मिला नीं, दूजा बांव मि-ला-आ-आ-नी। कलकत्ता आवती वेळा थोड़ी दूर वो स्टीमर में चढ़ियो हो। स्टीमर रा खलासी पांणी में रस्सी न्हाक थाग री राग में पाणी मापे। सन्निपात में पड़ियो फटिक ई खलासियां री नांई, करुणा भरिया सुर में पांणी माप रियो हो। जिण अथाग समंदर में वीं रो जीवण जहाज, डूब रियो हो, वीं समंदर में वीं ने थागो नीं मिल रियो हो। डूंगरा बादळा री नांई फटिक री मा घर में बड़ी। गळो फाड़ कूकाई। विसंभर घणी दोरी वीं नै डाडां मारती ने रोकी। लाडला लाल रा माथा माथे भाप खाय न पड़गी, रोय रोय हेला मारवा लागी, 'फटिक रे, म्हारा लाल रे, म्हारा सुवा रे।'

फटिक आंखे घणो सोरे ई हेला रो पुकार दीधो, 'हूं ?'

मां पाछो कियो, 'फटिक रे, बेटा, म्हूं आयगी।'

फटिक धीरे धीरे पासो फेरो, किण ई मानखा सांम्यां बिना, धीमे धीमे, दनियोड़ा कंठ सूं बोलियो, 'मा अबे म्हनें छुट्टी व्हेगी। मां, अबे म्हूं घरे जाऊं, मां।'

रो मोटो बेटो, भवानीचरण सूं एक बरस मोटो हो। काका भतीजा रे बाप म्हीनां री लौड़ बराई ही, श्यामाचरण आप रा बेटा रे लारे माई मां रा भवानीचरण नै ई मोटो करवा लागा। श्यामाचरण मांई मां रा गुजारा रा पईसा नै नीं भींटतो। बराबर विगालिया विगालिया रो हिसाब बनाय, पईसा सूंप, मां रा हाथ री रसीद लेय लेवता। जणों जणों वां रा भलापणां रा सराणनां करतो।

सांची पूछो तो घणां जणां ई भलापणां नै भोळापणो समझता। वां री आंख में फोवट ही या सफाई। बाप दादा री कदीमी जागीर रो हिस्सो एक दूजी लुगाई रा हाथ में सूंपणो, गांमवाळां रा मन में नीं भावतो। जै सफाई रो हाथ बताय श्यामचरण वीं लिखापढ़ी ने उड़ाय देता तो सांचाणी वांरी तारीफ करता आड़ोसी पाड़ोसी। एड़ा भला काम में सल्ला देवणियां रो ई टोटो थोड़ो ई पड़जातो। पण श्यामाचण आप रा कदीमी हक हकूकां नै छोड़, मांई मां रा गुजारा री जागीर नै कायम राखी।

कि तो ई भलापणां सूं अर कि माई मां रो सुभाव ई भलो हो। मांई मां ब्रजसुंदरी, श्यामाचरण पै पूरो भरोसो राखती, बेटा ज्यूं जांणती। टका टका रो हिसाब देवा लागतो जद कदै ई कदै ई वा नाराज व्हेय न ओळमो देवा लाग जावती, 'यो थांरो म्हारो कांई है बेटा अतरो? म्हूं कसी जागीर नै लारे बांध न ले जावूं। है जो थांरो ईज है।' पण श्यामाचरण तो हिसाब देवा में र रसीद लेवा में कदी ढील नीं कीधी।

श्यामाचरण आप रा बेटां पै पूरो आंख राखतो। पण भवानी नै आंख रे सणकारे कदी कांई नीं कियो। मिनख कैवता, देखो, है तो मांई मां रो पण आपरे पूतां सूं सवायो लाड़ राखे। ईं रो फळ यो निकळियो के भवानीजी ठोठ रे गिया, काम काज कांई आयो नी, पराया सारे जमारो बीतावा जोगा रै गिया। लैण देण, जागीर रा काम रे तो वां हाथ ई नी अड़ायो। बारा म्हीनां में दो चार दांण रसीदां पै दसगत करणो पड़ता जो दसगत कर न फारिग व्हे जाता। दसगत क्यूं करणां पड़े? आप कदी ई वात पै सोचियो ई नी। सोचवा ई लारी तो समझ में तो आपरे आवा ने हो।

अठी श्यामाचरण रो मोबी पूत तारापद बाप रे लारे काम काज करतो जो पूरो फरवट व्हे गियो काम में। श्यामाचरण रे फौत व्हेतां ई तारापद भवानी नै जाय कियो, 'काकाजी, अबै आंपारो भेळो रैवणो ठीक नीं। कूण जांणे कदी कोई वात पै भोड़ पड़ जावे। आपसरी में लड़ा झगड़ा तो मूंडा लागां। घर सळविसळ व्हे जावे। थांरो म्हारो रूपाळो ईं में ईज है के राजी राजी, भरिये भरम न्यारा व्हे जावां।' भवानी तो सात भव में ई नीं सोचियो के बीने न्यारो

व्हेणो पड़ेला। जागीर अवेरणी पड़ेला। वो तो जांणतो जि घर में जामिया, पळिया, पोस्या, मोटा व्हिया वो घर ई कदी बंटी जे के। घर माय ने ई कोई साचो है कांई जो दो बंट व्हे जाय। नवी हरकत सूं हैरानगत व्हेगिया। घरांणां रा नाम कुनाम री ग्रोलज ग्रर लागती विलमती वाळां रा रोवणां झीकणां ने तारापद गनारिया ई नी। वो तो न्यारो व्हेवा ने ग्रडग रियो। भवानी ने झकमार न पांती रा झगड़ा टंटा पै धियान देवणो पड़ियो। उणां री चिंता देख तारापद ग्रचंभो कर न बोलियो,

'काकाजी, पांती तो व्हियोड़ी है, दादाजी जीवते जीव पांती हाथां सूं कर गिया।'

ग्रकल गमगी व्हे ज्यूं भवानी बोलिया, 'हैं ? पांती व्हियोड़ी है ? म्हनें तो कांई ठा ई नी।'

तारापद बोलियो, 'गजब करो। जाणों कोयनीं। दुनियां जांण री है ग्रालंदी रो इलाको, बाबाजी ग्रापरे हाथ सूं थारे काढ गिया हा के पाछा नूं राड़ झगड़ो नी व्हे। बराबर थां भोगता ग्राय रिया हो वी ने।' भवानी सोचियो, व्हेला यूं ई, पूछियो, 'म्हां रेवाळा कस्या घर मे ?' तारापद कियो, 'थांरी दाय ग्रावै तो यो ग्रांपां रेवतां ग्रायां वो घर राखलो। सहर मे कोठी है बीं मांयने म्हाको गुजर चलांवां।' भवानी ने तारापद रा ऊरळा मन पै साम्हो ग्रचंभो ग्रायो। देखो, बाप दादां रो घर छोड़वा ने राजी है। सहर रो कोठी नीं तो वा देखी नी वीं सूं ममता ई ही भवानी नें।

भवानी जाय न मां ने यो तसफियो सुणायो तो मां छाती में धमेड़ो मार लीधो। 'केड़ी गेली वात करे। ग्रालंदी री जागीर तो म्हारा गुजारा री ही, उण सूं थांरो कांई लेणो देणो, वीं री तो ग्रामद ई नाम मात्तर री है। बाप दादां रा घर में थारी पांती नीं है कांई ?'

. भवानी बोलिया, 'तारापद कैय रियो के दाता ई रे सिवा ग्रापां ने कांई नीं दीधो।'

व्रजसुंदरी बोली, 'कुण केवे ? थारा दाता वसीयत री दो नकलां कराई, एक म्हारा कलमदान में पड़ी है।'

कलमदान खोलियो, वो में ग्रालंदी री जागीर रो तो पट्टो हो पण वसीयतनामा रो पतो ई नीं। कोई काढ लीधां दीसतो।

सल्ला सूत करवा लागा। पिरोतजी रा बेटा बगलाचरण पधारिया। सगळो गांव कैतो के यो ग्रकल रो उजीर है। वां रो बाप तो देता गांम ने मन्तर, बेटा म्हेंगिया मन्तरणा देवणिया। बाप बेटा मिल न ई लोक री र परलोक री

भलाई री काम भेळ राखियो । दूजां री उपगार व्हो र मत व्हो माप रो कर ई दियो हो ।

बगलाचरणजी राय दीधी, 'वसीयतनामो लावो र मत लावो। बाप दादां रा मान में दोई भायां री बरोबर पांती व्हे ई में पूछणो ई कांई ।'

तारापद कनें एक वसीयतनामो निकळियो । जिमे भवानी री पांती में कांई हो ई नीं । सगळी जमीं जायदाद पोता रे नाम कर राखी ही ।

मुकदमा रा समंदर में बगलाचरण रे भरोसे भवानी नाव छोड़ दीवी। जमीन जायदाद, धन संपति री लेंगाळ व्हे गियो । भवानी मुकदमा में नांगा व्हे गिया, आलंदी री धणी खरी जमीन तो मुकदमा रा खरचा खाता में बाणिया रे घरे पुगी । थोड़ी घणी री जिमूं दाळ रोटी भतां ई धानो । जूनो घर रेग्यो जो ई भवानी जाण्यो भलो भाग । ई ने मोटी जीत जांणी । तारापद कबीला ने ले सहर रा मकान में रैवा लागगियो । दोई कटूंब री भावण जावण खतम व्हेगियो ।

[२]

श्यामाचरण री यो धरमहार पणों ब्रजसुन्दरी रा हिवड़ा ने सालतो रैवतो । बाप रा वसीयतनामा री चोरी कर भाई रे लारे धोखावाजी तो कीनी ज पण बाप रै लारे ई विस्वासघात कीधो । जीवती री जतरे डोकरी निसासा भर भर कैवती री 'भगवान पूगेला' । भवानी ने ई दिलासा देती रैती, 'कानून न कवेंड़ियां तो म्हूं जाणूं नीं पर देख लीजे एक दिन थनें थारो वसीयतनामो मिलेला ।'

मां रा मूंडा सूं घड़ी घड़ी री आसा भरियोड़ी दिलासा सुण भवानी ने ई भरोसो आय गियो वसीयतनामो जावे कठे । मांपणो है तो एक न एक दिन मापां तीरे आयां रैवेला । आसा भरी दिलासा ई धणी ही तसल्ली करवाने। मां सती ही, सती री वावया फळेला ई ज, हक री चीज हकदार ने मिले ई, पक्को नेहचो हो भवानी ने । मां रे मरियां पछै तो यो नेहचो और पक्को व्हेगियो। मरियोड़ी मां री पुन भर तेज चौगणो व्हेय न उण ने दीसवा लागो । संगनंगी भर फोड़ा तो घणां पड़तां पण भवानी हियाणो नीं लीधो । केवो करता या हाथ री तंगी, लेण देण री खैचताण सदामद थोड़े ई रैवेला, दो दिन रा फोड़ा है निकळ जाय । पाछा मापणां ई दिन पावरा आय जद पाछा सैंग थोक व्हेला ।

जूनी पुराणी ढाका री धोवतियां फाटगी, मबे रेजा री जाडी धोवतियां मोलावणी पड़ी, पूजा रा उच्छव में ई सदामद थाळी खरचो कठा सूं भावतो, बंडू सच्ची चढ़ाय पूजा रा दस्तूर कीधा । कारू कमीण, आया गिया पांवणा पीर

नीसासा भर जूना जुग री वातां चलाई तो भवानी हंस दीधो। सोचवा लागियो यो ई जूनो जुग पाछो आय, यां ने कांई खबर के यो दो दिन रो खेल है। एड़ा धूम धड़ाका सूं पछे पूजा रो उच्छव मनाऊंला के देखवावाळा देखता रैय जाय। आगे आवणिया जमाना रा धूम धड़ाका ने वे एड़ा परतख देखता के आज रा हाल जमाना री तंगातंगी पे वांरी निजर ई नी पड़ती।

यां सपना देखवा में पक्को साथी हो वां रो खास हाजरियो नटवर। ठाकर न चाकर गरीबी गुजारता सलाह मसविरो करता के दिन पाधरा आयां पूजा रा उच्छव में कांई कांई खुसियां करांला। किने नूंता देवां किने नी देवा। कलकता सूं नाटक मण्डळी बुलावांला के नी, यां मुद्दा पे जोर रो आपसरी में झोड़ व्हे जातो। नटवर आपरी किपण आदत सूं लाचार उच्छव रा खरचा में काटापीटी करतो, भवानी चिरड़ जावता। नाराज व्हे रीस रोस व्हेवा लाग जावता। एड़ी परचावां चालती रैती।

धन दौलत, जमी जायदाद रो कोई एडो खास हेजको नीं हो भवानी रे। हां, मन में एक अणख जरूर आवती के पछे वीं जमी जायदाद ने भोगेला कुण। मळो रो पेट फाटियो नीं। परणावा जोग टाबरियां रा बाप, भवानी कनै भलो चावणियां वण न आवता, दूजो बियाव करवा री सल्ला देवता तो मन हालवा लागतो। नुवीं लाडी रो खास कोड व्हे जेड़ी वात तो नीं ही पण जूनी रीत रे मुजब अन्न, वस्त्र अर चाकर री नांई अळो ने ई रईसी रा महनाण मानता। रईसी तो घरे आता री आसा अर टावर नी व्हियां तो ? आवावाळी जमीं जायदाद ने बिलसवावाळा री भावना जरूर ही।

भगवान भली कीधी, बेटा रो मूंडो देखियो। जो देखो वोई कैवे, घर रा भाग पलट गिया जांणजो। बड़ा ठाकर सा अभैचरणजी पाछा आया है। वे री वे मोटी मोटी आखियां। वो ई ज ललाट। टावर री जनमपत्री देख जोसी कियो 'कुण्डळी में येहा रो एड़ो संजोग बैठियो के गयोड़ो राज पाछो घरे आयां बिना रैवे ई नीं।' बेटो व्हियां पछै भवानी रो सुभाव बदलवा लागियो। अवार तांई तो वे टोटा नफा ने माया रो खेल कैय मन ने भोळाय देवता पण अवे मन भोळावणी नीं आवतो। खानवाड़ी रा नामदार, ठाकरां रा ठिकाणा में बुझता कुळ रा दीवा, नामीं नम्बरां मे जलमियोड़ा सारू पईसो चावे के नीं? मोजूं तांई बराबर पीढियां सूं ईं घर में बेटा जनमिया वांरा लाडकोड वीं ज ठाठ बाट सूं व्हेता रिया। यो ई ज पूत एड़ो जनमियो जिण रा लाडकोड करणे री टाकरां में सामरथ कोयनी, आपरी या मजबूरी ठाकरा ने मांयनूं खावती रै। म्हारा खानदान री आदू मुरजाद लायक बेटा सारू कीं नीं कीधो। ठाकरां ने लागे जाणे

ज करणो व्हे जदी तो कांई बात नीं पण तेल लूण री उपाय करवारो काम ई रासमणि रो। ऊपरे छोगो यो के, रोटा खाय न पड़्या रेवण्या नंदा करे वां रोटियां री भर रोटियां रा देवाळ री।

रासमणि ने कोरा घर रो ई काम नीं करणो पड़ै। थोड़ा घणा खेत, बाड़ है जां री लेखो देणो, उगाही, हिसाब किताब ई करणो पड़े। लेवा देवा में आजकाले कसाकमी है जेड़ी कदी नी ही। भवानी रो पैइसो ठोक अभिमन्यु री उलटी विद्या जांणतो। यीं ने कढणो ई आवतो घसणो नीं आवतो वां मांगवा री तकाजो करणो, उगाई करणी तो सीख्यो नीं। पण, रासमणि उगाही रा मामला में एक छदाम छोड़वावाळी नीं। करसा आपसरी में बेठ रासमणि री खोटी खाता, काम करणिया कारमेंती सातावारो करता के छोटा घर री है, देखे बापरे जो करे आपरे। कदी कदी तो घर रो धणी बेराजी व्हे जावतो के यां मोड़ापणा सूं म्हारा ठिकाणां री आच्छी नी लागे। पण यां नंदा अर नाराजगियां ने रासमणि गनारती नी। आपरा ढंग सूं आपरो काम निबेड़ती रेवती सेंग बाता रा दोस माथा पै झेलती, मूंडा सूं मंजूर करती, 'भाई, म्हूं तो री छोटा घर री बेटी, थे राजव्यां री रीतां भाषा सो जांणां नीं।' घरा वाळां रे बारळा रे भलाई मारू में खटको। कमर रे खकोन खोदगा रो छेदड़ो ने लाग जावतो काम रे लारे। छाती किण री जो मूं डा पे आय न कांई केवे।

खावंद ने कदी कोई काम साव केवती नी, केवणो तो कठे ई रियो वीं ने तो आच्छो सोच लागियो रेवतो के कठे ई बीचे आप न काम काज में आप री थोड़ पंचायत नी करवा लागे। यूं ई वो उद्‌मो आदमी नी हो फेर रासमणि केवती रेवती, 'था रेवादो, म्हू सेंग काम निबेड़ लेवूं।'

: खावंदजी जलमरा ई परायो मूंडो जोवाणिया हा लुगाई ने घणों केवणो भी पड़तो। रासमणि री घणां बरसां तांई पेट नी मंडियो जो, भोळा सुभाव रा पराई खाटी खावणियां खावंद मूं उण री दोई तरे रो भूख, मां पणां री अर लुगाई पणा री भूख, निरपन व्हेती रेती। भवानी ने वो एक मोटो टाबर समझती। सासु रे मरियां पछे घर री लुगाई वा ही अर धणियाणी वा ही।

· भवानी लुगाई रा हुकम में चालतो रियो मोड़ूं तांई। पर अबे बेटा काळीपरण रा मामला में, हुकम में चालणो दोरो व्हेगियो। रासमणि भवानी री निजर सूं बाप रा बेटा ने नी देखती। भवानी रो तो वा हर तरे सूं विचार राखती। काम काज रे ब्हाया ई नीं तो या बिचारा रो कांई दोस मोटा घर में जनम लीधो काम कटा सूं सीखता। ईं वास्ते वा ध्यान राखती के यांने कोई बात रा फोड़ा नी पड़े। घर में मोकळी तंगी व्हो पण वांरे चावती

चीज ज्यूं त्यूं घर न लावती। वां ने कोई बात रो फोड़ो नीं पड़वा देवती। पण बेटा री घर बार री बराबरी थोड़ी है। वा तो वां रा पेट री प्रोलाद ही। वां रे ऐहसी किया निभेला। उण ने तो हाथ पग हलाय पेट भरणो है, कमाई करणी है। सोतियाळ व्हे जाय तो जमारो बिगड़ जावेला। भवारुं दोरो व्हेला तो पछे मैनत मजूरी कर पेट सोरो भरेला। वां री आदतां एड़ी नीं पड़नूं के यो धावे न वो धावे। काळीचरण ने खावा पीवा ने ई घर में हो जेड़ो ई देवती। कनेवा में गुड़ धाणी। सियाळा में श्रोढ़वा ने दुलाई, उण सूं डील ई ढंक जावे, माथो अर कान ई ढांकणी श्राय जावे। पौमाळ रा पिंडतजी ने बुलाय न भळावण देय दीधी, 'टावर ने कस न पढ़ावजो, निगे राखजो। श्रणूं तो मुलाहिजो राखवा री जरूरत नीं।'

बस अठे ई ज श्राय मुस्कल पड़ी। भोळा सुभाव रा भवानी में ई कदी कदी ऊफाण श्राय जावतो, रासमणि देखियो श्रणदेखियो कर जावती। भवानी री तो श्रादत ही लूंठा श्रागे हमेसां नीचो माथो धालवा री। माथो तो नीचे भवके ई घाल दीधो पण मन में मुकियो जो नी मुकियो। ई ठिकाणा रो छोर दुलाई श्रोढ़े न गुड़ धाणी खावे। एड़ी बात तो कदी पीढ़यां में ई नी व्ही।

दुरगा पूजा रा दिन वां ने याद है। बाप दादा रा वगत में केड़ाक बेमोला नुवा नुवा गाबा पेर न केड़ाक उच्छाह सूं वे उच्छव में जावता। श्राज रासमणि काळीचरण सारुं एड़ा सूंघा कपड़ा मंगावे जेड़ा तो वां दिनां चाकरां ने देता तो ई परा फेंकता। रासमणि एकदांण नीं पचास दांण समझाया के काळीचरण वां वातां सूं वाकब ई नीं है, जो मिल रियो है उण में राजी है पछे क्यूं वातां केयकेय ई रा मन में दुख उपजावो।' पण भवानीचरण सूं भूलणी नीं श्रावतो के काळीचरण श्रापरी घरवट्ट जांणे ई ज कोयनी जदी ज तो यो ठगीज रियो है। भवानी ने सबसूं ज्यादा श्रवको लागतो, वां रा बेटा रे कठा सूं ई कोई तोहफा में रमकड़ो श्रावतो श्रर वो रमकड़ा ने लेय राजी व्हेतो उछळतो कूदतो वां ने देखावाने श्रावतो जदी।

वा सूं देखणी कोनी श्रावतो मूंडो फेर पठा सूं ऊठ जावता।

भवानी रो मुकदमो चालियो जद सूं ई पिरोतजी रे घरे लिछमी पांणी व्हेगी। यां दिनां तो पूजा रा दिनां में पिरोतजी रा बेटा बगलाचरण, कलकत्ता सूं लाद विलायती रमकड़ा री दुकान खोल दे। भांत भांत री सौक री चीजां देख गांम रा मिनखा रो मोलावा ने जीव विचळाय जावे। कलकत्ता रा बाबू लोगां रा घरां में यां री चालो सुण गामरा मिनख ई श्रापरी श्रासंग सूं सवायो खरच कर मोलाय लेवे।

मरियोड़ा पळा सूं बोलिया, 'हिम्मत एड़ा ई है। हाथ में रोकड़ तो हा नीं, गोविन्दो दुगामो मारे घड़े पीलो राम ठाकर रे गुड़ी से सूं।'

दुगामो एड़ो कीमती भी व्हेतो तो बगनाथरण ने कांई एतराज नीं हो। पण बो जाणतो ई ने पचावणो दोरो है। म्हारो पाम कूकता सागेला। रासमणि रा गुणावणा ने झेलणा दोरा पड़ेला। दुगाना ने पटैट न भवानी ने पाछो लावणो पड़ियो।

काळीचरण रोजीना बार ने पूछ लेवतो, 'बापजी, मेम री कांई व्हियो?'

बापजी रोज हंस न केवता, 'पूरा माता दे बेटा, ओजूं तो घणां ई दिन पाड़ा है।'

रोज रा रोज धींगाणी मुळक'न ठाकर ने कूड़ी दिलास देवणो दोरो व्हेगियो। म्हाज चोय तो व्हेगी। सातम म्हारा दिन तीन रिया। भवानी कांई न कांई मिस कर न मांयने गिया। बात करता करता एकदम बोलिया, 'हे, म्हूं देखरियो हूं काळीचरण माड़ो व्हेतो जाय रियो है।'

'फूं'को, मूंडा सूं। मोडो क्यूं व्हेण लागियो।'

'देखो कोनी, मुरझायोड़ो सो बैठियो रे। रमे न खेले छानो मानो रे।'

घड़ी एक ई छानो मानो रेवतो व्हे तो चावे कांई। उदमाद तो करतो रे।'

गढ़ री मठीली भींत ई नीवरण निकळी। माटा पे गोळा रो सेनांण ई नीं मंडियो। गैरो सांस लेय, माथा पे हाथ फेरता भवानी बारे भाय गिया। अकेला चोकी पे बैठ न चिलम रो लांबो सटकारो खैंच्यो।

पांचम रे दिन थाळी में खीर ने दही यूं रो यूं पड़ियो रियो। रात ने एक पेड़ो खाय न उठ गिया। पूड़ी रे नख ई नी अड़ायो। मतराक ई ज बोलिया, 'भूख कोयनी।'

अबकाळे गढ़ री भीत में मोटो बगारो पड़ियो। छठ रे दिन काळीचरण ने रासमणि एकमाड़ी लेजाय लाड सूं बतळायो, 'मंटू, थां मोटा व्हे गिया बेटा, थां चीजां मांगवा ने जिद्द करो ओजूं ई, माड़ी बान। जाणो जो चीज मिले नी वीं रो लाळच करणो आधी चोरी है। जाणो नीं?'

काळीचरण रीं रीं करवा लागियो, 'म्हूं कांई करूं। बापजी कहियो, लाय देवूं।'

रासमणि ई लाय देवूं रो मरय मरयावा लागी के यां दो लफ्जां में कतरो लाड है, कतरो प्यार है मर कतरो दुख है। वा रा ला-य-दूं'ला में आंगणां गरीब घर री कतरी हाण है। रासमणि आजलग कदं ई यूं ठाकर ने नी समझायो हो जो केवणो व्हेतो बस हुकमं देय देती। आज जो विसतार सूं समझाया तो

टाबर व्हेतां ई कालीचरण समझ गियो के मांरा मन में कतरो दुख है। पण मेमड़ी में वीं रो जीव उळझियो रियो। काळीचरण मूं डो सूमाय, लाकड़ी सूं धूळा में लीटां काढवा लागियो। रासमणि करड़ी व्हे न बोली, मनां ई रो मनां ई कूनाव। प्रणव्हेती चीज नीं मिले।' यूं कैय वा तो ग्राप रे धंधे लागी।

काळीचरण बारे ग्रायो। भवानीचरण तमाकू पीय रिया। दूरा मूं ई बेटा ने ग्रावतो देख, ग्रागता व्हे एड़ा भागिया जाणे कोई वडो जरूरी काम ग्रायगियो। काळीचरण दौड़ियो ग्रायो, 'बाप जी, म्हारी वा मेम.........।'

ग्राज भवानीचरण रा मूंडा पै मुळक नीं ग्राई। काळीचरण रा लाड करता बोलिया, 'ठ्यौक ठैर जा, बेटा, ए ग्रबार ग्रावूं। पछै वात करूं, 'हैं?'

यूं कैय न भागिया। काळीचरण ने लागियो जाणें बापजी जावता जावता दुपट्टा रा पल्ला सूं ग्रामू पूंछ रिया है।

वीं वगत पाड़ा में एक घर री पोळ पै सरणांई बाजरी। परभात रै पोहर में सरणांई रा सुरां में सरद रुत री नवो तावड़ो जाणे ग्रामूड़ा रा भार सूं बोझा मररियो व्हे। काळीचरण बारणा नके ऊभो देखरियो बाप कोई काम नीं जाय रिया हा, या तो थाल सूं ई टा पड़री ही। पावड़ा पावड़ा पै निरासा रो भार घीस्या जायरिया हा, ग्रठी वठी ने भांक रिया जाणे वठे ई जायगा लाधे तो ईं बोझा ने फैंक साता री एक सास तो लूं।

काळीचरण मांयने जाय मां सू बोलियो, 'मां, म्हारे वा पंखो झलणी मेम नीं चावे।'

मां हाथ मे सरौतो लीधां सुपारी काट री ही। मां रो मूंडो चमक गियो। मां बेटा बैठिया कजाणां काई सल्ला मून करता रिया। सरौता ने, सुपारी री छावड़ी ने वठे ईज छोड़ रासमणि बगलाचरण रे घरे चाली।

ग्राज भवानीचरण रे घरे ग्रावा मे मोड़ो व्हे गियो। न्हाय धोय जीमवा ने बैठिया तो वा रो उणिगारो देखता ई टा पड़गी के ग्राज ई दही ग्रर खीर ग्रछूता ई ज पड़िया रैवेला। मच्छी रा मांस रो झोळ मिन्नीबाई जीमेला।

मतराक में तो फीता सूं बंधियोड़ो कागद रो डिब्बो हाथ मे लीधां रासमणि ग्रायगी। वी रा तो मत में ही के भवानी जीम चूं ट न ग्राराम करेला जदी भेद खोलूं ला। पण दही ग्रर खीर जीमावा ने वा ग्रागत करगी। डिब्बा बारे काढ न मेलतां ई मेम सा'ब पखो करवा लाग गिया। भवानी तो थाळी थाट न मेल दीधी। बिल्लड़ी रे हाये ग्राज काई नी लागियो। भवानीचरण बोलियो, 'ग्राज रसोई एड़ी उमदा बणी के घणा दिना सूं ग्रतरो खाग्रो नी। खीर तो गजब री ही।'

सातम रे दिन काळीचरण री आसा फळी ही, पंखो सळणी मेम हाथे लागी । आखो ई दिन मेम तीरूं पंखो झलाय झलाय दूजां छोरां ने बतावतो रियो । देख देख छोरां रा मन में ईसको आवतो रियो । यूं मोल लियोड़ी व्हेती तो आखो दिन कदाच नी देखतो । देखता देखतां ओरणी आय जावतो पण आठम रे दिन मेम पाछी आपरे घरे परी जावेला ज्यूं देखवा रो मन चालतो रियो । रासमणि चिरोतजी रा बेटा ने दो रिपिया रोकड़ा देय एक दिन वेई गुड्डी ने भाड़े ले आई ही । आठम रे दिन लांबो सांस लेय, डिब्बा में घाल न काळी-चरण जाय बगलाचरण ने पाछी सूंपियायो । उण एक दिन री मीठी याद भावती री । वीं रा कळपना जगत में तो मोड़ूं तांई पंखो झाल ई री व्हेला । अबै काळी मां रो सल्ला में सलाहकार व्हेगियो । अबै भवानीचरण आवतै बरस पूजा में एड़ा एड़ा घणमोला रमतिया, तोहफा में देवा लागा के उणा ने आपने अचम्भो आवतो । संसार में दाम दीधां बिना कांईज नी मिले । अर वो दाम कतरा दुख देलियां मिळे, ई सार ने काळीचरण समझवा लाग गियो । घर गिरस्थी ने चालणी है, बोझो बधावणो नी है, या सीख किणी दीधी कोयनी पण काळीचरण समझ गियो । सीख सरीरा ऊपजै दीधां लागै डाम ।

अबै घर रो बोझो माथे ओड़वा ने त्यार व्हेणो है । या बात हिया में उतार भणवा पढ़वा में लाग गियो । पास व्हियो, वजीफो मिलण लागियो तो भवानीचरण कैवा लागिया, 'घणोई भण पढ़ गियो, अबै घर रो काम संभाळ ।'

काळीचरण मा ने कियो, 'मां कलकत्ते जाय न आगै री भणाई नीं करूंला तो म्हूं जोगो किंया बणूंला ?

'हां बेटा, कलकत्तो तो जाणो ई होसी ।'

काळीचरण कियो, 'म्हारे माथै पईसो लगाणो नीं पड़ेला, वजीफो मिळे ई है, काम सिखाय लेवूंला, नीं व्हेला तो छोरा भणाय कांई उपाय कर ई लेवूं ।'

पण दोरा भवानीचरण ने राजी कीधो । घर में जमींदारी रो एड़ो काम ई कांई है जो संभरे, तो यूं कैवो तो भवानीचरण रो कोई दुख पावतो । रासमणि बोली, 'भण पढ़ न काळी ने जोगो तो बणणो है नीं ?' पण पीढ़्यां में आज तांई कोई बारै गियो नीं हो ई इण घर रा तो सैंग एक एक सूं एक जोगा व्हिया है । भवानी ने ओ हिसाब ने चमुरो बरोबर लागसी । वां रे या ई समझ में नीं आई के काळीचरण बेटा बेटा ने बारै भेजवा री बात सोचणो ई किंया आवै । छोर तो छोर सांच मर री टाणो निनम, सकण रै उमेर बगलाचरण री मा ई म ठर थी जो रासमणि री राय ही । वीं कलम री बात की, 'थां ने कलकत्तो भेज दे, एक दिन वकील बण न वे वीं नौकरिया बगीचालाल ने हेर न काढ़ो लावैला, बंगला

रा लिखियोड़ा आंक कदेई टळे ? काळ रो आवतां ने रोक ई नीं सके कोई ।'

बात खट्ट देणी री आमे बैठगी, भवानी ने घणी तसल्ली मिली। जूना कागद पानड़ा काढ न काळीचरण सूं वसीयतनामा री चोरी री रात केवा लागिया। काळीचरण रा मन में, हाथां बारे गयोड़ी जमी जायदाद री कोई खास कसक तो ही नी। बाप कंवतो गियो वो हूंकारा भरतो गियो। भवानीचरण बेटा ने कलकत्ता भेजवा री त्यारी करवा लागा। जाणे रामचन्दरजी लंका रा गढ पै जावा री त्यारी कर रिया व्हे। या जात्रा कोई असी वमी जात्रा पढवा री के पास करवा री जात्रा थोड़ी ही। या जात्रा तो गियोड़ा राजपाट ने पाछो घरे लावा री जात्रा ही।

कलकत्तं जावा रा मोरत रे एक दिन पेलां रासमणि काळीचरण रा गळा में तावीज बांध न पचास रिपिया रो नोट हाथ में पकड़ायो, 'ई नोट ने संभाळ ने मेल दीजे, मबली वेळा पावे जदी काडजे।'

पेट काट काट न घणां दोरो संचियो थको यो पचास रो नोट हो। काळीचरण ई नोट ने माथे चढायो, मन में संकळप लीधो के मां री या सेनाणी है। दोरी कमाई रा यां रिपिया ने, अवेर न गाढा कर न राखूंला।'

भवानीचरण अबे आजकाले वसीयतनामा री घणी बात नी करे। आजकाले तो काळीचरण री ज वातां करता रे। वो री वात करवा ने आखा वास में फिर ले। कागद आवता ई घरे जाय न बांचे। नाक नीचे चस्मो उतारता ई ज नीं। पीड्या मे कदी कोई कलकत्तं गियो ई ज नीं, वा रो बेटो कलकत्तं पढे, आजस सूं छाती सवा हाथ चौड़ी व्हे जाती। 'म्हारो बेटो कलकत्तं पढे, वठा री कोई बात उण सूं छानी नी। हुगली कने गंगाजी पै एक पुळ और बण रियो है। एड़ी एड़ी खबरां तो उणां रा घर री खबरां व्हेगी। 'सुणियो के, गंगाजी पै एक मोटो पुळ वण रियो है, आज ई काळीचरण रो कागद आयो, कागद में सब खबरां लिखी है।' यूं कैवता थकां घट देणी रो चस्मो काढता न पूंछता। पछे कागद ने बांच न सुणावता। 'हे देखो कांई जमानो बदलियो है। कुण जाणे अगाड़ी ओजूं कांई व्हेला। अबे हैं, गंडकड़ा, भिनरिया सेंग ई गंगा ने पार करेला। कळजुग आय गियो कळजुग।'

जिण सूं ई वे मिलता आयो हलाय न केवता ई ज, 'केवूं हूं नी के अबे गंगाजी घणा दिना टेरवाने नीं।' मन में वांने या आसा ई ही के गगाजी आवा लागेला जदी वा खबर ई सब सूं पैला काळीचरण रा कागद में आवेला।

कलकत्ता में काळीचरण, सांझ सुबे कठे ई साता लिखतो, टावरां ने भणावतो न आप रो गुजरान अबको दोरो करतो। घणी मुस्किल प्रवेशिका रो

इमतिहान पास कीधो। वजीफो मिलण लागियो। भवानीचरण सारूं तो या वात तवारीख में सोना रा हरफां मे मंडणी चावै। मन मेभाई सारा गांम नै ई खुसी मे गोठ देवा री। नाव तो अबै किनारै लागवा ई ज वाळी है। क्यूं नीं अबै थोरै भरोसे मन खोल खरचो खातो करूं। रासमणि रो तौर देख न गोठ रुकगी।

काळीचरण ने अबकाळे कालेज रे कने एक मेस में जावणो हाये लागग्यो। मेस रे दरोगे नीचला खण्ड मे एक काम नीं आवती सी ओवरी रैवा ने देय दीधी। कालीचरण वींरा टाबरां ने पढावतो दोई वगत यो रोटी खावा ने देय देतो। मेस री ओवरी में रेवनो जो में संद आवनी जो कंदी कंदी वासती। वीं ओवरी में एक साता ही दूजो कोई भेळे नी रंवतो। अकेलो काळीचरण हो जो पढाई में आंगों नीं पड़तो। काळीचरण री आसंग ई नीं के आराम री चोजां पोसावै तो पछे वां यां वांना ने सोचवा रा फोडा ई क्यूं देखतो।

वीं मेस मे भाड़ो देय न रैवणिया हा, खास कर न वे ऊपरला खण्ड में रेवता, वांरे लारे काळीचरण री सेंध बैंध नीं ही तोई छतीकूदो व्हेणो लिखियो व्हे तो परो व्हे। मेस रा ऊपरला खण्ड में एक बड़ा आदमी रो बेटो रेवतो। कॉलेज में पढ़नी वगत मेस में रैवा सूं उण ने कोई लाभ नीं हो पण वी ने मेस में रैवणो सुवावतो। वीं रा घरवाळा तो घणी दांण कैवायो के भाड़ा पै घर लेले। मोटो परवार है दो चार घर रा आदमी सुगाई बठै रैवो करो। पण शैलेन्दर आळस्यो लेय लीधो के घर में रैवा सूं भगवा पढवा में आंगो पड़ै। चार दूजी ही शैलेन्दर ने दोस्तां रे लारे हा हू करणो, घास थड़ाको करणो सुवावतो आड अड़ावण घर वाळा आय जावै तो यै सैंग बन्द व्हे जावै। यां रै तो लाटो लागै जो लागै, आंगण में रैवणो पड़े जो मिवायलाने। 'यां करो, यो मत करो, यूं करिया खोटी लागै।' सूना बैठ्यां यो दुख यो मोल क्यूं ले। आजादी रै साथे मेस में रै। आपरी नींद सूवै, आपरी नींद जागै। यूं आदमां मेस में तो घणाई रै, पण ई किरी जिम्मेदारी किरे ई माथे नीं मरै भावे मरै जावै। मेडी रा देवना पानी री नाई बेवना जावै पण ढेकलो कठे ई नीं छोड न जावै।

शैलेन्दर सुभाव रो खरचीलो आदमी हो। उण रा मन में दया ई ही। दूजां री मदद करवा ने ई यो नाफड़ो रैवतो। नाफड़ो अगरो रैवणो के दूजो वां री तरजो नीं लेवतो तो वो वीं ने दुख देवा ने ई ताफड़ो व्हे जातो। उण री दया अशो निरदंयी बणनी तो वा घणे अजान बण आवती।

मेस में रैवणिया ने सिनेमा बतावणो, होटल में जुवावणो, सिगरट उधारा देवणो, कदै देख न मूछ नावणो उण रा गुण हा। सूरों पड़ैलियांरो खुद पूछ नै करे काम करणो। आदर रा पेईसा चुकातां पछे अठे में काई भी रैवणो

तो एडी वेळा में शंनेन्दर चीतां आवतो, 'भाई घरे जाय रियो हूं', घरे लेजावाने सामान खरीदाय देवो ।' शंनेन्दर साथे जाय अमीं सौक री चीजां री हाट बतावतो । एडी दुकान पे जाय सू धो, रही चीजा मोलावता देख शंनेन्दर सूं रैवणी नी आवतो, 'थनें चीज री पैचाण ई नी, हट, म्हूं छांट दूं ।' शंनेन्दर आच्छी, बढिया वसत टाळवा लागतो, दुकानदार कंवतो, 'चीजा री पैचाण तो यां बाबूजी ने है ।' छांटियोड़ी चीजां रा दाम सुण मोलावणियां रो चालतो सांस दब जावतो । शंनेन्दर रो हाथ बटवा माथे जावतो । अगलो आदमी नटा नटी करतो जतरे शंनेन्दर रिपिया गिणतो निजर आवतो ।

शंनेन रे आड़े पाड़े जतरा जणा हा सगळा शंनेन री बगसीसां माथे चढाय राखी ही । लोगां ने देवा रो उण ने अतरो सौक हो के कोई लेवतो नी तो दुस्मण री गरज पालतो ।

बापड़ो विचारो काळीचरण, नीचे अंधारी ओवरी मे सूगली चटाई पे बैठ, फाटियोडो बरियान पेर, पोथी रा पानां में आंखियां अड़ायन, पाठ याद करतो रेवतो । बजोको नेणो जो वीं ने ।

कलकत्ते आती वेळा, मां उणने प्राण देवाय दीधी के बडा मिनखां रा बेटा सारे खेल तमासा में कदी मत जावजे ।

वो ई मोटा मिनखां सूं नीं मिलतो । वो जांणतो हो के वे गरीब है, घर में मावतानी है, मोटा आदमियां रा बेटा साथे रैवणो नीं पोसावे । वो शंनेन रे अड़े ध्येय नीं निकळियो । जाणतो वो जरूर हो के जो शंनेन रो मन मनावणो आय जावे तो वीं रा रोज रोज रा घणां कळेस कट जावे । थोड़ा देवतो, दुख पावतो पण शंनेन रो मरजीदान बणवा री मन में नीं आई ।

शंनेन ने या अरड़ लागी । काळीचरण अतरो गरीब हो के वी री गरीबी शंनेन ने मणसावणी लागती । पगथ्या उतरतां चढतां, गाबा गोदता पे शंनेन री निजर पड़ जावती यो वीं में काळीचरण रो कसूर दीसतो । गळा में तावीज हालयो करतो, कोई वेळा पूजा पाठ करतो । ऊपरली पाळटीवाळा खूब हंसता ई रा गंवार पणा पे । शंनेन री पाळटी रा दो लड़का वी री ओवरी में आवा जावा लागा, जांणवा ने के यो एकलखोरो लड़को करे कांई है । थोड़बोला काळीचरण रा मूंडा सूं कोई बात नीं बेवावती नीं घाई । ओवरी एड़ी कठे के जिमें घणी देर बैठणी आवे, बेगा ई भादिया वे ।

वां सोचियो एक दिन छोरा रे मूंसो देवां, विचारो निराश व्हे जाय । बुलावो भेज्यो । काळीचरण कियो म्हूं तो वारलियां में जावूं नीं, घर म्हारो बाव्य

ई कोयनी। काळीचरण गियो नीं तो शैलेन मर शैलेन री पाळटी लाल पीळी पड़गी।

ऊपरला कमरा में, वीं री ओवरी रा माथा पै थोड़ा दिनां प्रउरो ऊधम मचायो के काळीचरण रो भणणो पड़णो मुस्कल व्हेगियो। विचारो दिन में तो एक रूंखड़ा रे नीचे बैठ न पडतो, रात ने पौ नीं फाटती जठा पैली ऊठ जावतो भणवाने। खावा पीवा ने तो पूरो मिलतो नीं। मेंनत करतो रात दिन, काळीचरण रे तो माथो दूखवा रो रोग लाग गियो। कदी कदी तो दो दो चार चार दिन माचा पै पड़ियो रेवतो। बाप ने मांदगी रा समीचार नी लिखिया। वो जांणतो के बाप ने ठा पड़गी तो भागिया आवेला। भवानीचरण तो जांणता के काळीचरण कलकत्ते घणो सुख में है। वे तो ई खयाल में हा के रोई में ज्यूं घास पात, रूंखड़ो विरखड़ो, मते ई ऊग जावे ज्यूं कलकत्ता में आराम रो सामान हाथ पग हलाया बिना, आंपणे आप मिल जावे। काळीचरण आप रा बाप ने इणी ज वंम में रेवा देवणो चावतो।

मांदो व्हे न माचा पै पड़ियो तोई घरे राजी खुशी रा समीचार लिखतो रेवतो। एड़ी हालत में ऊपरे माथा पै शैलेन री पाळटी वाळा उधम मचावता जदी तो वो महादुखी व्हे जावतो। ज्यूं ज्यूं वो मानवानी, बेइज्जती अर दुख देखतो ज्यूं ज्यूं वीं रा मन रो संकळप म्रोर ई गाढो व्हेतो जावतो के ई दुख सूं मां बाप ने बारे काढणां ई ज है।

काळीचरण आपने बिलकुल लोगा री निजर सूं दूरो राख एकमाड़े रेवा री कोसीस कीधी। पण माथा रे ऊपरे ऊधम चालतो ई रियो।

एक दिन कांई देखे के उण रा जूना जोड़ा में सूं एक पगरखी गायब, उण री जगां एक जावक नवो, बढ़िया जूतो पड़ियो। ईंया दो भांत री पग-रखियां पैर न कॉलेज तो जावणो आवे नीं। किंसू ई सिकायत करे तो ई कांई सार निकळे विचारे मोची रा भठा मूं जूनी जोड़ी लाय काम काढियो।

एक दिन एक लड़के अचांणचक रो ओवरी में वळ न पूछियो, 'म्हारी सिगरेट री डाबी थां ऊपरां सूं लाया कांई? लाध नीं री है।'

काळीचरण फंफेड़ो खाय न बोलियो, 'म्हें था लोगां रा कमरा में पग ई नीं दीधो।'

'यो रियो, अठे ई तो पड़ियो है।' यूं केय दो पांवड़ा भर सूंणां में पड़िया मूंघा मोल रा सिगरेट केस ने ले ऊपरे परो गियो।

काळीचरण धार लीदी, अबे अठे नीं रेवणो। अबकाळे, एफ. ए. में वजीफो मिल जावे तो कठे ई ओरेठे जाय न रेवूं।'

मेस रा सैग लड़का मिल धूम धड़ाका सूं सुरसती री पूजा करवो करता हा। खाम खरचो तो शेनेन रो ई ज लागतो हो पण चंदो थोड़ो घणो सगळा लड़का देवता। अबकाळे खाली तंग करवाने, लड़का चन्दा रो पानो लाय काळीचरण रे मूंडागे मेलियो। जां लोगां सूं काळीचरण कदे ई कोई तरे री मदद नी मागी, जां रो बुलावो आवतो तो ई वो नीं जावतो, वां लड़कां आय न चंदो मांगियो नो कजांणा कांई सोच काळीचरण पांच रिपिया देय दीधा। शेलेन ने आज तांई कोई पाळटी रे लड़के पांच रिपिया नीं दीधा हा। काळीचरण री गरीबी अर कंजूसी री वे हंसी उडावता रेवता पण आज उण रा पांच रिपिया रा दान सूं बळगिया 'जाणां हा घर री र ढोल री दसा है जो, या अतरी अकड़ किण पे है। आपां पे मान जमावणो चावे।'

सुरसती जी री पूजा खूब ठाठ सूं व्ही। काळीचरण रा पांच रिपिया सूं कांई फरक पड़णो हो। पण काळीचरण रे तो पांच रिपिया सूं घणो फरक पड़ियो। पराये घरे रोटी खावतो, बगत पे मिलती नीं मिलती। रसोड़दार ने कांई कंवणो थोड़ो ई आवे मोड़ो वेगो व्हे तो, दो पैईसा हाट में व्हे तो पेट ने तो भाड़ो देवे। वीं री पूंजी या पांच रिपिया ही जो सुरसतीदेवी रे चरणा में भेंट व्हेगी।

काळीचरण रा माथा रो रोग जोर पकड़गियो। चावे जतरो पढणो नी आयो। फेल तो नी व्हियो पण वजीफो ई नीं मिल्यो। कांई करतो, पढाई रा खरच में कमी कर एक जगां और ट्यूसन करणी पड़ी। ऊपरला कमरा में माथा पे धमाधम व्हे तो तो ई या ओवरी छोड़णी नी आई क्यूं के वीं रो भाड़ो नीं लागतो। ऊपरला खंडवाळा जांणता के भवकाळी छुट्टी पछे काळीचरण पाछो मेस में नी आवेला। पण बगत माथे ओवरी रो ताळो खुल गियो। मामूलीसोक धोवती न यो ई जूनो कोट पैरियो काळीचरण आपरा घूंसाळा में बड़ियो। कुली रा माथा सूं मैलो कुचैलो गांठड़ी उतारी टीन री पेटी उतारी, पैईसा दीधा। गांठड़ी में नरी सारी हांडिया ही, जांमें केरी रो अथांणो, बोरां रो अथांणो अर नरी ई तरे रा अथांणा बणाय वीं री मां साथे घाल दीधा। काळीचरण जांणतो हो के वो मांगने वारणे व्हे जदी पाछा सूं भेद लेवण्यां छोरा ओवरी मायने आय जावे। और तो कोई बात री उणने एड़ो सोच नीं हो पण वीं ने या बात नी खटती के मां रा हाथ री कोई चीज रे वे हाथ अड़ावे। वीं री मां जो आप रा हाथ सूं बणाय न चीजां घाली है वे तो अमरत सूं सवाई लागती वीं ने। पण वां चीजां रो महातम गांम रा गरीब छोरा ई समझे, सहर रा मंट लड़का कांई कदर कर जाणे। अथांणा जो तरे रा बरतनां में हा वां में सेहूरीरण

रो वैभव कठे। वां हांडियां ने देख वे दांत काढेला, रौळ करेला। ये सहरी छोरा लारै लारै वीं री कौगत करेला जो वीं ने खटेगा नी। उणां री रोळां सेलड़ा ज्यूं चुभती वी रे। पंलके पाटा रे नीचे अखबारां रा पानड़ा मूं छिपाय वीं एडी वसता ने राखी ही, अबकाळे वो ताळा में जड़ न राखतो। बारणे जावतो हो ओवरी रे ताळो लगाय न जावतो। उण रो ताळो लगाणो वीं चंडाळ चोकड़ी ने अबखो लागो। दौनेन बोल्यो, 'घर में तो ऊंदरा उपवास करे, ताळा जड़ै घार पांचेक रा। जांणे राज रो खजानो मठे ई ज लाय न मेल्यो है। वेम व्हैला मन में के वां रो नुंवा कोट कोई ले नीं लेवे। भाई, राधा, एक नवो कोट ई ने देवाय ई देवो। जामियो जि दिन मूं वो एक ई ज कोट पेर रियो है।'

दौनेन भोजूं तांई वी काळी ओवरी में पग नीं मेल्यो हो। पगथ्या उतरतो न उण री नजर पड़ जावती तो वीं ने उबकाई आणी ढूक जाती। रात री वेळा, बिना बारी री ओवरी में, दीवो मूंडागे मेल उघाड़ो डील कर, काळीचरण कॉलेज री भणाई करवा ने बैठतो तो देख न दौनेन रा हो रूंगटा ऊभा व्हे जाता।

दौनेन वी रा साथीड़ा मूं बोलियो, 'भायलां, दा तो घाड़ो भबराळे बड़ा रो खजानो लेन आयो है जो एक पुळ ताळो खुलियो नी रे।'

काळीचरण री ओवरी रो बीरो सो ताळो हो। कोई पड़कूंची लगायां उघड़ जावतो। एक दिन काळीचरण तो पढाण ने गियोड़ो हो। दो तीन बुधमादा छोरा मालटेण लेय ओवरी में गिया, ओरा मांगिया, पाटा रा नीचा मूं अखबारा, मनरपाय हेर बारै काढ़िया। ये चीजां वाने कोई सुराग वेरी नीं मागी।

हेरतां हेरतां तकिया रे नीचे बड़ी मुधी कूंची मागणी। कूंची मूं टीन री पेटी रो ताळो खोलियो। मांयने मेला गाबा, पोथियां, कतरणी, चाकू, कलम, पेड़ो सामान पड़ियो। पेटी अरबा वाळो ई ज हा के हेटे ई हेटे रूमाल में वीरलोड़ो कोई चीज दीसी। खोली तो मायने पुड़की, पुड़की खोली तो कागज, कागज मायने कागज, कागई कागज उधेड़ियां मायने पचास रिपियां रो नोट निकळियो।

वी नोट ने देख न हँस हँस टूटा अणाप अणाप दांत काढ़ण लागा। कदे कईसा वे के उण नोट वेई बड़ी बड़ी रो रुड़ो करीयो। दौनेन रे कपो लालजी मूंडे ई टौंप री कंटूणी वे बार बंदीण्णा वे। पगराम में काळीचरण री बारी बुलीयो। ताळो बड़ती ई आग न बड़ लिया देन जणा। जबरां करे एक बारै कोटड़ी कर लीनी। दौनेन बाड़ो (पैली उण नोट ने देख देख न।

पचास रिपिया दीलेन री निजरां में ना कुछ हा, पण काळीचरण कने अतरा पैइसा व्हेला कोई अटकळियो ई नीं। काळीचरण अतरो सावचेत है, देखांग चोरी व्हियां पछे यो कांई करे। यो तमासो देखण ने चंडाळ चौकडी आगती व्हेयगी।

टावरां ने पढाय रात री नौ बजियां काळीचरण पाछो आयो तो अतरो थाकियोड़ो हो के कठीने झांकणो नीं आयो। माथो फाट रियो। वो तो सोच कर रियो के या पीडा ओजूं वेगी सी मिटवा वाळी नी है।

दूजे दिन गाबा पेरवा लागो, पाटा रा नीचा सूं पेटी काढी तो पेटी खुली। वो भोळप तो नीं राखे पर ताळो जड़णो भूल गियो व्हेला। चोर आवतो तो ओवरी रो ताळो जड़ियो थोडो ई लावतो।

पेटी खोली तो सामान उथल पुथल व्हियोड़ो। छाती धडकगी। आगता आगता सामान काढ न रुमाल जोयो तो यां रो दियोडो नोट नीं। काळीचरण कतरी दाण एक एक गाबा ने काढ ने झडकायो, चारूं कानी हाथ फेर फेर न देखियो, नोट नीं। ऊपरला खण्ड रा छोरा एकधार नाळ उतरे न चढे, ओवरी साम्हा नाळता जावे। काळीचरण री पळ पळ री खबरां ऊपरे पूग री। खानापूर कैणी विगतवार सुणाई जाय री। दीनेन आपरी परथे सूधी ठट्ठा मार रियो, ताळयां रा फटाका वाज रिया।

नोट मिलणे री आस नी री। माया री पीड सूं, पाछो पेटी में मेलवा री आसंग नीं रो तो वा मोदडा में जाय ऊंधे मूंडे पड़ गियो। वी री मां कतरा फोडा देख न, पेट काट न या रिपिया ने भवेर न भेळा कीधा हा। मा रा अथाग नेह रो सागर मंथन व्हियो, वी मंथन माय नूं जो अलभ चीज निकळी ही वो हो यो नोट। वी अलभ चीज री चोरी व्हेगी, काळीचरण ने लाग रियो के घणो असुभ व्हियो, यो मोटा सराप ज्यूं साळेगा वी ने। नाळ में वी चौकडी रे आवा जावा रा पग वाज रिया हा। वां तो फेरी लगाय राखी। गाम मे लाय लागगी व्हे, सब बळ जळ न राखोड़ो व्हेय गियो व्हे न पसवाडे नंदी मळखळ करती, तमासो देखती वेवती व्हे, एडो हाल कर राखियो। ऊपरला खंड में ठट्ठा सुण न काळीचरण ने धियान आयो। या तो चोरी वोरी नी, वीं री कौगत करवा ने चंडाल चौकडी नोट ने रफा कीधो है। चोर लेय गिया व्हेता तो उण ने अतरी वेदणा नीं व्हेती। वीं ने लागियो, धन जोबन सूं आंधा यां छोरा म्हारी मां साम्हो हाथ ऊंचायो है। अतरा दिन व्हेगिया वीं ने मेस में रेवतां ने पण वीं पगाथ्या पै पग नी दीधो हो। वी रे तो झाळ उठी जो मलफियो ऊपरे, डील पै काटियोडो बरियान, पग मे पगरखी नीं। माया री पीड़ सूं मूंडो लाल व्हेयरियो।

दीतवार रो दिन। कॉलेज जावा रो रगड़ो नीं। बारे बरामडा में कुरसी,

मूंडा पै बैठिया रोळो कर दिया। काळीचरण री छाती में सांस मावड़ नीं रियो, रीस सूं कांपते गळे, बोलियो, 'लावो, म्हारो नोट मावो।'

जो वो अरदास री मवाज में कैवतो तो फळ चोखो मिलतो पण गेंना री नांई कूकावता देख सौनेन ने एकदम रीस आयगी।

अवांरू जो घर रो चाकर अठै व्हेतो तो कान पकड़ाय ई गंवार ने बारै कढाय देवतो। सौनेन री आख में ललाई देख पूरी परचै एकदम ऊभी व्हेगी, डक्कर न पूछियो, 'कस्यो नोट ? कांई कियो ?'

'म्हारी पेटी मायनू थां नोट काढ लीदो।'

'मोळे मूंडे ऊंची वात। म्हांनें चोरटा समझ्या कांई!'

काळीचरण रा हाथ में अगर जे कांई व्हतो तो माथा फोड़ देतो। वींरो ढंग ढाळो देख दो चार जणां हाथ पकड़ लीधा। पींजड़ा में पड़िया हार री नांई वो डकरता लागो। ई जुल्म रो बदलो लेणे री नीं ताकत वीं में है, नीं सबूत है। सेंग जणां उण रा वैम ने गैलपणो बताय हांसी करैला। जा छोरां रा समीप शगनो काळीचरण पै बाड़ी ही वै तो मोर ई नाखा दूटी भर दिया।

वीं दिन काळीचरण री रात दिया निकळी, कोई नीं आंगे। सौनेन सौ रिपिया रो एक नोट काढ न दीधो, 'जावो, वीं गपेड़ा ने दे आवो।' वेळीड़ा बोलिया, 'था गजब करो थां, उण रा मगज री गरमी तो उतरवा दो। दिन म मारी मागे, पछै सोवां वां री अरजी पे।'

सब जणां आप सोयगिया।

दिनूगां काळीचरण रो ल्न ई मूरगी में पड़गी। माठ उतरतां नीचे कोवरी में भगवाळो मुनिमियो, आंगियो, वकील ने बुलाय दन्ला कर दियो व्हेला। कायो मायनू भड़काय राखियो। बारणूं कान मगायो तो कानून जेड़ो कोई हाथ ई नीं। गेनी गेनी बाता बक दियो। ऊपरे काश न सौनेन ने कियो। सौनेन नीचो उपरो बारणा कनें ऊभो रियो। काळीचरण तो मूंड बंड कांई रो कांई बकतो गाय दियो। रेट रेट न 'बाबू बाबू' बरडाय दियो।

सौनेन रा मन में भै बैठ गियो। नोट रा धक्का सूं यो तो बैरो व्हेगियो। बारणूं री बीन दाण हेला पाड़िया, 'काळीचरण बाबू, काळीचरण।' पण मायनो सूं कोई बोलियो ई नीं। मांजरे बदबड़ाट दियो। सौनेन जोर सूं हेलो मार न दियो, 'काळीचरण बाबू, थारो बोलो, था रो नोट लाय गियो।'

ई रेत बोलियो ई नीं के कुण थारी ताई पूछ करैला। सौनेन मूंडा सूं की कांई नीं दियो पण मन में पछतावण रा सागर में डूब गियो।

वो दिनं, 'हुं बांदिरा कोड़ म्हारो।' एक कानें बडे कम्मा रैतो, मूंडल

ने बुलाय न तोड़ां । सांचै ई वैडो व्हैगियो तो कजाणा कांई करै, काले केडोव लपक लपक ने आय रियो हो ।

शैलेन कियो, 'नीं, नीं, भाग न आंपणा डॉक्टर ने ले' आवो ।' डॉक्टर कनै ई रैवता, थोड़ीक ताळ में आय गिया ।

कुंवाड़ां रे कान लगाय न बोलिया, 'बेहोसी में बक रियो है ।' कुंवाड़िया तोड़ न मायने वळिया, पाटा परळो बिछाणो बिखर रियो, आयोक धरती सूं पड़रियो । काळीचरण आंगणे बेहोस पड़ियो । हाथां पगां ने पछांट रियो, आख्यां रा डोळ घटक्या पड़रिया । यूं लागरियो जांणे मूंडा सूं लोही अबारूं पड़वा लाग जाय ।

डॉक्टर कनै बैठ न आच्छी तरै देखियो, देख न शैलेन न पूछी 'ई रा घर रो कोई मिनख है कांई ?'

शैलेन रा मूंडा रो रंग उतर गियो । 'क्यूं ?'

डॉक्टर ठिमरास सूं बोलियो 'समचो देवाय दो, अेहनांण चोखा नीं है ।' शैलेन कियो, म्हांरी कोई खास ओळखांण तो है नीं । घर रा मिनख कठै रै, कांई ठा नी । पण अबारूं करणो जो तो करो ।'

डॉक्टर बोलियो, 'ईं ओवरी मांयनूं पैला काढो ईं ने । हवावाळी जगा ने चालो । रात र दिन सारूं नरस राखणी पड़ैला ।'

शैलेन, आप रा कमरा में तोकाय न लायो, संगीड़ा, बेळीड़ा ने सीख दीधी के भीड़ रैणी ठीक नी । बरफ री पोटळी काळीचरण रे माथे मेल न पवन घालवा लागो ।

काळीचरण मां बाप रो नाम पतो किण ने ई बतावतो नीं, वो डरपतो के ये छोरा मसखरियां करेला, कुलंगा करेला । डाकखाने जाय कागद गेर आवतो । घर रा कागद डाकखांना रा पता सूं मंगावतो जो वठै जाय ले आवतो ।

काळीचरण रा घरवाळां रो पतो ठिकाणो जाणवाने एकदांण भोजूं पेटी खोलणी पड़ी । पेटी मे कागदां रा दो बंडल लाधा । दोई बंडल घणां जतन सूं फीता में बंधियोड़ा । एक बंडल में मां रा कागद, दूजा में बाप रा । मां रा कागद तो थोड़ाक हा, बाप रा बत्ता हा ।

कागदां ने हाथ में लेय शैलेन आडो अड़काय दीधो, काळीचरण रे सिरांतियां बैठ न कागद बांचवा लागो । कागदां में घर रो पता देखतां ई चमक गियो शैलेन । शानवाड़ी, चौपरियां री हवेली, भवानीचरण चौधरी । कागदां ने मेल वो तो सणणाटा में आंयां काळीचरण रो मूंडो देखवा लागियो । थोड़ा दिनां पैला उण रे एक बेळीड़े कियो हो के काळीचरण सूं शैलेन रो थोड़ो थोड़ो

उणियारो मिले । बेटोड़ा री बात में सार निजर आयो । उण रा दादा री माई हा, श्यामाचरण घर भवानीचरण, या जाणतो हो वो । ई रे पछै कांई व्हियो जिरी परचा वीं सुणी नीं घर में । भवानीचरण रे कोई बेटो ई है अर उण रो नाम काळीचरण है, या नीं जाणतो वो । तो यो काळीचरण उण रो काको है । :

शैलेन ने पछै याद आवा लागो, वीं री दादी जीवती री जतरे भवानीचरण रो नाम घणा मोह सूं लेबो करती । भवानीचरण रो नाम लेवती जद वीं री आखियां जळजळाय जावती । यूं तो भवानीचरण वां रा देवर हा, पण मौत्या में बेटा सूं ई छोटा हा पेट रा बेटा री नांई वीं पाळ न मोटा कीधा हा । जद जमीन रो झगड़ो व्हे न्यारा व्हेगिया, जठा पछै भवानीचरण रा समोचार जाणवा ने वीं रो मन तरसतो रियो । वे तो आपरा टाबरां ने कैवो करता, 'भवानीचरण जातक भोळो ढाळो, सूधो आदमी है, यां जरूर उण ने ठगियो व्हेला । मुमराजी रो तो अतरो लाड हो वां पै । म्हारी तो मानणी में ई नीं आवै के मुमराजी वां ने यूं नांगा भूखा छोड़िया व्हे ।'

उणा री ये वाता बेटा ने अवखी लागती । पछै शैलेन ने चोनां आयो, वो ई दादी सूं नाराज व्हे जावतो । दादी भवानी रो पुखस अतरो करती ज्यूं वीं ने ई भवानीचरण पै रीस आय जावती । आज वीं ने बेरो पड़ियो के भवानीचरण केडीक नातवानी रा दिन काट रियो है । काळीचरण हजार भांत रा दुख देख लीधा पण शैलेन रो हजूरी बण हाजरियां नीं दीधी । शैलेन रो मन काळीचरण पै आजस गियो । जै काळीचरण हाजरियां भरणियो बण जावतो तो शैलेन ने मन मे मोलज आवती । शैलेन री पाळटीवाळा काळीचरण रा ठट्ठा लगावता रिया ई वास्ते शैलेन काका ने वीं घर में राखणो वाजब नी समजियो । डाक्टर री सल्ला ले, घणां ऐतियात सूं काळीचरण ने एक दूजा आच्छा घर मे ले गियो ।

भवानीचरण, शैलेन रो कागद वांचता ई, दूटते काळजे कलकत्ते भागियां आया । आवा लागा तो रासमणि, अवेरियोड़ो पैईसा टका ने परणिया रे हाथ में देय दीधो, 'देखजो, हे, कांई तरे री कमी मत राखजो । कांई देखो तो म्हनें समोचार घाल दीजो । म्हूं आय जावूं ।' चौधरी खानदान री बीनणी रो कलकत्तो जावणो अतरो अणव्हेणो हो के पैली खबर पै किया जावे । काळी माता रे हाथ जोड़ बोलमा कीधी, ठाकोर ने बुलाय ग्रेह सांति कराई ।

भवानीचरण काळीचरण ने देखियो तो पगां नीचली धरती सरकगी । काळीचरण ने थोड़ूं होस नी आयो । वे वां ने मास्टर सा'ब कैय न हेलो पाड़तो जीं वेळा वां रो काळजो फाटवा लागतो । काळीचरण बीचे बीचे 'बापजी, बापजी, कैय न बड़बड़ावतो, वे हाथ पकड़, मूंडा कनें मूंडो ले आय जोर जोर सूं कैवता,

'म्हूं हूं नीं बेटा, थारा कनै बेठयो हूं नी।' पण बेटा में बाप ने ओळखवा रा कोई ऐहनांण नीं दीख्या।

डॉक्टर कियो, 'ताव उनरियो है, अबे कदाच ठीक व्हेला।' भवानीचरण तो सोच ई नी सकता के काळीचरण ठीक नी व्हेला। वा रे तो निस्चे धारणा ही के यो मोटो व्हेय वंस रो भागीरथ बणेला, ईं री हस्ती ने कोई मिटावणियो ई नीं। ईं वास्ते डॉक्टर वां ने थोड़ोसोक फरक बतावतो तो वा ने घणो फरक दीखतो। घरे रासमणि ने कागद लिखता जिमें तो कोई चिंता जेड़ी बात ई नीं रेवती।

शैलेन्दर रा भला पणां सूं भवानीचरण ने घणो अचंभो व्हेतो। कुण केवे के यो मांणुणो, नजीक रो नी है। कलकत्ता जेड़ा सहर रो भणियो पढियो लड़को व्हे ने वा ने अतरो मान दे अदब राखे के जिण हद नी। वा सोची, कलकत्ता रा लड़कां री सायद रंणी एड़ी व्हेनी व्हेला। मन में केवता, कलकत्ता रा लड़का में एड़ा, गुण नी व्हे तो किण में व्हे। आंपारे गामां रा छोरा में नीं तो पढ़ाई, नी कोई लखण। यां री होड़ वे कांई करे।

काळीचरण रो ताव कम पड़वा लागो, धीरे धीरे होस आवण लागो। बाप ने वोन्या कनें देख चमक गियो। मन में एकणदम विचार आयो के कलकत्ता में म्हूं केड़ी हालत में रेवूं जो अबे या सूं छानी रंणी नीं। ईं सूं बतो सोच यो लाग्यो के म्हारो गामड़िया गांम रो रेवणियो बाप यां सहरी छाकटा छोरां री फौरन री धावमारो बण जाय। थाळू आडी ने झांकियो पण कांई समझ ई वी रियो के वां कठे है। सपनो सरीखो लाग रियो वीं ने। उण वेळा वीं में बतो सोचवा री ताकत ई नी ही वी जाणियो मांदगी रा समीचार सुण बाप भागिया आया है अर वीं सूगलो जगा सूं कठे ई चोखे ले आया है। किया आया, कठ सूं पैईसो लाया, माथा रा चुकावती वेळा केड़ीक मुसीबत भोगणी पड़ेला, निबळाई रे कारण कांई नीं सोचणी आयो। वो तो एक बात सोचरियो हो के, बाप री बो उणने भी जीवणो है, जीवा सारू दुनियां री हर चीज पे उणरो हक है।

भवानीचरण कमरा मे नीं हा। शैलेन एक तासळी में थोड़ीक रगाळ लेन काळीचरण कनें आयो। काळीचरण तो बाको पाड़ियां मूंडो देखवा लागियो। मन में या ई च आई के इण में ई कोई ममस्करी तो नीं है। पछे सोचवा लागियो के बाप ने ईं, रा हाथ सूं कस्यां छुड़ावूं? शैलेन तासळी ने मेज पे मेल काळीचरण सूं मुजरो कर ने बोलियो, 'म्हें मोटी गलतियां कीधी, म्हने माफ करो।'

काळीचरण ने तो जोर ई अचंभो आयो। पण वीं रो मूंडो देख नें पड़ियारो मान गियो के छळ तो कोयनी मन में। एेसी चोट पड़ी वीं जीवन में

छकिया शैलेन रो दपदप करतो मूंडो देखियो तो मन मिलवा ने उमगायो हो पण आप रा दाळिदर सूं लाज्यां मरतो नके नीं गियो। उण री घर ई शैलेन रा जोड़ा-तोड़ा रो व्हेतो तो बरोबरिया री नांई उण रे सागे ऊठ बैठ ने हरखातो ई ज। मनरा नजीक रेतां थकां बीचे जो एक भींत ऊभी ही वीं ने उलांघवा रो कोई गेलो नीं हो। नाळ चढतां उतरतां शैलेन रा झीणा दुपट्टा सूं सुगंध री एड़ी हंदरां निकळती के काळीचरण री अंधारी ओवरी गरणाय जावती। उण वेळा पोथी ने थोड़ी अळगी कर, मुळकता मुखड़ा रा, हुणामी जीवड़ा रा शैलेन ने देखवा ने काळीचरण रो जीव थाल जावतो। पछे शैलेन रा आंगा जोबन री पक्की साथ काळीचरण माचो पकड़ियो ई ज हो। आज शैलेन रसाळ री तासळी लेय ढोल्या कने आय ऊभो रियो तो एक गैरो नीसासो लेय वीं रा मूंडा साम्हों जोवियो पण माथी री बात मूंडा सूं निकळी नीं। धीरेक सी रसाळ उठाय खावा लागियो। इण भांत वीं ने मेवणो ओ केय दीधो।

काळीचरण रोज अचंभा सूं देखतो रियो के गामड़ेल बाप रे मारे शैलेन खूब हरणो बोलतो। शैलेन वां ने बाबा कैवतो, खूब घुळ-घुळ न बातां करता भारसरो में। ईं हंसी मसखरी री परवाई सूं भवानीचरण रा मन में जवानी री याद दासियां याद आवती। दादी रा हाथ रा बणायोड़ा अर्थाणा, बड़ियां ने शैलेन चोर चोर न रियां खावतो, वा बात आज शैलेन निलज्जो बण न सुणाई। काळीचरण ने घणो आणंद आयो ईं बात रो। आरी मां री हाथ री बणायोड़ी चीजां, वो माला अगत ने बुलाय ने खुवावा ने राजी है, पण जे कोई इण री कदर करतो व्हे तो। मांदगी रो मायो काळीचरण रे सुमी री मैदिन व्हेती, एड़ा सुम रा दुख कदाच वीं देखिया ई कोनी हा। पण नम मैं मां री याद आय री, अबार जो वा ई अठे व्हेती तो, हुणामी जीव रा, ईं फूटरमन रा कैड़ाक कोड़ करती वा।

ईं, एक बात रो जिकरो चाल जावतो वां काळीचरण रा सुख रो बात में धाड़ व्हे जाती। काळीचरण ने आपरी नानकानी रो ई गरब हो। कोई समता में वस्त रो घर खंथ, धन, जिंदगी सूं मरियोड़ो हो, इण रो वर्णन करता के ई उण ने मान आवतो। 'म्हा गरीब हां, इण मांय ने यो कोई मान रा पाप सूं ढाकवा ने राजी नीं हां। भवानीचरण ई वा घंणा दिनां री बातां बताय बताता के नी करता। वां ने प्यार रा सुख रा दिन, जवानी रा दिन धीरा धार आवता वां सुण करता रेवता। वी अमावा रो जिकरो करिस्यो नीं न फिर धार न बनोदिरत्नआमा री अब धारा मरतां। बनोदरनामा री नाम धावतां ई ठों वं दवो धार धावतो, दवो धार धावतांई भवानीचरण रो बोछी ऊबडबा धावती।

काळीचरण रो मन कुरणावा लागतो, वीं ने बाप रो पंथ वैंडावणो लागतो। वो अर वीं री मां तो ई पंपकूट ने राजी राजी ममता रिया पण शैलन रे मूंडागे बाप री या आदत वीं ने अणखावणो लागती। कतरी दाण बाप ने बरजियो, कतरी दाण समजायो के यो मन रो भूठो वेम है। पर ज्यूं समझावतो के भूठो वेम है ज्यूं ज्यूं वे आपरी बात रे वतो जोर लगावता। पछे रोकणो काळीचरण रे हाथ नी रैवतो।

घणी तो काळीचरण ने अणखाई यूं आवती के शैलेन ने वो जिकरो सुणणो ई ज नीं सुवावतो। वो तो सातो व्हैय भवानी री वातां ने, भांत भांत री जुगतियां सूं बाटवा लागतो। दूजी सैंग वातां में तो भवानी सगळा री राय मानता ने तालड़ा रैवता पण ईं मामला में तो वा कदे ई किण ने ईं पूछ नी वताई। वां री मां भणियोड़ा पढियोड़ा स्याणा लुगाई हा, वा वारा हाथ सूं कलमदान में वसीयतनामो अर जागीर रो पट्टो राखियो। पछे कलमदान खोलियो तो वसीयतनामा रो वड़वड़ो ई नीं। यां चोरी नीं तो काई साउकारी है। काळीचरण रीस पे सोळो छांटो न्हाकतो, 'वारे' तो कठै ई गियो है नी। जमीं भोग रिया है जो ई तो थांरा टावर ई ज। थां ने तो ईं में ई राजी रैणो चावे के पैइसो टको घर में ई ज रियो।'

शैलेन ने खटती नीं ये वातां। वो ऊठ न परो जावातो। काळीचरण रो मन पातिया दुखणा री नांई दूखतो, 'शैलेन कांई जाणतो व्हैला के ईं रो बाप पैइसा रो लोभी है। शैलेन ने किया समझावूं के म्हारा बाप जावक सूधा है, पैईसा रो लोभ तो वां रे अड़न ई नीं निकळियो।

घनरा दिनां में शैलेन आपरी ओळखाण भवानी ने अर काळी ने जरूर कराय देवतो पण ईं वसीयतनामा री चोरी रो चरचा सूं वो रुक गियो। वीं रा बाप दादा वसीयतनामा री चोरी कीधी, या वात कि हालन में वी रा गळा नीचे नीं उतरती पण लारे रो लारे जीवड़ो कैवतो के यां ने बाप दादा री पीढ्या रो माल नीं मिल्यो, उण री कांई एड़ीज वजे तो व्हैणो चावे। पछे वीं उण मसला पे वाद करणो ई ज छोड़ दीधो।

ओहूं ईं सांझ पड़यां काळीचरण रो जीव सोरो नीं रैवतो। मायो दुखवा लागतो, ऊन ई चढ आवतो। पण वो ईं मांद ने मांद ई नीं मानतो। पढ़वा ने वी रो मन भागतो व्हैगियो। एक र ईं वजीफो हाथां वारे परोगियो, अबकाळे ई नी मिलियो तो गजब व्है जाय। शैलेन रे छाने छाने भणवा लागियो। डॉक्टर तो पूरी मना कर राखी ही। पण वो धारतो ई नीं।

बाप ने कियो एक दिन, 'बापजी, थां घरे परा जावो, मां एकली है,

म्हूं तो मवे साउ व्हेयगियो, सोच जेड़ी कोई वात नीं।' शैलेन ई बोलियो, 'हां, मवे एड़ी कोई वात नीं, निवळाई है जो सावळ व्हे जाय। म्हां हां ई पछे।'

भवानी कहियो, 'हां, जो तो है ई, काळीचरण सारू म्हनें की सोच फिकर कोयनीं। म्हूं नी आवतो तो ई थां सँग थोक करता ई ज। पण जीव नीं मानियो फेर थांरी दादा रो फुरमांण कियां टाळतो म्हूं।'

शैलेन हंसतो थको कियो, 'बाबा, थां ई तो लाड लड़ाय वां ने माथे चढाय दीवा।' भवानी दांत काढिया, 'देखो, घर में नुवो वीनणी आय जद देखो थां कतरीक आंकन में राखो जो।'

भवानीचरण तो जमारो ई काढियो हो लुगाई रो हाथ री सेवा चाकरी करावतां, धरियावड़ा हा। कलकत्ता में आराम रा सँग थोक व्हेतां थकां ई वां ने घर री मन में आवती। रासमणि रा हाथ री चाकरी चीतां आय जावती। घरे जावा री घणी मनवार नीं करणी पड़ी सुवे सवार बांध बूंध न जावा ने त्यार बैठिया हा। काळीचरण ने जाय देखियो तो मांखियां लाल बूंद, लोही रा टोगा जेड़ी व्हेय री ही, डील बळरियो वासदी ज्यूं। राते मझयान रात तांई 'सौजिस' घोसतो रियो, पछे करूंटा फेरतां रात काटी, नींद नी आई।

काळीचरण में निवळाई घणी ही, मांदगी पाछी पळटी खायगी।' डॉक्टर ने ई भारी चिंता व्हेगी, 'शैलेन ने एकमांड़ो ले जाय न कियो, 'मांदगी उळटे गैले पड़गी है अबकाळे।'

शैलेन, भवानीचरण ने कियो, 'दादाजी, थांने ई फोड़ा पड़े न काळीचरण री चाकरी आंशा सूं सावळ कोनी व्हे। दादीजी ने बुलाय लां तो चाकरी चोखी तरै सूं व्हे।'

शैलेन वात तो घणी फेरफार न कीधी पण भवानी रा काळजा में डरपो पड़ गियो। धंम घर भे बैठगियो छाती धड़ धड़ करवा लागी। हाथ पगां रे धूजणी छूटगी।

रासमणि ने कागद भेजियो, वा तुरंत बगलाचरण ने सागे लै भागी आई।

कलकत्ता आय न दो चार घड़ी ज बेटा रे भेळी री। सासा निकळगी। मसिसान में मां ने हेला पाड़तो रियो। बीं रा वे हेला मां रा काळजा माथे ऊमर सारता रिया। भवानीचरण ई घरवा ने 'किया होतैता, विराम नीं छूट जावे कठे ई। वा विचार वा मरती गे। बेटो आयो र पाछो घरे लियो है जो अब घरे आंधर है, वां मान बजर री छाती कर भवानीचरण री चाकरी में गुमती रिया सेवा किया के वो दुख कदै नीं भेतो आवे रे। पण वांरी रिपज निरर्थिया नीं।

। । ' घणी रात परोगी । दुख रा सागर में डूबियोड़ो रासमणि री दो पलक माह आंख झपकी, आंख बंधीरी भपकी मूरछा सी आयगी । भवानीचरण री आंख में नींद : रो बटू नी,- करू टा फेरता रिया फेरता रिया । गेरो नीसकारो न्हाखियो, 'हे दयामें, भगवान ।' ऊठिया, धूजता हाथ में दीवो लेय वीं ओवरी में गिया, जि ओवरी में टावरपणां में काळीचरण पढ़तो । वी सूनी ओवरी में पाटा माथे रासमणि रा हाथ री सीवियोड़ी, बूंटा वाळी गदृली बिछी ही । जायगां जायगां स्याई रा दाग मोजू लागरिया । मैली भींता पे कोयला रा माडणा मंडरिया, पाटा रा एक कूंणा पे मेना मेला रंग री कॉपिया पड़ी, 'रोयल लीडर' अखबार रा फाटोड़ा पान्ना पड़िया । हाय, हाय, उण रा वाळपणा रा नान्हाक पग री एक-छोटीसीक पगरखी पड़ी । जि साम्हां आज तांई कोई झाकियो ई नीं पण आज वा ई ज घणी मोटी व्हे न दीख री । दुनियां में आज एडी कोई मोटी चीज नीं जो ई नान्हीसीक पगरखी ने आपरी आड में लुकाय, बाप री नजर सूं ओले राख दे ।

टीण री एक पेटी पे दीवो मेल न भवानीचरण पाटा पे बैठ गिया । वा री फटियोड़ी आंखिया में आंसू तो नी हा पण वा रो काळजो हुबकाय रियो, सांस नीं लेवणी आय रियो ।

वे ऊगमणी दसा री बारी खोल, लोह री तांणी पकड़ बारे भाकवा लागा । --काळी रात, छांटो छड़को व्हेय रियो । हंडा रे बारणे गेरी रोई ही । वी ओवरी रे बारणे ई ज मूं डागे काळीचरण बगीचो लगायो वो रा हाथ री बायोड़ी बेलड़ी ऊपर री फूलड़ा सूं लड़ालूं ब व्हेयरी । वी टावर रा हाथ रा लगायोड़ा गोडा ने देख भवानीचरण रा विराण कंठा ताई आय रूकगिया । अबे जाणे कोई काम ई नीं है दुनिया में करवा जोगो । पूजा री छुट्टिया आवेला, पण वो तो अबे नीं आवे, यो गरीब घर तो वो रो सोग ई करतो रेय ।

'अरे, म्हारा लाल' केय न डाड मार दीधी । भवानीचरण वठे आंगणे बैठ गिया । काळीचरण कलकत्ते गियो आप रा बाप ने नानवानी सूं बारे काडवाने । आप री बात, नातवान बाप ने बिलकुल ई नानवान कर परो गियो ।

बरखा री दरड़को जोर रो आयो ।

अंधारा में, धारा में, पानड़ा में किरा ई पग वाजिया । भवानीचरण री छाती धड़कवा लागी । जो अणव्हेणी बात ही वी री आस जागी, काळीचरण आपरा बगीचा ने देखवाने आयो । पण जोर री बरखा व्हेयरी है वो भीज जाय । अणव्हेणी भरमणा सूं वां रो मन सरणाय गियो । वां ने लागियो जाणे बारी

रै मूंडागै कोई ऊभो, थोड़ो पड़ेसड़ो ओड़णो पहरे । उणियारो ओळखणी नीं आवै, पण डील रो मांस काळीचरण रो पड़ै ।

भवानीचरण एकदम पगां पै ऊभा व्हेगिया 'आय गियो बेटा' कैवता थका पाछो सोन न बारै भागिया, जठै मकांण' मवाड़' वांरो बेटो ऊभो हो, बारी रै मूंडागै । पठै तो कोई नीं । बरसातो बरखा में वां भाळो बगीचो रो गरड़को लगाय दीधो । कोई तो नीं । अंधारी काळी सूनी रात में भरियोड़ा सास सूं हेलो मारियो, 'बेटा, काळीचरण ।'

कोई पडूत्तर नीं । वां रो हेलो सुण न भागियोड़ो आयो वो हो वां रो चाकर नटवर । वो वां ने साम न मांय ने लेय गियो ।

दूजे दिन नटवर, कचरो बुहारो करवाने वो ओवरी में गियो तो वी ने बारी कनैं एक पोटळी पड़ी दीसी । वीं पोटळी ने ले भवानीचरण कनैं गियो । भवानीचरण वीं पोटळी ने खोने तो मायने जूना कागद । चस्मो लगाय न वांचिया । वांचता ई भागियोड़ा रासमणि कनैं गिया ।

कागजां ने हाथ में लेवती रासमणि पूछियो, 'कांई है ?'

'वो ई ज जूनो वसीयतनामो ।'

'कूण दीधो ।'

'राते काळीचरण आयो जो देय न गियो ।'

रासमणि बोली, 'अबै आंपा रे कांई करणो ईं रो ।'

'अबे आंपा रे कांई काम रो', यूं कैय भवानीचरण फाड़ न चूंथो चूंथो कर न बगाय दीधो ।

आखा गाम में हाको व्हेगियो । बगलाचरण घमंड सूं माथो हिलाय न कियो, 'म्हैं पैलांई कियो के काळीचरण रा हाथ सूं वसीयतनामो पाछो आवेला ।'

रामचरण मोदी कियो, 'काले रात री गाडी सूं एक गोरोसीक छोरै आय म्हनें चौधरियां री हवेली रो गैलो पूछियो । म्हैं उण ने गैलो बताय दीधो, उण रै हाथ में एक छोटीसीक पोटळी ही ।

'फजूल री वात,' कैय न बगलाचरण उण री वात ने काट दीधी ।

सजा

दोई भाई दुरवो र छदामी कोळी दिन ऊगां हाथ में दांतळी र गंडासो लेय न काम पे निकळिया जठा पैलां तो देराणी जेठाणी भचेड़ा खाय चुकी ही। पाड़ावाळा रे तो या कोई नुवीं बात नी। उणां री तो आदत पड़गी है, कुदरत रा ऊतरा कारखाना रोज चालता रे वां मांयलो यो ई एक व्हेगियो। लुगायां रा कंठा सूं गाळयां रा बरड़ाटा सुणता ई आपसरी मे मिनख केय देता, 'लो व्हेगियो सरू।' जाणे यो तो दिन री ऊगाळी व्हियां ई सरे। परभात रा सूरज ऊगे जदी कोई नीं पूछे कै यो क्यूं ऊगो। ज्यूं ई कोळियां रा घर मे देराणी जेठाणी लड़ती जदी विण रे ई मन में वजे जाणवा री रत्ती मात्र इच्छा नीं व्हेती।

यों रोज रो राड़ो पड़ोसियां सूं बत्तो दोवां रा मोट्यारां ने जरूर अखरो लागतो पण असी कोई खास अबखाई जसी बात नीं। वा रो मन तो एड़ो व्हेगियो के जाणे दोई भाई संसार री मुसाफरी एक गाडा में लारे बैठा कर रिया है। गाडा रा बिना आंगियोडा दोई पैड़ा खरड़ खरड करता जाय रिया है। पण वो खरड़ाटो तो उण सफर रो एक अंग है, हिस्सो है। साची तो या के घर में जिण दिन कोई रोळो रवदो, हाको हुल्लो नी व्हेतो, चारूं पासे सणणाटो रेंतो तो राम्हो भें लागतो, कजांणां कांई बिजोग आय पड़े।

हां, तो उण दिन दोई भाई दिन आथमतां थाकापचिया घरे आया तो आगे घर में सणण सण्ण। बारे ई अमूजो घल रियो हो। दुपैरां रा बरखा रो जोर रो दरड़को पड़ियो अबे ई बादळा घुमड़ायो रिया। बायरा रो नाम नी, पानड़ो

नीं हाल रियो। घर रे ऐरे मेरे चारूं आडी ने झाड़कियां बघरिया, पाणी में पटसण रा खेत डूब रिया जां मायनूं भूंडी वासना आय री। पास्वती वाळा नाडा मांयने डेडरा डेडूक रिया। सभजा रा सूना में भींभरो रा झणणाटा सूं आभो भरीज गियो। नुवीं नुवी वादळियां आभा ने ढांक राखियो। कने ई वरमाळू नंदी पदमा ठेवा खाय री, ढावां पूर मन रे मतो वैय री। घणां मरां खेतां ने बैंडावती घरां कने आयगी। दो चारेक आंबा, कटहळ रा रूंखड़ा ने जड़ामूळ सूं उपाड़ फेंकिया। उणा री जड़ां पाणी बारे दीख री जांणे आभा रो छेल्लो मड़ो पकड़वा ने आंगळियां पसारी व्हे।

दुक्खी र छदामी उण दिन गांम रा ठाकर रे अठे बेगार में गिया हा। नंदी रे विनी पार खेता में साळ पाकगी। नंदी आय री, पाणी में साळ नीं डूबे जठा पैळे काट लेवा ने करसा मजूर मारोमार लाग रिया हा। कोई खेत में साळ काट रियो कोई पटसण काट रियो। यां दोई भायां ने राज रो सैणो बेगार में पकड़ लेगियो। ठाकरां री कचेड़ी में जगां जगां पाणी टबूक रियो। आखो दिन ये बेलू सारता रिया, छान बांधता रिया। रोटी खाणे री वेळा ई नीं मिली के घरे आ र राबड़ी रेको कर आता। ठिकाणा री आड़ी सूं मूंगड़ा मिलिया वो चाब लीधा, बीचे बीचे छांटां में बतरी दाण भींजिया ई हा। दूजी जगां जावता तो हक री मजूरी तो मिलती, वा ई आज नीं मिली। गाळियां मिली वो सिरावणाने।

काद कीच, पाणी में व्हेय न दोई भाई सांझ रा घरे आया। छोटी दोटकड़ी बीनणी चंदा तो ओढणी रो पल्लो बिछाय आंगणा में ऊंधी पड़ी। दुकेग री वादळी रे सारे सारे आज वा ई नैणा सूं धारवा न्हाक सांझ ताईं छानी व्हे न पड़ी ही। अबे वारे अमूजो घण रियो जेड़ो अमूंजो उण रा मन में ई घण रियो। मोटोड़ी बीनणी राधा मूंडो मुजाय बारणा में बैठी, कने डोढ बरस रो छोरो रोय रियो। दोई भायां घर में पग मेलता ई देखियो के छोरो उघाड़ पुघाड़ो आंगणा में चित पड़ियो।

भूखा मरतो दुक्खी घर में बड़तां ई बोलियो, 'ला रोटी दे।'

मोटोड़ी तो भमकी, आगे मोर दे बती मेली, 'लावा ने है कठे कोई? धान मेन्हू गियो हो के? हूं कमावती के कमावाने?'

आख्या दिन री धड़िड़ोड़ी, गाळियां खावतो थको, घर में आवतां ई औ अटेख। भूखा मरतां ने लुगाई रा ये बोल, आगला घर में पड़वा जोग रो मूं झरण, धाटवा रे मारताट थूंरियो। बोली अणरोचत न्हार री भांई हर्डरे, 'धाई क्यो।' दुक्खो हो थाय देखियो न थाय। हाथ आवती दांतळी दूरी

रे माथे भटक दीधो। राधा दोराणी कने जावती पड़ी। पड़तांई सांस निकळ गियो। चंदा रा गावा लोहियां सूं ललवर व्हेगिया। 'हाय म्हारी मां' कैय न धा बरळाई। छदामी दौड़ न उण रो मूंडो भीच लीधो। दुक्खी हाय मांयली दांतळी अळगी फैंक, ओगतायोड़ो माथा रे हाथ देय न बैठ गियो, छोरो जाग गियो, डरप न कूकाय कूकाय रोवा लागो।

बारे पूरी साती ही। महीरा रा छोरा गायां भैंस्यां चराय पाछा गांम में आय रिया हा। नंदी रे पैने पार साळ काटवाने मिनख गयोड़ा हा, वां मांयला पाच पांच, सात सात जणां डूंडा में बैठ पाछा आय रिया हा। मैनत मजूरी में मिलियोड़ा दो चार साळ रा पूळा माथा पे मेल राख्या हा। सब ई जणां आप आप रे घरे आय गिया हा।

रामलोचन काका डाकखाना में कागद गेर न घरे आया हा, निचंत व्हिया चिलम पी रिया हा। अचाणचक चींता आई दुक्खी ने बांटा पे खेत दे राखियो, हांसल रा रिपिया बाकी है। आज देवा री वो कैन गियो हो। अबै घरे आय गियो व्हेला। रामलोचन कांधा पे दुपट्टो न्हाक, छतरी हाथ मे उठाय चालिया।

दुक्खी रे घर में वळता ई उणां रा तो रूंगटा उभा व्हेगिया। घर में दीवो न बाती। आगणा में अंधारो गप्प। अंधारा में दो चारेक जणा छाया ज्यूं दीखे। तिबारा रा कूणां में रैय रैय दब्योड़ा साद सूं कोई रोय रियो। छोरो 'मां मां' कर न हेलो पाड़णो चावे ज्यूं ज्यूं छदामी वीं रो मूंडो भीचे। रामलोचन संकते संकने पूछियो, 'दुक्खी है कांई?' दुक्खी ओजूं तांई पत्थर री मूरती व्हियोड़ो बैठो हो। वी रो नाम लैय हेलो पाड़तांई तो वो टावरा री नांई डाड मार न रोवा लाग गियो। छदामी झट देणी सूं तिबारा सूं उतर रामलोचन कने आंगणा में आयो। रामलोचन पूछियो, 'लुगायां सड़ न मूंडा सुजाय राखिया व्हेला, ज्यूंई ज अंधारो है कांई? आज आखो दिन धुमती री।'

छदामी ने ओजूं तांई सूझियो नीं के कांई कैवे। भांत भांत री वातां उण रा माथा में गरोळा खाय री ही। अबार तांई तो वीं था ई ज विचारो के दस पड़ियां लास ने कुवा बावड़ी कर डूंला अतराक में तो चौधरी काका आय गिया। वांरी सपना में ई नीं सोची ही आवारी। आगत में वीं ने कोई चोखो जवाब नीं उदळियो, कैवणी आय गियो 'हां, आज घणी लड़ी।' चौधरीजी तिबारा कानी पड़ता बोलिया, 'पण दुक्खी क्यूं रोय रियो है?'

छदामी देखियो अबै रासो बिगड़ियो, मूंडा बारे निळगी, 'लड़तां छोटोड़ी, मोटोड़ी रे माथे दांतळी री मार दीधी।' मिनख आयोड़ी विपदा ने ई मोटी समझे। आ एक दम वीं ने सूझेई नीं के दूजी विपदा ई आय सके। छदामी

हो जण वेला या शोच रियो हो के इण वेळा बस्यां ई बच जावूं । झूठ उण मूं ई मोटी बिपदा में आय या बात उण रे मगज में ई नीं आई । रामलोचन रे पूछता ई उण ने यो जवाब उथळियो पर वीं ज बगत केय दीयो ।

रामलोचन चमक न पूछियो, 'हैं ! काई कियो । मरी तो नीं ?'

छदामी बोलियो, 'मरगी ।' वो पगां में पड़ गियो ।

चौधरी विचार में पड़ गियो, सोचवा लागिया, 'राम राम, कवेळी वेळा कठे आय फंसियो । कचेड़ियां में गवाहियां देवतां देवतां जीव नीसर जाय ।'

छदामी तो पग ई ज नीं छोड़िया, कंवा लागियो, 'चौधरी काका, अबै लुगाई ने कियां बचावूं ?'

मामला मुकदमा री सल्ला देवा में रामलोचन आखा गांम में मन्नत हो । थोड़ो सोच न कियो, 'देख, एक काम कर, थाणा में भाग जा । जाय न कंवजे, म्हारो मोटोड़े भाई दुक्खी सांझ रा घरे आयो जदी रोटी मांगी । रोटी नीं ही जो लुगाई माथा पे दांतळी री देवाड़ी जो वा मरगी । यूं जाय न केवजे जो थारी लुगाई छूट जाय ।' छदामी रो गळो सूख गियो, उठो व्हे न बोलियो, 'चौधरी काका, लुगाई तो दूजी ले आवूं पण भाई फांसी पे चढ़गियो तो दूजो जामण जायो कठा सूं लावूं !'

लुगाई रे माथे यो झूठो दोस लगायो हो जीं वेळा वी नें ये बातां नीं सूझी ही, ओगत नी बंधी ही र मूंडा बारे निकळगी । अबै आप रा मन ने तसल्ली देवा ने ये जुगतियां भेळी कर रियो हो ।

काके ई उणरी बात ने वाजब मानी, बोलिया, 'तो पछे जो बात बीती वा कंय दीजे । चारूं कानी तो बचाव आया व्हे कोयनीं ।' यूं कंय रामलोचन आगा पांवडा दीधा । बात री बात में आखा गांम में हाको व्हेगियो 'कोळियां रा घरां में लड़ती लड़ती चंदा रीस में आय जेठाणी रो दांतळी सूं माथो फाड़ दीयो ।' पाळ फूटतां ई पाणी री बाढ आवे ज्यूं पुलिस गांम में आय ऊभी री । काई कसूरवार न कांई बेकसूर सगळा घबड़ाय गिया ।

(२)

छदामी विचारी जो गेलो पकड़ लीधो वीं पे चालणो ई ज ठीक । रामलोचन रे आगे जो बात वीं रा मूंडा सूं निकळगी वा बात आखो गांम जाण गियो है । अबै जे दूजी बात कैवे है, कजांणा कांई नतीजो निकळे, कुण जाणे कांई रो कांई व्हेजावे । वो ई मकन चकरायगी । भली भांत समझ गियो जो वेला वीं बात केय दीधी है, उणां में पांच चार अठीनी वठीनी और जोड़िया तोड़ियां छोटोड़ी छूटे तो छूट जावे । दूजो कोई अबै गेलो नीं ।

छदामी मांपरी लुगाई चंदा ने मरदास सीधी के यो दोम सूं पारें मांये लें ले। लुगताई चंदा तो उछळी। छदामी वीं ने ऊंची नीची सीधी, समझाई 'पूं भरोसो राख, म्हूं थनें बेपरियो हूं। म्हा छूड़ाय ले आवा।' भरोसो देवा ने तो दीवो पग वीं री जीभ मूनरी, मूं डो घोळो फट्ट पड़रियो।

चंदा वरस सतरा अट्ठारा क सूं वत्ती नीं ही। भरमा गोळ मूंडो, नीं घणी लांबी नीं ठेंगणी, आच्छी, बिचला रास री। दोलड़ा हाड री कसियोडो डील, हालती चालती, फिरती घिरती रो कोई अंग अड़ोळो नीं लागतो। नवी बणियोड़ी नाव री नांई छोटी र आच्छा डोळ री, सोरी सोरी सिरक जावे, कठा रो ई संघ दीसे नीं। दुनियां रा सेंग धंधा देखणे रो जागणे रो सोक है उण ने। सेरी में दूजां रे घरे बैठ गप्पोड़ा मारणा आच्छा लागे, पणघट पे पाणी भरवा जावे तो में कमर पे घड़ो मेल, दो आंगळियां सूं घूंघटा रो काणकोलियो करे चपळा नैणां सूं झांवती जावे। जो देखण जोग वसत व्हे उण ने काळा काळा नैणां सूं जरूर देखे।

मोटोडी बीनणी बिलकुल इण री उलटी ही। करगसा, मों'दबायरी, माथा रो ओढणो अवेरणी भावतो न कांख मांयलो छोरो। घर रो काम तो उण नैं करणो भावनो ई नीं। वा केगावन फवती, करवा ने हाथ में काम नीं कभी रैणे री फुरसत नीं। छोटोड़ी केवती सुणती घणो नीं ही। छीखा दांत गडाय देती, बटको भर लेती पछे वा हाय, हूय करती, गाळियां भुमती, यूं बास ने मांये कंचाय लेवती। आखो दास वायो व्हे जातो।

यां दोई धणी लुगाई ने भगवान एक सा घड़ियां। दुब्बी डील री लांबो चौड़ो, हट्टो कट्टो, चाटो नाक, माखिया एड़ी जाणे वे दुनियां ने समझे ई नी घर नीं कांई पूछणो ई चावे। भोळो ढाळो पग खतरनाक, जोरदार पण गरीबड़ो, एड़ा आदमी, हेरियां थोड़ा लाधेला।

छदामी ? छदामी तो एड़ो लागतो जाणे काळा भाटा ने कोर कारीगरां मूरती घड़ी है। थोड़ोक ई कठै थोथलियो नी, कठै ई सूखियोड़ो नीं, सरव अंग भरियो पूरियो। कैवो तो नंदी री कराड़ियां सूं नीचे डाक पड़े, कैवो तो बांस रा झाड़ां पे चढ टाळ टाळ न डाळियां काट लावे। जो काम कैवो जो कर बतावे, यूं ई नीं करे, हुंसियारी रे साथ करे। सेंग काम उण सारू सोरा है। लांबा लांबा काळा केसां में तेल घाल न पट्टा पाड़ न कांधा तांई लटकाया राखे। बणियो ठणियो रेवे।

दूजी दूजी गांम री लुगायां रा रूप निरखवा सूं टाळो तो वो नीं खातो, वां री निजरां में मांप रा रूप ने मंड देवा रो उण रो मन ई घणो करतो।

कांई ज जोर जबरदस्ती नीं कीधी । छदामी री काया कळपती रै । ई अवपळी जोव जवान धण रो मोह, वैम में बदल गियो ! यो वैम हिवड़ा रो दरद बण रात दिन डसतो रैतो । कदी कदी तो वीं ने मतरो दुःख व्हेतो के वो सोचवा लागतो के या राड मर बळ जावे तो पापो कटे । मिनख ने मिनख सूं पतरो ईसको व्हे वतरो ईसको तो जमराज सूं ई नीं व्हे ।

चंदा ने छदामी खून माथे ओढ लेवा ने कियो तो चंदा री आखियां फाटी री फाटी रैगी । वीं री दोई काळी काळी आखियां बळबळता खोरा री नांई छदामी ने बाळवा लागी । उण रो तन अर मन तड़फवा लागो के ई राखस धणी रा पंजा मायनूं निकळ न भाग जावूं । आनमा अमूज न खिलाफत करवा लागी, मन तो बारोठियो व्हेगियो ।

छदामी घणी खातरी दीधी, मन मनायो के डरपवा री कांई बात नीं । पछे वी ने सिखाई पढ़ाई थाणां मे कांई केवणो, कचेड़ी में कांई केवणो । पण चंदा तो वीं री लांबी चौड़ी सीखावण पूरी सुणी ई नीं, माटो व्हियां बैठी री । दुक्खी तो सगळा कामकाज में छदामी रे भरोसे ई ज रैवतो । छदामी कियो के चन्दा रे माथे इलजाम लगाय दीजो तो दुक्खी बोलियो, 'पछे बीनणी रो कांई व्हेला ।

'वीं ने तो म्हूं छुड़ाय लूं ला ।'

भाई री बात सुण पंच हरयो दुक्खी निचंत व्हेगियो ।

[२]

छदामी लुगाई ने सिखायो 'यूं यूं केवजे, जेठाणीजी म्हनें मारवाने दांतळी लेय न आई जो म्हूं ई दांतळी उठाय वां ने रोकवा लागी जो कजाग़ा किण तरै लागगी । ये सारी बातां रामलोचन री बतायोड़ी ही । ई रे सागे सागे जो जो बातां कैवणी जरुरी ही वे सगळी वां छदामी ने बताय दीधी ।

पुलिस तो तैकीकात करवा लागी । आखा गांम रा मन में या बात पक्की जमियोड़ी के जेठाणी रो खून चंदा कीधो । गामवाळां रा बयाना सूं ई यो ई साबित व्हियो ।

पुलिस चंदा ने पूछियो तो चंदा हंकार कीधो, 'हां, खून म्हें ई ज कीधो ।'

'खून क्यूं कीधो ?'

'म्हनें सुवावनी नीं ज्यूं ।'

'कोई लड़ाई झगड़ो व्हियो ?'

'नीं ।'

'वा पैला थने मारवाने धाई ?'

'नीं ।'

'थनें दुख देवती ?'

'नी ।'

जवाब सुणिया तो सब हैराणगत व्हैगिया ।

छदामी रा तो होस उड़गिया बोलियो 'या सावळ नीं कैय री है पैला मोटोड़ी ...'

दरोगे डांट लगाय वीं ने चुप कर दीवो । आखिर तक जठे जठे जिरह व्ही सब जगां एक सो जुवाब देवती री मोटोड़ी रो हमलो करियोड़ो कठे ई चंदा नीं हंकारयो जो नीं हंकारयो ।

एड़ी जिद री पक्की लुगाई कठे ई नीं देखी । फांसी रा तखता कानी पांवडां भरती जाय री, रोकिया रुक नी री । कांई खतरनाक रूसणो कीवो । चंदा कदाच मन में कैय री', म्हूं थनें छोड ई जोवन ने, ले फांसी रा तखता पै चढ जावूं । फांसी रो फंदो गळा में घालूं । म्हारा ई जनम रो छेलो बंध फांसी रो फंदो है ।'

भोळी भाळी बीनणी छोटी सी रंभा लाडी चंदा, कदी बण न चाली, घूंघटो काढ न आई जि गांम में, मिंदर रे आगे, चौवटा रे बीचे, ठाकरां रा रावळा आगे व्हे, डाकखाना र स्कूल रे भड़े व्हे गांम री वा नेन्हो सोड़ी बीनणी, कदी बण चाली । जांणियां पिछाणियां, सैंदा मिनखां रे मूंडागे कळंक सूं काळो मूंडो कर हमेसां वास्ते घर छोड़ न चाली । छोरां रो टोळो रो टोळो लारे व्हैगियो । गांव री लुगायां, साथणियां लुक लुक न वी ने देख री । कोई घूंघटा री काणकोलियो कर न झाक री, कोई किवांड़ा री संध मांय नूं देख री, कोई रूंख री आड़ में ऊभी व्हे न्हाळ री । वीं ने सिपायां रे बीचे जावती देख कोई लाज सूं मरी जाय री, कोई नफरत री नजर सूं देख री, किता ई भै सूं हगटा ऊभा व्हैगरिया । डिपटी मजिस्ट्रेट रे मूंडागे ई चंदा आप रो कसूर कबूल कर लीधो । बाकी व्हेवा रे पैला मोटोड़ी री ओर सूं कोई हमलो के ज्यादती के जुलम व्हेवा री बात चंदा रा मूंडा सूं निकळी ई नीं । पण छदामी जि वेळा गवाहीं रा कटेड़ा में हाजर व्हियो तो रोय दीधो 'फरियाद है, म्हारी लुगाई बेकसूर है ।'

हाकम धमकाय धमकाय रोवता ने चुपकर, सवाल पूछवा लागिया । वीं सारी हकीगत सांची सांची सुणाय दीधो । पण हाकम ने वीं री बात पै भरोसो नीं आयो । क्यूं के नाम भर भरोसा रे सरीफ गवाह आमलोचन कियो 'खून व्हेवा रे तुरंत पछे म्हूं मौका पै गियो जद छदामी म्हारा पगां में पड़ न रोयो

के लुगाई ने किण तरे बचावूं, गेलो बतावो। म्हूं काई नीं बोलियो। गवाह दरामी म्हनें पूछ्यो के थे म्हूं केय दूं के म्हारे बड़े भाई रोटी मांगी, वीं रोटी नीं दीधी। जो रीस में आय मार दीधी। यूं किदां म्हारी लुगाई बच जाय काई?' म्हें कियो, खबरदार! हरामजादा, कचेड़ी मे एक हरफ ई झूठ मत बोलजे, ईंयूं बत्तो कोई पाप नीं है।'

रामलोचन पैलां तो चंदा ने छुड़ावने घणी थाता जोड़ी पण वीं देखियो था तो आगे व्हेय माप रो पग खोड़ा में घाल री है जद सोची, चंदा नें छुड़ावता आपां मरांला। झूठी गवाही देवा रो जुरम फठे ई म्हारा पे ई ज नी लाग जावे। ई वास्ते आंपा जांणा जनरो ई केवां।

डिपटी मजिस्ट्रेट मामला ने सेशन रे सिपुरद कर दीधो।

दुनियां रा धंधा तो ज्यूं चालता आया ज्यूं ई चालरिया। खेती-बाड़ी, हाट बजार, रोवणा गावणा सब चालरिया हा। पैलां ज्यूं ई तीनों कच साठ रा खेतां में सावण रो मेह सूंब रियो हो।

पुलिस, मुलजिम अर गवाहां ने साथ सेशन जज री अदालत में हजर कीधा। अदालत मे घणां ई मिनख आय आय ने मुकदमा री पेशी में बैठा हा। रसोवड़ा रे पाछला पूगला पाणी रा भाडा री जमीन रो एक मुकदमो चाल रियो हो। जिरी पैरवी करवा ने कलकत्ता सूं वकील बुलाया हा। फरियादी रा चालीस गवाह हाजर व्हिया हा। सब जणा आपणा हक रो कौड़ी कौड़ी हिसाब मगाय रिया हा। बाळ री खाल काडवा वाळा फैसला करावाने दौड़िया आया हा। वां री धारणा ही के ई वगत इण सूं बत्तो दुनियां में कोई जरूरी काम नीं।

दरामी बारी मांयनूं, अदालत री आगनी अणपायोड़ी दुनियां ने एक बार देख रियो, सपना ज्यूं सारियो सब उण ने। अदालत रा चौक मांयला दरख्त पे बैठी कोयल बोल री 'कू...कू'। वां री दुनियां में कोई कानून, अदालत नीं है नीं ज्यूं।

चंदा, जज रे मूंडागे अणजाण न बोली, 'अरे बापजी, एक ई बात ने घड़ी घड़ी री करीक दोण बताऊं?'

जज, चंदा ने समझाई, 'थूं जाणे कि कसूर ने थूं मंजूर कर री है वो री सजा काई है?'

'नीं।'

जज कियो, 'वीं री सजा है फांसी—मौत।'

चंदा बोली, 'बापजी, थांरे पगां पड़ूं, म्हनें आ ई सजा दो। थारे म्हारा सूं कामो नीं सारे।'

कावली

म्हारी पांच बरसां री टाबरी मिनी घणी चरपरी, वीं री जीभ एक घड़ी जक नीं ले। बारा महीना री ही जदी वी री जबान उथड़गी। जि दिन सूं बोलणो आयो, एक पल छानी नी रेवती। कतर कतर कतरणी री नाईं जीभ चालवो ई ज करतो। वीं री मां तो घणी घरपर घरपर करती देख धाकल देवती। पण म्हारा सूं धाकलीजतो नीं। मिनी छानी मानी बैठ जावती तो म्हनें अणखावणो लागवा लाग जावतो। म्हारे घर वीं रे ई ज बातां घणी घुटती।

दिन ऊगां ई ज्यूं म्हें म्हारा उपन्यास रो सतरवों परिच्छेद लिखवा ने हाथ घाल्यो न मिनी आयगी, 'काका, आपणो रामदयाल है नीं, कांसणी कोडी चाळो है सो कागला ने 'कौओ' कैवे। वो काईं नी समझे।'

म्हैं म्हारी म्हारी भासा सारू काईं केवूं जठा पैला तो वा दूजा परसंग पे आयगी, 'देखो काका, भोळो कैवे हाथी सूंड सूं पाणी बादळा में फैंके ज्यूं बरसा व्हे है? भोळो झूठो है नीं? वो तो बकबक करे नी?'

म्हारा पड़ूत्तर री वाट नीं नाळी वीं। झट देणी री एक दूसरी बात पूछ लीधी, 'काका, मां थारे काईं लागे?'

म्हैं सोच्यो, 'मिनी तूं जा, भोळा रे साथे रम, जा। अबारूं म्हूं कोड़ो काम कर सूं, है।'

वा देस रे बने, म्हारा पगां नखे बैठ, दोई गोड़ा ने अर हाथां ने हिलाय हिलाय जल्दी जल्दी बोलवा लागी, 'आटको बाटको, दही में डाटको।' म्हारा उपन्यास

रा सत्तरवां परिच्छेद में उण वगत परतापसींग कांचनमाळा ने मटक माय नूं काढ़ अंधारी रात में, ऊंचा गोखड़ा सूं नीचे बैवती नंदी में कूद रियो हो।

म्हारो घर गैला रे माथे हो। मिनी 'माटचा बाटचा' ने छोड़ न भागी। जोर सूं हेला पाड़वा लागी, 'काबली भो काबली।' मैलो कुचीलो, ढीलो ढाळक कुड़तो पैरियां, माथा पै साफो बांधियां, कांधा पै मेवा रो झोळो लटकायां, हाथ में दो चारेक अंगूरां री पेटियां लीधां एक लांब तड़ांग काबली धीरे धीरे सड़क पै जाय रियो हो। वीं ने देख मिनी रा मन में कांई आयो जो तो खबर नीं। वा जोर जोर रा हेला पाड़वा लागी। म्हें जांणियो, ईं सत्तरवां परिच्छेद रे लिखण में वो श्राड श्रड़ायो व्हे जाय, वो तो मवाळ्ं मेवा रो झोळो कांधा में घालियां श्राय ऊभो रेवेला।

मिनी रो हेलो सुण न काबली मुळकते थके वी रा माडी ने मूं डो फेरियो, घर श्राडी ने पांवडो भरियो न मिनी तो भागी जो कजांग कठे ई सुरगी। वीं रा मन में वैम बैठियोड़ो हो के वीं रा झोळा ने हेरे तो, मांयनूं दो चारेक जीवती जागती छोरियां निकळ जावे। काबली मुळकते थके श्राय न सलाम कीधी, ऊभो रैगियो। म्हें सोची तो ही के अबार परतापसींग न कांचनमाळा मोटी श्रापदा में है पण घरे बुलाय न कांई नीं मोलावणो ई श्राछो नीं लागे।

क्यूंक मोलायो। पछे श्रटीला वटीला गप्पोड़ा मारवा लागिया। अबदर रेहमान री, रूस री, अंगरेजां री, सीमाड़ा रा हिफाजत री बातां चालणी।

ऊठ न जावती वेळां, पथकचरी बोली में काबली पूछियो, 'मार री बाई कठै गिया ?'

म्हें मन रो वैम भांगवा ने मिनी ने बुलाय लीधी। वा म्हारे अड़ न ऊभी, काबली रा मूं डा ने, मेवा रा झोळा ने वैम सूं देख री। काबली झोळा मांयनूं दाखां र खुरबांनी काढ़ न मिनी ने देवा लागो। मिनी कांई नीं लीधो, म्हारा गोडा रे चैंठगी। वींनो श्रोळखांणु यां री यूं व्हो।

थोड़ा दिनां पछे, एक दिन परभात रा, म्हूं कठै ई बारै जाय रियो हो। देखूं कांई, म्हारा बाईजीसा'र बारणा कनें बेंच पै बैठिया काबली सूं बार बार कर रिया। काबली वीं रा पगां कनें बैठियो, मुळकतो जाय रियो अर मन लगाय न सुन रियो। बीचै बीचै काबली आपरी बात ई अधकचरी बोली में कैवतो जाय रियो। मिनी नें उणु री पांच बरस री ऊमर तक एड़ो सिरता सूं सुणवा वाळो श्रोता बापा रे सिवाय को ई न मिलियो हो। म्हूं देखियो, वीं री छोटोसीक ओढ़णी बदामां सूं दाखां सूं भरियो हो। म्हूं काबुली ने कियो, 'इ क्यूं देवता हा रे ?'

अबै मत देवजो।' यूं' कैय लुनिया मांयनूं अघेली काढ न बीं ने झेलाई। वो संकियो नीं, अघेली लेय झोळा में न्हाक दीवी।

पाछो घरै आय न देखूं तो वो अघेली घर में राडो कर राखियो। मिनी री मां, हाथ में अघेली लीधां मिनी ने धाकल री, 'बता, या अघेली थनै कठै आयी ?'

मिनी केयरी, 'काबली दीधी।'

'थें अघेली लीधी क्यूं ? बता।'

मिनी री री कर रोवा री त्यारी कर री, 'मैं मांगी कोयनी वी य दीधी ही।'

म्हें आय, मिनी ने आवा वाळी विपदा सूं बचाई। बी नें बारै ले आयो। खबर पड़ी, काबली रे लारे मिनी रो यो पैलो मिलाप नीं हो। वो कतरी दांण आयो हो, पिस्ता, बदामां री सूंक खुवाय खुवाय मिनी रा छोटा सा मन ने आंपणो कर लीधो।

म्हें देखियो, यां दो ई गोठिया में दो चार बोल तो जमियोड़ा है। रैमत ने देखतां ई मिनी पूछती, 'काबली, ओ काबली, थारा झोळा में कांई ?'

रैमत 'हां' रे माथे यूं ई बेमतलब अनुस्वार लगाय हंसतो थको कैवतो, 'हाथी।' ईं हंसी में कोई झीणो अरथ व्हे जैड़ो कांई नी। पण ईं कौतक में वां दोवां ने ई मजो आवतो। सरद रुत रा पैला पोहर में म्हने ई वां री हांसी सुंवाई एक दो बातां और ही जो वे रोजीना कैवता। रैमत मिनी ने केवतो, 'कदै ई सासरे मत जावजे हैं।'

यूं तो आपणा अठा री टाबरिया जामे जि दिन सूं ई सासरा रो नाम जांणे। पण म्हां नुवा जमाना रा मिनख हा जो मिनी ने सासरा रो ग्यान ओळूं म्हां लोगां सूं मिलियो नीं। रैमत रो अरथ बी रे सांगोपांग समझ में नी आवतो। मिनी सूं कोई बात व्हो जुबाब दीधां बिना नीं रैवणी आवतो। वा साम्हो रैमत ने पूछती, 'थां सासरे कदी जावोला ?'

रैमत मनमत्ता रा सुसरा सारूं मुक्को उठाय न कैवतो, 'म्हूं सुसरा ने मारूंला।'

या सुण मिनी खूब हंसती।

देखतां देखतां मस्क सरद रुत आयगी। पैलां रा जुगां में राजा ईं ज रुत में दिगविजै करवा ने निकळता। म्हें कलकतो छोड़ न पग बारै ई नीं मेलियो हो। ज्याद ई ज वास्ते म्हारो भंवरो सातूं दीप में भमतो रैवतो। देस परदेस री बातां जाणवा री म्हारा मन में हमेसां लाधी रैवती। कोई देस रो नाम सांभ-

ऊठा ई म्हारो मिजाड़ो बठे जाय लागतो। परदेसी मागम ने देखतां ई म्हारो मनड़ो नंदियां, परबतां घर जंगळा रे बीचें एक छोटीमोक कुटिया रो चित्र उतारवा लागतो। हूंसी खुसी, आजादी रे सागे मुसाफिरी रा सपना देखतो। म्हूं तो ठांग सिरणगार हूं। म्हूं मनो ने म्हारा घर रो खुणो भलो। खुणो छोड़ न घर बारे पग देवणो मरणो लागे। परभात रे पोहर, म्हारा छोटामाक कमरा में, मेज कनें बैठ वाँ काबली सूं गप्पोड़ा मार, देसाटण रो काम काढ लूं। म्हारी आंखियां आगे काबुली सांगोपांग काबल री तस्वीर उतार दे। दोई आड़ो ने ऊंचा नीचा, बळियोड़ा राता रातां भंगरा। ऊंचा ऊंचा विखम परबतां रा सांकड़ा घाटा। लदियोड़ा ऊंटा री कतारां जाय री है। साफा बांधियोड़ा सौदागर, मैनारखु ऊंटा पे चढिया जाय रिया है, पगां चाल रिया है। किंरे ई हाथ में बरछो, किरा ई हाथ में तोड़ादार बंदूकां। बादळा गाजता व्हे जेड़ा मेरा सादमें, अधकचरी बोली में देस री वातां करता जाय रिया है।

मिनी री मा वेंमी सुभाव री लुगाई है। रात ने कोई रोळो सुणियो न वीं ने वेम आयो के दारू पीयोड़ा मांपा रा घर साम्हों आय रिया है। वीं री जाण में तो या दुनियां ई सूंणां सूं वीं सूं णां ताई, चोर धाड़ायती, गुंडा, दारूड़िया, सांप, बिच्छू, मलेरिया मोतीझड़ा सूं भरी है।

सतरा बरस व्हेगिया वी ने ई दुनियां में रेवता ने पण वीं रा मन रो यो भे भर वेम ओजू नीं मिटियो।

रेमत काबली री कानी सूं वा नचींती नीं ही। म्हनें घड़ी घड़ी री सावचेत रैवा ने कैवो करती। म्हूं उण रा वेम पे हँसियो तो वा एकणदम कतरा ई सुवाल पूछण ढूकगी।

'क्यूं, टाबरा री चोरी कोनी व्हे कांई?' 'काबल में छोरा छोरी रो वैपार नी व्हे के?' 'लांबा झांबा काबली साल छोटा साक बाळक री चोरी करणी मोटी बात है कांई?' एड़ा कतराई सुवाल करगी।

म्हनें मानणो पड़ियो के ये अणव्हेणी वातां तो कोनी पण वेम जेड़ी वात ई कोयनीं। एतबार करणे री सगती भगवान सगळा ने बांटती वेळा एक सरीखी नीं बांटे। म्हारी लुगाई रा मन रो वेम मिटियो नीं। खाली उण रा वेम रे बड़े सूं ई दोस देखियां बिना रैमत ने घरे आवता ने म्हें बरजियो नी।

सालोसाल माह रा म्हीना में रैमत आप रे देस परो जावे। यां दिनां में गराहकां सूं पैइसो ऊगावाने करड़ो काम करणो पड़े। घरे घरे जावणो पड़े पण तो ई दिन री. ऊगाळी वो आय न मिनी सूं मिलें जरूर। यूं लागतो के आपे दोवा मांय ने कोई षड़यंत्र चाल रियो है। जि दिन परभात री पोहर आवतो

नीं आवतो तो सांझ रा हाजर लाधतो। अंधारा मांयने घर रा खूंणां में, ढीलो ढवळक जामो पजामो पैरियां, लांवतड़ाक, भोळा भोळी बाळा काबली ने देख सांचांणी एकणदम संका आय जावती।

पण जदी देखतो के मिनी, 'काबली, काबली' हेला पाडती हँसती हँसती भागो आवतो र दो न्यारी न्यारी ओस्या वाळा में वा ई जूनी, भोळी हंसी व्हेवा लागती तो म्हारो हिवड़ो हुळसाय जावतो।

एक दिन सुवे म्हूं म्हारा कमरा में बैठो थको, म्हारी नुवी पोथी रा प्रूफ देख रियो। सियाळा रो सी, सीख लेवां रे पेला आजकालै दो चार दिना मूं जोर रो पडरियो। जठी ने देखे वठी ने सी री वात चाल री। एड़ा सी पाळा में, परभात रो तावड़ो, बारी मांय मूं आय, मेज रे हेटे, म्हारा पगां माथे आय गियो जो वीं री तंपती सुंवाय री। कोई आठेक बजिया व्हेला। सुबै री हवा खोरी करणियां, माथां रे गुळबंद पलेट पलेट पाछा आय रिया हा। सड़क माथे जोर रो हाको हूलो सुणीज्यो।

देखूं तो आंपणा रैमत ने दो सिपाई बांध न ले जाय रिया। कौतक देखणियां छोरां रो टोळो रो टोळो लारे चाल रियो। रैमत रा कुड़ता माथे लोही रा छांटा लाग रिया। एक सिपाई रा हाथ मे लोहिया सूं लालीज्योड़ो छुरो हो म्हूं बारणा बारे निकळ सिपाई ने पूछियो, 'कांई वात है ?'

कीं तो सिपाई सुणाई न कीं रैमत सुणाई। म्हां के एक पाड़ौसी, रैमत, सूं रामपुरी चादरो मोलायो। वीं रा थोड़ाक रिपिया देवणा हा जो देवा ने नट गियो। बस, ई ज वात माथे दोवा में बोलचाली व्हेगी। रैमत छुरो बाह दीघो।

रैमत वी झूठा, नापा आदमी ने कान रा कीड़ा झड़े जेडी गाळिया ठरकावतो जाय रियो हो। मतराक में तो 'काबली ओ काबली' कैवती थकी मिनी घर सूं बारे निकळी।

रैमत रो मूंडो कौतक री हाँसी सूं चमक गियो। वी रा कांधा पे आज झोळो नीं हो जो दोई गोट्या रे बीचे हमेसा वाळी रोळ नी व्हो। मिनी आवतां ई पूछियो, 'थां सासरे जावोला ?'

रैमत हँस न बोलियो, 'वठे ई तो जायरियो हूं।'

रैमत भाप गियो के मात्र वीं रा पडूत्तर सूं मिनी रा मूंडा पे हाँसी नीं आई। मुक्को बताय न वो बोलियो, 'सुसरा ने मारतो पण कांई करूं हाथ बांधियोड़ा है।'

छुरो मार देवा रा गुस्सा में रैमत ने नरां ई बरसां री कैद व्हेगी।

वगत बीतजो गियो काबली रो धियान ई नीं रियो चित्तां उतर गिया म्हां

घरे बैठ्या रोज रो काम धंधो करता, सुख सूं जिन्दगी बीताय रिया हा जदी कदे ई मन मे ई धियान नी आयां के वो पाजादी सूं पग्वतां में घूमणियो फिरणियो आदमी, जेल री ओवरी में, बरस पे बरस किया काडरियो व्हेला।

अणपाळा सुभाव री मिनी घोवणा मिसर ने बोलर, नवी साईस रे सागे मिसरता वीधी। पछे ज्यूं ज्यूं मोरया आवा लागी ज्यूं ज्यूं सायणियां रो साथ करवा लागी। घोर तो घोर अबे तो वीं रा बाप रा कमरा में ई घणी नीं भावे। म्हारे सागे ऊठणो बैठणो ई बंद व्हेगियो।

यूं करतां कतराई बरस पाछे बरस आवता रिया, जावता रिया। पाछी सरद रुत आई। मिनी री सगाई रो दसतूर व्हेगियो। पूजा री छुट्टियां में उण रो वियाव है। अबकाळे दुरगा विसरजन रे सागे सागे म्हांका घर रो उजाळो मिनी, मां बाप रा घर ने सूनो कर सुसरा रा घर में उजाळो करेला।

परभात रो सूरज घणो रूपाळो ऊगियो। चौमासा रे पछे सरद रुत रो नुवो नुवो ऊजळो तावड़ो सोनां री नांई चमक रियो। कलकत्ता री गळियां में ईंटा रा मेला मेला घर तावड़ा री आभा सूं उजळा व्हेरिया।

म्हां के घरे आज पो फाटियां री सरणाई बाजरी। मिनखां रो आवणो जावणो चालरियो, वरांडा में, कमरां में भाड़ टांक रिया, जां रो टणटण म्हारा कमरा तांई सुणीजरी। 'चालो, झट करो, अठी ने जावो, अठी ने आवो' रा हेला पड़रिया।

म्हूं म्हारा लिखवा पढ़वा रा कमरा में बैठियो हिसाब मांड रियो अतराक में रैमत आयो, सलाम कर न ऊभो रैगियो।

एक दांण तो म्हारा सूं ओलखणो नीं आयो। नीं तो वीं रा कनें झोळी ही, नीं वे लांबा लांबा केस ई हा। मूंडा पे पैला वाळो आब ई कोयनी ही! छेवट में वीं री मुळक देख न ओळख्यो के यो रैमत है।

'कद आया, रैमत ?'

'काले संझ्या रो जेळ सूं छूटियो हूं।'

सुणतां ई वीं रा लफज तो म्हांरा कान में वाजिया खटाक देणी रा। म्हे म्हारी आंखिया सूं कोई हत्यारा ने आज तांई नीं देख्यो। वीं ने देख म्हांरो जीव भेळो व्हेगियो। आज री सुभ वेळा में यो अठा सूं परो जावे तो चोखो।

म्हें वीं ने कहियो, 'आज तो उतावळ रो काम है, उण में लागियोड़ो हूं, अबार थां जावो, पछे आवजो।'

म्हारी बात सुण वो जावा लागियो पण बारणा रे कनें जाय थोड़ो अठी ने बटी ने व्हेय न बोलियो, 'बची ने देख लूं थोड़ीक।' कदाव वो या ई जाणतो

के मिनी भोजू ई पैसा जेड़ी टाबरी व्हेला, वैसां री नाई 'काबली भो. काबली' करती दौड़ी आवेला। वां दोवां रे बीचे वे ई पैली वाळी कोमत री हांसी ऐ वातां व्हेला। वो तो पैसो री मितरता री थान चीतार न एक पेटी अंगूरा री भर एक पुड़ा में बदाम न दाखां कोई दूजा काबली कना सूं मांग सांय न लेवतो आयो हो। पैलां वाळो भोळो वी रा मने नीं हो।

म्हें कियो, 'आज तो घर में कांम भरोई है। आज तो किण सूं ई मिलणो नीं व्हे।'

म्हारो पडूत्तर सुण न वीं रो मूंडो लटक गियो। छानो मानो एकदांम म्हांरा मूंडा सांम्हो नाळियो, पछे 'सलाम बाबू सा'ब' कैय बारणे निकळ गियो।

म्हारा काळजा में जांणे पीड़ा उठी। म्हू विचार रियो के वीं ने पाछो हेलो पाडूं जतरे देखूं तो वो पूठो आवतो दिख्यो।

अठै आय न कियो, 'ये अंगूर न थोड़ीक दाख बदाम, बबी सारूं लायो हो, वीं ने देय दीजो आप।'

म्हें वीं रा हाथ में सूं सामान लेय पैईसा देवा लागो, पण वीं म्हारो हाथ पकड़ लीधो। कैवा लागो, 'थारी मेरबानी है। हमेसा याद आवेला। पैईसा रेवा दो।' थोड़ीक ठम न केवा लागो, 'आपरी बेटी जेड़ी, देस में म्हारे ई बेटी है। म्हूं वीं ने चींतार चीतार आप री बेटी सारू मेवो ले आवो करूं। सोदो वेचवाने थोड़ा ई आवूं।'

ऐंवने कवे, ढीला ढवळक कुड़ता माय ने हाथ घाल छाती कना सूं एक मैलो कुचो पातळो कागद कांढयो न आवता सूं वी रा पड़ खोल, दोई हाथां सूं म्हारी टेब माथे छीदो कर दीधो। कागद रा पानड़ा पै एक छोटा नान्हामाक पंजा री छाप ही। बेटी री ई यादगीरी ने छाती रे लगाय रैमत बरसो बरस कलकत्ता रा गळीकूंचा में सोदो वेचवाने आवतो। यो कागळ सूं मांडियोड़ो पंजो वीं रा काळजा रे अड़तो यो वीं ने लागतो के बेटी रो कंवळो कंवळो हाथ वीं री छाती रे अड़ रियो है। काळजा में जांणे हेमाळो फुळ जावतो।

पंजो देख न म्हारी आंखियां डबडबायगी। म्हूं भूल गियो के यो काबली मेवा वेचवावाळो है अर म्हूं रईस हूं। म्हनें तो लाग रियो है यो वो है वो ई म्हूं हूं। वो ई बाप है। म्हूं ई बाप हूं। वो परबतां रा वासी री छोटी सी पारबती रो पंजो देख म्हनें म्हारी मिनी याद आई। म्हें वीं ने उण ई वगत बारे बुलाई। अन्दरे रोवा रोयो पड़्यो ई व्ही पण म्हूं मानियो नीं। परणेत री पूरो वेस पैरयां, पैंठा सावो सूं सजी वीनणी बणी मिनी लाज सूं देवळी व्हेती, म्हारा कने आय ऊबी रैगी।

पैलां तो काबळी वीं ने देख हड़बड़ाय गियो। पैलां ग्रसी वातां उण सूं करणी नीं ग्राई।

पछे हंसतो थको वोलियो, 'बाई, सासू रे घरे जाय री है कांई.?'

मिनी ग्रबै सासू रो ग्ररथ समझे जो पैलां जेड़ो जुवाब देवणी नीं, ग्रायो। रैमन री वात सुग न वा लाज सूं लाल पड़गी। वीं मूंडो फेर लीधो। म्हनें वीं दिन री वात याद ग्रायगी जि दिन पैंलां पैल काबली सूं ग्रोळखाण व्ही ही। मन में पीड़ जागगी। मिनी परी गी तो रैमत लांबो सास लेय वठी ज धरती पे बैठ गियो। ग्रबै वीं रा मन में चानणां ज्यूं साफ व्हेगी के वीं री बेटी ग्रतरी मोटी व्हेगी व्हेला। वीं ने वा ग्रोळखेला ई नीं। यां ग्राठ बरसां में वीं रो कजाणा कांई व्हियो व्हेला। परभात रा पोहर में सरद रुत रा, सूरज री किरणां में सरणाई बाजवा लागी। कलकत्ता री गळी में बैठियोड़ा रैमत री ग्रांखियां, में ग्रफगानिस्तान रा सूखा परबत फिर रिया हा।

म्हें एक नोट काढ़ न वीं रा हाथ में मेलियो, 'रैमत, देस परो जा बेटी रे कनें। थूं जाय न बेटी सूं मिलेला, थां रा सुख सूं मिनी ने सुख मिलेला।'

रैमत ने रिपिया देवा सूं ब्याव रा उच्छव में एक दो मदा ने काट देणां, पड़िया। विचार राखी जेड़ी रोसनी नीं करावणी ग्राई, ग्रंगरेजी बैंड ई नीं ग्रायो। घर में लुगायां घणी नाराज व्ही पण म्हारा विचार सूं तो एक सुभ काम सूं यो सुभ दिन ग्रौर ई सुभ व्हेगियो।

बग, पैलां री विगत तो या ई ज ही। आजकाले मुकंदलालजी रे सोळां राज्यो़ड़ा बेटा है विनोदबिहारीजी। वां रे मैनेजर है दीवाण गौरीसंकर रा पोता जंमाई अंबिकाचरणजी। मणिया गुणिया। दीवाणजी रो वां रा बेटा रमासंकरजी पै जीव नीं धापियो। बुढापा में वां काम छोड़ियो जदी बेटा ने टाळ पोता जंमाई ने म्हार रे पाट बैठाय गिया।

काम धाम भली भांत चाल रियो। पैलां जमाना में हो वस्यो ई आज रो पण एक आंतरो जरूर पड़्यो। अबै ठाकर चाकर रो ब्यौवार खाली काम काज रो ब्यौवार है, मन रो नीं। पैलां जमाना में नांणो सूंघो हो, मन ई सोरो मिल जावतो। अबै सैग जगा मन री फिजूल खरची जावक बंद व्हेगी। खास आंपणा घरवाळा सारू ई मन रो टोटो है तो बारळा सारू तो आवे ई कठा सूं?

यां दिनां ठाकरां रे रावळे दोयना रो बियाव व्हियो। बहू बनोळा रे दिन दीवाणजी री दोयती इंद्राणी रो पधारबो व्हियो। देखो जाय तो या दुनियां वीं विचित्तर लीलाधर रो कौतकघर है। अठे नाना भांत रा मिनख ने भेळाकर ऊगे सूरज वां रा संजोग विजोग री मजब मजब कंणिया वो मांडतो करे न मागवो करे।

ई बहू बनोळा में, उच्छब रा मौका में, दो न्यारी न्यारी घात री लुगायां में टक्कर ऊडगी। देखतां देखतां बणावट रा वी खाना में एक दूबा रंग रो सूत भिळ गियो, वीं में गांठ पड़गी।

इंद्राणी रात पड़ियां रावळे पूगी, आगे जीमण चूंठण व्हेगियो हो। ठकराणी नैणतारा मोड़ा आवा री वजै पूछी तो इंद्राणी घर रा काम काज रा, डील में आसंग नी व्हेवा रा, एड़ा घणां आळखा लीधा, सुणवावाळा रो जिरो ई जीव नीं धापियो मन मांयली वात इंद्राणी होठां पै नीं लाई पण तोई समझवावाळा सैग समझ रिया हा। वात या ही के यूं तो मुकंदबाबू उणा रा धणी हा, टका पैइसा मे ई बत्ता हा पण कुळ री मरजादा गौरीसंकरजी रा खानदान री ऊंची ही। इंद्राणी आप रा कुळ री मेंहमा ने कदी नीं वीसरती। ठाकरां रे घरे जीमणो नीं पड़े ई वास्ते ईंद्राणी जाग न ताळा लगायन आई। मांयलो मरम समझ न सैग जणां जीमवा री मनवारां करवा लागा। पण इंद्राणी नीं मानी जो नीं मानी। मन नीचो नीं कीधो।

पैलां ई एक दांण ई कुळ रा गुरव ने लेय मुकंदलालजी बीचे र गौरीसंकरजी बीचे ई यूं ई जबरदस्त मडंत व्हेगी ही। वा विगत ई अठे देवणी ठीक रे ई।

इंद्राणी फूटरी ही। बंकिमबाबू जगां जगां सुंदरी अर सौदामणी री

पोरमा दीधी है। पण वा ओरमा ज्यादातर जचे कोयनी। ई डागी रे मांपने एक तरै रो प्रबळ वेग हो मळपटा लेती झाळ ही पण वा झाळ गंभीरता अर ठिमरास में लुकियोड़ी है। वीं री नस नस में बीजळी ही पण चमकती नीं ही।

ई रूपाळी टावरी ने देख मुकंदबाबू मतो कीधो के वांरा मोळ्या लियोड़ा टाबर सूं परणाय दे। वां गौरीसंकरजी रे मड़ाळो मेलियो। स्यामखोरी में गौरीसंकरजी किणी सूं एक पावंडो पाछे नी हा, धणी वास्ते लोही बेवावा ने हाजर रैवता। आज वां रो दिन घरे हो, धणियां रा माथे हाथ हा। बराबरियां ज्यूं बरताव धणी करता पण मालिकां रीं कांण कायदो राखवा में एक रत्ती कोर कसर नीं कीधी वां। धणी रे साम्हे मूंडो खो नमता जिमेकैवणो ई कांई। पूठ पाछे ई अठै ई धणी रो नाम आय जावतो तो अठै ई माथो नमाय न मान करता। पण ई बदाळां पे वे कीं भाव राजी नी व्हिया। लूण पाणी रो करज पर माथा रो करज, दोणो दाणो चूकावाने आधी रात रा हाजिर रैवता। पण कुळ री मरजादा वांरा सूं नीं छोड़णी आई। ठाकरां रा बेटा लारे पोती रो सगपण नीं कीधो।

चाकर रो यो कुळ गरब ठाकरां ने नी सुंवायो। वां रा तो मन में उलटो यो सवाल हो के यो बड़ाळो भेज वां रिदमनदार पे सावदी कीधी है। पण गौरीसंकरजी ई ने आपणी मोंग ह्राण मानी सो टाकर मूंडे नीं बोलिया।

. थोड़ा दिन मणबोलणा रिया जनरे गौरीसंकरजी री काया पंगी कस्ट में री। धणियां रो बेराजीपो काळजा में सालतो रेवतो। वां एक मोटा बायरा, गरीब पण खानदानी लड़का रे लारे पोती रो बिवाव कर दीदो। लड़का ने घरे राख आप री गांठ सूं भणावा पढ़ावा लागा।

कुळ रा कांटस सूं छविमोड़ा दादा री पोती इंद्राणी आज आप रे मालकां रे घरे आय न बनोळा में जीमी नी। कैणे री कांई बात, ई ब्योवार पे मालक री बेर ने कमरोस आवणो ई हो। टकराणी रा मन में गुणस बैठ गो। ईव्वाररे दिना सूं देखवा लागी, यो ने दीखवा लागियो ईद्राणी टबरा पे टपरा करती बार री है।

रैनी घोट हो या टबर दोनी के इंद्राणी गेंदी गांठ सूं मड़ांजड़ी, बात ठग न रावठे गई। कांई कहरत हो का, पण मन री छक भनावणो।

दूजी बात। इंद्राणी ने आप रा रूप री घमंड घणो, टसको घणो। है रूप, रूपाळी है सा, पण आप वाळी विनम्र, चाकरी रा चाकरां रे उनरो रूप देखने मळ्ळे डूब नीं, पर बायना ई नीं। वीं री यो केवणो तो सांचो हो। रूपाळी री वा एरी ही के सारां में बोलोड़ी नीं आवे। पण रूप री घमंड अर ठसकां

दीसनो जो नैणनारा रा नैणां री दूसग हो। रूप तो भगवान री दियोड़ो व्हे। किरा ई हाथ में लेवणो देवणो नीं। पण जिने दोस काढ़णा व्हे मन में भावे ज्यूं काढ़ै। तीजो दोस काढ़ियो इंद्राणी रो तो घमंड सूं ई मायो नीचो नीं व्हे। हकीगत या ही के इंद्राणी रा सुभाव में ठावापणो हो। वांरे लारे घणी ज श्रोटसांण व्हे जाती वा री बात तो न्यारी पण दूजां रे लारे रळणी मिलणी नीं श्रावतो। मान न मान म्हूं थारो मेमान वाळी परकरती वीं में नीं ही। श्रागे व्हे न दूजां रा काम में नवरो न्यावटो नीं करती। खरा न खोटा दूसरा हेर हेर ठकराणी साती पड़ती गी। मौका मार मार, घड़ी घड़ी री, मैनेजर साब रा जनाना, दीवाण साब रा भंवर बाई, कैय सुणावणां सुणावा लागी। एक घंट मू'डे लागियोड़ी डावड़ी ने सणकार दीधी ओ इंद्राणी री देही रे हाथ ऋड़ाय ऋड़ाय सावण ज्यूं पुळ पुळ बातां करवा लागी। गैणां ने हाथ में ऊंचा नीचा कर देखवा भाळवा लागी। गळा रा कांठला री, बाजू री थोड़ी रा बखांण कर पूछवा लागी 'क्यूं बाई जी, यां पे सोना री झोळ चढ़ियोड़ी है कांई ?'

इंद्राणी घणी ठिमरास सूं बोली, 'नी तो, पीतळ रा है।'

ठुकराणीजी इंद्राणी ने हेलो मार न बोली 'थां वठे एकला क्यूं ऊभा हो? यां पातळां ने हाट सोना वाळा री पालकी में दे श्रावो नीं।' घर री डावड़ी भई ऊभी काम भळायो इंद्राणी ने।

इंद्राणी गैरो गैरो श्रोरणियांवाळी पतळो ने उठाय मोटा मन सूं एक पब सारू नैणनारा ने देखी, दूजे ई पब श्रीगणी री बाबो उठाय नीचे देसा ने उतरगी।

वांरे वास्ते पातळां ले न गी यां इंद्राणी ने बाबा उठावा श्रावती देखी तो खिजळावली। बोली, 'अरे श्रार घोड़ा क्यूं देस दिया हो, दे देवो नीं वीं छोरी ने।'

इंद्राणी बोली, 'घोड़ा लिया रा है।'

'तो लावो, म्हानें ई देय दो।' हाथ मांडियो लेवा ने।

'नीं, नीं, म्हूं ई लियां चाल री हूं।' कंवली बड़ी घणा [illegible] सूं चार पालकी में पालटा लेय श्राई। श्राजे पनघुरणा रासी व्हे कारण बरा में [illegible] मैनाव री व्हे। दा दो दिनां रा संजोग में ई हटवेंणा री वीं भैलाणी री मन टचकरा लागग्यो के ई मिजकोरी इंद्राणी ने म्हारी भावली बणाय सूं।

[illegible] बाळा पोंटा टोंटा, बोलणा, मगम रा काम [illegible] नैणनारा [illegible] इंद्राणी [illegible] लेय लीधा। वीं रा देही में एक ई [illegible] नीं। वीं रा [illegible] री [illegible] [illegible] री [illegible] रे घड़ घड़, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कर दिया। ज्यूं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वीं ज्यूं नैणनारा री [illegible]

श्रोर ई भभके। इंद्राणी सैंग समझ री, मौको देख, सगळां री श्रांख टोळाय, रामराम कीधां बिना ई घरे श्रायगी। श्रसी टळकी के किने ई खबर नी पडी।

[२]

जो चुपचाप, छानामाना बरदास्त कर जावे, वांरे मायली मार घणी ऊंडी बैठ जावो करे। इंद्राणी श्राज रा श्रपमान ने गिट तो गी, पण मांयने ई मांयने काळजा पे करोत चाल री ही।

इंद्राणी रे विनोदविहारी के सगपण री वात चालो ही ज्यूं इंद्राणी रा भूवा रा बेटा भाई बामाचरण लागे नैणतारा रा सगपण री चरचा ई चाली ही। वो ई बामाचरण विनोदविहारी रे श्रठे मामूली मुनवार रो काम कर रियो। इंद्राणी ने घोजूं खूब श्राछी तरे याद है नैणतारा रो बाप छोटीसीक नैणतारा ने ले वां रे घरे श्रायो हो। बामाचरण रे सागे सगपण कराय देवा ने दीवाण गौरीसंकरजी री घणी गरजां कीधी। नान्हीक नैणतारा री श्रौस्या मूं उंची वातां सुण उण रे श्रागे लजाळु घोड़बोली इंद्राणी श्राप ने कमजोर, श्रजांण मानवा लागी। गौरीसंकर की टाबरी रो चपचपळापणो देख घणा राजी व्हिया। पण लड़की रो खानदान उगणीस बीस व्हेवा सूं ई सगपण ने ठीक नी समझियो। पछे वां ई ज श्रागे व्हे न कोसिस कर न खानदान में पातळा, विनोदविहारी रे सागे नैणतारा रो सगपण कराय दीधो।

यां सैंग वातां ने चीतार इंद्राणी रो जीव सोरो नीं व्हियो साम्हो श्राज जो मोजनो पड़ायो वो श्रोर इपक सालवा लागो। वी ने महाभारत री कथा सुक्राचार्जजी री बेटी देवयानी श्रर शर्मिष्ठा री याद श्राई। श्राप रा मालिक री बेटी शर्मिष्ठा रो घमंड गाळ न देवयानी वी ने श्राप री दासी बणाई ज्यूं वा ई नैणतारा ने करे तो बदलो लेवणी श्रावे। एक जमानो हो जदी मुरदवादू रे श्रठे गौरीसंकरजी रो ई वो पद हो जो दैत्या रे श्रठे गुरू सुक्राचारजजी रो हो। वी गत गौरीसंकरजी चावता ज्यूं कान पकड न उठाता बैठाता। चावता तो गौरीसंकरजी बांकागढ री जमीन श्राप रे घरे मोल ले लेता। पण वा मालका री भलो चाही, वी ने ऊंचा उठाय श्राकास तक पूगाय दीधा। वां री पताळ तक बड़ी दीवाणजी रा परताप सूं पूगी है। जदी ज तो श्राज वा ने याद कुण करे। उवें जस कयूं मानवा लागा। इंद्राणी सोचवा लागी, 'म्हारा दादा बांकागढ रो ठिकाणो मोल लेणो चावता तो डावड्या हाथ रो काम हो। वां में श्रतरो जोर हो। पण काम नीं मोलाय श्रापरा घणी जांण वा ने देवायो। देखो जावे तो या तो म्हांरा दादा री बकसीस है। श्राज वां रा बेटा ने जस जागणो तो कठे रियो

साम्हां टप्पा मारे । आज म्हांरा दास रा दीधा मगा धन रा जोम में पाट लिया है, म्हांरा ई मांजना लेय लिया है ।' इंद्राणी सोचती जावे ज्यूं चितड़ो दुखी व्हेतो जावे ।

घरे आय इंद्राणी देखियो भरतार आरामकुरसी माथे पड़िया अखबार बांच रिया है । वे रावळे ई नूंता में जाय आया हा, कचेड़ी रो काम काज ई निबटाय न बैठिया हा ।

घणां जणां रो यो कैवणो है के लोग लुगाई री सुभाव घणोंकर एक सरीखो व्हेवो करे । आग सूं कठै कठै लोग लुगाई री आदतां एक सरी सी देख वे समझ लेवे के कदास सैंग ठोड़ यूं ई व्हेतो व्हेलो । खेर चावे जो व्हो, अंबिकाचरण अर इंद्राणी री एक दो आदतां जरूर मेळ खावे ।

अंबिकाचरण मिजलसियो मिनख तो है नीं । बारे जावे तो कामसर। आपणो काम पूरो कर, दूजा नखूं काम पूरो कराय घर में वळे तो यूं लागे के बारला हमला सूं रखा करावाने गढ़ में आय वळियो । बारे व्हे तो वे घर वांरो काम । घर में आवे जदी वे भर वां री इंद्राणी । बस या ही वां री दुनियां, राजी हा आप री ई दुनियां सूं । गेणां में लड़ालूंब इंद्राणी ओवरा में गी। वळतां ई अंबिकाचरण हंसी मे कांई कैवणो चावता पर इंद्राणी रो फीको मूंडो देखियो तो होठां पर ली वात होठां पे रेगी । फिकर सूं पूछियो, 'थांरे व्हे कांई गियो ?'

इंद्राणी मुळकी, जांणे चिंता कांई है ई नीं, 'व्हे कांई ? अबार तो थान माळ सूं मिलाप व्हेयरियो हे ।'' अंबिकाचरण आंगणे अखबार फैंकतो बोलियो 'जो तो जाणूं हूं पण ईं रे पैलां कांई व्हियो जो बतावो ।'

इंद्राणी गेणा खोलती बोली, 'वो रे पैलां घणियाणी मोट मरजाद बगसी ।'

'कसी मोट मरजाद ?'

इंद्राणी परणिया री कुरसी रा हात्या माथे बैठे गळा में बांहां घाल दीधी, बोली 'थां आव इज्जत दो जिसू बिलकुल उलटी ।'

पछे सारी विगत मांड न सुणाई । पैला तो मन में विचारयो के खांवद ने कांई नीं केऊं । पण आप री वात नीं राखणी आई । आज कांई पैलां ई कदी एड़ी परतिग्या उण सूं निभी नीं । बारला रे आगे जतरी वा ठावी अर छानी रैवती वतरी सायद कनें आय खुल जावती । सैंग ऊपरली मोट मरजादां, ने तोड़ बगाय देवती, मन री कोई खोळ ने दाब न राखणी नी आवती ।

अंबिकाचरण ने सुण न घणी रीस आई, बोल्या, 'आज ई अस्तीफो दे दूं ।' उणी ज ताळ विनोदबाबू ने करड़ो कागद लिखवा ने बैठिया ।

इंद्राणी कुरसी रा हत्था सूं ऊठ न नीचे ढळियोड़ी जाजम पै परणिया स्याम रा पगां कनैं बैठगी, एक हाथ वीं री खोळां में मेल न बोली, 'एड़ी उतावळ कांई है, कायद रेण दो म्हाराज' । करणो व्हे जो कांने करजो ।'

अंबिकाचरण तो ऊकळ रिया, 'नी एक पळ ई म्हा सूं अबै रैवणी नीं आवे, इंद्राणी काम रा दादा रा बाळजा री कोर ही । दादा रा हिवड़ा रा हेत सूं पोखिजियोड़ी इंद्राणी सुभाव में दादा रै मार्थ गी । घणों आदतां वीं री आप रा दादा जेड़ी है । गौरीसंकरजी जतरी स्याणप सूं तो इंद्राणी मे नी ही पण वीं रा मन में या भावना जरूर ही के मालवा रे भलां सारू काम पड़े तो जीव ई देय देणो चावे । वीं रो परणियोड़ो, भणियो पढियो हो, चावता तो वे उकालत ई कर लेता के कोई दूजो मोर चोखो धंधो कर लेता पण इंद्राणी रा एड़ा खियाल देख वे चिरा मन सूं जो मिलतो जिमे राजी बाजी, ठिकाणा रो काम अबेर लिया हा । आज री भावना पाड़ वात इंद्राणी रे सान री ही पण तो ई वीं रो मन नीं मान रियो के वी रो खावद ठिकाणा रो काम छोड़ भळगो व्हे जावे।

इंद्राणी जुगती सूं, मपणायत सूं बोली, 'विनोदबाबू रो ई में काइ कसूर वां ने तो कांई खबर ई नीं । लुगाई री वात पै अतरा उतावळा क्यूं व्हो' ।

अंबिका हंसवा लाग गिया, वां ने आपरी अक्कल पै ई हंसी आयगी बोलिया, 'वात तो ठीक केवो । घणी व्हो न घोरी व्हो, आज पछे यां वा रे घरे कदी पग मत दीजो ।'

वायरो आयो न वादळा ने उडाय ने लेगियो । वीं दिन तो अतरीक वात व्ही । घर मे सीळसांति व्हैगी । परणिया रो आघ आदर देख इंद्राणी वारळी कड़वी वातां ने भूलगी ।

ठाकरसा तो अंबिकाचरण ने काम काज सूंप नचीता । नचीता ई ज नी परायो मूंडो घोवे । आंख ऊंची कर काम नीं देखे । कोई कोई आदमी आपरी परणी रो जावक ई खियाल नीं राखे, विलकुल बेपरवा व्हे जावे के वा काई करे न काई खावे पीवे । वसीज लापरवाई विनोदबाबू आपरा ठिकाणा साम्ही बरत रिया। जमीं, जागीर री आमदनी तो बंधियोड़ी आमदनी व्हे । विनोद ने वा आमदनी घणी थोड़ी लागती । विनोद रो जीव तो करतो के कोई एड़ो गैलो लाध जावे जो कुबेर रा खजाना मे जावतो व्हे । वो मफत रात में छाने छाने जाय मन में आवे जतरो धन पोटां बाघ न ले आवे । धन कमावा री वो सोचतो ई नीं छाने छाने कोसिसां ई करतो । अणूंता अणूंता रोजगार करवाने छाने सल्ला लेवतो, पछे ठगा रा जाळ में फंस जावतो । कदी तो सोचतो के आखा हिंदवांण रा बंबळिया रा गांडां रो ठेको ले सूं, बंबळिया कटाय गाडा रा पैडा बणावा रो कारखानो

राय में ना कुछ है। उण रो कैवणो है के जूना जमाना में रथ पै धजा फरकती या धजा भाज रा जमाना री मैनेजरी है। रथ ने घोड़ा खैंचे, कचेड़ी रो काम कामेती करे, धजा यर मैनेजरजी देखवा रा है, सोभा रा है।

ईं सूं पैला विनोद कदी काम काज री कोई बात नी पूछती, हां भाप रे खानगी वैपार सारूं भ्रबाणचक रकम चावती तो खजांची ने एकमाड़ो ले पूछती, 'रोकड़ में रकम कतरीक है?' खजांची रकम बतावतो जदी वो भ्रठीने वठीने झाक न रिपिया मांगतो जाणे ये पराया रा व्हे। खजाची दसगत कराय रिपिया निजर कर देतो। नराई दिनां तांई विनोद रे मूंडा पै लाज चढ़ी रैवती।

विनोद री ईं भादत सूं श्रंबिका रे आगे भबखायां पड़ जावती। हिस्सा रा रिपिया जमींदार ने दीवां पछे रोकड़ में के तो मालगुजारी री भ्रमानती रकम रैवती के तनखादारां ने चूकावा री, के खरचा खाता री रकम रैवती। वे रिपिया जदी दूजा खाता में खरच व्हे जाता तो इंतजाम में भबखाई पड़ती। विनोद रिपिया ले, चोर री नांई छिपियो छिपियो फिरतो। पूछवा रो मौको ई ज नी देवतो। कागद रो पाछो जुवाब नी लिखतो। वो भ्रादमी री भ्रोळ में लाज ही भ्रौर कठे ई नीं ही ईं वास्ते उण सूं भ्रांख मिलावणी नीं भ्रावती।

धीरे धीरे विनोद रा ये चाळा बधवा लागिया तो श्रंबिकाचरण ने रीस भायगी। तिजोरी री कूंची भाप रे कने लेय लीधी। विनोद रा मनमत्ते रिपिया लेणा रुक गिया। मतरो कमजोर मन रो भ्रादमी हो विनोद के घरधणी व्हेता थकां ई हुक्म देय मंगवाणी नीं भाया। श्रंबिका री यो एहतियात ई महत्व गियो। लिछमी जिण सूं बेराजी व्हे जावे तो तिजोरी री कूंची थीं ने जावती ने घोड़ी डाबे। नतीजो ऊंधो ई व्हियो। नतीजा री तो पछे जाय नींगे पड़ेला, भदारूं जो बात चाल री है जि में बदूं भांगो पाड़ा।

श्रंबिका रा करड़ा कायदा सूं विनोद मन में करड़ो व्हेर्यियो हो। नैणनारा रा भाटा भिड़ावण सूं वी रा मन में वैम उठियो। राजी व्हियो वो ईं वैम सूं। छाने छाने गुपचुप छोटा छोटा श्रंलकारां ने बुलाय, श्रंबिकाचरण री पोला हेरवा मागो। बामाचरण खास खबरनवीस बण गियो।

मुकुंदलालजी रा जमाना मे दीवाण गौरीसंकरजी, भ्राड़ा पाड़ा रा छोटा मोटा जमींदारां री जमीन जोरांमड़दी दबाय देता। यूं नवी जमीन वो पगां नीचे दाट लीधी। पण श्रंबिकाचरण ऐड़ा कामा रे नेड़ो नी जावतो। व्हेतो यतरे मुकदमो ई नीं लड़तो, भापस में समजवा समभावा री कोसिस करतो।

बामाचरण ठाकरा रे मगज में बैठाई, 'श्रंबिकाचरण भापना कना सूं सूंक खाय धणियां रो हांण करे।' बामाचरण रो जीव ई कैवतो के जिण हाथ

में काम री लाठी व्हे वो पेंइसो खाया विनां रेवे ई नीं।

ज्यूं ज्यूं कानां में भरती व्हेती गी विनोदविहारी रा मन रो वेम ई बधतो गियो। पण थोड़े घाड़े केवा री वीं रो छाती नीं पड़ती। एक तो वीं री आख में लाज ही, दूजो वो डरपतो के अंविकाचरण आंट खाय पाणी रे. पड़नाळे नीं बेवाय दे कठे ई।

नेणतारा परणियां रा मोल्यापणां सूं काई व्हेय एक दिन, विनोद रे पूठ पाछे, अंविका ने बुलाय पड़दा री आड़ मांय सूं केय दीधो 'अवे थांरी चावना नीं। वामाचरण ने काम सूंप दो।'

अंविका पेलां ई भांप गियो हो के ठाकर'सा री सभा में आंपरणे खिलाफ षडपंच चाल रियो है। नेणतारा रा हुकम पे वीं ने अचंभो नी आयो। वां ई ज पगां विनोद कनें जाय न पूछ्यो, 'आप म्हनें सीख बगस रिया हो?'

विनोद विचळाय न बोलियो, 'नीं तो।'

अंविका फेर पूछ्यो, 'म्हारा पे वेम करवा री कोई वजे है'? विनोद लजाय गियो, 'नीं, तो कांई नीं।'

अंबिकाचरण नेणतारा रो जिकरो ई नीं कीधो, कचेड़ी में आय काम पे बेठ गियो। घरे गियो तो इंद्राणी ने वी वात रे बारे में अलिफ सूं बे नीं कियो।

थोड़ाक दिन निकळ्या न अंविका ने इन्फलुन्जा व्हे गियो। मांदगी एड़ी कोई खास तो नीं ही पर नवळा ई सूं कचेड़ी नीं आवणो आयो। सरकार में मालगुजारी भरवारा दिन हा, दूजा ई घांवठा काम भेळा व्हेय रिया। निबळाई व्हेतां थकांई अंविका माचो छोड़ कचेड़ी गियो। कोई नीं जांणतो हो के अचाणचक रा मेनेजरजी आय जाय। सँग जणां केवा लागिया 'नवळाई है, घरे पधार जावो। नवळाई है, पाछा पधार जावो।'

पण अंविकाचरण काम पे बेठ गियो। वीं ने मेज पे बेठ्यां देख अनेकार गुमास्ता घवराय गिया। जांणे काम में एकचित्त व्हेय रिया व्हे ज्यूं जम जम न बेठ गिया। मेज रो खंड खोले तो मांय ने एक कागद नीं। अंविका रा मूंडा सूं निकळ गियो, 'यो कांई?'

सगळा ई जणां सूं माळिया जांणे गेज रो गोळो आय पड़ियो, फाटी आंखियां वाको फाड़िया देख रिया।

वामाचरण ऊठ न बोलियो, 'क्यूं' मांडाणी अणजांण वण रिया हो। सगळां रे मूंडागे तो पिड सूं कागद ले पधारिया है।'

अंविका रा मूडा रो रंग उतर गियो, 'क्यूं'

घोपन्या में धनम धलावतो बामावरण बोलियो, 'जो तो म्हां कांई आणी सा।'

बामाधरण री मिमलत सूं पड़कूंची बणाय, सांड सोन विनोद कागज भाड़ लीधा। जाणियो मौको चोखो है अंबिका माथा पै पडियो है जतरे यां कागजां री तसल्ली सूं जांच करलो। स्याणे बामाधरण ई बात रो धोज नीं राखियो। बीं री या चाल ही के यूं मांगणी तौहीन समझ अंबिका अस्तीपो देय देवेला।

अंबिकाचरण सांड रे ताळो जड़, रीस सूं धूमतो विनोद कनें गियो। विनोद मायने सूं कैवाय दीधो के 'म्हांरो तो माथो फाट रियो है।' अंबिका सूधो घरे गियो, जाय माचा पै पड़ गियो। इद्राणी भागी आई, मावनी आणे काळजा सूं परणिया ने ढांक लीधो। तसल्ली सूं धणी जो बात विगतवार सुणी। यूं तो वा टिमरास धाळी ही पण भाज तड़फ गी। छाती हनूका खावा लागी, काळा बादळां जेड़ा काळा काळा नैणां में बीजळी कड़की। एड़ा माणस री या बेकदरी, स्यामखोरी रो यो सरोपाव।

इद्राणी रो भभकतो रोस देख अंबिका ने लागियो जाणे सगती सराप देवा ने उठी है। इंद्राणी रो हाथ पकड़ सीळो छांटो देवतो बोलियो 'विनोद टाबर ई ज तो है। संज है, फूंक भर देवे ज्यूं बोल जावे।'

इद्राणी परणिया स्याम रा गळा में दोई बाहूयां घाल, छाती रे लगाय लीधो। धणी देर यूं ई बैठी री। आंखियां सूं तुंडगिया निकळणा ठमिया न घर घर आंसू झरवा लागा। इंद्राणी रो जीव कैय रियो, दुनियां रा जोर जुल्म, माण अपमान सूं दूरो खेंच म्हारा हिवड़ा रा जिवड़ा, ने काळजा चीर मांय ने घाल भाडो जड़ दूं।

दोई जणां निस्चै कीधो आज री आज नौकरी छोड़ देणी। जद घर धणी ने ई मांसां पै वैम है जीव नीं धाने तो नौकरी करणी वरया। आंपणा हाथ सूं ई छोड़ दां जो चोखो वे काडेगा जद मांजनो गमाय घरे जावां जिमे कांई लाभ। या निस्चे करवा सूं अंबिका रो मन तो हळको पड़ गियो पण इंद्राणी मांयने ई मांय ने सुलगती री।

मतराक में चाकर आय इतल्ला दीधी, 'खजांची जी आया है अंबिका जाणियो, घांळ री लाज री वजे सूं विनोद रा मूंडा सूं तो 'ना' निकळे नीं जो खजांची ने भेज घरे बैठवा री कैवाई है। कागद पे अस्तीफो मांड न बारे पोळ में। जाय खजांची रे हाथ में कागद झेलायो।

खजांची घबरायोड़ो हो। कागद सारूं कांई नीं पूछ्यो। वीं रा मूंडा सूं तो या ई निकळी सत्यानास व्हेगियो, मैनेजर साब सत्यानास व्हेगियो।

'कांई व्हियो ?'

जवाब में सांभळियो उणरो कस यो है । अंबिकाचरण तिजोरी री कूंची आपरे कनें लेय लीधी, खजाना सूं रोकड़ हाथे नीं आता जदी ठाकरसा तो छांने छांने माये करणो माडियो । वे भांत भांत रा वैपारां में ठगावता गिया, टोटा पे टोटो खावता गिया । ठाकर जिद् चढ़ता गिया, व्हेता र अणव्हेता गैला पकड़िया करांई कर टोटो पूरो करवा रा । व्हेतां व्हेतां माथा पे केस है जतरो लेहणो व्हेगियो । जठी ने हाथ घाले वठी ने हाथे भाटो आवे, अंबिकाचरण माचा में हो पाछातूं खजाना में हो जतरो सैंग पैइसो उठायने ले गिया । यांकागढ़ रा परगणा ने एक जमोदार रे अठे गेंणे मंडाय दीधो हो । वीं जमींदार अतरा दिनां तो पैइसो मांगियो नीं, व्याज वधावतो रियो, व्याज वधावतो रियो । व्याज खूब वधगियो तो देखियो, 'हां अवै आयो पकड़ में । अवै वो डिगरी लाय रियो है । सत्यानाश व्हेगियो री वा'णी या है ।

सुण न अंबिकाचरण थोड़ी ताळ तो गरक व्हेगिया । पछै बोलिया 'आज तो म्हांरो मगज काम नीं दे । काले वात करां ।'

खजांची जावा लागियो तो अस्तीफा वाळो कागज पाछो लेय लीधो ।

मांयने जाय अंबिकाचरण मांडन सारी वारता इंद्राणी ने सुणाय न बोलिया, 'एड़ी आफत में विनोद ने छोड़, अस्तीफो कस्यां देवां ?'

इंद्राणी घणी ताळ पखाण री पूतळी ज्यूं बैठी री, मांयने भांत भांत रा विचार आयड़ रिया हा । छेवट मन ने मार ऊंडो नीसकारो न्हाकती बोली, 'नीं, जी एड़ी आफत में कस्यां छोड़ां ?'

अवै 'रिपियो, रिपियो' रिपिया री पुकार व्हेवा लागी । पर रिपियो कठे ? अंबिकाचरण विनोद ने दबायो के रिपियो काढो घर मांयनां सूं । विनोद तो आप रा छाना रा वैपार बेई घणी-दांण नैणतारा सूं पैईसो मांगतो हो पण वीं कदी नीं दीधो । अबकाळे विनोद नैणतारा रे हाथा जोड़ी कीधी, पगां पड़ियो, गरजां कीधी, गंगां मांगिया, पाछा पैईसा चुकाय देवां री सोगनां खाधी पण नैणतारा तो खोटो धींगलियो नीं काढयो । वीं सोचियो 'टो जो ठो गमाय न बैठिया है । खने है यो देय दीधो तो बस रामजी रा नांम, बैठिया रेवां ।' मुट्ठी रो माल गाढो कर न ऊंडो मेल दीधो । कठो ने मूं ई पैइसो हाथे नीं आयो । इंद्राणी रा मन में एक वात आई, एक अजब आणंद सूं वीं रो हिवड़ो हुलस गियो नैणतारा सूं बदलो लेण रो ओमर अबे आयो । धीरे करो अंबिका रो हाथ पकड़ न दबायो 'रेण दो, था रो धूण ही जतरा थां घणां ई दोड़णा दोड़्या । छोडो आन भरोसे, व्हेणो व्हेवा जो व्हेला ।'

अंबिका मन में मुळकियो, सती रा काळजा में हार तोई लाय लग री ही बुभी नीं। ई विपदा में विनोद तो टाबर री नांई अंबिका रो मूंडो घोघनो, अंबिका ने दया आयगी। मन कैयरियो, ई आपदकाळ में तो छोड़णो ठीक नीं और दूजी कोई पूगणो नीं पूगी तो जमीं जायदाद गैंणे मेलूं। इंद्राणी सोगन देवाय दीधो, म्हारो गळो काटन लोटी पीवो जो जमी जायदाद रे आंगळी अड़ाई तो।'

अंबिका रो दो गातियां वीचे मायो फंस गियो। सोचतो रियो ज्यूं इंद्राणी ने समझावे ज्यूं वा बोलता ने रोके। छेवट में थाक न बैठ गियो।

थोड़ी थाळ बैठी रे, इंद्राणी उठी। तिजोरी खोल भारो सैंग गैणां गांठो काढियो। थाळ में ढिगलो कर न हाथा मे ऊंचायो थाळ बोझा सूं लचक कर रियो। थाळ ने लाय मुळकती थकी स्याम रा पगां में मेल दीधो।

दादा एकाएक आपरी लाडली पोती ने जामी जि दिन सूं ले फेरा लाय उतरे बरसो बरस घणमोला गैणा देवता रिया। धीरे धीरे क्रियां पछै इंद्राणी रो घर प्रवेरणियो कन्य जो भेळो करतो ई ला औलाद लुगाई साहं गैणां गदावतो गियो। सोना रा अर जड़ाव रा गैणा मूंडागे राख इंद्राणी बोली 'दादाजी आखी ऊमर धणियां सारूं दोड़िया, वारा दियोड़ा गैणा पाछा धणियां रे पेट रे अरथ ई लागे, दादाजी री आडी नूं ये गैणा म्हूं थां ने बगसीस करणो चाहूं।' यूं कैय वीं माथो नुवाय। आंखिया मींच विचार कीधो। थोड़ा केस वाळा, गोरा रंग रा चोड़ा ललाट वाळा, खांत्रा छावा दादा री मूरती धार आंखिय आगे ऊभी री, सान्त ऊजळी हंसी सूं मूंडो दमदम कर रियो वा मूरती भडे आप इंद्राणी रा नुवायोड़ा माथा पे हाथ मेल आसीस देय री।

बांसवाड़ रा परगणा ने पाछो मोल लेय लीधो। परगणो घरे आयो पर एक दिन घार री मोट मरजाद ने छोड़ सेणतारा रे घरे इंद्राणी अंबिका ने दी इंद्राणी रा डील पे सोना रो एक तार नीं हो।

जि दिन पछे इंद्राणी रा मन में परमात रो पमरोस नीं रियो।

उद्धार

गौरी खावता पीवता घर में जनम लीधो हो, लाड़ कोड़ में मोटी व्ही। वींरा परणिया पारस रा घर में नातवानी कदरी पडगी ही पण वीं आपरी हाथ री कमाई सूं पाछो घर रो ढाबो ढीबो जमायो हो। आगे घर वाला रो हाथ संकड़ाई में देख न मां बापां गौरी ने सासरे नीं भेजी ही के टाबर दुख पाय। कमर भीज्यां पछै गौरी सासरे आई ही।

कदाच ईं ज मजै सूं पारस वीं रो हामकाम लोवणी परणी ने आप रा हाथ मांयली नीं मानतो। वेम तो वीं री नस नस मांय ने भरयोड़ो हो।

पारस पच्छम में एक छोटा सा क शहर में उकालत करतो। घर में कहूं'बा में और कोई मिनख हो नीं, लुगाई ने घर में एकली देख, बिन में भांत भांत रा वेम ऊठता। काम छोड़ न वेळा कुवेळा अचांणचको घरे आय जावतो पैलां पैलां तो सांवद रों अचाणचक आवा रो अरथ वा नीं समझी। पछै कांई समझी जो वा ई जाणै।

घर में काम लाग्योड़ा नौकर ने वो धीचे धीचे अलायदो कर देवतो। थमियोड़ो नौकर तो वीं ने सटतो ई नी। काम रा आराम री नजर सूं गौरी जि नौकर ने राखवा सारूं घणो कैवती वीं ने तो वेगो बींटो बंधावतो। गुमानण गौरी ने घणरी रीस आवती वीं रो सावंद बतरो ई बिचळाय न एड़ा अंत वैह काम करतो के मांटा धुळती जावती।

वीं सूं देखणी नीं आवतो, काम करवा वाळी लुगाई ने एकमारी नेप क्ती

पूछतो तो गौरी ने ई खबर लाग जाती ।

मजैजण थोड़ बोली गौरी, अपमाण री मार खाय असमायन म्हारड़ी री नाईं मांयने ई मायने ऊकळवा लागी । धणी लुगाई रे बीचे, वैम लाई खोर दीघी । गौरी रे आगे मन रा वेम ने कैवतो पैलां पारस संकतो हो । अबे वीं री फोलज आवती री । रोज पांवड़ा पांवड़ा पे वेम कर गौरी सूं लड़वा लागो । गौरी जतरी ई खमती जाती, वीं री थेंमीली आंखियां रा तीखा तीरां ने वजर री छाती कर न झेलती जावती ज्यूं पारस रो वेम बधतो जावतो ।

यूं पति रो सुख तो मिल्यो नी, कूंख फाटी नीं ही । जो ईं भरी जुवानी में ई गौरी वीं रा मन ने धरम धरचा में लगाय दीधो । हरिभजन रा नुवां परचारक बिरमचारी परमानन्दजी स्वामी ने बुलाय गौरी कंठी बंधाई । भगवान री कथा करांवती । नारी हिड़दा रो सगळो मह्लो नेह, भगती बण न गुरूजी रा चरणा में लोटवा लागो । परमानन्द रा साधुपणां में किते ई कोई वेम नीं हो । सैंग जणा वांरी सरावणा करता । पारस सूं मूंडो खोल न वां सारूं कोई वेम री वात कैवणी नीं आई । बिना कहियां वीं रो मन अमूजाय रियो हो, वीं रो वैम अहीठ रा रोग री नांईं, वीं रा ई ज अंतस ने बटका भर भर खाय रियो ।

एक दिन छनीसीक वात मांये जेर बारे नीसर ई गियो । परणी रा मूंडा पे वो परमानतंद ने 'वाळखाळी, पाखंडी' कंय न भूंडो बोलतो बोलतो गौरी ने कियो के 'थू थारा साळगरामजी रे हाथ लगाय न कंय दे के वीं बुगला भगत ने थूं पाप री निजर सूं देखे के नीं ।'

गौरी पूंछड़ी दबियोड़ी नागण री नाईं फुंफकारो कीधो, 'हां देखूं, करणो व्हे जो करलो ।

पारस वीं ज वगत घर रे ताळो ठरकाय, परणी ने ताळा में भड़ कचेड़ परो गियो ।

रोस में भरियोड़ी गौरी किंयाई धाड़ो खोल घर बारे निकळगी ।

[२]

परमानन्दजी आप रे एकांत ओवरी में बैठिया सास्तर बाच रिया हा बठे ग्रौर कोई नीं हो । गौरी तो बिना बादळा री अणगाजी अर अणघोरं बीजळी ज्यूं आय पड़ी, बिरमचारीजी रा सास्तर हाथ मायने रेंगिया । गुरुजं पूछियो, यो कांई ?'

चेली बोली, 'गुरुजी, ईं अपमाण भरिया संसार सूं म्हारो उद्वार करो म्हनें कठे ई ले चालो ।'

रोगी री प्राण पीजड़ा में नीं हो उणवेळा।

वीं दिन पारस ने कोई जरूरी मुकदमा री पैरवी करवाने बारे जावणो हो।

बिरमचारीजी रो भंवरो हाथे नी हो। वां री तो ग्रतरो पतन व्हियो के वे ये समीचार सुण गौरी सूं मिलण ने ग्राया। तुरंत री विधवा गौरी बारी मांयनूं ग्रावी तो देखे पदवाड़ा रा तळाव रे किनारे गुरुदेव चोर ज्यूं लुकिया ऊभा हा। गौरी रे माथे जांणे बीजळी पड़ी। वीं ग्राल्यां नमाय लीधी, वीं रा गुरुजी कठा सूं ऊतर न कठे ग्राय पड़्या। दूजे ई पल वां रा पतण री तसवीर गौरी री ग्रांख्यां ग्रागे खंचगी।

गुरुजी हेलो पाड़ियो 'गौरी।'

गौरी बोली, 'ग्राई गुरुदेव।'

मरवा रा समीचार सुण पारस रा हेतु मुलाकाती घर में बड़्या तो देखे परणियां रे पसवाड़े गौरी पड़ी है।

वी जेर खाय लीधो हो। ग्राज रा जमाना में सती व्हेती देख सती ने दुनियां माथो झुकाय दीधो।

दीवाणजी कैवा लागिया, 'मालक री लाख रिपियां री ग्रामद है, दोसे है तो यो एक विपिन पै मरजीपो।

राणी बसन्त कुमारी लड़ पड़ती, 'कजाणा कठा सूं ई सूगला मूंडा रा बांदरा ने पकड लाया हो, वी रै पूंछड़े फ्रोल रो ई धियान नी राखो। ई रो काळो मूंडो व्हे तो थीव ने जक पड़े।'

राजा ग्रापरी मूंघ माह्णी रा ई ईसका पे मनोमन राजी व्हेता, हँसता। सोचता, 'लुगाई रो सुभाव व्हे के जिने था हेत करे वीं ने ई ज मारगो जांणे। लुगायां रा सास्तर मे कठे ई नीं लिख्यो है के ससार मे ग्रादर जोगा घोर ई गुणीजन व्हैवो करे। विग्याव रा मंतरा रे लारे यो मंतर ई वे सीख लेवे के, दुनिया रा सैंग गुण वीं लुगाई मांयने ई ज है, सैंग लाड कोड री हकदार वा ई ज है। परणियो खावा पीवा मे ग्रघ घड़ी मोडो कर देवे तो वींने नी खटे। वा कदं ई नीं सोचे के भाग रा ग्रासरा में पड़िया मासाग्न ने चाकरी मूं काढ देवेला तो वीं बापड़ा रो कांई व्हेला। टुकड़ा टुकड़ा ने रोवतो फिरो ई रो सोच नीं करे।

लुगायां रो यो बिना सोच्या विचारया पख लेवारो, सुभाव ग्रणूंतो खो लागतो पण चितरंजन कांई बता चिड़ता नी। वे तो विपिन रा सरावणा कर कर राणी ने चरड़ावो करता, चिरड़वा रो मजो लेवता।

पण यो राजसी खेल विपिन ने फोड़ा घालतो। रावळा में वेराजीपो व्हेवा सूं पग पग पै खावा पीवा रा फोड़ा पड़ता। मोटा घरां में, पैताळा पड़ियोड़ा मला मिनखा रे लारे बरताव व्हेणो चावे जेड़ो व्हेवो नीं करे। राणीजी रो वेराजीपो देख न तो विपिन ने चाकर छोरी गनारता ई नीं।

राणी एक चाकर ने धाकलियो, 'थनें तो देखूं ई नीं, रैवे कठे है तूं ?'

पूछो बोलियो, म्हनें तो विपिनबाबू री चाकरी में चौईस ई घड़ी रेवा रो रावळो हुकम है।'

राणी बोली, 'ग्रच्छा, विपिनबाबू लाटसाब बणगिया है।' दूजे दिन विपिनबाबू री ऐंठी थाळी रे पूसे हाथ नीं लगायो, ऐंठी पड़ी री। विपिनबाबू ने मांजणो तो ग्रावतो नीं, पण ऐंठिया ठीकरा मोजवा लागा। कदी पारो करणो पड़ जावतो। पण विपिन पजामी रे कानां तांई कोई बात नीं पूगाई। चाकर छोरा सूं लड़ न ग्रावे सिकायत कर ग्रांपणे ग्राप ने छोटो करणो है।

या बातां सूं म्हेला वारणे मिनखां में तो मान बधियो पण रावळा में वां रो ग्रणादर घाव न व्हेंगो।

मठ नें रिहर्सल व्हे व्हेतापन सुबलाहरन नाटक त्यार हो। म्हेलां रा चौक में नाटक मंडियो। पजामी तो वक्तिया फ्लियो। वरवण रो होस नायो

विपिन। उरजण री जेड़ो गळो हो वेड़ो ई रंग रूप ई। देखणवाळा 'वा वा' कर रीया।

रात ने राजा आप वसंतकुमारी ने पूछयो, 'नाटक केड़ोक लागो।'

राणी वोली, 'उरजण रो सांग विपिन खूब कीधो। चेहरो मोहरो ई आछा घराणांवाळा जस्यो है। गळा रा पियास रो तो कैवणो ई कांई।' राजा बोलियो, 'म्हांरो चेहरो मोहरो कीं है ई नीं। गळो ई खारो है कयूं?'

राणी बोली, 'आप री वात दूजी है।' पाछी विपिन रा एक्टिंग री चरचा करवा लाग गी।

राजा ई सूं वत्ता जोरदार लफजां में विपिन री सरावणा घणी दांण कीधी ही। पण आज राणी री जीभ सूं निकळयोड़ी थोड़ीसीक सरावणा ई वां ने नीं खटी। वां ने लागियो के विपिन काम करे जिण सूं चौगणी सरावणा कम अकल रा आदमी करे। कां ई तो वींरा चेहरा में पड़यो है न कांई गळा में धरियो है।

आज सूं थोड़ा दिनां पैलां वां री आप री वां कम अकलां में गणती ही पण आज एकदम वां री अकल कस्या बधगी, राम जांणे।

दूजा दिन सूं ई विपिन रे खाणा पीणा री खाता व्हेगी। बसंतकुमारी राजा सूं बोली, 'विपिन ने वारे उतारा में, कचेड़ी रा मोनवार गुमास्तां रे सागे राखणो ठीक नी। चाहे जो व्हे, भला घराणां रो छोरू है।'

राजा वात ने गटतां थका खाली 'हूं' ई ज कहियो।

राणी राजा ने बेटा रा दसोटण माथे एकदांण फेरूं नाटक करावा ने कहियो। राजा वां री वात सांभळी मणसांभळी कर दीधी।

एक दिन धोवती दुपट्टो टीकसर नीं धोवणी आया तो राजा धूमा ने धाकलियो। धूमो कहियो, 'कांई करूं', गिरधीनाथ। राणी सा रो हुकम है चौबीस घड़ी विपिन बाबू री टैल चाकरी में लाग्यो रेवूं।'

राजाजी ऐंठ गिया'र बोलिया, 'अच्छा, विपिन तो लाट सा'ब व्हेय रियो है। आप रो काम ई हाथ सूं नीं करणो आवे।'

विपिन ने धुनमूंदिया व्हेवणो पड़ियो।

राणी तो राजा रे केड़े पड़गी, संमया रा बैठक घर रा पसवाड़ावाळा कमरा में पड़दो लगाय दो। गाणो व्हे जो म्हांई सुणां। विपिन रो गांणो आच्छो लागे।

राजाजी दूजा दिन सूं ई नैम सूं रेवा लागगिया, घणा रे सोवणो घणा रे जागणो, गाणो बजाणो बंद व्हेगियो।

दुपैरा रा राजाजी ठिकाणा रो काम काज देखता । एक दिन वे थोड़ा वेगा रावळा में पूग गिया । देखे, राणी आगे पड़ री ही ।

राजा पूछ्यो 'कांई पढ़ रिया हो ?'

राणी पैलां तो भेळी भेळी व्ही । पछे बोली विपिनबाबू रा गीतां री कॉपी है । एक दो गीत सीखवा ने मंगाई ही । अचांणचक रो आप रो सौक तो खतम व्हेगियो ? अबे गाणा सुणवा रो तो औसर ई नीं मिले ।'

घणां दिना पैलां वीं सौक ने जडामूळ सूं खोद फैंकवा री कोसिसां राणी कीधी ही, वे वांने आज चीतां नी आई ।

• दूजे ई दिन विपिन ने घरे जावा री सीख व्हेगी । आसरे पडिया आसायत री बाते कांई गत व्हेला ई वात पे वां थोड़ो ई विचार नीं कीधो ।

सीख मिलवा रो विपिन ने अतरो दुख नी व्हियो जतरो राजा रा बेराजीपा रो व्हियो । वी रो तो राजा में जीव पड़ गियो हो, तनखा नाम ई वो राजा री मरजी ने अमोलक जांणतो । राजा वीं रा कांई कसूर पे बेराजी व्हे दूध रा मावखा री नांई काढ न अळगो क्यूं बगायो । घणो ई सोच्यो पण कांई समझ में नीं आयो ।

छेवट में एक गैरो निसासो भर, आपरा जूना तंबूरा पे खोळी चढाय, जठे कोई मांपणो नीं, वीं लांबी चौड़ी दुनियां मे भटका खावा ने निकळ गियो ।

जावती वेळा आप री पूंजी रा दो रिपिया पूसा ने इनाम में देवतो गियो ।

दुपेरा रा राजाजी ठिकाणा रो काम काज देखता । एक दिन वे थोड़ा वेगा रावळा में पुग गिया । देखे, राणी भागे पड़ री ही ।

राजा पूछ्यो 'कांई पढ़ रिया हो ?'

राणी पैलां तो भेळी भेळी व्ही । पछे बोली विपिनबाबू रा गीता री कॉपी है । एक दो गीत सीखवा ने मंगाई ही । अचांणचक री भ्राप रो सौंक तो खतम व्हेयगियो । अबे गाणा सुणवा रो तो मौसर ई नी मिले ।'

घणां दिना पैलां वी सौक ने जडामूळ सूं खोद फेंकवा री कोसिसां राणी कीधी ही, वे वांने आज धीतां नी आई ।

● दूजे ई दिन विपिन ने घरे जावा री सीख व्हेगी । आसरे पडिया आसायत री कारे कांई गत व्हेला ई वात पे वां थोडो ई विचार नी कीधो ।

सीख मिलवा रो विपिन ने अतरो दुख नी व्हियो जतरो राजा रा बेराजीपा रो व्हियो । वीं रो तो राजा मे जीव पड़ गियो हो, तनखा नाम ई वो राजा री मरजी ने अमोलक जांणतो । राजा वीं रा कांई कसूर पे बेराजी व्हे दूध रा माचखा री नाई बाढ न अळगो क्यूं बगायो । घणो ई सोच्यो पण कांई समझ में नीं आयो ।

छेवट में एक गैरो निसासो भर, आपरा जूना तंबूरा पे खोळी चढाय, जठे कोई भांपणो नीं, वीं लांबी चौड़ी दुनियां मे भटका खावा ने निकळ गियो ।

जावती वेळा आप री पूंजी रा दो रिपिया पुरा ने इनाम मे देवतो गियो ।

हेमंत बोल्यो, 'जाणती व्हे तो वीं ने पढ़णो नीं। हां, जो एड़ो मंतर जाणती व्हे के जि सूं एक अठवाड़ा में तीन चारेक दीतवार के सातीलां आय पड़े, एड़ो मंतर जाणती व्हे के या रात काले संमया री पांच छ बज्यां ताईं लांबी बध जावे तो वो मंतर पढ़।' यूं कंवते थके वो कुसुम ने मोर ई सांगणी खेंचवा लागो। पण कुसुम बाथ में बंधी नीं।

वा कंवा लागी, 'मरती वेळा म्हूं एक बात कंवणो चावती वा बात अबाक ई ज कैंवा री जीव कर रियो है। म्हनें थावे जो डंड दीजो म्हूं राजी राजी खम लेवूंला।'

डंड सारू जंदेव री कहयोड़ो एक स्लोक बोल हेमंत रस री बात करणो चावतो जतरेक वीं मचड़ मचड़ करती पगरखी बाजती सुणी, जाणे कोई रीस में धाय घाल रियो व्हे।

हेमंत रा बाप हरिहर मुकर्जी रा पग बाज रिया हा, हेमंत ओळखिया। वो घबराय गियो।

हरिहरबाबू बारणा कने आय रीस में करड़ो हेलो पाड़ियो, 'हेमंत, बीनणी ने अबार री अबार घर बारे काढ़।'

हेमंत परणी साम्हो नाळियो, पण वीं ने तो तिल मातर ई घबराट नीं व्हियो। वा तो दोई हाथां सूं मूंडा ने छिपाय न वैंय री धरती फाटे तो मांयने परी बळूं।'

छिमणाद रा वायरा सारे पपैया री मोटी मोटी 'पी' मोळू ई पैला री माई ओवरी मे सुणीज री पण मरे किरा ई कानां में नीं बळी। दुनियां घणी रळियावणी है पण एक पलक में काई री काई व्हे जावे।

[२]

हेमंत बारणुं आय न परणी ने पूछ्यो, 'कुसु, या बात साची है कांई ?'

'हां, साची है।'

'तो पछे म्हनें अतरा दिन क्यूं नीं कहियो ?'

'केवूं केवूं करती री, पण म्हारा मुं कैवणी नीं आयो। घोर पापण हूं म्हू।'

'तो आज मरे सांच मांड न के ?'

कुसुम ठिमरान सूं, मजबूती सूं सारी विगत बैंय सुणाई। कुणती वेळा वा टासल सूं लांबडा भरणो धीमी धीमी चालती बातड़ी री मजळी मांयनूं ध्रेन म निसरती। वा वगत सूं भगती बळ री है, जिणे ई अ नीं पड़ी। वैय दुशोणा दूर हेमंत उठे व्हे बारे निसर गियो।

कुसुम आंगणां थी पराएमां स्याम ऊठ न बारे परो गियो परे ई जमारा में पाछो मिलवा ने नीं। वीं ने ऋपरज ई नीं आयो। वीं ने प्रीत अर संसार, आद सूं लगाय अंत तांई कूड़ ई कूड़ दीखवा लागिया। हेमंत वीं ने प्रीत रो हेत री बातां कैवतो थो ने थीनार न था कोसी, दुख रो हांसी हंसी। वा हांसी, तीखी कटार री नांई काळजो चीरती पार पार निकळगी। वीं प्रीतड़ी पे वा मनरो गरब न गुमान करती, जिमें मनरो हेत, लाड़कोड़ भरियो हो, एक पल रो विजोग ई काळ ज्यूं लागतो। वीं प्रीतड़ी ने अथाग अनंत जाणती वा, ई लोक में ई नीं परलोक में ई छूटवावाळी नीं जाणती। वा ई प्रीतड़ी रा या निकळी। बस ई अ नीव माथे ऊभी ही वा। जात बिरादरी एक धक्को धक्को दीधो न वा ढस न जाय पड़ी बेळू रेत मे। मबारू अबारू पलक छिन पैला हेनाऊ हेमंत गळगळो व्हे, कैय रियो हो, 'कसीक रळियावणी रातड़ी है।' वा रळियावणी रातड़ी तो अजूं खतम कोनी व्ही है, पोजू वो ई परैयो बोल रियो है, वोई अ दिखणाद रो वायरो ढोल्या री मच्छरदानी ने हलाय रियो है। वा ई ज चांदणी केळ सूं थाक्योड़ी पदमण री नांई, ढोल्या रे पसवाड़े पड़ी है। तो यो सँग कूड़ है? सँग झूठ है? सँग माया है? पर प्रीत? प्रीत उण सूं भी बत्ती कूड़ है झूठ है।

[३]

पौ नीं फाटी जि पैला हेमंत प्यारीसंकर घोषाल री पोळ बारे ऊभो। आखी रात आंख नीं झपकी जो हेमंत गैला ज्यूं व्हेयरियो हो।

प्यारीसंकर पूछयो, 'को भाई हेम, कांई हाल चाल?'

घासदी री झाला में बेठियो व्हे ज्यूं लागरियो हेमंत ने। धूजता गळा सूं बोल्यो, 'थे म्हनें जात भ्रस्ट कीधो, म्हांरो सत्यानास कीधो ई रो डंड भोगणो पड़ी थांने।' कैवतां कैवतां हेमंत रो गळो रुक गियो आगे बोल न निकळ्यो।

प्यारीसंकर मुळकतो थको मोसा में बोल्यो, 'थां म्हारी जात री रिछा कीधी ही, म्हारी बिरादरी ने बचाई है। म्हांरा मोरा पे थांरो हमेसा भड़ो रियो है। घणो सुख दीधो म्हांने थां। थां लोगां री घणी घणी मेहरां करयोड़ी है म्हांरा पे। है नीं?'

हेमंत रे असी रीस री झाळ उठी के प्यारीसंकर ने भसम कर दूं पण वीं झाळ सूं वो आप भसम व्हेवा लागो। प्यारीसंकर तो सोरो सावरो बैठ्यो देख रियो।

हेमंत रूंधयोड़ा गळा सूं पूछ्यो, 'म्हैं थांरो कांई बिगाड़ कीधो हो?'
प्यारीसंकर बोल्यो, 'म्हनें थां पर कैवो, म्हांरी एकाएक बेटी थारा बाप रो कांई

बिगाड़्यो हो थां जा दिनां नान्हा हा, टाबर हा। पड़पंचा रो पोटळो बांधियो थां भुले जद देखजो।'

यूं केय एक पल छाना रैय कैवा लाग्यो,

'सुणो, म्हांरो जवांई नवकांत म्हांरी बेटी रा गेगा थोर न विलायत परा गिया हा थां दिनां थां टाबर हा। पांच बरसां पछे बैरिस्टर व्हेय न पाछा घरे आया तो माळा पाड़े थांगळियां पे ऊभा लेय लीधा। थां ने ई कयूं याद व्हेला, नीं व्हेला। थां दिनां थां कलकत्तो मदरसा में पढ़ता हा। थांरा बाप गांव रा सरपंच बण न फरमाण दीधो के बेटी ने जंवाई रे घरे भेजणी व्हे तो भेज दो पण पाछी बाप रे घरे पग नीं दे। म्हें थांरे हाथ जोड़्या, धोक दीधी 'अबकाळे थां म्हनें बचाय लो, म्हें जंवाई ने गोबर खुवाय प्राछी टरे परायश्चित कराय दीधो है। थां जात में ले लो।' थांरा बाप तो अड़गिया, हानणो कठे ई रियो मसकिया तक नीं। एकाएक बेटी ने म्हांरा सूं ई छोड़णी नी आई, म्हूं ई गाम छोड थी रे साथे कलकत्ते परो गियो। वठे परोगियो तो ई म्हनें साता सूं थां नीं रेवा दीधो। म्हें म्हांरा भतीजा रो सगपण कर न ब्याव मांड दीधो। अनराक में तो थांरा बाप आय न बेटीवाळा न सीखाय न भूत कर दीधा। ब्याव नीं व्हियो। समझ्या? म्हें ई प्रण लेय लीधो के ई रो छोरो नीं परण्यो तो बामण रो बीज नीं।

अबे तो थां ने बधूंक टा पड़गी व्हेला पण थोड़ीक आगे और सुणलो। हेग थानो जाण थांरो मन राजी व्हेला। सुणवा जेड़ी हकीगत है, रस है कविता सूं ई बत्तो।

जा दिनां थां कलकत्ते भणता हा, थांरा बोर्डिंग रे भड़े ई विप्रदास चटर्जी रो घर हो। बापड़ो भलो मनख हो, अबे तो मरगियो। चटर्जी रे घरे बाप्पा री एक बाळ विधवा रैवती। छोरी थांरे सरखे परी ही नाम हो कुसुम। रूप में रंभा रे उणियार ही। बापड़ो छोकरो चिता में पड़ गियो के कठे ई रा टीगरा रो निजर छोरी पे नी पड़ जावे कदेई। थां थांरा छोकरा ने पोट्या में कांई पढ़ियो है। कुसुम थाथा भूसारा ने घर री तरह पे बारनी घर थां ने कायदा पे बढ़ न बैठणा बिना वा दिनां पाठ याद नी व्हेतो। उण मायें थांरे थायगरी में बोलणो चालणो व्हेतो के नी या तो थां थांरी जाणो पण हैम रा मन में बैम जरूर व्हियो। घर रा काम में कुसुम चूक पे चूक करवा लागी, उतावळ करती तो ई काई पान आवतो ई कुसुम रो दूरतो लागो। कदेई कदेई तो छोकरा री बांन्दा मूं घर घर आंसू बेवा लागता।

कुरै झ थारी के बेळा कुनेजा यां दोई काकरी थांपे निजे, दोनों रो नीं

पण मांका तांका व्है । कॉलेज में भणवा री वेळा थां गैर हाजरी कराय, दुरंग में नाळ रा छाजा री छायां में चानणी रा सूंणा में बैठ पोथी रा पाना पळटवो करता । एकमाड़े धियान लगाय न भणवा में थांरो मन घणो लागवा लागियो हो । विप्रदास जी म्हांरा कनै सल्लामूत करवाने आया तो म्हैं उणां ने कहियो के, काका, थां रो कासीजी जांणे रो मतो हो जो थां कासीजी परा जावो, कुसुम ने म्हनैं सूंप जावो ।'

विप्रदास जी जातरा परा गिया म्हैं कुसुम ने श्रीपति चटर्जी रे घरे रात न थां री बेटी रा नाम सूं जग जाहर कर दीधी । ई रा पछै जो व्हियो जो थां जांणो ई हो । सांची, सारी हकीगत मांड न कैवा में घणो मजो आयो । मन तो करे के ई ने विगतवार मांड न पोथी छपावूं । म्हनैं लिखणो नीं आवे । म्हांरो एक भतीजो लिख जांणे वीं ने कैवूं मांडवाने पण थां अर थां दोई जणां रळ न मांडो तो आच्छो रै । पाछली विगत म्हूं नीं जाणूं ।'

हेमंत, प्यारीसंकर री यां वातां पे धियान नीं दीधो । वीं पूछ्यो, 'कुसुम परणवा ने नटी नी ?'

प्यारीसंकर बोल्या, 'वीं रो नटणो, नटणो हो के नीं, या खबर नीं पड़ी म्हनैं । बेटा, लुगायां रो मन न्यारो ई व्है । वे नटे तो जाणणो के हुंकारो भर री है । पैली पोत तो या नवा घर में आय न कि येड़ा ज्यूं व्हेगी । थां सूं नीं मिलणो व्हेती नीं ज्यूं । थां ई कजाणां कियां हेर लीधो वींरा घर नै । घणो दाण हाथ में पोथियां लीधा थां कॉलेज रो गैलो भीसर जावो करता, श्रीपति रा घर आगे काई हेरवो करता । कॉलेज रो गैलो हेरना व्हो ज्यूं तो नीं लागता । किण ई घर पाछला बाड़ा में कोई मणी मिनख तो आवे जावे नीं । बठै केतो कीड़ा मकोड़ा फिरवो करे के येड़ा चूक जुवान अनवत्तां गैलो वाड़ ले । म्हनैं थां लोगां रा ये हाल हवाल देख ने मसखाई आवती, थां रे भणवा मे हरजानो व्हेयरियो, कुसुम री दसा कुदसा व्हेती जायरी है ।'

एक दिन कुसुम ने म्हैं म्हारे कने बुलाय न कहियो, 'बेटी, म्हूं बूढो मिनख हूं, म्हांसूं सरमाणे री बात नीं । थारो जीव जीं पे है वीं ने म्हूं जाणूं । वो लड़को ई दुख पायरियो है यूं ई दुखी है । म्हैं मतो कीधो है के थां दोनां ने ई जोड़ दूं ।'

सुणतो ई कुसुम तो डाड मार न रोई, भाग्यो आग्गी । यूं म्हूं कदी कदी दिन आथिया रा श्रीपति रे घरे जावतो, कुसुम ने हेमो पाड़तो, थांरी बात कर कर वीं री लाज छुड़ावतो । छेवट में वीं री लाज छूटीज । पछै रोज रो रोज वठे बात न चूक चाल्ही तरे वीं ने समझावतो के विसाव कावे, श्रोर दूजो कांई दैतो नीं है ।

कुसुम कहियो, 'करस्यां म्हेला ।'

म्हें कहियो, 'करसां कांई म्हेला । माच्छा कुळ री बताय काम काढ लेवूं ।'

घणी देर उत्तर पडूत्तर करन वीं पाछ मन री जागवा ने कियो । म्हें समझाई, वो तो चेताचूक तो व्हेय ई रियो है फजूल रा रोळा रवदा करणे सूं कांई । काम सांति सूं व्हे जावे तो चोखो । ई भेद रो चौडे व्हेवा रो तो भी है ई नीं पछे वी ने केय न क्यूं बापड़ा रो जमारो बिगाड़ो । मान्ती ऊमर सोच विचार में पड़ियो रेवेला ।'

कुसुम कांई समझी र कांई नीं समझी, म्हारे समझवा मे नो आई । कदी तो वा रोवती कदी छानी मानी बैठी रेवती । म्हू कायो व्हेय न केवतो के वा तो रेवारे, तो वा विचळाय न रोवा लाग जाती । पछे श्रीपति रा नाम सूं थारे मठे कागळो भेजायो । थांरी माडी नूं हामळ भरवा में कांई ज ताळ नीं लागी । सगपण पक्को व्हे गियो ।

ब्याव रे एक दिन पेंला कुसुम एडी बीफरी के हाथां मे मावे न बाथां में । वा पगां में माय न पड़गी, 'बाबा यो मत करो ।'

म्हें कियो, 'केडी गेली टीगरी है । सँग थोक व्हे व्हेवाय गिया न अबे कांई व्हे ।'

कुसुम कियो 'थां तो हाको कर दो के रात ने कुसुम मरगी, म्हनें कठे ई बारे भेज दो ।'

म्हें समझाई 'वी लड़का रो कांई हवाल होसी, वो तो राजी व्हेय रियो है कोरो सुरग मिल रियो है । वी री तो आसा फळ री है । थाने म्हूं आप हत्यागक री केवूं के वा तो मरगी दूजे दिन पाछो म्हनें आय थने खबर देवणी पड़े के वो मरगियो । पछे वी ण दिन थारा मरवा रा समीचार म्हांरा कनें पूगे । कुआरा में परतरी हत्या पर हमहाया करावणो चावे कांई !'

पछे कुसुम घणी दुख में बिनाव व्हे गियो । म्हूं तो म्हारी एक जिम्मेदारी सूं छूटग्यो ।

हेमंत पूछ्यो, 'म्हारे मारे छांटो काढ़लो वो तो कार वाह ई नीचे, कठे ई ने थोड़े क्यूं कीधो ।'

प्यारेमंवर बोलियो, 'मने थारी बेन रो समरग पढ़ो दियो । म्हें विचारो के एक विरामण री बात तो भस्ट कर ई दीवी । वो तो म्हारो धरम हो, करम हो । कठे दूजा विरामण री जात क्यूं बदळदा दूं । या विचार म्हें वठां ने काकद पाल दीयो के हेमंत गुरु री बेटो वे परणियो है, ई रा कहूरा म्हारा कनें है ।

हेमंत घणे दोरे मन में धीरत कर न पूछ्यो 'मैं जो म्हूं उण ने छोड़ दूं तो थीं रो कांई हवाल व्हेला। श्राप रामोला म्हाप कने।'

प्यारीसंकर बोलियो, 'म्हारो धरम तो म्हें पूरो कर लीधो। पराया री लुगाई री पेट भरवा रो धरम म्हांरो नीं। मरे कुण है रे, हेमंतबाबू साई बरफ रा पाणी री गिलास लावजे। पान ई लेतो श्रावजे।'

हेमंत ई खातरदारी री वाट नाळ्या पैलां ई ऊठ गियो वठा सूं।

[४]

श्रंधारा पख री पांचम। श्रंधारी रात। चिड़ां री चूं चूं ई नीं ही। तळाव री पाळ रा लीचो रा रूंखड़ा यूं लाग रिया जांणे तसवीर रा पाना पै काळी स्याई चौपड़ दीधी व्हे। खाली दिखणादू वायरो म्हाय रियो, श्रंधारे वीं ने पकड़ लीधो व्हे ज्यूं गरोळ्या लाय लाय पाछो श्राय रियो। श्राभा रा तारा टम टम करता, सावचेती सूं श्रंधारा ने चीर न कजांणा कांई पड़पंच रचणो चावता हा।

हेमंत रा सुणैट रा श्रोवरा में श्राज संभया सूं ई दीवो नीं बळियो। हेमंत बारी कनला ढोल्या पै बैठ्यो गैरा श्रंधारा ने देख रियो। कुसुम धरती माथे बैठी, दोई हाथां सूं हेमंत रा पग पकड़ राखिया, माथा ने पगां में ढाळ राखियो। कोई हालतो न चालतो, थिर समंदर री नांई सबै लाग रियो। जांणै मांझल रात माथे कोई चित्तराम मांड दीधो व्हे। चारूं पासे प्रळै, बीचे एक न्याव देवगियो, पगां कने गुन्हेगार।

पाछी वे ईज मचड़ मचड़ करती पगरखियां सुणीजी।

हरिहरबाबू बारणा कनें श्राय न बोलिया, 'घणी ताळ व्हेगी, मर्दं म्हूं विचारणे रो वगत नी दूंला। बीनणी ने मवार री मवार बारे काढ़ दे।'

कुसुम यां लफजां ने सुणतां ई एक खिण खारू हेमंत रा पगां ने काठा बाथ में घाल लीधा। छेल्लो मिलणो है, पगां रे माथां ने लगाय लगाय, पगां री धूळो माथा ने लगाय लीधो। हेमंत ऊभो व्हे न बाप ने कहियो, 'परणी लुगाई ने म्हूं नीं छोड़ूंला।'

हरिहर डकर न बोलिया, 'तो कांई जात ने छोड़ देय?'

हेमंत बोलियो, 'जात पांत म्हूं नीं मानूं।'

'तो जा, थूं ई निकळ जा।'

दालिया

[शाह सूजो, वींरा भाई औरंगजेब सूं झगड़ा में हार गियो तो डरपतो थको भाग न अराकान रा धणी रे कठे सरणो लीधो। वीं रे लारे वीं री तीन सरूपवान बेटयां ही। अराकान रे धणी रे मन में आई के वीं रा बेटा ने यां टाबरियां सूं परणाय दूं। ई बखाळा रो नाम सेवतां ई शाह सूजो रीस सूं रातो पड़ गियो। ई रा फळ माड़ा ई लागिया। अराकान रे धणी सूजा ने दगा सूं मारवा रो मतो कीधो। नाव में छेद कराय रो मिस कर नंदी में डुबावा लागिया। या जुगत व्हेती देख छोटोड़ी बेटी अमीना ने तो सूजे आपरा हाथ सूं नंदी में फेंक दीधी। वचेट बेटी जुनेरा बाप रा भरोसा पातर, लाम खायर रैयत धणी रे लारे तिर न पार निकळगी। मोटोड़ी बेटी आतमहत्या कर लीधी। शाह सूजो झगड़तो झगड़तो काम आय गियो।

छोटोड़ी बेटी अमीना पांणी री धार रे लारे बैवती थकी एक माछळा पकड़णियां रे जाळ में जाय फंसगी। वीं माछळीमार वीं ने जाळ बारे काड लीधी ओ वा वीं रे घरे ई ज मोटी व्ही। अराकान रो वो बूढो धणी तो मर गियो, वीं रो बेटो पाट बैठ्यो।]

[१]

दिन री ऊगाळी माछळीमार डोकरे अमीना ने हाकली, 'जिनी!' वो ई बगवाळो बोली में वीं अमीना रो नाम बदळ्यो हो 'जिनी'। वीं हाकली,

'निम्मी, आज थारे कांई गियो है ? कांई ज काम नीं कीदो थे ? नवा जाळ रे गूंद ई नीं लगायो । आंरणी दांव '

अमीना डोकरा कने जाय घणां हेत सूं बोली, 'काका, आज म्हांरी बेन आई है बेन । ज्यूं दो घड़ी बात कर री हूं ।'

'थांरी बेन ? थांरी बेन अठे कठा सूं आई ?'

जुलेखा कजाणां कठा सूं निकळ न आयगी, बोली, 'म्हूं, हूं, म्हूं ।' डोकरो हैरानगत रैगियो । जुलेखा रे कनै सरकतो आय न धार धार ने जुलेखा ने देखवा लागियो । पछे झट देणीको पूछियो, 'थनै काम धंधो ई कांई करणो आवे के नीं ?'

अमीना बोली, 'काका, जीजा री आडी रो काम म्हूं कर दिया करसूं । जीजा ने काम करणो नीं आवे ।'

डोकरे थोड़ी देर विचार कर न पूछियो, 'थूं रैवेला कठै ?'

जुलेखा बोली, 'अमीना कनै ।'

डोकरे जाणियो यो काई पंपाळ छाती पे आयो । रैवणी नीं आयो पूछ ई लीधो, 'खावेला कांई ?'

जुलेखा बोली, 'वीं रो सोच थां मत करो ।'

यूं कैवतो डोकरा कानी एक म्होर फेंक दीधी । अमीना म्होर ने उठाय डोकरा रा हाथ में देय दीधी । धीरेकरी बोली, 'काका, अबै कांई मत बोलजो, जावो काम करो, मोडो व्हेय रियो है ।'

जुलेखा भेख बणावती, जगां जगां फिरती फांदती, अमीना ने हेरती, माछळीमार री टपरी में किया आय पूगी, यो तो एक लांबो चोड़ो दास्तान है । कैवा में घणी वगत लाग जावे, अतरो ई जांणलो अबारूं के वी रा बाप रो विस्वास पात्तर चाकर रैमत अली आजकाले वीं रो नाम सेख रैमान राख न अराकान री राजसभा में काम कर रियो है ।

[२]

दोटीक नदी बैवरी । ऊनाळा रा दिन । परभात रा सीळा सीळा वायरा सूं केलू रूंख री रानी राती फूलां री मांजरां झड़ झड़ नीचे पड़ री । रूंखड़ा हेठे बैठी जुलेखा अमीना ने केवा लागी, 'भगवान आंपा दो बेनां ने मरती रे आडा हाथ देय जीवण जीवणो दीधो जो क्यूं दीधो । खुदा आपां ने यूं जीवती राखी के आपां आंपणा मरूबाजान रो बैर लां । आंपा बैर नीं लां तो आपणां जीवता रैवा में सार ई कांई है ?'

अमीना नंदी रे पैले कनारे घणां दूरां ऊभा गैरी छांयावाळा रूंखां साम्ही झांकती थकी बोली, 'जीजा, रैवा दो नीं यां अबै वां वातां ने । म्हूंनै तो अबै या

दुनिया चोखी लागै। मार काट कर कर न मड़द मरे तो मरवा दो थाया। म्हनें तो म्हांरे या जगा ई खोटी नी लागे।'

जुलेखा बोली, 'हस्त, ममीना, पूं सायजादा री बेटी है सायजादा री। कठै वो दिल्ली रो तखत न कठै या माछळीमार री टापरी।' ममीना हंस न बोली 'जीजा, जे कोई लड़की ने माछळीमार री टपरो ऊपर केसू रा रूंख री छाया दिल्ली रा तखत सूं आछी लागै तो वो दिल्ली रो तखत तो वी ने याद करे कोय नीं।'

जुलेखा क्यूं क मणमणी व्हेय ममीना ने सुणावती बोली, 'हां, थारो ई काई दोस है, थूं तो जणा दिना जावक ई टाबर ही। पण थूं सोच तो खरो, अब्बाजान ईंगा सूं बत्तो लाड थारो राखता जदो ज तो वां वांरा हाथ सूं पांणी में दनें न्हाखी। एड़ा बाप रा हाथ सूं दियोड़ी मौत सूं ई जिंदगी ने बत्ती मत जांण। हां जो बापको मांटो लै लै तो या जिंदगानी सुफळ व्हे जावे।'

ममीना छानी मानी बैठी री। वा पंनै बनारे छेटी छेटी तांई मांडती री। पण वी रो मूंडो कैयरियो वा मन में सोच री जो। 'थांरो कैवणो तो सांचो है पण.........।' मतलब यो के वो सीळो मधरो वायरो, रूंख री छाया, पड़तो जोबन ऊपर बजांणा विरी मीठी याद, वी ने ऊंडा विचार में उतार दीधी।

थोड़ी देर पछै लांबो सांस लेय न वा बोली, 'जीजा, थां बैठो। घर रो ईंग काम पड़्यो है। म्हूं राधूंगा नीं तो बापड़ो टोकरो भूखो रैय जाय।'

[३]

ममीना रो यो डाळो देख जुलेखा रो मन घणो ई अणमणो व्हेगियो। घणी देर तांई मन मारियां बैठी री। अनराण मांयने धम्म देणी रो कि रे ई कुदरत रो धमीको सुणीज्यो, पाछा सूं कोई आवना ई वी री आंख्यां मीच लीधी।

जुलेखा डरप न बोली, 'कुण ?'

मधो साद सुण न आंख्यां पर सूं हाथ छोड न एक मोटयारड़ो मूंडागे आय न जुलेखा रा मूंडा साम्हो जोय न, डरियो नीं बड़ा मजा सूं बोल्यो, 'अरे थूं तो ठिमो कोय नी है।' एड़ो बोलियो जाणे जुलेखा आप ने ठिमी बणाय री व्हे अर वो बड़ो हूंसियार है जो भट ओळख लीधी।

जुलेखा ओळखणो ने सामनी ऊभो एक एकदम ऊभी व्हेगी। उण री आंख्यां में बादळी बळ री। बीजळी री नांई कड़क न बोली, 'कुण है थूं ?

मोटयारड़ो बोलियो, 'थूं म्हनें ओळखे नीं। ठिमो ओळखे म्हनें। कठै है ठिमो ?'

हाको सुण न तिम्री बारणे आयगी । जुलेखा री रीस मर वीं जुवान री अचंभो भरियो मूंडो देख अमीना ठीठी कर हंसवा लागी । बोली, 'जीजा थां नाराज मत व्हो । यो कोई आदमी है कांई । ईं कांई डांडापणो कीधो व्हेलो अवार धाकल दूं ईं ने । क्यूं दाळिया, कांई कीधो थें?'

जुवानड़ो बोलियो, 'पाछा नूं आय न खाली आंखियां मींच लीधी ही । म्हें जाणियो तिम्री है पण या तो तिम्री नीं.........'

तिम्री मांटीपणे मूंडा पे रीस लाय न बोली, 'छोटो मूंडे मोटी वात ? थें कदी तिम्री री आंखियां मींची ही कांई ? बड़ो छातीचल्लो व्हेगियो ।'

जुवानड़ो बोलियो, 'आंखियां मींचवा में कांई छाती रो काम है, खाली आदत व्हेणी चावे । पण तिम्री, सांच कैवूं आज थोड़ीसीक डरपणी लागी ।'

यूं कैय आंख टोळाय जुलेखा काली आंगळी बताय अमीना रा मूंडा साम्हो झांक धीरे धीरे मुळकवा लागो ।

अमीना बोली, 'यूं बड़ो ओपो है । सायजादी रे मूंडागे ऊभा रैवा री धारा में तमीज ई नीं है । तमीज सीख । देख सलाम कर यूं कर, यूं कैय जोबन रा भार सूं झुकतोड़ी देही बेलड़ी ने बड़ा नखरा सूं झुकाय जुलेखा ने सलाम कीधो । सारे सारे वीं मोटयारड़े सलाम करवा री कावी पाची नकल कीधी ।

अमीना बोली, 'यूं पाछ पगां तीन पांवड़ा पाछा मेल ।

जुवानड़े पाछा पग दीधा ।

'सलाम करो ।'

वीं सलाम कीधो ।

पाछ पगां तीन पांवड़ा चालो । यूं पांवड़ा मेलती मेलती वा वीं ने झूंपड़ी रा बारणा तांई लेयगी ।

बोली, 'मांय ने बड़जा ।'

मोटयारड़ो मांय ने बड़ गियो ।

अमीना ओवरी रो मांयलो आड बारणूं सांकळ लगाय दीवी, बोली, 'देखो, घर रो काम करो, बारली नीं कुण आवे ।'

पछे जुलेखा कनें आय बैठी, 'जीजा, नाराज मत व्हो, अब रा मिनख ई अस्या ई व है । म्हारो कैर चाल रियो नीं यूं ।'

अमीना केर रो यूं री ही पण वी रा मूंडा रैई बरताव में कोई ओळखाण अस्या नीं देख्या के वा देखती है जो वीं रा मन री बात है, वीं रा बरताव यूं ही यूं लागतो के वा अब रा मिनखा री कटपूतल पुरख मेरे ।

जुलेखा बेवड़ी व्हे न बोली, 'अमीना, थारी बातां देख न यूं तो तळबळ

मत व्हेगी । दिनां जाग रो एक जुवान आदमी आय थारा डील रे मांगळी मड़ाय दे दा तो हद व्हेगी ।'

अमीना ई बैन री हां में हां मिलाई । 'हां, देखो तो खरी ।'जे कोई नवाब के बादसा रे बेटे म्हांरी देही रो मांगळी मड़ाई व्हेती तो म्हूं वी ने मार थप्पड़ बारे काढ़ देती ।'

जुनेखा सूं हंसी ने रोकणी नीं आई । हंस न बोली, 'अमीना, सांच कैवजे, थूं कंय री ही नी के दुनिया थनें चोखी लागे जो कोई ई बोका छोरा पूंछड़े चोखी लागवा लागी है कांई ?'

अमीना बोली, 'साची सांची कैय दूं । यो म्हनें काम में घणो झेलो देवे । फळफूळ तोड़ दे, सिङ्गार कर न लाय दे । कोई काम भळावो दोड़घो आवे । घणी दांण मन में आवे के ई ने धाकल धूंकल सूधो कर दूं पण ई रे तो लागे ई नी । म्हूं खूब नाराज व्हे ई ने धावसूं, 'दाळिया, म्हनें थारा पे रीस आय री है तो आण साव म्हांरो मूंडो देखवो करे न मुळकवो करे । ई देस री हंसी ई एडी व्हेती व्हेला । दो चार थापां मार दो आप खाव घणा राजी । योई कर न देख लीधो म्हें । देसोनो घर मे झड़ दीयो । आप वड़ा मजा में है । आडो खोलता ई देखजो, मूंडो अर आख्यां लाल चिरमूं व्हेयरी व्हेला; बंदघो चूला में फूंकां देय रियो व्हेला । बतावो, अबे कांई करूं म्हूं तो कांई व्हेयगी ।'

जुनेखा बोली, 'ठेर म्हूं सैने घालूं ई ने ।,

अमीना हंसती थकी, लुळाई सूं बोली, 'हाय जोड़ूं जीजा, अबे थैं ई ने कांई मत कैवजो ।'

अमीना या वात ईयां कही जाणे वो बोपो मोटघार वो रो पाळघोड़ो हिरण है, जांणे वीं में जंगळी आदतां मोजूं है कि बारळा मिनख न देख न चमक न भाग नीं जावे ।

मतराक में माछळीमार आय न बोलियो, 'आज दाळियो नीं आयो, तिन्नी ?'

'आयो है नीं ।'

'कठे गियो ?'

'चाळा कर रियो थो ओवरी में घाल न जड़ दीधो ।'

डोकरो विचार में पड़ गियो, बोलियो, 'तंग करे तो सेहण कर लेवो कर बेटा । छोटी ओस्था में सैंग ई चाळागारा व्हैवो करे । घणो मत कायो करवो कर वीं ने । दाळिये काने एक 'पळ' देय म्हांरा सूं तीन माछळा मोलाया, जाणे के ?'

'पळ' रो अरथ व्हे म्होर ।

अमीना बोली, 'सोच मत कर काका, आज म्हूं दो थळ थांने वयून कराय दूंला, एक ई मालळो नी देवणो पड़े।'

डोकरो आपरी उछेरियोड़ी छोरी री ओछी ओल्या में स्याणप न कमाउ बुद्धि देख राजी व्हियो, माथा पे लाड सूं हाथ फेर परो गियो।

[४]

अचंभा री वात तो या ही के दाळिया रो आवणो जावणो जुलेखा ने ई सुंवाय गियो। देखी जावे तो एड़ी अचरज री वात ई कांई कोयनी। नंदी रे एक आडी ने तो धारा व्हे दूजी आडी ने कनारो व्है, जस्यां ई लुगाई रा हिवड़ा में एक कानी तो मन रो वेग व्है दूजी आडी ने व्हे लोकलाज। पण वीं अरावान रा चौड़ा चपट पड़िया चौगान जेड़ा देस में 'लोक' है कठे जिरी लाज व्हे।

वठै तो रुत रे लारे लारे रूंखा विरच्छां रे फूलड़ा लागे न झड़े। मूंडागली वा लीली नंदी। चौमासा में ढावा तोड़ती बेवे, आसोजां में पाणी नै निथारती बेवे। सियाळा मे भेळी भेळी व्हे, बसंत रत में लाज्यां मरती मरती उनाळा में तो एड़ी दुबळी पतळी व्हे जावे के देखतां ई रै जावो। चिड़कलियां री चूं चूं। कोई रोको न टोको, उच्छाह सूं भरियोड़ी मीठी बोलती। आपणी नांई नीं तो कि रो ई साळावादो करे न नीं कि पे ई मौसा मारे। दखणांद रो वायरो कदी कदी नंदी रा ईं कनारा सूं पेला कनारा पे जावतो। कनारा रा गांम रा मिनखां री आणंद री ल्हेरा लेतो आवतो पण किरो ई न्यावटो नी करतो।

दूंढा व्हियोड़ा धरां में धीरे धीरे दोरड़ो जमतो जावे ज्यूं अठा रा रैवा वाळा रा हिवड़ा मूं ई लोकलाज री नींवण भींता टूटती जावे। अठा री परकरती, मिनख सुभाव ने बदल देवती। रेवतां रेवतां धीरे धीरे लोक लाज रो संको मन मूं निकळ जावे।

लुगाई ने, दो हिवड़ा ने, दो जोड़ी रा मिनखां ने मिलतां देखवा में घणो रस आवे। अतरो मोटो चोज, अतरो सुख अर अतरो कौतक लुगाई ने और दूजी कीं वात में नी दीसे।

कांकड री ई टपरी में, गरीबी री छाया मे जुलेखा री कुळरी कांण, पराणां री रजवट री रासड़ियां ढीली पड़वा लागी, अबै वी ने केलू रा रूंख री छाया में अमीना अर दाळिया री मिलण राम्मतां देखवा में रस आवा लागो।

कदाच वीं रा जोवन छाया हिवड़ा में ई कोई ऊणायत आवती व्हेला। वीं रो हिवड़ो ई विघळाय जावतो व्हेला। वी ने यां रो मिलणो देखवा में अतरो रस आवा लाग गियो के कदेई दाळिया के आवा में मोड़ो व्हे जातो तो जुलेखा

थाट माळतो। वा दोई जणा ने रमता खेलता ने जुलेखा मुळकती जोवती अर हेत सूं कस्यो देखनी जांणे चितारो आप रा नवा बणाया चितराम ने थोड़ोक दूरो मेर न निरखतो व्हे। कदी कदी लड़ती ही, कदेई ऊपरला मन सूं धाकला धूकलो करती, कदे ई अमीना ने घर में अड़ वी रे मिलवा में आड़मड़ायन व्हेती।

राजा रो घर चाकर रो एक सो सुभाव व्हे। दोई मन रे मतो चालणिया व्हे। दोई आप आप रा राज रा धणी व्हे। कोई, दूजा रा बतायोड़ा नेम हुकम ने नी पालबो करे। दोई जणा में सुभाव सूं ई बड़ापणो व्हे अर सादी सल्ला रा व्हे। जो आदमी बचेट्या व्हे, नी घणा मोटा न नीं घणा छोटा। वे लोक सास्तर रा आखरा ने गिण गिण न वा माथे चाले। एड़ा मिनखा री बांण दूजो तरे री व्हे। वे आप सूं लूंठा ने देख न तो चाकर बण जावे। गरीबां माथे ठाकरी जतावे। बारणे मायने मणसेंदो जायता वां ने मत सूझे न गत। बोको दाळियो विलालो जीव है।। सायजादियां रे मूंडागे वो सके नीं। सायजादिया ई वी ने आप रो घरोशरियो समझे। दाळियो मुळकतो रे। सादी सल्ला रो अणंदो जीव है। डर भी वी रे मड न ई नी निकळयो। संकणों वीं सीख्यो ई नी। वी री चालचलगत में बोदापणां रा कोई एनांण ई नी।

ये रम्मतां तो व्हेती पण जुलेखा रो हिवड़ो एकणदम फाटवा लागतो। वा विचारती, 'सायजादी रो जमारो यूं बीतणो चावे ?'

एक दिन परभात रा दाळिया रे आवतां ई जुलेखा वी रा हाथ मसकाय न बोली। 'दाळिया, मदा रा बादसा ने म्हनें बतावणो माई थारा सूं ?'

'देखाय तो दूं पण क्यूं ?'

'म्हांरा कनें एक कटार है, वीं री छाती में मारणी है।'

येलां तो दाळियो अचंभा में पड़ गियो। पछे सूरापणो चढ़ियो जुलेखा रो मूंडो देख, पछे वैर लेवा री खुसी सूं दमकतो मूंडो देख दाळिया रो मूंडो ई हँसी सूं विगस गियो। वीं ने यूं लागो जांणे एड़ा मजा री- [illegible] कदी सुणी ई भीं बस रोळ ई कोई करे [illegible] सायजादी ने [illegible] टार मारवा री तसवीर [illegible] झट देणी री [illegible]

वीं रा मन में ऊणायत ही के मरवा सूं पैलां एक दाण वा दाळिया ने देख लेती। पण वो तो काल सूं ई कोनी आयो। वीं दिन दाळियो हंस रियो हो वो कदाच वीं हांसी में रूस जावा रा तुड़ंगिया हा।

पींजस मे बैठवा लागी तो जळजळाया नैणां सूं वीं घर ने देख्यो वीं रूंख ने देख्यो, वीं नंदी ने देखी।

माछळीमार रो हाथ पकड़ न धूजते कंठ बोली, 'काका, म्हूं तो चाली, थांरी तिन्नी तो जायरी है। थारे पळींडे पाणी कुण भरेला ?'

डोकरो, टाबर री नांई रोवा लागगियो।

अमीना बोली, 'काका, दाळियो आवे तो या वींटी देय दीजो। कैय दीजो, तिन्नी जाती वेळा देयगी है।

यूं कैय वा चट देगी री पींजस में बैठगी।

गाजा बाजा सूं पींजस चाल्यो। अमीना, वीं री भरथी रा काका री टपरी, केलू रा रूंख नीचलो धूंतरो देखती जाय री। वे अंधारा में छिपता जाय रिया हा।

दोई पींजस तिरपोळिया में व्हे जनानी डोडी मे वळग्या। दोई बेनां पींजस सूं नीचे उतरी।

अमीना रा मूंडा पे कोई मुळक नी ही, नीं नैणां मे आंसू ई हो। जुबेदा रो मूंडो घोळो पट्ट व्हेयरियो। फरज पळगो भळगो हो जनरे तो वी रा मन में उच्छाह हो, छाती धप री ही। धबै कांपते काळजे, उबकती छाती, घणा हेत सूं अमीना ने छाती रे लगाय लीधो। मन कैयरियो, धोन री डाळ सूं ई विगसता फूल ने म्हूं तोड़ न सोहुदा में साळवा ने कठै ले आई हूं।'

अबे सोचणे री वेळा ई कठै ? डावड़ियां जगमग जगमग करता हजारां दीवा र पीलसोता लीधां ऊभी। वांरा चानणा में दोई बैनां धीरे धीरे चालवा लागी।

बादसा रा खास म्हेलां रा बारणा कनें आय एक छिण साड़ं अमीना ठम न बोली, 'जीजा।'

जुबेदा, अमीना ने काठी बाथ में थाम लाड़ कीधा। पछे दोई धीरे धीरे मांयने वळी।

देख्यो, म्हेलां रे सरबिचे ढोल्या पे मोड़ा रो मड़ो लीधां बादसा, साही पोसाक में बैठ्या है।

अमीना संक गा., बारणा कनें ऊभी रैगी ।

जुलेखा आगे पांवडा देय बादसा कनें गी, देखे तो बादसा छानो मानो बैठो बड़ा मजा सूं मुळक रियो है ।

जुलेखा एकणदम बरळाई, 'दाळियो ।'

अमीना भांप खाय हेटे पड़गी ।

दाळियो उठ न जलमायन न्हियोड़ी चिड़ी री नांई अमीना ने गोद में उठाय न ढोल्या पे लेयगियो ।

चेतो आयां अमीना कांचळी मांय सूं कटार काढ जुलेखा रा मूंडा साम्हो भांकी, जुलेखा दाळिया रा मूंडा साम्ही भाकी, दाळियो छानो मानो मुळकतो थको दोवां रा ई मूंडा साम्हो भांकतो रियो । कटारी, म्यांन बारऐ थोड़ोसोक मूंडो काढ ई रम्मत ने देख, चम चम कर न मुळकवा लागगी ।

—

संस्कार

पापां रो लेखो जोखो राखणिया चितरगुप्तजी रा बहीड़ा में घणा एड़ा पाप मोटा मोटा श्राखरां में मांडियोड़ा है जां पापां रो बेरो वां रा करणियां पापियां ने ई कोय नीं है। श्रस्या ई, दुनिया में एड़ा पाप ई है जां ने खाली म्हूं ई ज पाप मानूं, दूजा कोई पाप नीं माने। श्राज जो म्हूं वात केवूं वा एड़ा ई ज पाप री है। चितरगुप्तजी रे मूंडागे जुबाब देवणो पड़ी जठा पेला ई वीं पाप ने कबूल कर लूं तो, कदाच थोड़ो भार मोळो पड जावे।

फागो री पूनम, थावर रो दिन हो। म्हांका मोहल्ला री सड़क माये व्हे एक मोटी श्रसवारी निकळ री ही। म्हूं म्हारी श्रस्त्री कळिका ने साथे ले मोटर में बैठ, म्हारा भायला नैणमोवन रे घरे जाय रियो हो, चाय पीवाने।

म्हारी श्रस्त्री रो नाम, म्हारा गुमराजी रो काढियोड़ो है, ईं रो जुम्मेवार म्हूं नीं। नाम जेड़ो उण रो सुभाव नी हो। कळिका यूं तो मन री वातां मन में छिपायां राखती पण श्रठे मन मतांतर री वात श्रावती वठे उण रा विचार, मत, साफ हा। बड़ा बजार में विलायती कपड़ां पे धरणो देवा ने वा गी ती उण री मजबूताई देख साथ वाळा उण रो नाम धर दीधो 'ध्रुवव्रता।' म्हारो नाम है गिरींदर। कळिका रा साथी संगी, टोळीवाळा म्हने कळिका रा सावंद रा नांम सूं ई श्राणे म्हारा नाम रो वठे मोल नीं। भगवान री किरपा सूं, बाप दादां री कमायोड़ी पूंजी सूं म्हारा नाम रो थोड़ो घणो मोल हो, वी पे लोगां री निजर पड़ती पंडो भेळो करती वेळा।

घणी रो घर लुगाई रो गुमाव न्यारो न्यारो ह्विया सायद उणां में बगत

ठीक रे, मेळ बेठ जावे, पाणी'र सूखी माटी रो बेठे ज्यूं। म्हारो सुभाव ढीलम-ढाळ है, कोई वात म्हे पकड़ न नीं राखणी भावे। म्हारी अठी पकड़वां मिजाज री है जि वात ने पकडती पाछी छोड़ती नीं। म्हारी तो या पक्की धारणा है के म्हाके घणी लुगाई रे बणत री वा ईं उलटा सुभाव रे कारण ई ज री।

खाली एक जगा म्हारे'र वींरे बीच में विरोध रियो, अर वो विरोध जीवती री जतरे नीं मिटियो, चालतो रियो। कळिका रे मन में जमियोड़ी ही के म्हनें म्हारा देस सूं म्होबत कोय नीं। उण रे या वात ऊंडी जमियोड़ी ही। या ई ज वजे ही के ज्यूं ज्यूं म्हारा देस परेम रो सबूत देतो गियो ज्यूं ज्यूं म्हारा देस परेम पे उण रो वेम बधतो गियो। क्यूं के वा देस परेम रा सैहनांण बतावती वे म्हारा में नीं हा।

गीतावां रो कीड़ो तो म्हूं बा पणां सूं ई रियो हूं। कोई नुवी पोथी छापा बारं निकळी नीं न म्हे मोलाई नी। या वात तो म्हारा वैरी मानता के वां री पोथियां ई म्हूं पढूं। संगीड़ा सायीड़ा तो खूब जांणता के पोथी बांच न म्हूं उण माथे चरचा करूं वादविवाद करूं, आळोचणा करियां बिना तो म्हां री रोटी नी पचे। घणा सायीड़ा तो म्हारी इणी ज बांण सूं डरपता, बेस मुबाहिसा सूं बचवाने, म्हारे सारे ऊठणो बैठणो छोड दीधो। अबै तो वां मांयलो एक ई ज सायी बाकी बचियो है जो ओजूं हार नीं मानी। वन विहारी रे सारे ओजूं ई दीतवार रे दिन मजलिस जुड़े। म्हें उण रो नाम राख दीधो 'खूणां विहारी।'

कदै ई कदै ई तो म्हां दोई जणां चानणी पे एकमाळा बेठा वातां में मगरा विलम जावां के रात री दो दो वज जावे। वां दिनां म्हां रा पे यो भूत चढ़ियोड़ो हो वो जमानो म्हां सारू संवळो नीं हो। जमानो एड़ो हो के पुलिस कि रा ई घर में गीताजी पड़ियोड़ा देख लेतो तो राजद्रोह रो सबूत साबित करनो ताळ नी लगावती। वीं जमाना रा देस भगत ई एड़ा हा के किरे ई घर में विलायत री छपियोड़ी पोथी रो फाटियोड़ो पानो ई लाध जावतो तो घर रो धाकर ई टाबर ने देसद्रोही समझवा लागतो।

म्हने तो वे काला रंग पे धोळी आराम पोतियोड़ो "ग्वेर द पायन" मानता। म्हारी वात ने गप्प नीं मानो तो म्हूं तो अटा ताई कैवूं ला के देस भगतां सुरसती री पूजा करणो छोड़ दीधो क्यूं के सुरसती रो रंग गोरो है। गोरी चमड़ा मात्र सूं लोग चिड़वा लाग गिया। वां दिनां तो एक एड़ो धारो धाम्यो लोगां रे मन में हो अटा ताई जमगी के वीं तळाव में सफेद कंवळ रा फूल फुले उण तळाव रो पांणी तक त्याग्य है। पांणी सूं तो वासदी बुझे पण वीं तलाव रा पाणी ने छिड़किया देस ने भसम करवा वाली वासदी और बत्ती भभके।

म्हारी सायपण छाळे काळी गवोरा म्हारे मंडाणे पाजी, रोमीला

रैवा नै नीं के 'हिन्दू संस्कृति में संस्कारां री, स्वाधीन बुद्धि रा माळा विचारां रा कतरा, ऊंची जगा है ? या दातां आपां रा देस नै दूजा देसां सूं कतरो ऊंचो उठाय दीधो।' यां वातां सूं वठा रो वातावरण धुंधळाय जाय। म्हारो जीवै तो लाग रियो सुनैरी पुट्ठा वाळी नुवी पोथियां में, जो प्रवास हावां मायनुं माय म्हारा गीदवा कनैं पड़ी वाट नाळ री ही। भूरा रंग रा पन्टेटियोड़ा कागज रो घूंघटो ई हाल नी उघाड़ियो हो। म्हारा हिवड़ा में वा रो मोह खिण खिण वधतो जाय रियो हो। तो ई लुगाई रे लारै बारै जावणो ही पड़ियो। घरवाळा री मरजी रै खिलाफ चालतो तो एड़ी आंधी र भतूळियो आवतो के म्हूं यी भतूळिया में मरोळा खांवतो फिरतो।

घर सूं निकळ न गळी में निकळिया, सदर सड़क पै मोटर पूगी नी व्हेला के आगे देखां तो कंदोई री हाट आगे मिनख भेळा व्हैयरिया। भीड़ लाग री, हाका हल्ला व्हैयरिया। म्हांका पाड़ोसी मारवाड़ी बौमोला गाबा पैर कोई जुलूस में सामिल व्हैवा ने जाय रिया हा। भीड़ देख न गाड़ी ने रोकणी पड़ी। सुणियो, लोग कैयरिया 'मारो, मारो'। म्हें जाणियो कोई जेबकतरो पकड़ियो गियो दीसे।

मोटर भूं भूं करती, धीमी धीमी चालती, रोळा करती भीड़ कनै पूगी तो देखा काई के म्हांका मोहल्ला का बूढ़ा सरकारी भंगी ने मिनख ठोक रिया है। गळी रा सरकारी नळ सूं बालटी भर, कांख में झाड़ू घाल न जाय रियो जो किंयूं ई भीटाय गियो। लारै हो वी रो आठेक बरस रो पोतो। पोतो रोंवय रियो। दादा ने छोड़ देवा ने हाथाजोड़ी कर रियो। दोई जणा साफ कपड़ा पैर राखिया, दोई देखवा में साजा सांतरा दीख रिया। बूढ़ो कैय रियो 'बापजी म्हारी गलती व्हैगी, माफ करो।' ज्यूं वो हाथाजोड़ी करतो अहिंसा धम पाल-णिया पुण्यातमा री रीस री झाळ में घीर पूळो मेलणी आतो। डोकरा री आंखियां मांय सूं झर झर आंसू वैय रिया, डाढी सूं लोही टबक रियो।

म्हारा मूं नी देखणी आयो'नी मिनखां सूं लड़वा ने म्हारा सूं उतरणी आयो। म्हें बिचारी डोकरा ने र छोरा ने मोटर में बठाय घरळो लेजाय उतार दूं। म्हारी घरघांपणी ने बताय दूं के म्हूं या नामधारी धरमातमा मायनो नीं हूं। म्हने आगो पाछो व्हेतां देख कळिका म्हारा मन री बात भांपगी। बाठो हाथ पड़ सोयो म्हारो। बोली, 'कर काई रिया हो, भंगी है।'

म्हें कियो, 'भंगी है तो पछै म्हो। ऊडे मिनख ठोकेला ई ने।'

कळिका बोली, 'दोस तो ई रो ... रै बीचे क्यूं आवे ? एक भाड़ो ने व्हे न नीं निकळणी आवे ?'

म्हैं कियो, 'या तो म्हूं कांई जाणूं । गाडी में बैठाय आगे लेजावूं ईं ने।'

कळिका बोली, 'तो म्हूं तो उतरूं मोटर सूं । बोळो बळाई व्हे तो आपो ई बळो । छेवट चूंड़ो है ।'

म्हैं कियो, चूंड़ो व्हे तो कांई व्हियो, कपड़ा तो साफ पेर राखिया है, न्हागो धोयो साफ है । ये ऊभा जां मांयला घणा जणां सूं साफ है ।'

'तो कांई व्हियो है तो भंगी रो भंगी ।' यूं कैय वीं ड्राइवर ने हुकम दीधो, 'गाडी चला ।'

म्हारी हार व्ही, कमजोर हूं म्हूं ।

वीं दिन नैणमोवन गैर गम्भीर दृष्टांत दे दे दरांन सास्तर री सीन खोल खोल मूंडागे राख दीधी । पण उण री एक ई वात म्हारा कानां मांयने नीं पड़ी, नीं म्हूं बोलियो ई ।

हारजीत

राजा री कंवरी रो नाम हो अपराजिता। राजा उदेनारायण रा राज-कवि हा शेखर। वां आंखियां सूं कदेई कंवरी ने देखी नीं। पर वे दरीखाना में बैठ न आपणी कविता बोलता तो कंठ ऊंचो कर न बोलता। वां रो ऊंचो साद ऊंचा ऊंचा म्हेलां रा झरोखा में बेठयोड़ा रै काना में पड़तो। वे दीखती तो नीं पण वां रा कानां में वां रो कविता पाठ रस घोळ देतो। वे एक अगजाग तारालोक में रस सूं भिजियोड़ा संगीत रा सन्देसा भेजता। जठे रा पेह मंडल में जांणे वांरी जिन्दगी रो एक सुभग्रेह है। उण ने वे ओळखे तो नीं पण वो अण दीखतो मेहमां लीधां विराजियोड़ो है।

शेखर री कल्पना री राजकंवरी उणां ने दीखती, कदेई छाया में दीखती कदेई घूंघरां री झमक बण न सुणीजती। वे बेठ्या बेठ्या सोचबो करता, वे पग धेड़ाक म्हेला ? जिणा में सोना रा घूघरा बंधियोड़ा है, वे ताळ ताळ पे टमका करता गीत गाता रे। वे दोई गोरा गोरा, कंवळा कंवळा, राता राता, पगलिया धरती पे पड़े जो कल्यांणा करती वां री महर है, दया है धरती माथे। कवि तो वां चरणारविंदा री आसरा हिवड़ा में थरपना धार लीधी। मौको लाधतां ई उणां रो मन वां चरणारविंदा में जाय लागतो, वां घूघरां रा झमाकां रे मारै गीत गावा लाग जातो।

उण भगती भरिया हिड़दे में कदी कोई वेम या सवाल ई नीं उठियो के जिण छाया ने म्हें देखी है, वा छाया है किण री ? वां घूघरा रा झमाका म्हूं सुणुं हूं वे घूघरा है किण रा ?

अपराजिता री डावड़ी मंजरी, पणघट पे पाणी भरवा जावती तो कवि रे घर रे बारे व्हे न निकळती। आवती जावती कवि सूं वातां रा दो टप्पा मारियां बिना नीं रैवती। ओसर लाध जातो तो सांझ मुवे शेखर रे घरे जाय बैठती। जतरी दांण वा पणघट पे जावती जतरी दाण काम व्हे तो ई ज, या वात नीं कैय सकां। पण या वात ई नीं के बिना काम यूं ई जावती व्हे। पण पणघट पे जाती वेळा नखरा सूं सुरंगी ओढणी ओढ, कानां में आंबां री मांजरां टांकवा री कोई जरूरत पड जाती, इण री वजे हेरियां ई नीं लाधी। मिनख मूंडा पे हाथ देय न दांत काढता, कानां में वातां करता। इण में मिनखां रो दोस ई कोयनी। मंजरी सूं मिल शेखर रो हिवड़ो विगसतो, अर वो इण पे पड़दो न्हांकणे री कोसिस ई नीं करतो। डावड़ी रो नाम हो मंजरी। यूं आंपा देखां नो मामूली डावड़ी रो नाम अतरो घणो ई है। पण शेखर इण नाम रे सागे आपणी कविता जोड़ न कैवतो 'बसत मंजरी।' मिनख सुणता र कैवता 'कांई कैवणो।' अतरो ई ज नीं शेखर बसंत पे कविता बणावतो जिमे जठे देखो जठे 'मंजुल-मंजरी' लगाय देतो। वात व्हेतां व्हेतां राजा रे कानां तक पूगगी। राजाजी आपणा कवि रा रसीला सुभाव पे घणा राजी व्हेता, गेळा करता। शेखर ई पाछो रोळां रो जुवाब रोळां में देवतो।

राजा जी हंस न पूछता, 'भंवरो बसंत रा दरबार में खाली गावो ई ज करे?'

कवि जुवाब देतो, 'नीं तो, फूलां री मंजरी रो रस ई चाखे।' यूं आपसरी में रोळ तमासा कर मन ने राजी करता। अपराजिता ई रावळा में कदै ई मंजरी सूं हंसी मजाक करती ई व्हेला। मंजरी ने ई रीस नी आती व्हेला।

मिनख री उमर यूं बीत जावे, थोड़ो सांच व्हे थोड़ो झूठ व्हे। थोड़ो धणो भगवान बणावे, थोड़ो धणो मिनख आप बणायले, थोड़ो घणो पांच जणा मिल न बणायने। मिनख री जिंदगी तो एक पचरंगी लेहरियो है। थोड़ो सांच व्हे, थोड़ो झूठ व्हे। थोड़ी कल्पना व्हे, थोड़ो तथ्य व्हे। जिन्दगी तो खोटा खरा रो भेळ है पण गीत जो वो कवि गातो हो सांचा अर पूर्ण हा। गीत व्हेता राधका जी रा, क्रष्ण रा, आदू नर रा आदू नारी रा। अनादि दुख रा अनंत सुख रा। वां गीतां में जो वातां व्हेती वे अथारथ ही। उण जथारथ री अमरापुर री सारी नगरी रो मिनख पारख्या कर चुक्यो हो। उण रा गीत बच्चा बच्चा री जीभ पे हा। चांद ऊगतां ई, दिखणादी बायरो चालतां ई उण रा गीत आकाश में गूंज जाता। कवि रा गीत तोपड़ां री झाड़ियां सूं गुरगुर करता बायरा में गुणीजता, मारग चलतां ने सुणीजता। रोई में गूंजता रैता आंगणां में रमता रैता। कवि रा नाम री अर ख्याति रो कोई थाको नीं हो।

यूं घणां दिन बीत गिया। कवि कविता बणावतो, राजा सुणतो, दरबारी दाद देता मंजरी पणघट पे जावती। रावळा रा झरोखा री जाळियां सूं कदी कदी छाया भाय पड़ती, कदी कदी रमझोळां रा घूघरां री झमक कानां में भाय पडती।

(२)

दक्खणदेस रा एक कवि राजा रा दरबार में आया। ये दिग्विजै करता भाय रिया हा। वे आपरे देस सूं निकळ गैला में जतरा राज पड़िया वठा रा सगळा राज कवियां ने हराता अमरापुर भाया। भावतां ई सादूळ विक्रीड़ छन्द में राजा री स्तुति कीधी।

राजा आवकार दीधो, 'मांगो, मागो।'

कवि पुण्डरीक बड़ा गरब सूं, बोलिया, 'जुद्ध धावूं।'

राजा री, राज री इज्जत रो सवाल। जुद तो देवणो ई पड़ैला। पण राजकवि शेखर ने तो या ई ठा नी के धाक जुद्ध देवे वियां है। शेखर तो सोच रा सागर में डूब गिया। मन मे संका बैठगी। आखी रात नींद नी भाई। वे तो जठी ने झांके जठी ने पंच हत्यो पुण्डरीक दीसे। खाडा री धार जेड़ो तीखो नाक, दरप सूं ऊंचो उठियोड़ो माथो ई माथो दीसे।

दिन ऊगियो कांपते काळजे कवि रणखेत में पूगियो। दिन री ऊगाळी सूंई मिनखा रो ठाठ लागरियो। दरीखानो ठसाठस भरियो। हाको-हूल्लो व्हेरियो। चौवदो बंद हो। शेखर मांडाणी मूं डा पे धणी दोरी मुळक लाय न वणि पुण्डरीक सूं मुजरो कीधो। धमधमाणपणां सूं पुण्डरीक धोरेक रा माथो हिलाय मुजरो झेलियो; आपणां साथवाळा चेला चाटियां, साम्हो झांक न मुळकियो। शेखर रावळा रा झरोखा आडी ने छानेकरो झांकियो। जाणगियो हजारां हिरणाखियां री मागती उतावळी कौतग भरी आंखियां नीचे लाग री है। शेखर रो मन एक ध्यान व्हे दूजा ई लोक में पूग गियो। जागती जोत री वंदना करवा लागियो। मन ई मन कियो, 'हे देवी अपराजिता, जो आज म्हारी जीत व्हे जावे तो थारो नाम ई ज सारथक व्हेला।'

बाजियो वाजियो। 'खम्मा-खम्मा' करतो सारो दरबार ऊभो व्हेगियो। धोळी पोसाक धारण कीधां राजा उदेनारायण पधारिया, जांणे सरद रुत रो धोळो बादळो आयो। गादी पे विराजिया।

पुण्डरीक उठिया, जाय गादी रै आगे ऊभा व्हिया।

सारो दरबार चतराम री पूतळी ज्यूं ऊभो।

लंबे चौड़े डाटक पुण्डरीक, छाती चौड़ी कर, माथा ऊंचो कर गहर गंभीर साद में राजा री स्तुति बोलवा लागियो। कंठ सुर तो म्हेलां मे मावे नीं।

जांणे समंदर गरजना करवा लागो । म्हेलां री भींतां, थांभा, छातां हालवा लागिया । गुणवाबाळ्ां रा काळजा रो खिड़कियां पर पर धूजवा लागी । कवि रा कौनठ रो कोई केयणो कोई सो उणांरी जुगतियां है, कोई कैणे रो ढंग है । कोई कविता में सगळो है । उदेनारायण नाम री कतरी तरे रो ता वां व्याक्या कर दीवी । राजा रा नाम रा मारवरा रो कतरां भाडो ने सूं, कतरी तरे सूं विन्यास कीदो । छन्दा रो अर यमका रो तो कोई हिसाब ई नी ।

पुण्डरीक कविता सुणाय जाय न आपरा आसण पे बैठिया थोडी देर तक तो म्हेल वां रा कंठ री प्रतधुनि सूं गूंजतो रियो । घणी देर तांई हजारां हिवड़ां रा. मुखड़ां सूं निकळी वाह वाही गूंजती री । दूरा दूरा देसा सूं आयोड़ा विद्वान, पंडित, हाथ ऊंचा कर कर 'रंग है, रंग है थनैं,' करवा लागिया ।

राजा, शेखर रा मूंडा साम्हा जोयिया । शेखर ई राजा साम्हा देखियो, नजर में भगती, नेह, अरमान भरियो पण सागे ई संकोच अर गरीबाई ही । धीरे करो उठियो ।

भगवान रामचंदरजी प्रजा ने राजी राखवा ने सीताजी ने दूजी दांण अगनी परिक्षा देवा ने कियो जदी सीता ई पति रा मूंडा कानी देखती यूं ई ज रामजी रा सिंघासण मूंडागे ऊभी व्ही ।

कवि री चोज भरी नजर राजा ने केय री ही, 'म्हूं थांरो ई ज हूं । थां जे दुनिया आगे ऊभो राख न परीछा लेणो चावो तो लो थांरी मरजी । पण........' पछे आंखियां नीची कर लीधी ।

पुण्डरीक तो ऊभो हो सोनेरी न्हार री नांई । शेखर ऊभो सिकारियां सूं घिरियोड़ी हिरणी री नांई । शेखर मोट्यारडो छोरो । लुगायां जेड़ी थोड़ी थोड़ी लाज, नेह भरियोड़ो, कंवळो रूपाळो मूंडो । पीळा रंग रा गाल । सरीर रो लळ-थळियो । यूं लागे जांणे भावना रे अड़तां ई इण री देह वीणा रा तारां री नांई कांप न बाजवा लाग जाय ।

शेखरैं मूंडो ऊंचो कर न घणाई मीठा मीठा बोलवा लागिया । पैलड़ो स्लोक तो पूरी तरे सगळा सूं सुणिजियो ई नीं । पछे मायो धीरे धीरे ऊंचो कीधो, जठो ने नजर न्हांकी वठा सूं सारा लोगां ने, म्हेलां री भाटां री भींतां ने चीरतो, छेटी घणी छेटी अतीत में जाय नजर पूगी ।

मोटियारड़ा कवि रो. मीठो, साफ, कंठ सुर कांपतो कांपतो बादळी री सुनैरी झाळ नांई ऊंचो जावा लागियो । पैलां तो वो राजा रा चंद वंस रा बडाउवां रा बिड़द बखाणियां । पछे धीरे धीरे कजाणा कतरा ई जुद्धां रा झगड़ां रा, सूरता

रा पराक्रम रा, जय रा, दान रा, अनुस्थानां वखाण करता करता यां राजा रा जमाना री बात पे उतरिया। कवि बीतियोड़ा जमाना री जूनी याददास्त में उळजियोड़ी नजर ने धरमी खेंच राजा रा मूंडा पे जमाई। अबै वे राजा री, समस्त प्रजा री भावना रो घर प्रीत रो रूपक बांधवा लागिया। प्रजा री उण प्रीत रो बखांण करवा लागिया जो हिवड़ा में हिलोळा ले अर जीभ सूं समझावणी नी आवे। उण प्रणवत्य प्रीत रो सबदां मूं अर छंदां सूं यो ठाठदार वरणन कीधो जांणे वा मूरती व्हेय सभा रे बीचे मूंडागे आय ऊभी रेगी। यूं लागवा लागो जाणे वा लाख लोगां रा हिवड़ा मूं निकळ, दौड दौड़, यां जूना म्हेलां सूं बाथा भर भर मिल री है। म्हेलां रा एक एक भाटा ने, एक एक ईंट ने छाती रे लगाय री है, लाड कर री है। ए, वा ऊपरे उडी, रावळा रा झरोखा, गोखड़ा मे पूगी। राजलक्ष्मी जसी म्हेलां री लछमियां रा चरणां मे नेह भरिया, भगती भाव सूं लोट पोट व्हेगी वा प्रीत पाछी आई, राजा रे, राजा री गादी रे आणंद सूं उछळती परकम्मा देवा लागी। पछे कवि बोलियो 'पिरथीनाथ, वावयां में, बोलवा मे म्हू हार सकूं पण भगती में म्हनें कुण हराय सके?' यूं कैय धूजता लगा आप री जगां आय बैठ गियो।

परजा रा लोग जळजळी आंखिया सूं, गळगळा गळा सूं 'वाह वाह' करवा लागिया। पुण्डरीक हंसिया, जांणे वे धिरकार रिया व्हे। जनता री भावना री बेकदरी करता पाछा ऊभा व्हिया अर गरब सूं गरजना करता बोलिया 'वाक्य सूं बढकर और है ई कुण?'

सब अणां छानामाना व्हेगिया।

पुण्डरीक अनेकानेक छंद बोलवा लागिया, वां री पिंडताई बतावा लागिया, वेद वेदांत अर आगम-निगमा सूं परमाण देवा लागिया 'संसार में सब सूं श्रेष्ठ वाक्य है। वाक्य ई ज सत्य है, वाक्य ई ज ब्रह्म है। तीन ई देवता, ब्रह्मा, विष्णु महेस वाक्य रा वस में है ई वास्ते वाक्य वा सूं ई ऊंचो है। ब्रह्माजी रे चार मूंडा है तो ई वांमूं सगळा पूरा वाक्य नी कंवणी आया। पंचानण के पांच मूंडा व्हेता थकां ई वावयां रो अंत नी पायो जो छानामाना व्हे, ध्यान में लीन व्हेय वाक्य सोच रिया है।'

ई तरै पिंडताई पे पिंडताई बताय, सास्त्रां पे सास्त्रां रो ढिगलो लगाय, वाक्य ने बैठा वा ने एक आभा तांई ऊंचो सिंघासण जमाय दीधो। यूं पुण्डरीकजी वाक्य ने मिरत्युलोक अर देवलोक रा माथा पे जाय बैठायो। पछे बीजळी री नांई कड़क न पूछियो—'वाक्य सूं बतो कुण है, बतावो?'

पुण्डरीकजी गरब सूं चारूं पासे देखियो। सगळा चुप। कोई जवाब नीं।

वे धीरे धीरे जाय आपरा आसण पे बैठ गिया। पिंडत लोग 'धन धन' केवा लागिया। राजा अचंभा सूं देखता रैगिया। कवि शेखर, इण ग्यान रा सागर पाणे आपने नाहुलियो समझ लीवो। दरीखानो बरखास्त व्हियो।

[२]

दूजे दिन कवि शेखर आय कविता गावा लागा। बिंदराबन में पैल परथम बंसी बाजी तो गोपियां ने खबर ई नीं पड़ी के कुण बजाय रियो है, कठे बाज री है। एकदांण लागियो जांणे दिखणाद रा वायरा में बाज री है, दूजे निमख लागियो जांणे उतराद रा वायरा में गोरधन परवत पे बंसी री धुन आय री है। यूं लागियो जांणे उदयाचळ पे ऊभो कोई मिलवाने बुलाय रियो है, पछे लागियो अस्ताचळ रा खूणा पे बैठियो कोई बिजोग रा दुख सूं रोय रियो है। पछे यूं लागवा लागियो जमना री ल्हैर ल्हैर सूं बंसी री धुन आय री है। आकास रो एक एक तारो बंसी रो बेजबो है। कुंज कुंज में, गैला घाटा में, फूल फूल में, जळ थळ में, ऊंचे नीचे, मांयने बारणे, रज रज में बांसरी बाजवा लागी। बंसी कांई कैय री है या ई कोई नीं समझियो, बंसी रे पडूतर में हिवड़ो कांई कैवणो चावे जो ई किण सूं ई तै नीं करणी आयो। खाली दोई आंखियां में आंसू भर आया अर अलोक स्यामसुन्दर रा मिलण री आंसा सूं हिवड़ा हुलसाय गिया।

कवि शेखर सभा ने भूल गियो, राजा ने भूल गियो, आप ने भूल गियो, अपना ने भूल गियो। बस जनम, हार जीत, उतर पडूतर, सब ने भूल अपणी निरजण हिवड़ा री वाड़ी में अकेलो ऊभो ऊभो वो बंसी रो गीत गावतो ई गियो। वणा ने तो याद री बस एक जागती जोत मनरा में बसियोड़ी मूरति, उणां रा काना में खाली उण रा चन्दरबिंदा रा रमझोळा रा घूघरां री भणकार बाज री ही।

कवि शेखर जद आप रा गीत ने पूरण कर बारे आया ग्यान सूं सुणां [illegible] री वाणी बैठा तो एक एक मीठास सूं आराम भरगियो के कंवणी नीं [illegible]। विरह री व्याकुळता सूं भरियो, दरीखानो एक वरीख लिख के छिपि रा मूंडा सूं 'वाह वाह' तक नीं निकळियो।

[illegible] री ओर छोटो वडिया पछे पुण्डरीक आप राजा री [illegible] ऊभा व्हिया। पूछियो 'कुण राधा है अर कुण किसन है?' [illegible] बोलिया [illegible] मुळकिया। [illegible] पूछियो 'कुण राधा है अर कुण किसन है?' [illegible]

[illegible]।

केवा लागा, 'राधा प्रणव है, ओंकार है; कृष्ण धियान है, जोग है; वृंदावन दोई मूं बारा बीचलो बिंदु है। पछे तो इड़ा सुसमना पिंगळा, नाभिपदम, हृदपदम, ब्रह्मरंध्र सगळां ने लायां पटकिया। 'रा' रो ग्ररथ काई र 'धा' रो कांई, क्रस्ण सब्द रा 'क' सूं लगाय 'ण' तक आखरां रा जतरी तरै रा न्यारा न्यारा ग्ररथ निकळता, वां सगळां री मीमांसा कर न मेल दीधी। एक दांण समझाया, क्रस्ण वेद है अर राधा खट दरसण, दूजी दाण समझाया, कृष्ण जग्य है राधा ग्रगनी है; तीजी दांण ग्ररथायो क्रस्ण शिक्षा है राधा दीक्षा है, राधा तरक है तो कृष्ण मीमांसा है; राधा उत्तर पडुतर है अर क्रस्ण जय लाभ है।

यूं अरथाय पुण्डरीक राजा साम्हा झाकिया, पिंडता साम्हा झाकियां, जोर रो ट्ठो लगाय शेखर साम्हा झाक न गरब रे साथे आप री जायगा जाय न बैठ गिया।

पुण्डरीक री इण गजब री सगती पै राजा भूम गिया पिंडतां रे अचरज रो थांगो नीं रियो। राधा क्रस्ण री नुवी, नुवी व्याख्या, बंसी री धुन, जमना री ल्हेरां अर प्रीत रा मोह ने अळगा काट न फैंक दीधा, जांणे बसंत रा रंग सूं रंगियोड़ी पिरथी परळा हरिया रंग मे पूंछ न कोई गाय रा पवितर गोबर सूं लीप दीधो व्हे। अतरा दिनां रा अवेर अवेर न राखियोड़ा गीता ने शेखर अबरथा समझबा लागिया। ईरा पछे तो वा में गीत गावा री सामरथ ई नी री। उण दिन री सभा समापत व्ही।

[४]

दूजे दिन पुण्डरीकजी पाछी व्यस्त, समस्त, द्विव्यस्त, द्विसमस्त, वृत्त, ताध्यं, सौम्य, चक्र, पदम, काकपद मात्रुत्तर, मध्योतर, अंतोतर, वाक्योत्तर, श्लोकोतर बचनगुप्त, मात्राच्युतक, च्युतदत्ताक्षर, अर्थगूढ़, स्तुतिनिंदा, अपह्नुति, शुद्धापभ्रंश, शाब्दी, काळसार, प्रहेलिका, वगैरा वगैरा सब्दां रा नाम ले ले ऐड़ी कदमुन घतराई बताई के सभा रा मिनखां ग्रचंभा सूं दांते मागळी देय दीधी।

शेखर री कविता तो घणी सरळ, समझवा में कोरी व्हेती। वी री कविता ने तो मिनख, राजी व्हेता तो गावता, बेराजी व्हेता तो गावता। सुखी रा मौकां पै गावता, आणंद उच्छवां मे गावता। आज मिनखां परतख देख लीधो के शेखर री कविता में एड़ी कांई खास सिफ्त नीं, एड़ी तो वे चावे तो वे ई बणायने। कविता बणाणे री कोसिस नीं कीधी वां अभ्यास कोनी ज्यू, मौको मिले तो वे ई बणावने एड़ी तो। कांई दोरी थोड़ी है, कोई नुवी बातां ई उणा में नीं। शेखर री कविता सूं नी तो लोगां ने कोई नुवी सीख ई मिले नीं कांई फायदो ई है। पण आज जो पुण्डरीकजी सूं सुणियो वो तो ग्रलग है, कदी सुणियो ई नीं। वाने जो पातां

सुणी उणां में घणी सीम मिथे, नरी वातां तो सोचवा विचारवा री है। दूजा देस रा पुण्डरीक री सिड़ताई अर ध्यान रे आगे वां ने घर रो कवि शेखर बिलकुल टाबर अर फोरो पातळो लागवा लागियो। घर रा जोगी जोगड़ा, बार गांमरा सिद्ध।

मांछळी री पूंछ हालवा सूं पाणी रे मांयने जो हिलोळ पैदा व्हे उणां री टक्करां री सरोवर मांयला कंवळ रा फूलां ने थेरो पड़े ज्यूं शेखर ई मांयला मन में समझ रियो के एड़ेमेड़े बैठियो लोगबाग उण रे वास्ते कांई सोच रियो है।

आज आखरी दिन है। आज ई हारजीत रो फैसलो व्हेला। राजा कवि रे मूंडा साम्हा भाकिया। जिण रो मतलब यो हो के, 'आज चुप बैठियां काम नीं चालवा ने है, जीतवाने पूरो जोर लगा।'

शेखर सभा रा एक खूणां सूं ऊभा व्हिया। खाली ये ई बोल निकळिया, 'ऐ वीणापांणि सुरसती, कमळ वन ने सूनो कर जे थूं ई मल्लजुद्ध रा अखाड़ा में आय ऊभी रे ई तो हे देवि, थारा चरणां रा चाकरां री, भगतां री जो अमरत रा तिरसाया है उणां री कांई गत व्हेला?

शेखर यां लफजां ने मूंडो थोड़ो ऊंचो कर घणां ई ज करुणा सूं बोलियो। बोलणे रो लेहजो एड़ो हो जांणे वीणांपाणी सुरसती रावळा रा झरोखा में साख्यात ऊभी व्हे।

सुणतां ई पैला तो पुण्डरीक खूब हंसिया। पछे 'शेखर' लफज रा पाछला दो आखरां पे धड़ाधड़ स्लोक बोलता गियां। कैवा लागा, कंवळ वन रे लारे 'खर' रो कांई मेळ? संगीत री अतरी महैमा गाई पण वीं मिनख लाभ कांई उठायो। सुरसती रो वासो तो पुण्डरीक (धोळा कंवळ) में ई ज व्हे। रावळा राज में सुरसती एड़ो कांई कसूर कीधो जो खर रो वाहण देय उण रो अपमाण करियो? या जुगती सुण सगळा ई पिंडत हंसवा लाग गिया। सारो दरबार ई इण हंसी में सामिळ व्हे गियो। वां री देखा देखी, सगळो लोग ई हंसवा लाग गियो। समझिया वे ई हंसवा लागा, नीं समझिया वे ई हंसवा लागा।

इण कटाक्ष रो मोतूं पडूत्तर देवा ने राजा आप रा कवि रे आंख री मांगछ कतरी दांण चुभाई पण शेखर रे तो अड़ी ई नीं। वो कजांणां कांई धियान में डूबियोड़ो, उण ने खबर ई नी पड़ी, पखाण ज्यूं बैठियो रियो। राजा मन में घणा बेराजो व्हिया। वे गादी सूं उठिया, गळा मांयने सूं मोतियां री माळा खोल पुण्डरीकजी रे कंठ में पैराय दीधी। सभा रो लोग 'धन्न है धन्न' बोल उठियो। रावळा मांयने एक साथे कतरी चूड़ियां रो खणकारो र नेवरियां रो झणकारो सुणीजियो। सुण न शेखर उठिया, धीरे धीरे दरीखाना बारे निवळ गिया।

[५]

काळी चवदस री रात। चारू कानी अंधारो। फूलां री खसबोई सूं मीनो दिखणाद रो पवन, समदृस्टी दातार री नांई गोखड़ा सूं नगर रा घर घर में वळ रियो।

शेखर पाटा परळी सैंग पोथियां नीचे उतार मेल दीधी। मूंडागे उणां रो ढिगलो कर दीधो टाळ टाळ आपरी मांडियोडी पोथिया ने न्यारी कीधी। नराई दिनां पैलां री मांडियोड़ी घणी सारी पोथिया ही. वां मांयली घणी सरी कवितां ने तो वे भूल ई गिया हा। वां ने उळट पुळट, अठी नूं वठी नूं वाच न देखवा लागिया। आज उणां ने वे सारी कविता, गीत, बिलकुल तुच्छ लागिया। एक लांबो नीसासो भर न बोलिया, 'आखी उमर री या ई ज कमाई है। थोड़ाक छंद, र लफज, थोड़ीक बेगसगाई, बस।'

आज उणां ने आपरी रचना में नीं तो रूप निजर आयो नीं रस निजर आयो। नी हिवड़ा हुळसावणियो आणंद ई दीख्यो। मांदा मिनख ने धान नी भावे मूंडा में कुवो मेलतां ई उवकाई आवे ज्यूं ई आज शेखर रे हाथ कनें जो वसत आई अळगी बगाता रिया। राजा री मितरता, नामवरी, हिवड़ा रो हुलास, कल्पना रा सुरंग रंग, सब कुछ आज री इण काळी रात में बिना सार रा लाग-रिया, जांणे हंसी कर उणां ने चिड़ाय रिया है। एक एक कर आपरी सारी पोथियां ने मूंडागे बळती सिगड़ी में न्हाकवा लागिया।

अचाणचक उणां ने एक कोमत री बात याद आयगी। हंसता हंसता बोलिया, 'बड़ा बडा राजा माराजा अस्वमेघ रो जग्य करवो करता, आज म्हारो यो काव्यमेघ रो जग्य है।' तुरंत विचार आयो, या ओपमा ठीक नी बैठी। अस्वमेघ रो घोड़ो तो सब जगां मूं जीत न आवतो जदी अस्वमेघ व्हेतो, पर म्हूं तो जिण दिन म्हारो कविपणो हारियो उणी दिन काव्यमेघ करवा ने बैठियो हूं। इण सूं पैलां कर न्हाकतो तो चोखो रेवतो।'

शेखर तो एक एक कर आपरी सगळी पोथियां अगनदेव रे चढ़ाय दीधी। वासदी री ऊंची ऊंची झाळा निकळवा लागी तो कवि रीता हाथां ने पटकता बोलियो 'देव दीधो देव दीधो। देव दीधो थनें देव दीधो थनें। इणाळी आज, सब कुछ थारे अरपण कर दीधो। अलरा बरसां सूं थनें ई ज म्हारा सर्वस्व री आहुती देतो रियो, आज बिलकुल खतम व्हेगियो हूं। घणां दिनां सूं यूं म्हारे काळजा में मुगत री ही। मोवनी, जो म्हूं सोनो व्हेतो तो तप न कुंदन व्हेगियो व्हेतो पण म्हूं तो तुरकलियो हूं तुरकलियो जो बळ न भसम व्हेरियो हूं।'

आधी रात ढळ री ही। मांसल रात रा सणणाटां में शेखर उठिया।

घर री सेंग खिड़कियां, बारियां चौपट खोल दीधी। सोक रा फूल सांक रा ई बाड़ी सूं चूंट न ले आया हा। सेंग धोळा फूल हा, मोगरो, जूही, चांदणी। मुट्ठियां भर न फूलां ने ऊजळा धोळा शक्क बिछावणा पे बिखेर दीधा। घर में चौपासे दीवा जोय दीधा। बिस री गांदळ ने सहद में मिलाय गिट गिया। मूंडा पे चिंता फिकर री कोई रेखड़ी नीं। धीरे धीरे जाय उग ढोलिया माथे सोयगिया। डील ठंडो पड़वा लागियो, आंखियां मींचवा लागी।

अतराक में घूघरा बाजिया। घाघरा रे लारे केसगंध आई।

आंखियां मीचिया मीचिया ई कवि बड़बड़ायो 'देवी, चाकर पे दया कीधी काई। अता बरसां सूं आज दरसण देवा आई हो।' एक मीठो सो साद कानां में पड़ियो, 'कवि, म्हूं आयगी।' शेखर चमक न आंख खोली, निजरिया रे आगे रंभा जेड़ा रूपवाळी अस्तरी ऊभी।'

काळ छायोड़ी, आंखियां सूं सावळ सूझियो नीं। जाणियो मन में बसियोड़ी मूरती री छाया है। वा बारे निकळ आई है जो अंत रे बगत आंख गडाय उणने देख री है।

पदमण बोली 'म्हूं अपराजिता हूं, राजकंवरी।'

शेखर घणो दोरो किया ई ऊठ न बैठो व्हियो।

कंवरी कियो "राजा सूं थारी जीत हार रो बदल न्याव नीं करणी आयो। जीत थांरी व्ही है। इण सारू थांने जेमाळा पेरावने आई हूं।

यूं केतां ई अपराजिता, आपरे हाथ री गूंथियोड़ी माळा आपरा गळा सूं उतार शेखर रा गळा में पेराय दीधी।

कवि रे दोळूं तो काळ फिरगियो हो ढोलिया माथे ढळगियो।

भूखा पाखांण

म्हूं म्हारा एक सागतीका रे लारे दुरगापूजा री तातीलां में देसाटण कर न पाछो कलकत्तो आयरियो हो। रेल में एक जणां सूं मिलणो व्हेगियो अर वांसूं वातां रा फटकारा लागवा लागिया। वां रो पेरावो देख न पेलां तो म्हें वेम व्हियो के वे दिल्ली रा मुसलमान होसी। पछे वां री वातां सुण सुण न तो भरमजाळ में फंसतो ई गियो। दुनिया रा एक एक मामला में वे यूं वात करता जाणे दुनिया ने चलावणियो बरमाजी यां ने पूछ पूछ नी जे काम करतो व्हे। वे केवा लागा, जगत में मांयने ई मांयने असी असी भेदरी वातां व्हेयरी है जो, मापां नीं तो देखां हां नीं सुणां हां। रूस रा मिनखां कतरी तरक्की कर लीधी है, अंगरेज छाने छाने कांई गुस्ट कर रिया है। देसी रजवाड़ा में कजांणां कांई कांई व्हेयरिया है। आपां ने कांई ठा है न ठकाणो, नचीता पड़िया घोर हंसरियां हां। पछे मुळकता लगा बोलिया। There happen more things in heaven and earth, Horatio, than are reported in newspapers." मतलब यो के 'होरेशिओ, थांरा यां अखबार में छपणवाळी खबरां सूं मोकळा बत्ता बाका ई धरती पे र आकास में व्हेवो करे।'

बात या ही के म्हां घर सूं पेली दांण मवकाळे बारे निकळ्या हा। म्हां तो वांरी वातां सुण न वांरो ढाळो देख न चकतमान व्हेगिया। वे तो सिरपोनाथ छनीक छनीक बात पे कदी विग्यान री कदी वेदां री अर कदी फारसी रा बंतां री असी नजीरा देवना के म्हांरी अकल चकरायगी। वेद, विग्यान अर फारसी बोली में म्हें तो कांई समझता तो हा नीं म्हांरी श्रद्धा वां पे बधती गी। म्हारा देलो यों

थियोसोफी जांणवावाळा हा वां रा तो मन में ठुकगी के यो कोई न कोई करामात जरूर जाणै । भलांई मेगनेटिजम जाणो भलांई देव माया, योग विद्या के भूतारेत विद्या जांणतो व्हो, पण कांई न कांई एड़ी कोई विद्या जांणै जरूर है । वे वी गजब रा मिनख री वात नै एड़ा एकचित्त व्हैन सुणरिया हा के वारळो वां नै कांई चेतो ई नीं हो । सागै ई म्हारी मांख टोळाय न वांरी कोई कोई वात नै मांडता ई जाय रिया हा । वी गजबी नै ई ठा पड़गो ही अर यो मनोमन राजी व्हैरियो हो ।

रेल माय न जंक्सन पै ऊभी री, म्हां दूजी गाड़ी री वाट नाळता वेटिंग रूम में आय नै बैठ्या । रात रा कोई साढा़क दस बज्या होसी । ठा लागी के मैला में स्रोटमाळी व्हेगी जो गाड़ी मोड़ी पूगेला । म्हैं मेज माथे बिछाणो ऊरळो कर न सोवा री करारियो हो जतराक में वो गजबी आदमी एक मु वावणो दासतान छेड़ दीधी के सैंग रात किणै ई नींद ई नीं आई ।

वे कैवा लागा,

राज काज रा काम में कि मत्तो मेळ नी खाधो जो म्हूं जूनागढ़ री काम छोड़ न हैदराबाद राज में परोगियो । वां म्हनै जुवान अर जोरदार आदमी देख मरीच में रूई री डांग पै डांगी बणाय दीवी ।

मरीच घणी रळियावणी जायगा । निरजण मंगरिया रै हेटै कांकड़ में सुस्ता नंदी बैवे । संस्कृत रा 'स्वच्छतोया' नाम बगड़ नै सुस्ता व्हेगियो । या सुस्ता मंगरिया मायनू खळ खळ करती, चक्कर खाती, पैंड पैंड पै बांकी तिरछी व्हेती, चतर नाचवा वाळी ज्यूं नाचती गी है । वीं नंदी रै कनारे मकराणा रा भाटा रो एक मोटो म्हेल बांणदोड़ो हो । कोई बीड़मोक पैड़ियां ऊंचो चड़णो पड़ै । ऊपरे जाय न वां म्हेल धकेनो ऊभो हो, आड़े पाड़े कोर मनख रो आयो नीं, घर री नाम नीं । मरीच री रूई री मंडी घटा सूं नरी दूरी ही ।

कोई मढाई सौ बरसां पैलां दूजे मेमूद शाह आपरै रंग राग, सुख विलसवा नै, एकमाड़ो आयगा देख ई म्हैल नै बणायो हो । कोई जुग में ई रा सिनानघरां में गुलाबजल रा फूंवारा चालता हा । सिनान घरां में मकराणा री मूंवाळी सिलाड़ियां माथे, ईरान देस री, जोवन दांई गुलजंगा बैठी रैवती । वस्त्र रा निरमळ पांणी में कंवळा पगां नै उघाड़ पसार न बैठती । सिनान करता सूं पैला काळा काळा लाबा मांवा घूंघराळा केसां नै बिखेर, खोर मांय नै सिगार देख न सामा री कैयाड़ियां कोई भूम झूम न गजमां गावती ।

ढई के फूंवारा वी चाले, गजलां ई नीं सुणीजे, नी पेशां री कांई फौटा, ठडाळा मकराणा रै आंगन माई मौरड़ियां रा गोरा गोरा पगरा पड़ता दण ई देखीजे । हां हो वो म्हैल म्हूं मस्त बूंधी मनवटरा रै रैवा लाई जांणै बोड़ो, ऐंरां डीठो

पड़ियो है। दफतर रे बूढे मेनकार करीमखा म्हने बठे रेवा न वरजियो। वीं कियो, आपरी मरजी है तो दिने दिने भले ई रंवो पण रात पड़ियां वठे कदी मत रेवजो' वी री वात ने म्हे रोळ में उडाय दीवी। दूजा नोकर चाकर तो साफ नन्नो भण गिया संझा तांई वठं काम कर लेवा पण रात मे तो रेवा ई ज नी। म्हें कियो टीक। वात या ही के वी म्हेल री अतरी हवा उड़गी ही के रात ने तो चोर ई पग नी देवता।

पेनपोत जद वीं म्हेल में पग मेल्यो तो बठा रो सगएाटो अजगर सांप री नांई म्हारी छाती पे जम न बेठगियो। म्हूं तो घणो खरो बारे ई ज रेंवतो। काम सूं थाक न आवतो। आवतो ई सोय जावतो।

एक अठवाड़ो व्हीयो म्हेला न वी म्हेल रो एक अजब नसो धीरे धीरे म्हारा मन पे चढ़वा लागो। म्हारा मन री जो गत व्ही वी ने कंवणो ई दोरो है, वीं वात पे किण ने भरोसो करावणो तो भौर ई दोरो है।

ऊनाळा री रूत ही। रूई रो वेपार मंदो हो, म्हारा कनें कोई एडो काम ई नीं हो। दिन आथिया री वेळा, नंदी रे कनारे घाट माथे नीचे पगथ्या पे म्हूं आराम कुरसी पे बेठ्यो, विसराम कर रियो हो। वां दिनां नंदी में पांणी घणो नीं हो। परलो कनारो, नंदी रो सूखो रेतरड़ो आंथमता सूरज भगवान री किरणां सूं रंगीज गियो हो। अठीले कनारे घाट रा पगथ्या नीचे निथरियोडो चोखो पांगी हो जों में गोळ गोळ लोडियां चमक री ही। वायरा रो नाम नीं पानड़ो तक नीं हालरियो हो। मंगरिया परळा जंगल मांयनू अड़क तुळसां रो, वरीयाळी री खसबोई आपरी ही। खसबोई सूं तरावट आय गी ही।

सूरज मंगरा रा टूंचका रे लारे छिपगियो तो जांणे दिन री रंगसाळा में पड़दो पड़ गियो। वीं जायगा मंगरा बीचे आयगिया जो सूरज आंथनी वेळा ऊजाळो व्हे जो अर अंधारा रो मेळ घणी देर तांई नी टेरे। घोड़ा पे चढ़ न स्हेल करवा ने जावा सारू ऊठ ई ज रियो हो। पतराक में तो म्हने घणां जणां रा एक लारे पग बाजना सुणीज्या। पाछो फिर न नोळ्‌यू तो कोई नी दीस्यो।

कानां ने भरम व्हेगियो दीखे। पाछो फिर न बेठो तो पाछा वे ई ज पग बाजता सुणीज्या। यूं लागियो जांणे सेहलियां रो झूमको झमझम करतो नीचे उतर रियो व्हे। कि तो मन में संका व्ही पण एक अनोखा आणंद री ल्हेर म्हारी रग रग में भरगी। म्हने आंखियां सूं तो कोई दीख नी रियो हो पण म्हने साफ साफ लागरियो के ऊनाळा री वीं संझया वेळा में चंचपळी कामणियां रो झूलरो नंदी रा पाणी में न्हावा ने आय रियो है। वी वगत डूंगरा रे नीचे, नदी रे कनारा माथे, वां सूना म्हेल में कोई पान खड़कवा तक री आवाज नीं ही कठे

ई। पण ह्वैं सागेसाग मुणियो के झरणां रा मरता मरता खळखळाटा री नांई कौतक भरी हंसनो पणी, सिनान करवा वाळियां, एक दूजी रे लारे भागती थकी बिलकुल म्हारे पसवाड़े, व्हेन निकळगी। म्हारा आडी ने कोई चोखी तक नीं। जांणे वे म्हने नीं दीसे पण म्हूं वां ने दीसूं। नंदी पैना री नांई सांन ही। पण म्हूं सागेसाग म्हारी आंखियां रे मागे देखवा लाग्यो के सुस्ता नंदी रो ओछा पांणी री धार एकनदम घणी सारी चूड़ियां बाजती बाहियां सूं हिलावती आवगी। वे सायणियां हंस हंस न एक दूजी पे पांणी उछाळ री। निरवा वाळियां रा पगां सूं उछळ उछळ न पाणी री बूंदा मोतियां री नांई आकस में बिखर री।

म्हारो हिवड़ो हाल गियो राम जांणे डरपना थकां रो के माणंद सूं। म्हारो मांयनो मन कर रियो के यांने भली भांत देखूं। पण देखवा ने कांई हो ई नीं। पछे मन में आई कान देय न सुणूं तो यां री वातां सुणीजेला। चित्त एक जगा कर घणो ई कान दीधो पण खाली भींभरी रो झणकारो सुणीज्यो। म्हने लागवा लागियो मढाई सो बरसां पैलां रो काळो पड़दो म्हारे आगे ई ज लटक रियो है।

म्हें डरपते डरपते वीं रो थोड़ोक खूंणो पकड़ न मांयने झांकियो। कदाच मांयने मैफिल जम री व्हेला। पण वीं घोर अंधारा में कांई नीं सूझ्यो।

अतराक में अमूजा ने मेटतो खूब जोर रो वायरो वाज्यो। सुस्ता रो थिर पांणी अपछरां रा घूंघराळा केसां री नांई भेळो व्हे गियो। संझ्या री छाया सूं छायोड़ी सारी वनराजि जांणे, सपनो देखती जागगी। सांच मानो भलां ई सपनो जांणो, म्हारा मूंडागे अढाई सौ बरसां पैलां रा चितराम सोक्रोट ज्यूं मंडगिया हा वे एक पल में मटगिया। वे मायावणी गोरड़ियां जावक म्हारे भड़े व्हे न निकळी ही, जांरे देही तो नीं ही पण सांतरी सांतरी चाल री ही। सबद तो नीं हो पण खलखलाय न हंसनी, दौड़ती भागती सुस्ता नंदी मे जळकेळ कर री ही वे पाछी गाबा निचोय न म्हारे कने व्हेर न नीं निकळी। वायरो खसबोई ने उडायन परी ले आवे ज्यूं वे ई बसंत रा एक नीसासा सागे उड न कजांणा कठे ई परी गी। अबे म्हारा मन में संका आई के कठै ई म्हने एकलो देख न कविता देवी तो आपरो बाहण नीं बणाय री है। म्हूं बापड़ो हुई री डांण वसूल कर न आपरो गुदरांण करूं। कठै ई वा सत्यानासणी म्हारो नास करवा तो नीं आयगी है।

विचारयो खाली पेट मस्या उदमाद उठ्वो करे। खूब पेट भर न खाय न सोय जावणो आंपांरे। वीं ज वगत म्हें म्हारा खानसामा ने बुलाय न खूब घी मसाला न्हाक 'मुगली खांणो' बणावा रो हुकम दीधो।

दूजे दिन, रात री वातां हांसाखेल री लाग री ही। खाय पीय राजी राजी

सा'ब री नाई टोप, कोट पैर न, टम टम चलावतो काम पै परो गियो। वी दिन म्हनें तिमाही रिपोट लिखणी ही, जो मोड़ा घरे आवा री ही। दिन ढळतां ढळतां जाणे म्हनें कोई घर कानी खेंचवा लागो। कुछ खेंचरियो हो नीं पड़ी पण जीव ताड़ातोड़ी करवा लागो के घरे परा चालो, वे सगळो वैठी व्हेला।' रिपोट ने आधी ने ईं छोड़ म्हूं तो टोप उठाय न कंसारी छाया सूं छायोड़ा गेला पे, टमटम रो घोड़ो हाक दीधो। कवेळो वगत हो, मंगरा वाळा, अंधारा, सुनसान दीवो पड़िया म्हेलां रो गेलो लीधो।

पगथ्या चढतांई साम्हलो दीवाणखानो मोटो सारो हो। वीं में मोटामोटा हीगाटीगा थांवा री तीन ओळां ही। वां रा कवांणा पे लदाव री छात ही। छात माथे चित्तराम हा जो देखवा जोग हा। वो लांवो चौड़ो दिवाणखानो रीतो पडियो वो दिन में ईं खांऊखाऊ करतो। उण दिन संभ्या रा दीवो नी बाळयो हो। झाडा ने धक्को देय खोल न ज्यूं म्हूं मांयने वळियो वठे तो एकणदम भागा दौड़ी मावगी। यूं लाग्यो जाणे मैफिल भांग ने सगळी भाग री है। बारणो दीख्यो तो बारणो, बारी दीखी तो बारी जठी ने गैलो दीख्यो वठी ने ईं दौड़गी। दूजे ईं पल घो रो वो सुनसान। वठे किने ईं नी देख न म्हूं चकतमान व्हेगियो। म्हारो रूं रूं ऊभो व्हेगियो। जूना तेल फुलेल अर बौमोला अतर री मधरी मधरी वासना म्हारा नाक मे वळवा लागी। वी अंधारा सूना म्हेल में, धोळा भाटा रा थांवां वीचे म्हूं ऊभो ऊभो सुणरियो झर झर करता फूंवारा रो पाणी धोळा भाटा पै पडरियो है। कदी ने ईं घूघरा वाजरिया, कदी सोना रा गेणां रो झणकार वाजतो, कदे ईं जड़ाव रा गैणां री चमक दीखती। कदी राज दरबार री घडियाळ रा टकोरा सुणीजता, कदी दूरो नौबतखाना रो भणकारो सुणीजतो, वायरा सूं हालता, बल्लोरी कांच रा झाड़ फानूसां री टणटण सुणीजती। कारणे तिवारा पे बुलबुल गावती सुणीजती तो कदी वाग मांयने पाळघोड़ा सारसां रा बोल सुणीजतो। जाणे एड़े मेड़े चारूं-मांनी भूतावळी जाग गी व्हे।

म्हनें तो चितभरम व्हेगियो। यूं दीखवा लागो जाणे जो म्हनें दीख नी रियो है वो ईं ज साच है, दाखी रो जगत कूड़ है। म्हूं तो भूल गियो म्हनें ईं ध्यान म्हनें यो ईं चेतो नीं रियो के काई म्हारो नाम है, म्हूं किरो वेटो हूं, साढा चार सौ रिपिया री तनखा वाळो डाण रो दरोगो हूं, रोजीना टमटम में चढ़ न कचेड़ी काम करवाने जावूं। म्हनें तो ये वातां बना हाथां पगां री झूठी लागवा लागी जाणे हैंसी री वातां व्हे। म्हूं तो वीं मंधारा सूना दरवार भवन मे ऊभो मां वात पै ठ्ठो मार न जोर सूं हंस्यो।

मजधक में म्हारो मुसलमान चपड़ासी घासलेट रो दीवो हाथ में लीध

वळियो। वीं म्हनैं विरामरम सोच्यो के नी पण वीं ज वगत म्हारो चित ठाएो आयो के म्हू कुण हूं किरो बेटो हूं। अबै म्हूं सोचवा लागो दुनियां में कठै ई आंस सूं नी दीसणिया फूंवारा चाले है के नीं, आंगळियां दीसे तो नीं पण वां रा तणणारा सूं सितार रा तार वाजे है के नीं, ये वातां सांची है के झूठी वो तो भगवान ई जांणै पण म्हूं मड़ोचरी मंडी में हुई री डांण वमूल करणियो हाकम हूं ईं में तो कोई फरक ई नीं, चौड़े धाड़े री सांच है। दीवा आगे अखबार बांचतो जाय रियो न वीं मोहमाया री वातां ने चींतार चींतार हंसतो जाया रियो।

अखवार पढ़ मुगळीलाणो खाय न सूंणां मांयना छोटासाक कमरा मांयने दीवो बुझाय न सोयगियो। म्हारे आगे वारी खुली ही, अंधारा कांकड़ मांयली मंगरी मथारे एक दपदप करतो तारो, करोड़ा जोजना परै बैठ्यो, एक डांण रा डांणी ने खाट पै पड़्या ने देखिरियो हो। म्हूं वीं ने देखतो देखतो सोयगियो खबर नीं। कतरी देर सूतो रियो जो ई खबर नीं।

एकणदम झोझक न म्हूं जाग गियो। कमरा में कोई आयो व्हे जूं पग वाज्या। अंधारा में मंगरी रे माथे तारो दमक रियो हो वो आथ गियो हो, अंधारा पख री फीकी चांदणी बारी मांयने व्हेय न आय री पण बिना हुक्म माय री जो डरपन भेळी भेळी व्हेती जाय री।

म्हनैं म्हारा कमरा में कोई दीख्यो तो नीं पण साख्यात म्हनैं लाग्यो के कोई आय न कंवळो कंवळो हाथ अड़ायन म्हनैं जगाय री है। म्हूं जाग गियो। दीख्यो मूंडा सूं वा काई नीं बोली पण वींटीया सूं चमकती पांच आंगळियां हिलाय म्हनैं वीरे लारे लारे सावचेती सूं आवा ने कंयरी है।

म्हूं ई धीरेक रो उठ्यो, वीं मोटा म्हेल में जिमें सैंकड़ा ओवरा ओवरी हा, कोई मिनख रो जायो नीं हो पण एक एक पग मेलतां म्हनैं संको व्हेय रियो के कठै ई कोई जाग नी जावे। म्हेलां रा घणाखरा कमरा तो जड़्या पड़िया हा, म्हें कदी वां मे पग ई नी दीधो हो।

रात रा वी अंधारा गुप्प में धीमा धीमा, पगलिया मेलतो, सांस ने रोक्यां, वीं अणदीखती बुलावावाळी रे लारे लारे म्हूं जाय रियो हो। कतरी अंधारी संकड़ी नाळां र सुरंगां में व्हेतो थको, कतरा ई लांबा चौड़ा तिवारा चौवारा में व्हेतो, कतरा ई सुनसान दरीखानां में व्हेतो थको, कतरी छोटी मोटी जड़ी पड़ी ओवरिया में व्हेतो थको कजांणा कठै कठै जाय रियो हो।

वा अणदीखती दूती आंख्या सूं तो नीं दीख री ही पण वीं री शकल मन ने अणदीखती नीं ही। ईरान देस री गुलनंजी ही। कपड़ा री ढीली ढीली बांहियां में वीं रा दूधिया रंग रा धोळा मकराणा जेड़ा करड़ा कंवळा, गोळ गोळ हाथ

दीख रियां हा। माथा पे लाल रंग रा मुखमल री टंपी ही वीं रा नीचे मीणो कपड़ा री नकाव ही जो वी रा गोळ, गुलाबी मूंडा पे घणी म्रोप री ही। कमर पे एक रेसम रो फेंटो वंधियोड़ो हो जि में एक वांकड़ो कटारो खसोल राख्यो हो।

म्हें जाण्यों, 'अलिफ लैला' री हजार रातां मायली एक रातडी परीलोक सूं उड न आयगी दीखे। मांमल रात रा अंधारा में सूती बगदाद रा विना दीवा री सांकड़ी गळियां में म्हूं जाणे अभिसार करवा ने निकळयो हूं।

लेजातां लेजाता म्हारी वा दूती एक गैरा लीला रंग रा पडदा कनें जाय न एकणदम ऊभी रेगी, एंगळी ने नीची कर म्हने भांकवा रो इसारो कीधो। नीचे हो तो कांई नी पण म्हारा काळजा रो लोहीं थीज गियो। म्हने साख्यात दीववा लागो के पड़दा रे मूंडागे धरती माथे खीणखाव री पोसाक पैरयां, खोळा में नांगी तरवार लीधां, दोई पगा ने पसारयां एक डाकी रो डाकी काळोखट्ट हवसो खोजो बेठयो। म्हारी दूती अबर पग मेलती वी रा पगां ने ऊलाग पडदा कनें गी, धीरेकरो पडदा रा एक खूणां ने अरमो कीधो।

मांयलो थोड़ोक म्हनें भांको पड़ियो। म्हने दीख्यो, आंगणे फरस माथे फारस देस रो नामी दलीचो बिछयोड़ो है। तखत पें कुण बेठयो जो म्हनें सावळ नी दीख्यो। खाली केसरियां रंग रो ढीलो ढालो पायजामो न पगां में जरी री मोचड़ियां दीखो। गोरा गोरा गुलाबी पग लाल मुखमल रा आसण माथे टक रिया हा। फरस पें एक पसवाड़े लीला रंग रा बिल्लोरी काच री तासळी मे सेवां, नासपाती र अंगूरा रा झूमका पड़िया हा। कनें ई एक मान्होंसोक पियालो र सोनेरी रंग रो दाखां रो दारू सुसकी मे भरयो हो। मांयनूं उदमाद कर देख्यो तरें तरे रा धूपां रो घूंवो आय रियो। उण री खसबोई म्हने उदमादो कर दीधो।

म्हूं कांपते काळजे वी खोजा रा पगां ने उलाघ न मांयने वळणो ईं ज चावतो हो के वो टालोभूलो जाग गियो। वीं रा खोळां पें धरयोडी तरवार खणण करती धोळा भाटा रा आंगणा पें जाय पड़ी।

सुणियो कोई जोर सूं कूकायो व्हे, एकणदम चमक न जाग्यो देखूं तो म्हूं म्हारा माचा माथे पड़यो हूं। पसीना सूं जाणे सांपड़ियो व्हूं। पोह फाटवा वाळो है, अबारा दस रो थांद, माग्यी रात जाग्योड़ा माटा मिनख री नांई पीळो पड़ियो हो। बारें वो बैंडो मेहरभळी रोजीना री नांई गैला मे कूकावतो जावरियो हो 'दूग रो, दूरा रो। सैंग कूड़ है सैंग कूड़ है। वो कूकावतो जाय रियो न म्हेनो रे थाड़ पासे दोड़तो जाय रियो। यूं अलिफ लैला री एक रात तो देवतां देखतां कटगी, मोजूं तो हजार रातां मौर है।

म्हारो दिन मौर हो रात मौर ही। दिन में म्हूं लारियोडो काम माथे

आवतो मासी दिन बढ़े वां सूना माता री यादां ने गाळ्यां वाढ़तो करतो। सूरज आंथतां ई दिन रा जो म्हूं काम करतो वो माठुस्त्र लागतो, वे यादां इतरी मामूली गुच्छ लागती के वां पै हांसी आवतां। म्हारा पै एक गजब नशो चढ़ जावतो, म्हूं म्हने आपो सैकड़ां बरसां पैलां रो एक खास आदमी समझवा लागतो। म्हने वो अंगरेजी काटो कोट र पतलून अजूतो लागवा लागतो। म्हू लाल मुखमल री टोपी, ढीलो पायजामो, फूलांवाळो कबो र रेशमी लांबो चुगो पैर न रेशमी रुमाल में अतर लगाय न सीरघोरो व्हे जातो। सिगरेट ने परमो फैंक न लांबी नेज रा हुक्का ने गुलाबजळ सूं भर न गादी मोड़ो लगाय न सूं बैठतो जाणे कोई सांतीनो आसक सूंपी माळ्यां सूं मीठा नीठ मिलवा ने उमगायो बैठो व्हे।

पछै ज्यूं ज्यूं अंधारो गैरो व्हेतो जातो ज्यूं ज्यूं अणव्हेणां अनोखा अनोखा वारा व्हेवो करता। यूं लागतो जाणे अजब गजब रा दासतान रा पाटपोड़ा पाना, वसंत रा वायरा सूं ऊड न वीं म्हेल रा ओरला ओरड़ी में उडता फिर रिया। थोड़ा घणां पानां रो सो सिलसिलो जुड़े पण पाछला पाना नीं लाधे। म्हूं वां पानां ने हेरतो हेरतो वा रे पाछे सैग रात ओवरा ओवरियां मैं रूळतो फिरतो।

सपनां रा न्यारा न्यारा खंडा में कदी हिना रा अतर री सुगंध कदी सितार रा तारां रो भणकारो आतो। कदी कदी खसबोदार पांणी रा सीळा सीळा छांटा रै लारे आवता वायरा रा झोला में म्हने खिण खिण में बीजळी रा पळाका री नांई वा दीख जावती। म्हारी वा मन सूं दीलणा वाळी अमसारका केसरिया रंग रो पायजामो पैरयां, गुलाबी पगां मे जरी री मोचड़ियां पैरयां, कठण पयोधरां पै जरी रा काम री कांचळी कस्यां, माथा पै सोनेरी झालरीवाळी संदूरी रंगरी बांकी टोपी लगायां अंधारा में बीजळी रा झबाका री नांई दीखती न पाछी लुक जावती।

म्हने तो वीं उदमादी कर दीधो। म्हू वीं री वाट नाळतो, वठा री माया-नगरी में ओवरी ओवरी में वीं ने हेरतो फरतो। कदी कदी दिन आंथियां रा म्हूं मठां रा मोटा दरपण रे दोई आडी ने मेणबत्तियां बाळ न सायजादा जेड़ी पोसाक पैरतो। वीं दरपण में म्हारा परतबंब रे बिलकुल सागणे वीं ईरानी अपछरा री छाया रो भबको पड़ जावतो। वीं ज पल वा वीं री सुराईदार गाबड़ ने हुलाय, मोटा मोटा काळा काळा नैणां मे मटकाय कटाछ, करती, नाचती व्हे ज्यूं जोबन छाई देही मेलड़ी मे लपकाय न वीं दरपण री दरपण में गायब व्हे जाती।

पछै मंगरा री, वन री गंध ने लूटतो थको वायरा रो एक उतांवळो झोलो आवतो म्हारी मेणबत्तियां ने बुझाय परो जावतो।

म्हूं ई म्हारा सिणगार बिणगार छोड़ सूंणां में पड़्या माचा पै आय पड़तो।

बिछावणां पे पड़तां ई म्हारो तन मन हरियो व्हे जावतो, म्हूं आख्यां मींच न सोय जावा री करतो। वीं वगत पवन बागां वाड़ियां, घाटां वाटां री सौरम लावतो, भूली प्रीत रा घणा घणा सनेसा, घणा घणा लाडकोड़, मीठा मीठा परस सूं वीं निरजण अंधारा ने भर देवतो। वो वठै रो वठै गरोळा खावो करतो। म्हारा कानां रे कनें मन भावणी भणक सुणीजती, म्हारा ललाट पे सुंवावणी सांस आय अड़तो घड़ी घड़ी रो सुगंध सूं भीन्योड़ो रेसमी दुपट्टो आय म्हारा गालां रे भड़ भड़ आवतो। उण रा सरसराटा सूं बीभळाय जातो। धीरे धीरे वा मोवनी म्हारी नड़ी नड़ी ने बस न बांध लेवतो। म्हूं गैरा गैरा सांस लेवतो गैरी नींदा मे अचेत व्हे जातो।

एक दिन म्हें विचारयो के दिन आंथवा सूं पैलां ई घोड़ा पे चढन बारे सैल करवा ने परो जावूं पण पाछूं म्हने कोई बरजवा लागी। पण म्हूं नीं मानियो। एक खूंटी पे टोप न कोट टाक राख्या हा। म्हूं वां ने उठाय न पैरवा लाग्यो जतरा में मुस्ता नंदी री रेत ने भर सूखा पानड़ा ने उडातो भतूळयो आयो म्हारा कोट ने भर टोप ने उडाय न लेय गियो। लारे री लारे मीठी झीणी हंसी सुणीजी जो भतूळया रे लारे ऊंची उडती सूरज आये वठै जाय न गायब व्हेगी।

वीं दिन म्हारा सूं घोड़ा पे सवार व्हे बारे नी जावणो आयो। दूजा दिन सूं तो म्हें कोट पेंट पेरणो ई छोड़ दीवो।

वीं दिन मझ्यान आधी रात रा म्हूं झोलक ने जाग गियो। म्हे सुणियो, कोई छाती कूट कूट न डिडाय डिडाय न रोय री है। म्हारा माचा रे हेटे, धरती रे मांयने, वीं म्हैल री भाटा री भींत री नींव हेटे, अधारी केमाई लगी कबर मांयने, कोई रोय रोय न कैयरी हो 'म्हने ई माया बारे काढ, यां झूठा झंझाळा ने तोड़ न थारा घोड़ा पे चढाय, छाती सूं चपटाय म्हने लेय जा, यां डूंगरियां में व्हे कांकड़ में व्हे. नंदी रे पार थारा सूरज वाळा देस में ले चाल। म्हने उबार।'

म्हूं कुण हूं, कस्यां थने उबारूं? थूं कदी व्ही, कठै ही? कस्या सीळा पाणी रा झरणा कनारे, कस्या खजूरां रा वन में किण घरबायरी रेती मे रैंवा वाळी री कूंख में थूं जनमी? कुण बटमार भेलड़ी माधूं कळी री नांई, थनें मां री गोद मांयनूं चूंट लीधी? नौलखा अरबी घोड़ा पे बैठाय न, वासदी री नांई बळता रेगिस्तानां ने चीर न, अमीरां रा सैहर में गुलामां रा बजार में थनें बेचवाने कुण लायो? तुरत रा खुलियोड़ा फूल ने, लाज सूं लाल पड़ता जोबन री छटा ने देख न सोना रा सिक्का देय कुण मोल लीधी थनें? बांका गेला घाटा डकातो, समंदर नें पार करतो सोना री पालकी मे बैठाय साही म्हैलां में कस्या बादसा रो मरजीदान खिदमतदार नजर कर गियो थनें? वां म्हैलां री छटा कसीक ही जां दिना? वठा

री सारंगिया रा तणणाटा, रमझोळा रा घूघरां रा झणणाटा, मुनेरी सीराजी रा प्याला रा छळछळाटा बीचे बीचे चमकतो कटारां रा चळचळाटा, जेर री झाळा, तीखा नेणा री चोटां। वे म्हेल सौक री चीजां के जां रो थाको नीं लारे वा केर के ऊमर भर छूटवा रो काम नी। मांयने दोई झाडी ने दो गोलियां हीरा री चूंड़पा दमकावती चंवर झल री है, सांहसाह बादसा सलामत, मोती माणक जड़ी मोचड़िया वाळा गोरा गोरा पगां पे लोट रिया है। बारणे, बारणा रे मायें जम रा दूता जेड़ा हबसी देव दूतां जेड़ी पोसाकां पेरयां, हाथां में नांगी तरवारां सीरा ऊभा है। भर थूं? लोहुआं सूं लाल व्ही, खार ईसका रा झागां मढी पड़ांच पाप री वेंवती धारा में थूं कठा सूं आयगी। थूं? मरुथळ रा फूला री मांजर थूं मठे म्रतलोक में कठा सूं आय फसगी? कुण जल्लाद, कुण पापी, कुण हत्यारो थारी बळि चढाय गियो मठे? हे देवी, थूं कदी ही, कठे हो, कठे है? म्हूं थारो उद्धार कस्यो करूं?

मतराक में अचाणचक वी बावळा मेहरमली रो रोळो सुणीज्यो, 'अळगा रेवो अळगा रेवो, सब कूड़ है कूड़ है।'

आंख खोलूं तो दिन ऊग आयो। चपरासी म्हारा हाथ में लाय न डाक दीवाई। खानसामे पूछ्यो 'आज कांई बणावूं जीमण में?' म्हे कहियो, 'बस आज मूं ई घर में रेवणो ई नीं।'

वीं ज वगत सारो सामान उठाय दफ्तर आय गियो। दफ्तर रो बूनो डोकरो कामेरी करीमखां म्हने देख मुळक्यो। वीं रा मुळकवा पे म्हने रीस ई आई पण म्हूं कांई बोल्यो नीं। काम में लागगियो।

ज्यूं ज्यूं संझ्या पड़वा लागी ज्यूं ज्यूं म्हारो जीव ऊगमगो व्हेवा लाग्यो। यूं लागण लाग्यो जाणे म्हने कठे ई अवार री अवार जावणो है। ईं रा नेखा जोखा री जांच करणी म्हने फजूल लागी के ईं में सार कांई है। लाग्यो ई परगणो रो परगणो म्हने नाकुछ दीखवा लाग्यो। जो काम कानी दीखरियो हो वो सब नाकुछ लागवा लाग्यो। खानना किरता मिनख, काम काज, खावणो पीवणो सब बेकार दीखवा लाग्यो।

म्हूं कलम ने फेंक मोटा मोटा बहीखा ने समेट एक दम ऊभो व्हेगियो। टमटम आवे वा म्हेल करवा ने निकळ गियो। देखूं कांई के गधूळी वेळा व्हेतां ई वा टमटम मन रे मतो वीं पगरणु रा म्हेलां रा बारणा आगे आय न ऊभी रेगी। म्हूं उतरतो ई झट सट पगथ्या चढ लागतो मतो मांयने बढगियो।

आज चारूं कानी सूनो सूनो लाग्यो। यूं लाग्यो जाणे म्हेलां री कैंग री कैंग सूंगा सोचरिया म्हारा सूं नाराज व्हेर री व्हे, मूंडो चढायां बैठी व्हे।

दुख अर पछतावा सूं म्हारो जांणे काळजो फाटवा लागे। अबे म्हूं गुना बगसवा ने किण ने कैवूं, माफी मागूं तो किण सूं मांगू, कोई है ई तो नी। म्हूं म्हारा पोढ़ ग्रथा हिवड़ा ने सीधां भटो ने वठीने फरवा लागो। म्हारो जीव करवा लागो के सबार सितार लेन किणने ई सुणावा ने गावूं अर कैवूं, 'बळती बाती रा दिवला, थो पतंगो थने छोड़ न भागणो चावतो वो पाछो आय थारा पैंतावा मे पड़्यो है। बळवा ने आयो है। अबकाळे यूं गुनो बगसदे, माफ करदे। वीं री दोई पांखां ने बाळ भसम करदे।'

अतराक में दो आंसूवां रा टोपा म्हारा ललाट माथे आय पड़िया। वीं दिन भंगरा माथे घटा टोप बादळा छायरिया हा, अंधारो जंगळ अर नंदी रो स्याई छेड़ो स्याह पांणी बिलकुल थिर व्हेयरियो हो। एकणदम, जळ थळ, आभो एकण सागे खळबळाय गिया, जबरदस्त आंधी बीजळी रा दात कड़कड़ पीसती, मस्त हाथी री नांई, धरळावतो लगी दौड़ती आई। म्हेलां रा मोटा मोटा बारणा में मूंसाटा करती वा वळी, यूं लागरियो जांणे माथा फोड़ फोड़ दरद रा मारया वे दमरा रोय रिया व्हे।

म्हारा सैग हालीनवाली आज दफ्तर वाळा घर में हा। म्हेलां में दीवो बाळणियो ई कोई नीं हो। बादळा सूं छायोड़ी अमावस री रात में म्हेला रे मांयने काजळ वरणा अंधारा मे म्हने परतख दीख्यो के एक मोटयार जुवान कांमणी, ढोल्या रे हेटे दलीचा पे ऊंधी पडी माथा रा बिखरयोड़ा भींटा ने खैंच री। वीं रा गोरा सुंवाळा ललाट सूं लाल लाल लोही टबक रियो। कदी तो वा जोर जोर सूं 'हाय हाय' कर न कूकावती कदी डिडाय डिडाय न रोवा लागती। दोई हाथां सूं कांचळी रा कसणा तोड़ न छाती में धमेड़ा मार मार न रोवती। आंधी रा झाटकां सारे बारियां मांयनूं आय आय बरखा री पछांट सूं वीं रो हसियो सरीर भीजरियो।

वीं दिन आखी रात नीं तो बरखा ई रुकी नीं वा रोवती रुकी। म्हूं आखी रात पछताळो सगो बटा री सुरंगा में, ओवरिया में भागतो फिरयो। कठे ई कोई दीसे ई नीं दिलासा देवूं तो किण ने देवूं। यो जसमायल व्हियोड़ो किण रो गरर है? यो दुख, या मन री पीड़ा किण री है? कठा सूं निकळरी है? कांई ब समझ में नीं आई।

अतराक में तो वो वेंडो मेहरअली कठाणा कठा सूं बरळायो, 'अळगा रैवो, अळगा रैवो, सब कूड़ है, सब कूड़ है।"

देखूं कांई वो फाटगो। मेहरअली एड़ी जबरजस्त आंधी मूसळधार बरखा में ई नित रा नेम ज्यूं वीं पखांण रा म्हेल रे परकम्मा देवतो, हाका करतो दौड़

रियो हो। एकणदम मन में आई कठै ई मेहरअली म्हारी नांई, करमां रो मारयो ई म्हेल में आय न तो नीं रियो हो। वैडो म्हेल न ई म्हेल बारे आम्यो म्हेला पण या भाटा रो मोह वीं ने मोडूं बुलावे जो यो रोज मुवे परकम्मा देवा ने आवे।

म्हूं वो ज वगत वीं आंधी मेह में भाग्यो भाग्यो मेहरअली कने गियो। पूछवा लाग्यो, 'भाई मेहरअली, कूड़ कांई है म्हने ई तो बता।'

म्हारी वात रो तो वीं कांई जुवाब नीं दीधो। धक्को देय नीचे पटक दीधो। वो तो मोह में फस्योड़ा पंछी री नांई वीं भूखा पखांण रा म्हेलां रा चक्कर काटवा लागो। बरळावतो आयरियो न दोड़तो जाय रियो। रुक रुक ने हाका करतो जाय रियो, अळगा रैवो, अळगा रैवो, सब कूड़ है कूड है।

म्हूं वींज वगत, वींज दसा में, आंधी मेह में भींज्योडो, घबरायोडो दफ्तर में गियो। डोकरा करीम ने बुलाय पूछ्यो "ई रो अरथ कांई है म्हने समझाय न कै।" डोकरे कह्यो उणरो मतलब यो हो के एक जमाना में वीं पखांण रा म्हेल में हजारां भूखी, मन री वांछा ने दबावणी आतमावां रैवती। वे काळजा पे भाटा मेल, रत्ती रत्ती कर न मन री हूंस, अणगिणत अर इच्छावां ने दबावती। वे जीवनी री जतरे मन री भूख सूं हाय हाय करती री मरी तो मन री भूख लीधां मरी। वांरी हायकूटो, ई पखांण रा म्हेल रा रज रज में समाय रियो है। ईं वास्ते पखांण रो एक एक खंड भूखो तिसायो हाय हाय करे। वे कोई जीवता मिनख ने कनें देख ने भूखा भूत री नांई वीं ने खावा ने दोड़े।' तीन दिन जो वीं म्हेल मायनें रैयगिया'वां मांय तूं कोई ज जीवतो नीं रियो एक मेहरअली जीवतो रियो जो ई भेंडो म्हेल वारे निकळ्यो।

म्हें पूछ्यो, 'म्हारा उदार रो ई कोई गेलो है के नीं?'

डोकरो बोल्यो, 'खाली एक गेलो है। वो ई घणो दोरो है। म्हूं बताऊं हूं पण वीं गुलबाग री मोल लीधी ईरानी बांदी री केणी आप पैलां सुणलो। एड़ी अचरज भरयोड़ी वात अर काळजो हलाय देवणियो वाको आज पैलां कदी सुणियोई नीं व्हेला।'

अतराक में तो टेसण रे' कुलियां आय न खबर दीधी 'गाड़ी आयगी है हजूर।"

अतरी भट। चटपट विछावणां बांधवा लाग्या अतरेक तो गाडी आय ऊभी रैगी। वीं गाडी रा फर्स्ट क्लास डिब्बा री बारी मांयनूं एक अंगरेज मूंडो बारे न टेसण रो नाम पढ़वा री कोसिस कर रियो हो। वीं री नजर म्हांका वां बाबू सा'ब पे पड़ी। वां ने देखतां ई वीं अंगरेज हैल्लो कंय न हेलो पाड़ियो, वां ने डिब्बा में समझो कीनो। वे वीं रा कनें पग गिया। म्हां एक सेकिण्ड क्लास रा

डिब्बा में वळगिया। पछे तो वां बाबू साब रो आज दिन ताईं कांईं टा ठकाणो नीं लाग्यो। मन में दुख ई रियो के एड़ा बढ़िया दासतान रो पाछलो हाल हवाल म्हांने सुणवा ने ई नीं मिल्यो।

म्हें म्हारा साथ वाळा मित्तर ने कियो, 'देख्या नीं, आंपां ने बाल्याक बावळा बणाय नाठ गियो। अलल टप्पू वात जोड़ न आंपां ने सुणाई जीं में कोई कोर न कसर। सैंग मन री जोड़पोड़ी झूठी वात ही।' या वात सुण न म्हारा मित्तर बड़ा बेराजी व्हिया। म्हां के बीचे एड़ी जोर री झड़प व्ही के म्हां को कमर भर ताऊं बोलणो चालणो बंद व्हेगियो।

दुरासा

घणां दिनां री जूनी वात है। म्हूं दारजिलिंग गयो हो। वठे वरखा वरस री ही वादळा घटाटोप छायरिया हा। बारणै निकळवा रो जीव ई नीं करतो। घर मांयने घस्यां घस्यां जीव घबराय गियो। एक दिन म्हूं होटल में जीमचूंठ, पगां में मोटा मोटा बूट पेर, माथा सूं लगाय पगां तांई बरसाती कपड़ा पेर बारै स्हेल करवाने निकळियो। झरमर झरमर मेवलो बरस रियो हो। चारूं मेरे काळा वादळा धरती ने ढांक्या जायरिया हा। यूं लागरियो जाणे हेमाळा सूधी ई दुनिया री तसवीर ने भगवान रबड़ लेय ने रगड़ न मटाय देवारी कर रियो है। कलकत्ता रोड सूनी पड़ी ही, कोई ज मिनख नीं हो। म्हूं अकेलो टेवतो जाय रियो र सोचतो जाय रियो, जठी ने देखो जठी ने वादळो और कांई ज नीं दीखे, यो इंदर रो एक छत्र राज तो आछो नीं लागे। आंपा रे तो आपणी वा ई ज रूप, रस, गंध भर वणां वाळी, अजब अनोखी धरती माता ई ज चोखी। वीं ने आंपणी पांचू इन्द्रियां सूं पांच वानी सूं पकड़ लेवां तो माछो।

अतराक मे कनै ई, बिलख बिलख न रोवती लुगाई रो साद म्हारे काने पड़ियो। ईं मृतलोक में रोग भर दुखां सूं रोवा वाळां रो कोई घाटो थोड़ो ई है, रोवणो सुणतां ई रेवा हां। कि दूजी जायगा व्हेतो के कोई दूजी वेळा व्ही व्हेती तो म्हूं मूंडो फेर न निकळ जावतो। पण वीं मयाग इंदर झड़ी में म्हनें वीं रो रोवणों यूं लाग्यो के आखी दुनिया तो पांणी में डूबगी है संसार में एक मिनख बच्यो है वो रोयरियो है। ईं वास्ते वो रोवणो म्हने नाकुछ नीं लागियो।

रोवा री अवाज आयरी जठीने म्हूं चाल्यो। थोड़ाक पांवडा दीया न देखूं मंगमा गावा पैरयोड़ी एक लुगाई बैठी है। माथा पे सोनेरी रंग रा सूखा केसा री जटा रो जूड़ो बांध्योड़ो व्हे जो ज्यूं लागरियो हो। गैला रे भड़े एक छोटीसी सिलाड़ी माथे बैठी धीरे धीरे रोयरी। वीं रो रोवणो ताता घावा रो रोवणो नी लाग्यो। यूं लाग्यो के दुखां सूं भरी थकी है, सैंपीड़ी व्हेयरी है जो वादळां रा अंधारा में, भाखरां रा नाळचा में, अेकली पड़ी रो वो दुख छाती फाड़ न आज निकळ जाय।

म्हूं मनोमन केवा लागो, या ई चोखो व्ही घरे बैठां रे एक कैणी रो मसालो हाथे लागियो। म्हें कदेई विचारियो ई नीं हो के भाकर पे बैठी संन्यांसण रोयरी है पर म्हूं देख रियो हूं।

कांई जात री लुगाई व्हेला, अटकळिज्यो कोयनीं। म्हे घणी कंवळी कर म्हांरी बोली ने बोलियो 'कुण है? कांई व्हियो? रोवे क्यूं है?'

एकर तो वीं कांई पडूत्तर नीं दीधो। पांणी भरयोड़ा नैणां सूं म्हां कानी घोप मात्तर लीधो।

म्हूं पाछो बोलियो, 'डरप मती, म्हूं भलो मिनख हूं।'

सुणता ई वा हूंसी साद में घणो ईज थकेलो पर कंठ घणो मीठो। बोली, किमू ई नीं डरपूं। डरपणो छोड़ियां ने तो घणां बरस व्हेगिया। लाज सरम ने ई माउ मार न काढ दीधी। बाबूजी, वे ई दिन हा जद म्हूं जनानखाना रा सात परकोटा मांयने रेवती जठे सगो भाई बैन ने पूछाया विना मांयने पग नीं देवण पावतो। आज? आज सकळ जगत रे आगे बिना पड़दा री व्हेयगी हूं।'

एकर तो म्हने छनीसीक रीस आई। म्हूं तो कपडा लत्ता सूं बिलकुल सांव बाहर बणियोड़ो हो, वीं लोड़ीली सटाक देगी रो म्हने बाबूजो केय न बेळाय लीधो। मन में तो आई के ईं बात ने अठे ई धरी रेवा दूं। सिगरेट रो धुंवो उड़ाओ, फकफक करती सांवी फैसन री रेलगाडी ज्यूं रवाना व्हे जावूं। पन मांयने बात जाणवा री लाग री जो ही देखां कांई मांयनु भेद निकळे। ई विचार म्हनें आवता ने रोकियो। म्हें क्यूंक मन में मोटोपणो लाय, गावड़ वांकी कर न पूछियो, 'म्हूं कांई सेवो देवूं थने? बता कांई म्हां सूं करणो आवे तो।'

वीं आंख जमाय न म्हारो मूंडो देखियो। पछे दो टप्पा रो पडूत्तर दीधो 'म्हूं बदाऊं रा नवाब गुलामकादर री डीकरी हूं।'

यो बदाऊं कठे है, नवाब गुलामकादर कुणसो नवाब है, यां री धीवड़ कांई दुख सूं जोगण बण दारजिलिंग री कलकत्ता रोड़ पे बैठ न रोवे, म्हने यां रो कांई अटोड़ नीं हो। नीं म्हनें यां बातां पे कांई भरोसो ई है पण म्हें जाणयो कठे ई रंग में भंग नीं पड़ जावे। सुणवा ताळवा दो, कैणी चोखी जमती जाय री है।

हाँ, तो नवाबजादी साहबा री तारीफ री पैली ओळ सुणता ई, म्हें सटाक देणी रो झुक न सलाम कीधो। सलाम कर न बोलियो, 'नवाबजादी सायबा, म्हारा गुना बगसो। म्हें सरकार ने ओळखिया नी।'

नीं ओळखवा री वजे तो घणी ई ही। पैली बात अर मोटी बात तो के म्हें पैली कदी देखिया ई नीं, दूजी बात या ही के धादळा री धंवर एड़ी गैरी पड़ री ही के वां रा हाथ पग ई सावळ कोनी दीख रिया हा।

नवाबजादी, जीमणा हाथ सूं एक भाटो बताय न हुकम बगसियो, 'बैठ जाओ।' देखियो, ई जोगण रा भेस में ई हुकम देवा री ताकत नवाबजादी में है। धंवर सूं भालो व्हियोड़ा, काजी सूं भरयोड़ा टोळ माथै बैठवारी, बैठक री इज्जत म्हने मिली तो एड़ी खुसी व्ही के या इज्जत मिलगी है जि रो सपनो ई म्हें नीं देखियो हो। बरसाती ओढ न म्हूं बारे निकळियो हो जदी म्हने कांई खबर ही के आज म्हारो भाग खुलेला। बदाऊं रा नवाब गुलाम कादरखां री नवाबजादी, जेबुन्निसा के मेहरुन्निसा के नूरउल्मुल्क सायबा खुद म्हने, वां रे नजीक, बराबरी री बैठक बगसेला।

हिमाले री छाती पे, सुनसान भाखरां में, सिलाड़ी पे बैठ्यां दो गैरे चालणियां नर अर नारी री परबीनो, सुणवा वाळा ने, गरमा गरम कूवा भरी कंगी जेड़ी लागेला। सुणवाळा ने दूरा परबतां में झरता झगा झरणां रा झरराटा जेड़ी राग ई बात में सुणीजेला, काळिदासजी रा बणायोड़ा मेघदूत र कुमारसंभव जेड़ा ग्रन्थ बणोड़ा सेहरा रो भणभणाटो सुणवा वाळा रा कानां में पड़ेला। पण म्हारा जेड़ा कोट बूट बरसाती सूं भेस व्हियोड़ा सा'ब बाहदर ने भारती ग्यान ने पोसाख ने निभावणो कोई सौरो काम नीं हो। वा सिलाड़ी जि पे म्हूं बैठ्यो हो कांजी सूं सूगली व्हे री, पाणी सूं भीज री ही, म्हूं सा'ब बाहदर री पोसाक में वा सूगली सिलाड़ियां पे बैठो हो, म्हैं जोगण रा भेस में एक मनजोग हावनादी बैठी। म्हूं वी रे धारे पाड़ो कर रियो हो। सा'ब बाहदर री सारा गुदी दसा में दिखावयो सोरो काम कोरो ई है? पण काम करो हो, धंवर सूं बाई कानी धंसगो व्हे रियो हो, मारयां मरवा जेड़ी कोई बात ही नीं। वी ईंदर सही कांटळ घड़ी में म्हूं दो जणां ई हा। एक तो बदाऊं रा नवाब गुलाम कादरखां री छोकरी, दूजो म्हूं नवो भणो ई व बणियोड़ो हिंदुस्तानी सा'ब। एक सा'ब बाहदर न एक जोगण रो यो अजब सम्मेलन देखणियो ओर कोई नीं हो। यो यो ईसो।

म्हैं बोलियो, 'नवाबजादी सायबा, आपरा पे हुकम कुण कीधा?

बदाऊं री नवाबजादी माथा ठोक न बोली, 'ई रा करवा हुवा कुण है?'

एड़ा मोट मोटा माखरां वाळा हिमाळे परवत ने ईं बापड़ी धंवर सूं ढांकणियो कुण है ?'

म्हैं वाद नीं कीयो, वीं री वात मान लीधी। बोलियो, 'सांची कैवो, भाग ने कुण खोल न देखियो है, आंगा तो हां ई कांई, मांछर डाडर ज्यूं हां।'

बार करण जो म्हूं ढूक जावतो तो नवाबजादी ने सौरे सांस नीं छूटवा देवतो, पण मन री वात म्हांसूं वीं बोली में कैवणी नीं आई। उड़दू तो म्हने माड़ी आवती। कलकत्ता रोड रे भड़े बैठ न नवाबजादी रे सारे अद्दैतवाद अर द्वैतवाद माथै बैहस करूं अतरी उड़दू आवती नी ही।

नवाबजादी बोली, 'म्हारी जिंदगानी री वात आज ई खतम व्ही है, हुक्म व्हे तो सुणावूं ?'

म्हैं आगतो व्हेय बोलियो, 'आप ई कांई फरमाय रिया हो। आपने र म्हूं हुक्म दूं। हां, आप फुरमाणेरी म्हेरबानी फरमावो तो म्हां माथै म्हेरबानी व्हे।'

या मत जांणजो के म्हूं ये सारोणा आपर किया हा। मन में कैवारी जरूर ही पण सामरथ कोय ही नीं। नवाबजादी बोल री ही जद यूं लागरियो है के ओस सूं धुपियोड़ा धोकणा सलफ सांवळा रंग रा धान रा खेतां में सोनेरी साळ माथै परभात रा पोहर रो धीमो धीमो मीठो मीठो वायरो झाला देतो जाय रियो है। बोल बोल पै या लुळती झुकती, एक एक हरफ, एक एक बोल में रूप म्हेराय रियो हो। म्हूं तो दो टप्पा रा एड़ा सूधा पडूत्तर देयरियो जांणे कोई बोफो बोलरियो। म्हने तो बोलवा में अदब कायदो आवतो ई नीं हो, नीं लुळताई सूं ई वात करणी आवती। नवाबजादी रे सागै वात करतां पैली पोत म्हने आज बोल बोल पै ठा पड़ री ही के म्हने बोलणो नीं आवे।

नवाबजादी कैवा लागी, 'म्हारा बाप रा वंस में दिल्ली रा तख्त रो राजसी खून हो। वीं खून री इज्जत राखवा सारू म्हारो कठै ई सगपण नी व्हीयो। म्हारे जोग कोई सायजादो लाधियो ई नीं। म्हारे सागै सगपण रो बड़ाळो मलनऊ रा नवाब रो आयो पण म्हारा बाप टाळा टोळी कररिया ई ज हा के गदराक में गदर फैलगियो। कारतूसां रे दांतां सूं बटका भरवा रा झोड़ में सरकार रै खिलाफ फौजां झंडो उठाय लीधो। तोपां रो धूंवो आखा हिंदवाण में घटाटोप छाय गियो।

कोई सुगाई रा मूंडा सूं घर या ई नवाबजादी रा मूंडा सूं म्हैं आज कांई उड़दू नीं सुणी ही। आज सुण न समझ गियो के उड़दू मोटा मिनखां री अमीर उमरां री बोली है। जाने सुख विलसवा रे सिवा कांई काम नीं करणो पड़तो हो। वा जणां री बोली है वां रो सुग मन नीं रहियो। म्हूं उणां रो कांई

ह्। के कांई और कारण हो। म्हूं ऊगे सूरज, वी पीळोड़ा परभात में, जमनाजी रा भीला पांणी पै धोळी पेड़्यां माथे केसरलालजी ने पूजा करतो देखती। वां ने पूजा पाठ करता देख नींद सूं तुरत जागियोड़ो म्हारो मन सरधा, भगती सूं भर जावतो।

नेम धरम सूं रंवगिया केसरलालजी रो उघाड़ो गोरो डील जगमग करता दीवला री जोत री नांई दमकतो। वां रा पुन परताप रे आगे म्हारो, एक मुसलमान री डोकरी रो मूरख मन ई उणा रा पगा में झुक जावतो। केवती केवती एक खिण साळं वा रूकगी। म्हने यूं लागियो वीं रा मूंडा पै केसरलालजी रा तेज परताप रो चानणो छायगियो अर वा एक झटको देय वीं चानणा ने पळगो कर पाछी वात जमावणी चावती व्हे। केसरलाल री वात करतां वा ऊंचा संस्कृत रा सबद बोल री। म्हूं देखतो रेगियो या सायजादी बोल री है के साधुणी।

संन्यासण केवा लागी, 'म्हारे एक हिंदू दासी ही, वा रोजीना धोक देय केसरलालजी रा पगां री रज लावो करती। वीं ने देख म्हारो मन हरखीजतो ई हो अर ईसको ई आवतो। वरत वडूलियो करती जद वा म्हारी दासी विरामण भोजन करावती दखणा ई देवती। म्हूं ई उण ने पैंइसा टका रो झोलो देय देवती न कंवती 'थूं केसरलालजी ने नी बुलावे रा कांई ?' वा होठां ने दांता मूं दबाय न केवती, "त त त त, केसरलालजी आपजो धरम पुन रो पैंइसो थोड़ो ई लेवे।"

केसरलालजी ने म्हांसूं मारी भगती जतावणी नीं आई। नीं थोड़े बतावणी आई नीं उणने ई वा साऊं कांई करणी आयो जो म्हारो भूखो मन *मळचावतो रेवतो। म्हारा बडाडुवा मांयला कोई बामण कन्या माडाणी परण ने* लाया हा। म्हूं म्हेलां में एकलाड़ी बैठी देखती के म्हारा हाड़ मास वीं विरामण दादी पड़दादी रा अंस सूं बणियोड़ा है, म्हारा मन में कठूंक संतोष आवतो के म्हारा अर केसरलालजी रा लोही में कठूंक तो मेळ है।

उण हिंदू दासी सूं म्हूं हिंदूवा रा धरम री वातां पूछती, देवी देवता री अजब मनोखी वातां सुणती, रामायण र महाभारत री कथावां ने संता र समाधानां साथे सुणतो। सुणतां सुणतां म्हारा अंतस में हिंदूवां री केई चीजां रा जितराम उपर आवता। देवी देवतां री मूरतियां, घु घु कर न बाजता संख, टणणाट करता घंटा, सोना रा कळस चढ़ियोड़ा सिखरबंद मिंदर, धूप री धूंवो, अगर, चंदण, फूलां री खसबोई। जोग रा चमतकार, साधु जोगियां री सिद्धियां, बिरामणां रा देवी महातम, मिनखां रा भेख में देवी देवतां री लीला। म्हारा मन री आंखियां आगे एक मायालोक बस जावतो। म्हारो चित्त बिना धूंसाळा रा पळी नांई उडियो उडियो फिरतो।

मतराक में फिरंगियां री सरकार सूं झगड़ो माच गियो। म्हारा नान्हामाक बंगाऊं रा सिपा मोरने ई गदर रा एहनांण दीतिया। केसरलालजी बोलिया, 'अबे ओ यां गो हत्यारा गोरां नें हिंदवांण सूं बारे काढ न, हिंदू मुसलमानां ने राज ने पाछो पगां नीचे करवा ने एक मरो म्हेगो पड़ैला।'

म्हारा बाप घणां चतर र स्याणा हा। वे बोलिया, 'ये फिरंगी मोछी माया नीं है। हिंदवाण रो लोग यां सूं झगड़ो जीतजावे नीं। म्हूं पेट मांयला री आसा में गोद बाळ्या में नीं फेंकूं। कंपनी सरकार सूं झगड़ियो म्हारो है जो धरती पगां नीचे सूं परी जावै।'

उण वेळा आखा हिंदवांण रा हिंदू मुसलमाना रो लोई कळकळ रियो हो। म्हारा बाप री यां बाणियां जसी वातां पे म्हारो सगळां रो मन उणांने धरकार रियो हो। म्हारी बेगम मांवां ई कंवा लागी के झगड़ो झेल लेणो चावे।

केसरलालजी तो कमरां बंधी फौज सागे आय न म्हारा बाप सूं बोलिया, 'नवाब सा'व, जे आप म्हांके भेळे नीं भलो तो आप ने म्हां नजरबंदी में लां। झगड़ो पाने जतरे नजरबंद राखां। ई किला रो भारतोड़ म्हूं झेलूं।'

नवाब साब बोलिया, 'अतरो फसाद क्यूं करो, म्हूं थांरे भेळो हूं।'

केसरलालजी बोलिया, 'खजाना मायनूं क्यूंक रिपिया काढो।'

नवाबसाब अतरोक ई ज कहियो 'चावता जाय ज्यूं देवतो रेवूं।'

एडी सूं लगाय न चोटी तांई म्हारे जतरा गेणां हा सगळा री गांठड़ी बांद म्हैं उण हिंदू दासी सागे केसरलालजी कनें भेज दीधा। वां म्हारी ई नजर ने कबूल कर लीधी। म्हारो माभरण बायरो अंग अंग हरख सूं फूल गियो, रूंम रूंम ऊभो व्हे गियो।

केसरलालजी का'ट चढियोड़ी बंदूकां री नाळां सुधरावा लागा, जूनी तरवारां रे वाढ़ देवावा लागा। अतराक में मर्याजचकां रा कंपनी रो गोरो साब, लाल वरदीवाळी गोरी पलटन रे लारे, आभा तांई घूळो उडावता, किला में आय मळियो।

नवाबसाब छानेकरा गदर व्हे जावा रा समीचार भेज दीधा हा।

बंगाऊं री फौजां केसरलालजी रा एड़ा केणां में ही के वां री आंगळी ऊंची करतां ई जूनी बंदूकां का'ट झाल, चढियोड़ी तरवारांसूं'ज न गोरां माथै आय पड़िया।

दगाबाज बाप रो म्हेल म्हने नरक जेड़ो दीसवा लागियो। क्रोध सूं, दुख सूं अर नफरत सूं म्हारो काळजो कड़कवा लागियो। पण नैण सूं एक टोपो आंसू रो नीं पड़ियो। म्हारा कायर भाई रा मरदाना गाबा पैर, भेख बदल म्हेलां बारे निकळगी। बठे देखवा सोचवा री वगत कीने ही। उण वेळा मोळा गोळियां

रो धूंवो मिट गियो हो, बामलां रो बरळाणो ई थम गियो हो। जळ में, थळ में चारूं पासे मौत रो सो सणणाटो छाय रियो हो। जमना रा पांणी ने राता रंग मूं रंग न सूरज ई आंथ गियो हो। निरमळ आभा में चानणा पख रो चांद चमक रियो हो। रणखेत लोहियां सूं लथड़ पथड़ व्हे रियो हो। दूजी कोई वेळा व्हीं व्हेती तो दया सूं म्हारो हिवड़ो फाट जावतो। पण वीं दिन तो म्हूं वां लोथां मांयने फिर फिर केसरलालजी ने हेर री ही। हेरतां हेरतां आधी रात रा जाय न चांद रा उजाळा में रणखेत रे कने, जमना रे तट पे, आंबा रा गोड़ रे नीचे म्हनें केसरलालजी री लोथ दीखी। पसवाड़े ई ज वां रो स्यामखोर चाकर देवकी-नंदण पड़ियो हो। म्हूं समझ गी के घायल व्हियां पछे ई ओ चाकर ठाकर ने अठे लाय हिफाजत री जगा सुवाया है के ठाकर चाकर ने लाय सुवायो है। दोई जणा बड़ी तसल्ली सूं कजा री खोळ मांयने माथो देय सोय गिया है।

पैला तो म्हें म्हारी घणा दिनां री भगती री भूख ने बुझाई। गोडां गोडां लाई लटकता माथा रा केसां ने खोल, केसा सूं कतरी दांण वां रा पगां री रज ने पूंछी, म्हारा माथा पे वां रा ठंडा पगां ने राखिया। पछे वां रा चरणारविंदा रे होठ अड़ावतां अड़ावतां तो म्हारा नैणां सूं गंगा जमना बैवा लागी।

अतराक में केसरलालजी री देही हाली, सैंधीड़िया कुरणाया। म्हें चमक न वां रा पगां ने छोड़ दीधा। मींच्योड़ी आंख्यां सूं, सूक्योड़ा कंठ सूं धीमेकरो सार निकळियो, 'पांणी।' म्हूं भागी जमना पे। जमना रा पाणी में म्हारी ओढणी पाली कर न लाई। ओढणी निचोय वां रा मूंडा में पांणी चेवियो। वां री डावली आंख न माथा पे गेहरो घाव लागियोड़ो हो वठे ओढणी फाड़ पाटी बांधी।

यूं कतरा ई गरड़का जमना बीचे न वांरा बीचे लगाया। पाणी चेवती री, आंखियां पे पांणी न्हाकती री। धीरे-धीरे चेतो आयो। म्हें पूछियो, 'पाणी लावूं ?'

केसरलालजी बोलिया, 'कुण है यूं ?'

म्हासूं रेवणो नी आयो। म्हें केय दीधो 'आपरा चरणां री चाकर, नवाब गुलाम कादरखां री बेटी हूं।'

म्हें तो सोची के मरता मरता केसरलालजी वांरी भगत ने चाकर ने ओळखता जाय। यो पैलो मिलणो ई है पर छेल्लो मिलणो ई है। ई सुख सूं मने म्हने अळगो कर सके कोई नीं।

पण हाय, म्हारो नाम सुणता ई केसरलालजी तो नाहर री नांई गरजन बोलिया, 'दगाबाज बेईमान री बेटी। तुरकड़ी, मरता वगत ने हाथ रो पांणी पाय म्हारो धरम भरस्ट कर दीधो।' यूं केवता ई वां तो म्हारा जीमणा गालड़ा पे खींच न एक थेंपड़ दे मारी। आंखियां आगे पीळा आवणिया, आंख काल हेटे पड़गी।

जद म्हूं सोला बरसां री कुंवारी कन्या ही, म्हेलां बारै बीज दिन पग धारै काढ़ियो हो। जठा तक तो लोभी सूरज री किरणां ई म्हारा गालां री ललाई भर कंवला ई ने नीं चोरी ही। वीं दिन दुनिया में बारै पग देतां ई, ई संसार अर म्हारी पूजा रे देवता म्हारो यो लाड़ कीधो। पैलोड़ी आसीस म्हने म्हारा देवता सूं या मिली।

यूं केय नवाबजादी छानी रेगी।

ओजूं तांई म्हूं हाथ में सिगरेट लीधा मंतरियोड़ो व्हे ज्यूं छानोमानो कैणी सुणरियो हो। कांई तो बोली सुणरियो हो, कांई धुन सुणरियो हो। कांई नी केवणी आयो, मूंडा में जाणै जीभ ई नीं ही।

अबै म्हासूं नी रैवणी आयो, मूंडा बारै अचांणचको निकल गियो,

'डांडो हो।'

नवाबजादी बोली, 'कुण डांडो हो? पिराण निकलती वेळा कांई डांडो मूंडा कने आया पाणी ने छोड़ दे?'

म्हूं लजाय न बोलियो, 'सांची केवो, देवता हो'

वा बटावदेणी री बोली, 'देवता कस्यो। देवता, चरणां में आयोड़ा भगत रे लात मारै कांई?'

म्हूं बोलियो, 'आप सांची फरमायरिया हो।' यूं कैयन छानो रैगियो।

नवाबजादी केवा लागी,

'पैला तो म्हने अणो ई अदुख व्हियो। यूं लागियो जाणे सारी दुनिया ई कांई आसमान सूं टूक टूक व्हेन म्हारै माथै आय पड़ियो। थोड़ी देर पछै म्हारो चेतो ठकाणे आयो। म्हैं वीं पवित्तर पग बटाऊ हड़दा रा बिरामण ने दूरा सूं नमसकार कीधो। मनोमन बोली 'हे बिरामण देवता, थां परायो धन नीं लो, परायो अन्न नीं लो। पराई लुगाई रा नेह, जोबन ने थां छूवो तक नी, [illegible] भिनखां री सेवा नीं लो। थां थिर हो, थां ने बांधणियो कुण? म्हूं ई थांरी बटै के थांरा चरणां में आय पड़ूं।'

नवाबजादी ने धरती पे पड़ न [illegible] म्हनें खबर नी। पण वींरा मूंडा पै म्हने अचंभो नी लागियो। वा रा मूंडा रो रंग बदलियो नी। फिर मजर सूं म्हारी बानी भाळिया, पछै बटवा ने [illegible] निकाल लिया। म्हूं [illegible] देवा रै म्हारा हाथ [illegible] दीधो। [illegible] म्हारा [illegible] कर दीधो। [illegible] बात ने सुणा। वै [illegible] हैं। वी तो कोई [illegible] कोई [illegible]

ई हो। वां नाव नाव में बैठ न नाव ने चलाय दीधी। देखता-देखतां नाव धार में उतरगी, धीरे-धीरे मांखियां सूं अळगी व्हेगी। म्हारा मन में आई के दुखां रा बोझा ने क्यूं खेंचूं। अण आदरिया भगती भाव लीधां, डूब मरूं आघी। नाव गी जीं दिसा कानी हाथ जोड़, ई मंझधार रात में, डाळी सूं टूट पड़ी काची कूंपल ज्यूं म्हूं देही ने भांग दूं, रज-रज कर न उडाय दूं। आभा में चमकते चांद ई म्हने मरजावा री सल्ला दीधी। जमना रे पेला पार रा जांबू रा रूंखड़ा ई कियो के मरजा। कालंदी रे काळे पाणी, ओवा री आंबाबाड़ी चादणी में चमकता किला रा घुमटा, सैंग जणा केवा लागिया, जीवा में काई सार नी, मरजा। जळ, थळ, नभ, सगळां ई राय खप जावा री दीधी। पण खळखळ वैवती जमना री धार में वैय न परोगी ही, वीं जूनी नाव म्हने मरवा नी दीधी। कजा री खोळां मांयनूं म्हने खेंच न ले आई। म्हूं मोह मांयने उळझी लगी जमना रे कनारे किनारे चाल पड़ी। कठै ई लांबो लांबो कमरवांणो चारो, कठै ई रेतरडो, कठैई ऊंची नीची धरती तो कठैई खाळा। गैरा जंगळा ने अवळा परबतां ने डाकती चाली।

अतरो बात केय नवाबजादी पाछी छानी रैयगी। म्हूं कांई नी बोलियो।
नरी देर पछे वा बोली।

ईं रा पछै बीनी जो तो भोर ही खोटी ही। न्यारी न्यारी कर न थां ने कस्या भरमावूं। एक गैरा जंगल में व्हैयन निकळी। कठी ने व्हैयन निकळी, अबैं हेर न बतावणो चावूं तो नी बतावणो आवे। कठं तो सरू करूं कठै खतम करूं। काई काई वाता तो कैवूं न काई काई छोड दूं। थां ने किण तरे वा कैणी कैवूं के थां ने वा अणव्हेणी अणूती नी लागै।

पण हां, अतराक दिना में ई ज म्हूं समझगी के दुनिया में अणव्हेणी बात तो कांई है ई ज नीं। नवाब री हरम रा सात ताला में रेवणी नवाबजादी सारूं बारली दुनिया दुरगम व्हेवो करे। पण म्हूं जाणगी के या मन री कोरी भरमना है। एक दांण बारै पग काढ लो तो चालवानै गैलो आपणै आप लावतो जावै। हां, नवाबी गैलो तो व्हे नी पर गैलो जरूर व्हेतो जावै। वी गैला में मानवी आप अनाद सूं चालियो आय रियो है, गैलो अंवळो संकड़ो, भलो ई व्हो वीं गैला में हद्बंदी भला ई मत व्हो। गैला पड़गैला घणांई फंटिया है वी में, दुख सुख घणांई है पण है वो गैलो ई ज।

वीं गैला में अकेली भटकती नवाबजादी री कैणी सुणवा में कोई मिनख ने आणंद नीं आवेला सांची तो या है के म्हने ई सुणावा में काई रस नीं आवे। खास बात री एक बात, दुख, सुख, भूख, तिस, आदर, अणादर घणां ई भोग्या हा

पण काल तांई गिराण रा बोझा ने सैयो-जाय री ही। काम सूं म्हूं होन हारगी, पापी पिराणी रो बोझो अबे म्हां सूं नीं धींसणो आवै। अतरा बरस मानमवाजी री नांई म्हूं सुनगी ही तो चक्कर ई आतसबाजी री नांई तेजी सू काटिया। काल तांई तो म्हूं चक्कर काटती री म्हनै टा ई नीं पड़ी के म्हूं बळ हूं। पण म्हारा दीवा री लौ एकणदम वायरा रा एक झोला सूं बुझगी। म्हार जीवन री जातरा, म्हारी जिंदगाणी री मूंघी मुसाफरी खतम व्हैगी। सारे म्हार कैणी खतम व्हैगी।

अठै आय न नवाबजादी छानी रैयगी। म्हें मनोमन मायो हलायो अंह अठै आय न कस्या खतम व्है। थोड़ी देर छानो रैय अरकचरी उड़दू में बोलियो 'कसूर माफ करो, पाछली बात रो क्यूं खुलासा करो तो म्हारो मन सोरो व्है जावे।'

नवाबजादी हंसी। समझ गियो म्हारी अधकचरी उड़दू काम काढ लीदो। जो म्हूं उड़दू धड़ाकाबंद बोलतो व्हेतो तो म्हां आगे वीरी लाज मळगी नीं व्हेती। म्हूं धीरो बोलो थोड़ो समझूं हूं नी जो वो बीचे म्हां बीचे पड़दा रो काम कर गियो, या ई ज आबरू ही।

वा पाछी केवा लागी।

केसरलालजी री खबरां तो म्हने लाग जावो करती। पण मेळो कोनी व्हियो। वे तांत्या टोपी रे सागे रळगिया। गदर रा दिनां मे कदी अगूणां तो कदी आंथूणा, कदी दिखणाद में कदी उतराध में अणगाजो र अणघोरी बीजळी री नांई कड़कड़ाट करता पड़ता व्हे अर छिण में विलाय जावता पाछा।

म्हूं जोगण बण कासी में सिवानंद स्वामी ने गुरु बणाय संस्कृत रा सास्तर भणवा लागी। समसत हिंदवाण री खबरां वांरा चरणा मे आय पूगतो करती। म्हूं पूरण भगती सूं सास्तर पढ़ती, संका भरियोड़ा चित्त सूं, अकुळायोड़ी गदर री खबरां ही जांगवी करती।

धीरे धीरे कंपनी री सरकार, गदर री लाय ने पगां सूं मसळ न बुझाय दीवी। पछै केसरलालजी री खबरां मिलणी रुकगी। गदर री वेळा जो नामी नामी बहादरां री मूरतियां खिणखिण में दीखती वे सैंग विलाय गी।

अबे तो म्हारा सूं नीं रैवणी आयो। म्हूं तो गुरू रो आश्रम छोड़ भेरवी रा भेख में निकळगी। तीरथ जातरा मिंदर मठ, सिनान धियान करती फिरती री। कठै ई केसरलालजी रो पतो नीं लागियो। एक दो जणा रा मूंडा सूं, जो वां ने जांणता हा, सुणियो के, के तो वे रणखेत में काम आय गिया के वां ने ... फांसी पे चढ़ाय दीधा। म्हारो मांयलो मन ई बात ने मानणो ई ज नीं, ... 'या कदे ई नीं व्हे। केसरलालजी मरिया तो नीं, वा अविसर झळझळ

सूटानी लुगाई रा पेट रा पोना पोतियां रे साथै मेला कुचेला गाबा पैरयां खेत में काम कर रिया हा।'

कैणी खतम व्ही। म्हे सोची, कोई दिलासा री बात कैवणी चावे। बोलियो, पड़तीस बरसां ताईं बरोबर जी ने रात दिन पिराणां रा डर सौ मूं दूजी जात वाळा सागै रैवणो पड़े, वो आचार विचार कस्यां निभावै ?'

नवाबजादी बोली, 'म्हूं काईं नीं समझूं हूं ईं बात ने ? पण म्हूं घणा दिन किण मोह में उळझी भटक री ही। जी आदमी रे धरम करम म्हारा जुवान मनड़ा ने बिलमाय लीधो हो, म्हने काईं खबर ही के वा तो एक आदत ही। खाली संस्कार मातर हा। म्हूं तो जांणती ही के यो धरम है आद है अनाद है, सदामद एक सरीसो रैवेला। कस्यो म्हूं नीं जांणती तो वी सोळवा बरस में, नवो उपड़ियो फूल जस्या म्हारा तन मन ने क्यूं चढ़ावती ? तन मन ने अरपण करती बगत वीं धरम करम जाणणिया बिरामण रा जीमणां हाथ रा परसाद ने माथै क्यूं चढ़ावती ? वीं चंदण ने गुरु रा हाथ री दीदा जाग भायो फकाय दुणां भगती भाव सूं माथै क्यूं मेलती ? हाय, धरमातमा, थै तो थारी एक आदत री जायगा दूजी आदत धारण कर लीधी। पण म्हने वीं एक जोबन अर जिंदगानी री जायगा दूजो जोबन र जिंदगानी कठे लाधेला ?'

यूं कैवताईं वा घट देगी री ऊभी व्हेगी। बोली 'नमस्कार'। बोलतां ईं वीं फारसी गलती ने दुरस्त कीधी।

'सलाम, बाबू साब।'

ई मुसलमानी ढंग री रामासामी रे सागै वीं, रेता में कठला [illegible] धरम सूं सीस नौयो। म्हूं वीं ने काईं कैवूं कठा पैला तो वा हिमाळै री भूरा रंग री चंवर बादळी री नाईं बिलायगी।

म्हूं थोड़ीक देर आंखिया मींच्यां नवाबजादी री कैणी ने मन रा [illegible] उथारता लाग्यो। [illegible] तट पै [illegible] रा [illegible] बणे थोड़ो [illegible] मुसलमान नवाबजादी ने [illegible], हीरणां रा [illegible] में [illegible] री [illegible] बैठ्या [illegible] सूं, [illegible] ने उतारी। दारजिलिंग रा [illegible] में [illegible] रे [illegible] लुगाई री मूरती [illegible] दुख [illegible] हो, वो [illegible] री मूरती [illegible] री ही।

[illegible] बोल्यो तो कैयूं [illegible] है, [illegible] री [illegible] [illegible] है। [illegible] में बैठ र [illegible] र [illegible] पै

घड न अंगरेज आदमी स्हेल करवा ने निकळ रिया है । एक हिंदुस्तानी गळा में गुळबंद बाधिया, म्हारी आडी ने मुळकतो जाय रिया हो ।

म्हूं झटपट उठियो । सूरज रा चानणां में चमचम करती दुनिया में म्हने वा केणी साची नीं लागी । म्हने यूं लागियो, धंवर रे लारे सिगरेट रो धूंवो मिलाय न म्हैं एक केणी जोड़ लीधी ही । वा मुसलमान बिरामणी, वो बिरामण म्हादर, जमना तट रो किनारो, कोई ज सांचो नीं है ।

रायवादर रे धणी हाथा जोड़ी कीधी 'सुभ वेळा टळ जाय, आप फेरा तो फिरवा दो। आपरी पाई पाई म्हूं आपने देवूं कौल कर बदलूं नी।' रायवादर रो टका जस्यो जुवाब दीधो, 'रिपिया म्हारे हाथ में नी मेलो जतरे बींद रो गंठजोड़ो बंधणो नीं।'

मांयने लुगायां रोवा झोकवा लागी। जीं रे पूंछड़े यो कळेस व्हेय रियो वा परणेतू छायल ओढियां, गैणो गाबो पैरयां, ललाट पै चंदण री खोळ काढियां, छानी मानी बैठी। सासरा वाळा सारू वीं रा मन मे कतरोक मोह अर इजत बच री व्हेना?

अतराक में एक नयो गूंपो फूटियो। वींद भचाणचका रो बाप रो कहियो मानवाने नट गियो। बाप ने उपड़ताई जुवाब दीधो 'मोल तोल, लेज देज म्हूं नीं जाणूं। म्हूं तो परणवाने आयो हूं जो परण न मांडो छोडूं ला।'

बाप कांई करै मुणावा लागा, 'देख्यो जमानो?' सागै एक दो स्यांणा समझणां हा वां ई सुर में सुर मिलायो, 'भणायलो और। धरम नीति री पढायां तो मनै करावे नीं जी रा फळ है ये।'

नवी पढाई रो यो जैरीलो फळ, घर में ई फळतां देख रायवादरजी ढीला पड़गिया। ब्याव तो खैर किया ई व्हियो ई ज पण रस नीं रियो। गरण गटोळिया जुवाय दीवा। सासरे सीख देवता बाप री छाती फाटवा लागी। लाडली बेटी ने छाती रे लगाय लीधी, आखियां सूं चौसरा छूट रिया।

बेटी बाप री छाती मे माथो घाल न पूछियो 'अबै वठा वाळा म्हनें पाछी पठै नीं आव देवेला?'

बाप रूंधाया गळा सूं बोलियो, 'आवा क्यूं नी देय बेटा। म्हूं आय न थनैं ले जावूं।'

[२]

रामसुंदर धणी बिरियां बेटी सूं मिलवाने जावता। पण बियाईजी रे घरे कोई वां रो आव आदर नी। चाकर छोरी तकात वां ने गनारता नीं। रावळा मूं बारे, निवारी ओवरी में चार पांच मिनट सारू बेटी मूं मिलाय देवता, कदी कदी तो मेळो व्हेनो ई नीं, पगरखियां रगड़ता पाछा फिरता।

बियाई सभा में एड़ो अणादर तो मनै बरदास नी व्हे। रामसुंदर विचार लीधी के चावे जो व्हो रिपिया तो वां ने देय ई देणा पण देवे क्ठा सूं माथे तो केस है जतरो लेंहणो व्हेय रियो। बो ई चूकावणो नीं आय रियो हो। दाळ रोटी रो खरचो ई दौरो निभ रियो हो। रोज नित नूवा आळखा लेय लेणार बोहरा सूं नीठानीठ पिंड छुड़ावता।

सासरा में निरूपमा ने रोज ओ'टा टो'टा सुणणा पड़ता । सासरा वाळा तं
मां बापां ने कांवळा आगे ई ज ऊभा राखता । सुणावणां सुणतो सुणती गळा तां
भर जावती तो बापड़ी आडो जड़ रोय रोय छाती उरळी करती । सुणावणां सुणणो
न रोवणो नितनेम हो । सासू तो गाळियां री वरखा ई ज करती रेवती । कोई
पाड़ पाड़ोसण आवती न केवती 'बींदणी रो मूं'डो तो देखावो ।' सासू झणकदेणी
रो मोसां रो फड़ाको लगाय देवती 'देखे मूं'डो, जेड़ो घर घरांणो है वेड़ो ई
मूं'डो व्हेला ।'
सासू तो बीनणी ने खावा पेरवारी ई नीं पूछती । जै कोई भली मांणस पाड़ोसण,
बीनणी रे खावा पेरवा री पूछती तो सासू कड़कन केवती 'घणो ई है । और काई
दे फेर ।' इं रो अरथ तो यो व्हियो के जे बाप पूरा रोकड़ा चूकावतो तो खातर ई
पूरी व्हेती । सेंग जणां यूं रेवता जांणे बीनणी री तो इं घर में लेवणो देवणो ई
कांई, या तो जांणे मनमरी आय घर में वळी व्हे । छानी कस्यां रेवती, बेटी रा
अणादर री, फोड़ा री वात बाप जाणियो ई । वां तो घर ने बेच देवा री धारी ।
अठीने वठीने बेचवा री वातां चलाई पण बेटां सूं छाने । मन में नक्की
कीधी के छाने रो छाने घर ने बेच वीं ज घर न भाड़े लेय रेवांला एड़ी तरकीब
करूं के कानो कान किनेई ठा ई ज नीं पड़े ।
बेटां ने भणकारो पड़गियो । सेंग बेटा मिल न बाप कने रोवा लागिया ।
वां मांयने ई तीन बेटा तो परणिया थका हा, छोरा छापरा ई हा वांरे । वां तो
राड़ो कीधो ई ज । छेवट में घर बेचवा नीं दीवो । अबे रामसुंदरजी मूं'डे
मांगिया ब्याज पे, थोड़ा थोड़ा रिपिया उधारा लाय भेळा करवा लागिया । फळ
यो व्हियो के टोटा फासी चालवा लागी ।
निरूपमा बाप रो मूं'डो देख न समझगी । बूढा बाप रा धोळा केसां, अर
उतरियोड़े मूं'डे बताय दीदो के वे करज में फळ रिया है, जीव में वांरे जक नीं है ।
चिंता, चिंता री नांई बाळ री है । बेटी रो गुनेगार बाप व्हे जद वीं गुने रो
पिछतावो दिखावणो थोड़ो ई आवे । रामसुंदर वियाई रे घरे जावतो, इजाजत
मिलियां ऊभा ऊभा बेटी सूं वात कर न पाछो निकळतो जीं वेळा वीं री छाती
बरड़ाट भेलवा लागती जाणे अबे पड़ती । दां रा मूं'डा सूं ई मन री दसा जांणणी
आय जावती ।
बाप रा अलमास्त जीवड़ा ने दिमळास देवा सारूं या पीवर आवा ने
आगती उतावळी व्हेगी । बाप रो मुरझायोड़ो मुखड़ो वीं ने सालवा लागो । दो
दिन भेळी रेवूं तो बाप ने दिमळास तो दूं । एक दिन वीं बाप ने कहियो 'म्हने
घरे ले चालो ।'

बाप रा मूंडा सूं तो यो ई निकळियो के ले घालूं पण वी रा हाथ री वात थोड़ी ही। बेटी रे माथे यूं तो बाप रो जोर व्हे पण वी ने तो यूं लाग रियो हो के टीका रा रिपिया में वी बेटी ने भडागे मेल दीधो। दमड़ा चूकाया बेटी गेणां सूं छूटे। बेटी सूं मिलवाने जावता, लाजा मरता मरता, मिलणे री इजाजत मांगता थांणे भीखा मांग रिया व्हे। कदी कदी तो परवानगी नी मिलती तो दूजी दाण कंवा री छाती नीं चालती।

बेटी जद बीरा मूंडा सूं कैय दे के म्हने पीयर ले चालो तो बाप सूं कदी नटणो आवे के? बेटी ने घरे ले जावा सारूं वियाईजी री परवानगी हांसल करवाने वां तीन हजार रिपिया भेळा कीधा। वा रिपिया भेळा करवाने वा कतरां जणां री हाथाजोड़ी कीधी, कतरां रे पगां पडिया, कतरी जगा वां वांरी नाक नीची कीधी, कतरा जैर रा गुटकळ्या वां ने पीवणां पडिया, जीं री कथा तो नी केवणी आछी, छिपायां राखियां में ई सार है। रामसुंदर तीन हजार रा नोटां ने रुमाल में बांध, पछेवड़ा में पलेट वियाईजी रे घरे गिया। पैसा तो मूंडा पे मुळक लाय न भाड़सांड़ा री वात चलाई। हरेकिसन रा घर ने धोरा सूत लीधो या ज्ञान मांड न सुणाई। नवीनमाधव पर राधामाधव दोई भायां रा सुनार, गुण छोगण रो तोल-मोल कीधो, राधामाधव रा वखांण कीधा, नवीनमाधव ने बीगराणो। सेहर मांयने जो नुवी मांदगी चाल री ही, वीं री अजब अजब केणियां सुणाई। पछे पछेवड़ा ने एक बाजी मेल न धांना ई खाता में काढिया, 'हे हे वियाईजी सा, थार रा रिपिया देवणां बाकी है, जद आवूं जद ई दिखाऊं के लेवता आवूं पण आजरो वेळा बीसर जावूं' यूं वात जमाय न पछेवड़ा मायूं नोट काढिया, तीन नोट थांणे पासळी रा तीन हाडिया व्हे ज्यूं। सारी तीन हजार रा नोट देव न रायबादरजी ठहो मार न हँसिया।

'रैवादो सा रैवादो, म्हार कनेई रेवादो, म्हारे नी चावे। म्हारो धोंइसो कवे मनायक में कांई हाथ घांतां।'

म्हारो हियो पछे दूजो बार व्हेगो तो बेटी ने भेजवा री बात मूंडा बारे नीं निकळसी। रामसुन्दर विचारे मने कोरो सुण हियो दनिरा कर दरके नीं बैठे। वियाईजी बोला रो हुयोड़ो काळजा पे मालिको जी री पेट सूं घोतोल तो घनेड़ियो पण घर काळजो काळेकर, मूंडा पे निजोन मार न बेटी ने ले जावणो तीन मागी। रायबादरजी टाट जसो सुणत पणमाल 'मांक तो कदाक' नी मिरे।' यूं बेवतो ई वे बारे निकळ लिया।

रामसुंदर वा नोटा ने पाछे सम्हे कर्णिका रो हाथ धूम लिया छा। बेटी ने मूंडो भी बणायो घरे पाछ लियो। मन में सोचता थका मौका के 'धूण दराता

नीं चूकावूं जतरी बेटी म्हारी नीं । बियाई रे हेली पे पग नीं मेलूं ।

३

घणा दिन व्हेय गिया । निरूपमा बाप ने बुलावा ने आदमी भेजती री, पण वे कदी घरे लाधिया ई नी। बाप सूं मिलियां ने घणां दिन व्हेगिया तो वा पीगळियां पड़वा लागी । काई व्हेय न आदमी भेजणो ई रोक दीधो तो बाप रा काळजा पे करोतां बेवा लागी । पण वां बेटी रे घरे पग नीं दीधो ।

आसोज रो म्हीनो आयो । रामसुंदर बोलियो, अबकाळे पूजा में बेटी ने बुलायन रेवूं । नीं लावूं तो म्हूं ....' करड़ी आखड़ी लेयलीधी ।

नौरता री पांचम रे दिन, पछेवड़ा में नोट पळेट न घालिया । मतराक में पांचेक बरस रे पोतो आय न दादा रे लटूंबियो, दादाजी, म्हारे साडूं गाडी लाय रिया हो कांई ?'

वीं ने रबड़ रा पैंडा री ठेला गाडी मायं चढ़ न स्हेल करवा रो कोड़ चढ़रियो हो, पण सौक पूरी ज नीं व्ही ही। छै बरसां री पोती आय न रोवा लागी, 'दादा, पूजा रे दिन म्हूं कांई ओढूं ? म्हारे ओढवा ने ओढणी कोय नीं ।"

रामसुंदर ने ठा ही, वां ने पैलांई सोच लागरियो हो के रायबादर रा घर सूं पूजा में जावारो बुलावो आय गियो तो वे वां री बीनणिया ने ईं दशा में भेजेला कांई, मंगतियां री नांई जावती माढी लागेला कांई । वे सोचवा भर गैरा गैरा नीसासा गैरता । नीसासा गैरिया व्हेतो कांई ललाट रा सळ गैरा पड़वा सिवाय । नातवानी रा रोवणां कानां में गूंजरिया हा, रामसुंदर बियाई री पोळ में पग दीधो । आज वी रा मन में कोई संको नीं हो । पैलां तो चाकर छोरां साम्हा झांकता वां ने मोलज सी आवती पण आज वीं रा पग ई धोर ठब सूं पड़ रिया। वे आज घर में यूं वळियो जाणे खुद रा घर में वळ रिया है । मांयो गियां ठा लागी के रायबादरजी बारे गियोड़ा है, थोड़ीक वाट नाळणी पड़ेला । रामसुंदर सूं मन री छोळ दबावणी नीं आई, बेटी सूं मिलिया । आंगद रा आंसुवां री झड़ी लागगी, बाप ई रोया, बेटी रोई । किरा ई मूंडा सूं बोल नीं निकळियो, हेत सूं छाती ऊवभनी री । पछै रामसुंदर बोलियो 'बेटा, अबकाळे म्हूं थनै लेय न जावूं । अबै कोई आड पड़ावन नीं ।'

ज्यराक में तो रामसुंदर रो बड़ो बेटो हरमोवन, वीं रा दोई टाबरां सागै हुरड़ देगी रो घर में आय वळियो । आवतां ई बोलियो 'म्हांने मंगता कर जावा रो ई ज मतो कर लीधो के ?'

रामसुंदर एकनेक्क रीस सूं गळो पड़ न बोलियो, 'तो थां खातर म्हूं आखी री गमी बणूं के ? म्हारा करपोरा कोन सूं फिर आवूं कांई ?'

रामसुंदर माप रा घर ने बेच न्हाखियो। सावचेती तो घणी बरती के छोरां ने ठा नी पड़े पण कजाणां किण तरै वां ने बेरो पड़गियो। वी ने भ्रसी भाळ छूटी के माथा बारे व्हेगियो। सागे पोतो ई हो, वो वां रा दोई गोडां रे लट्टूंब न ऊंचो मूंडो कर न बोलियो 'दादाजी, म्हारे गाडी ?'

रामसुंदर माथो भुकायां ऊभो। दादो काई बोलियो नी तो निरुपमा रे जाय लट्टूंबियो, 'भुवा, म्हने एक गाड़ी लाय दे।' निरुपमा अटकळ लगाय लीधी। बोली, 'थां एक काणी कौडी म्हारा सुसरा ने मत दीजो। जो थां एक धींगलियो ई देय दीधो है तो म्हूं माथो फोड़ न मर जावूं, थांरा सोगन नी मरूं तो।'

'नीं बेटा, यूं कैवे कदी। जो म्हें रिपिया नी चुकाया तो ईं थारा बाप री माजनो जावै, थारो ई जावे।'

'मांजनो तो जावे रिपिया चुकायां। था री बेटी री कोई इज्जत कोयनी है कांई? म्हारी वकत रिपिया पुंछडे ई ज है कांई? रिपिया नीं तो म्हारी कीमत ई नीं? नीं, बापजी, रिपिया देय म्हारी बेइज्जत मत करो। थां रा जमाई तो रिपिया चावै ई नी पछे थां क्यूं दो।'

'तो बेटा थनै ले जावा नीं देय म्हनें।'

'नीं ले जावा दे तो रैवा दो, थांई लेवाने मत आवजो।'

रामसुंदर धूजता हाथां सूं नोटां ने पछेवड़ा रे पल्ले बांध न पाछा चोर री नांई घर सूं बारै निकळिया।

ये वातां छारी रेवा री थोडी व्हे। कोई चाकर छोरी कान लगाय न सुण लीधो वो जाय सासु ने सुणाई रामसुंदरजी तो रिपिया लाया हा पण बेटा आड़ा फिर गिया, बेटी नटगी। कांई पूछणी वात। सासु रा हिया में होळी तो बळ ही री मायने पूळो कांई भारो न्हांखणो आय गियो।

निरुपमा रे तो सासरो सूळां री सेज बणगियो। वीं रो परणियो तो डिपटी मजिस्ट्रेट बण गियो जो बारे चाकरी पै परो गियो।

निरुपमा तो माचो पकड़ लीधो। ईं में कोई सास रो ई कसूर नीं हो, निरुपमा डील रो धियान नीं राखती। काती म्हीना में, ओस पड़ती रैवती न या सिरांत्या री बारी खोल न सोवती रैवती, उघाड़ो पड़ी रैवती कांई ओढती ई नीं। खावा पीवा रो धिय न राखती नीं। डावड़ियां कदी कलेवो लावणो भूल जावती तो या मूंडा सूं कैवती नीं के लावो। वीं रा मन में जचगी के या छो ई घर में चाकर छोरी ज्यूं पड़ी है, सासू सुसरा दो टुकड़ा न्हाखे जो था रो सिरदा है। सासू ने बीनणी रो यूं रैवणो ई तो नी सुंवावतो। खावती पीवती नी तो धटाक देणी

रा सुणावा सुणावा लाग जावती 'बहू' जीमे। राजा री बेटी है। गरीबां रा घर री रोटी थांने थोड़ी भावे।

सासू जी रा जींवारा बहूजी रा मरण।

एक दिन निरूपमा सासू रे हाथ जोड़ न बोली, 'बूजीसा, एकर वार भर भायां ने बुलाय म्हने मेळो कराय दो।'

सासु बोली, 'ये पीयर जावा रा चरित्तर है।'

कहियां तो कोई भरोसो नीं करेला पण वीं ज संझ्या रा निरूपमा ने उल्टो सांस चालवा लागगियो। दीं ज दिन डॉक्टर वीं ने पेलीपोत देखियो न वो ई ज छेल्लो देखणो हो।

घर री बड़ी बीनणी मरी, चाल चलावो ई जोरदार व्हियो। रायबादर रे घरे नोरता में दुरगा री मूरती बोळावो घणां ठाठ सूं व्हेता। मिनखां में नाम हो वां री मूरती बोळावारो। वस्या ई ठाठ सूं बेटा री बीनणी ने, घर री गणगोर ने वां बोळाई। चंदण काठ री चिता चुणगी। लारे करिया करम, मोसर ई वस्यो ई व्हियो जस्यो रायबादर रा घर में व्हेणो चावे। मनख कोंरे के क्यूं क माथे ई कढावणो पड़ियो रायबादर ने।

गांम रा मिनख रामसुन्दर रे घरे बैठवा ने जावता दिलासा देवता तो सारे री सारे चरचा करता के थांरी बेटी रो चलावो कस्योक धूमधाम रो व्हियो।

अठी ने डिपटी मेजिसट्रेट रो कागद आयो 'म्हें अठे घर सेव लीधो है बीनणी ने भेजो।'

रायबादरजी पडूत्तर दीधो, बेटा, थारी सगाई दूजी जायगा तै व्हेगी है। छीस ले घरे झट आय जा।

अब काळे टीका में रोकड़ा बीस हजार हाथे लागिया। रायबादरजी पैला वाळी भूल नी कीधी। पैला रोकड़ा गिण पछे परणायो।

●

राजतिलक

नवेन्दुसेखर, मरुणलेखा रे गंठजोड़ो बांध न चंवरी में बेठ्यो जदी वैमाता थोड़ीक मुळकी। वधाता ने जो रम्मता में मजो श्रावे वे रम्मता मानवी ने हमेसां हँसावो नीं करे। नवेन्दुसेखर रा बाप पूरणेन्दुसेखर रो श्रंगरेजी राज में पामो हो। 'बड़ा हुकम में फायदों' रो फायदो वे जांणता हा, ई नुमखा ने अजमाय न वे 'रायबादर' बणगिया हा। उणां रे कनें एड़ा नुमखा घणा ई हा, पण व्हेणार री बात के पचपन बरस री औस्था मे ई वे वीं लोक में सिघार गिया जठे खिताब नीं व्हे। विग्यान वाळा कैवो करे के सगती रो नास कदे ई नी व्हे, वा रूप भलांई बदल ले, जायगा बदल ले पण वा खतम नीं व्हेवो करे। 'बडो हुकम रा फायदा' रा नुसखा मूं, अचपळी लिछमी बाप परा गिया तो बेटा रा माथा पे खावंदी रो हाथ मेल दीधो। नवेन्दुसेखर रो मायो श्रंगरेजा रा चरणां री रज ने पड़ावा लागो।

नवेन्दु री पैलां री परणी, कूंख फाटियां बिना ई मरगी। अबै जो लौड़ी परण न आई वीं रा पीयर वाळां रो डाळो ई दूजो हो। वी रा मोटा भाई प्रमथनाथ री आंपणां परायां में इज्जत ही, वां रो नामून हो। छोटा मोटा बांरा चालियोड़ा गेला पे चालता हा। प्रमथनाथ बी ए. ताई भणियोड़ा हा। मरल रा तो उजीर हा। पण वां री तनखा मोटी नी ही, कुरसी र कलम री ताकत वां कनें नीं ही। व्हेनी कटा सूं? श्रंगरेज वां मूं दूर रैवता तो वे ई श्रंगरेजां मूं दूर रैवता। 'तुम हमसें करड़े तो हम भी करड़े लट्ठ' वाळी बान राखता। मोळख

पिछाण वाळा, घर वाळा, तो वां ने घणा ऊंचा, जोगा समझता । पण दुनिया मां में कोई बडापणो नीं दीखतो ।

यें ई प्रमथनाथ एक र तीन बरसां ताई विलायत परा गिया । व अंगरेजां री भलापणा यां ने मनरा मोय लीधा के देस रा टळकता आंसूड़ा ने भूल गिया । पाछा देस आया अंगरेजी पोसाक पैरियोड़ा । सा'बां री पोसाक मांय देख भाई बैन घर बडूंया रा मिनख एकर तो भेळा भेळा व्हिया । पछै थाड़ दिना पछै कैवा लागिया', 'अंगरेजी पोसाक याने मोंगे बतरी है, केड़ा फूटर लागै ।' पछै धीरे धीरे अंगरेजी पोसाक मांयं वे आजसवा लाग गिया ।

प्रमथनाथ विलायत सूं ई ज धार न आया हा के, अंगरेजां रे सारै कस्या बरोबरियां री बरताव राख्यो जावै, या म्हूं देस वाळा ने परतन बनाय दूंला । मिनख कैवे के बिना छुळियां अंगरेजां सूं मिलणो नीं भावे । या तो वां री आप री कमजोरी है वे हकनाक ई अंगरेजां ने दूसण दे । प्रमथनाथ विलायत रा टावा टावा सा'ब बाधरां रा सारटीफकेट सागै ले आया हा । वां रा जोर पे हिन्दवांण में रैवणिया अंगरेज ई आदरवा लागगिया । और तो और अंगरेजां रे घर वां री लुगायां रे सागै वां ने चाय पाणी पीवा रा, खाणा खावा रा, खेल तमासा देखणे रा मोकर ई मिल जावता । या सुरव कायदा सूं वां रो माथो सूजवा लागो ।

वा दिनां ई ज हिंदुस्तान में नुवी नुवी रेल री लैण चालू व्ही । रेल कंपनी, छोटा लाटसा'ब री पधरावणी कीधी । सागै सागै राज में पासो रासजिया, टावा टावा ने ई बुलाया । रेल में चढिया, वां में प्रमथनाथजी हा ।

रेल में पाछा आवतां, वां टावा मानीजता सिरदारा ने एक अंगरेज दरोगे, सेलून मांयनूं मांजनो पाड़ नीचे उतार दीधा । सा'ब दाखर बणियोड़ा प्रमथनाथजी मांजनो जावतो देख पैलां ई ज नीचे उतर जावा ने आपा पाछा व्हिया तो दरोगे वां ने कहियो, 'आप क्यूं उतरो, विराजिया रैवो आप तो ।' आंपणो मतरो मान देख एकदांण तो वे फूल गिया । गाडी छूटी । प्रमथनाथ एकला बैठिया रेल री बारी मांयनूं गुर दाव न बंगाळा री भोम ने जोय रिया अर सोचरिया । विचारतां विचारतां वां री आंखियां सूं ऊना ऊना आंसूवां रा धोमता छूट गिया । वां ने एक जूनी कैणी चीतां आई । एक गधेड़ो रथ खेंचियां जाय रियो हो वीं रथ में ठाकुरजी री मूरती ही । दरसण करगिया गैला में पड़ पड़ वा रज उठाय माथा रे लगाय रिया हा, गैला बीचे पड़ सास्टांग डण्डवत कर रिया हा । वीं मूरख गधेड़े जाणियो के ये तो म्हारी नमना कर रिया है । प्रमथनाथ कैवा लागिया वीं गधेड़ा में अर म्हारा में फतरोक ई ज आंतरो है के वो समझियो नीं अर म्हूं

मरम समझ गियो हूं कै थे मान म्हारो नीं, मान थे बोझ रो है जो म्हारे माथे लदियोड़ो है।

प्रमथनाथ घरे आय न कटुंब रा छोटा मोटां सगळा ने बुलाय एक होम कीधो। वीं होम मांयने विलायती मावां री आहूतयां देवा लागिया। वासदी री झाळ ज्यूं ऊंची जाय री ज्यूं टावर हुलस हुलस न फदक रिया हा। उण दिन सूं प्रमथनाथ अंगरेजां री चाय घर रोटी रा टुकडा छोड दीना। आप रे घरे बैठ गिया। दूजा जिनावां रा मौताज वेलां ज्यूं ई अंगरेजां री पीठ माथे पायड़ियां मुकाया मुकाय लटका करता रिया।

भाग री दान नरेन्द्रुमेवर वीं ज घराणा री बेटी ने बीनणी बणाय घरे ले आया। प्रमथनाथ री बलेट वेन रे लारे ब्याव कर लीधो। ई घर री टाबरियां वैठी रही रुपाळी ही वैठी भणियोड़ी गुणियोड़ी ही। नवेन्दु जाण्यो 'जीत्यो।' पण वीं घर री बेटी आय न फटके ई बताय दीधो के 'म्हारे परण न जीत्या मोय नी थां।'

वांतां करतां करतां नवेन्दु जेब मांय सूं काढ न कागद सूं मेलदेतो जांणे पड़िया हा जो मोळव में निकळ गिया। वे कागद व्हेता हा सां'वांरा मांडयोड़ा बाप रे नाम। साळिया रा राता पातला होटां में तीखी हँसी री धार चमकती जाणें मुखमल रा म्यांन में तरवार चमकी। जद नवेन्दु चमकतो के गजब व्हो, कुटोड़ कागद काढिया।

साळियों में सँगा सूं मोटोड़ी लावण्यलेखा जो रूप गुणां में ई मोटी ही, एक दिन आठो मतो दिन देख विलायती वूंटा ने नवेन्दु रा सुएट रा ओवरा री ताक मांयने जमाया न वूंटा रे संदूर चरचियो, माळीपनां लगायें, फूल चढाय, दीवो जगाय, धूप वाळयो। नवेन्दु ज्यूं ई घर में वळियो के दो साळिया नवेन्दु रा दोई कानां सूं कानडा पकड न बोली, 'थांरी कुल देवीं रे धोक दो। था री मानता करो जो थां मोटा ओहदा पे चढो।' तीजी साळी किरणलेखा घणां दिनां तांई फोड़ा देख एक चादरो बणायो जी पे राता डोरा सूं दां'दां रा नाम कसीदा में काढिया, जोन्स सिमथ, टामसन, पूरा अठोत्तर नाम। पूरो फलसो फोड़ न वांरी वंसावळी रा नाम वाने मुणाय चादरो नजर कीधो। चौथोड़ी सशांक लेखा। जी री गणती तो सासा मांयने कोयनी ही तो ई आय न बोली, 'जीजाजी म्हूं थांरे एक माळा लाय दूंला जो थां अंगरेजा रा नाम जपवो करजो।' मोटोड़ी बेनां धाकल दीधी 'जा जा, थूं या ई बादरी बतावा ने आई है।'

बापड़ा नवेन्दु ने मन में रीस ई आई न ओवत्र ई आई पण साळिया सूं अनगो ई तो नीं रेवणी आवे। साल कर न मोटोड़ी साळी सूं यो चादर रे

उणियार ही। वीं रा मूंडा मांयनूं अमरत ई झरे तो मूळो ई थोड़ी कोय ही नी। वा बोलती जद नसो ई चढतो न कांटा ई गड़ता जावता। दीवा री ळौ री लपट सूं रीयाग फडको भणण भणण ई करे अर एड़े मेड़े चक्कर खावतो ई नीं रुके। फड़का वाली दसा नवेन्दु री ही। साळियां रे मोह मे पड़ नवेन्दु अंगरेजां री वातां करतो लजावा लागो। जींदिन बड़ा सा'ब रे मुजरे जावतो तो साळियां ने केवतो 'सुरेन्द्र बनर्जी रो भापण सुणवा जाय रियो हूं। दारजिलिग सूं बचला सा'व पाछा आवता न वो साम्हो टेसण पे जावतो तो साळिया ने केय न जावतो, 'विचला मामाजी सूं मिलण ने जायरियो हूं।'

सा'ब अर साळी। यां दो नावां में पग देय न बापड़ो अवखाई में पड़ गियो। साळिया मन में हँसी 'यां री दूजो नाव रे पीदा में छेकलो कीधां विना रैवणी म्हां नी।'

राणी विकटोरिया रा आवता बरस गांठ पे नवेन्दु खिताबां रा सुरगलोक रो पैलो पगथियो 'रायबादर' रो खिताब धारण करेला। एड़ीक सुळसुळी सुणीजी। वीं मिलण माळा कुरब री बधाई साळियां ने देवा री घातो नवेन्दु री नीं पडी। पग एक दिन, सरद रात रा चांनणा पख री ऊजळी, खोड़ीली रात में, मन री छोळ मांय ने परणी पातळी आगे वा वात मूंड़ा बारे निकळगी। दिन ऊगतां ई वा तो पालकी में बैठ बैन रे घरे पूगी, आंखियां जळजळी कर न साद गळगळो कर न बैन ने मन री बिथा सुणाई। लावण्य बोली, 'खोटो वात कांई है तो। रायबादर रो खिताब लेवा सूं थारा बालम रे कोई सींगड़ा पूंछड़ा थोड़ो ई ऊग जाय जो यूं लाजां मरे।'

अरुणलेखा बोली, 'जीजी, थावे जो व्हो, म्हूं रायबादरणी तो मरियां ई नीं बणूं।'

मांयली बात या ही के अरुणा री जांण पिछांण रा भूतनाथबाबू राय बादर हा ज्यूं वा नीं चावती। छेवट में लावण्य भळांवण सीधी यूं कांई ज सोच मत कर। म्हूं थारो मनचींत्यो कर देवूं।'

लावण्य रो परणियो नीलरतन बक्सर में रैवतो। सरद रुत उतरतो उतरतां नवेन्दु रे घरां सूं बुलावो आयो। वे राजी राजी बक्सर चालिया। रेल पै चढतो बैठा नीं तो वां री डावलो आंख फड़की नी डावन्यो भुज ई फड़कियो।

लावण्य सरद रुत री नदी कनारा रा कांस रा गोड़ ज्यूं ओपता लागे ही। वीं ओपता सैनी पे नवेन्दु री आंखियां अटक गी। पीळोड़ा परभात में, फोग सेंती मालती रे बेलड़ी में फुला विगसियोड़ा फूलां सूं जांणे सीळो सीळो ओस भर रियो वीं ने देख नवेन्दु री आंख टरगी। मन रा हुलास सूं, बटाउ हवा पाणी सूं

नवेन्दु रो श्रणपचो रोग कट गियो। रूप निरखतो जद वीं ने लागतो के वो रे पोवड़ा मायगिया है जो आभा मे उड़तो फिर रियो है। साळी रा हाथ री सेवा चाकरी करावा रा विचार सूं ई वी रो रूंम रूंम नाचवा लागतो। बाड़ी रे मूंडागे गंगा वेय री जो नवेन्दु ने लागती के धीरा मन री छोळ सूं वा हू ड ड करती वैयरी है। मुबै मुबै नंदी कनारा पै टैल न पाछो आवतो जदी सीयांळा रा परभात रो मोठो मींठो तावडो यूं लागतो जाणे पियारी घणा साथे मिलाप व्हियो। पछै सौक सूं साळी रे सागे रसोवड़ा में जाय वळतो। घड़ी घड़ी रो काम बगाड़तो, ढोळाफोळा करतो। साळी चिरडती, वांरा कीधा कामा में बखोणा काढती, वो हँसतो वा मुळकती, वो ऊंधो सूंघो करती वा चिड़ती घणो आणंद आवतो। साळी केवती, मसाला मिलावो, कड़ाई में खुरपो फेरो, केलड़ी उतारो। वी सूं आटा में पांणी घणो कूडणो भाय जावतो के मसालो बळ जावतो। ई फूड़पणां पै साळी धाकलती, हँसतो। रोजीना चिरड़वा चिरड़ावा रो मजो लेवतो।

दुपैर व्हेतां व्हेतां पेट में भूख ई लागती, ऊपरे साली री मनवारां चाव सूं राजियोड़ा तेरा तीवण व्हेता। पछे तेरा तीवण रांधवा वाली मनवारां कर कर न जीमावती जो नवेन्दु ने पेट री खबर नीं रेवती, रंज न जीमतो।

जोम चूंठ न तास रमवा बेठता तो तास ई नवेन्दु सूं आछी नी रमणो आवती। पल पल पै रूसटी खावतो। दूजां रा पत्ता झाकतो, खोमा खोसो करतो, जोर सूं हाका करवा लागतो। हारतो तो ई आप री हार नीं मानतो। साळी सत्तरा वातां सुणावती वो ठी ठी कर न हँस न रैय जावतो।

एक आंतरो अठे आयां पछै जरूर पडियो वी में। अंगरेजां रा पैताबा री पूजा ने धरम करम मान राखियो हो जो अबारूं वो पूजा पाठ बंद हो। अठे एक वात घोर ई ही। लावण्य रो खावंद नीलरतन अठा री कचेड़ी में नामी उकील हो पण अंगरेजां रा देव दरसणां ने नी जावतो। कदे ई वात चाल जावती तो केवतो, 'आंपां क्यूं जावां? आपा रे सागै वे आछो बरताव नीं राखे तो आपा रो जीव कळपे ई ज। मरुथळ री धरती दीवण में घणी ई धोळी धप्प फूटरी है पण बीज बायां सावां तो नीपजे नीं। धोळा रंग ने बांई चाटां। फळ नीपजे तो काळी माटी उण सूं सिरे।'

बात या ही के नवेन्दु देखा देखी वो भेळो रळ गियो, फळ री चिंता नीं कीधी। वो रा बाप दादा ब्हे न जो धरती जोती ही, संवारी सुधारी ही वी में 'रायबादरी' रो फळ लागवा री आसा लाग री हो पण पांणी तो सींचणो पड़े ई ज। अंगरेजां री स्हेल री एक नगरो में नवेन्दु घणा टका खरच कर एक घुड़दौड़ रो चौगान बणाय दीधो हो।

अबै कांगरेस रो अधिवेसन नजीक आयो। चंदा रा पाना फिरवा लागा। नवेन्दु बड़ा मजा सूं लावण्य सागे तास रम रियो हो। अनराक में नीलरतन चंदा रो पानो लेय न घर में वळियो। बोलियो, 'ई पै दसगत कर दो, भाई।'

नवेन्दु रो मूंडो फीको पड़ गियो।

लावण्य चटाक देणी री बोली, 'है हैं, दसगत मत करो। नीं तो थांरो वो घुड़दौड़ रो चौगान धूळा में मिल जाय।'

नवेन्दु ऊंचो व्हेय बोलियो, 'ए हे हे, जांणे म्हूं डरपतो व्हेवूं।'

नीलरतन भरोसो देवावतो बोलियो 'थां खातर जमा राखो। थां रो नाम की अखबार में नीं छपेला।'

लावण्य मूंडो ठावो कर न घणी चिंता सूं बोली, 'कजांणा माई कीं ने ठा, कोई छाप ई देवे तो।'

नवेन्दु तेज व्हे न बोलियो 'रैवा दो, अखबार में छपियां म्हारो नाम घस थोड़ो ई जाय।' नीलरतन रा हाथ मांयनूं चंदा रो पानो लेय एक हजार रिपिया मांड दीवा। मन में भरोसो हो के नाम नीं छपैला।

लावण्य माथो पकड़ न बोली, 'यो कांई कर दीधो थां।'

नवेन्दु गरव कर न बोलियो, 'क्यूं, कांई व्हेगियो ?'

लावण्य बोली 'सियालदा टेसण रो गार्ड, ह्वाइट वे दुकान रो नायब, हार्ट ब्रदर्स रा साइस अंगरेज थां पै नारज व्हे गिया तो ? थां रे अठै पूजा में आय न सेम्पेन नीं पीधो तो ? थां री डाली नीं डोली तो ?

नवेन्दु कळप न बोलियो, 'हां, जांणे म्हूं मर ई जावूं ?'

थोड़ाक दिनां पछै, एक दिन चाय पीवतो जाय रियो न नवेन्दु अंगरेजी रो अखबार बांचतो जाय रियो। चिट्ठी पतरी रा रवाना पै नजर पड़ी। गुमनाम रै एक कागद लिखणिये घणो घणो धिनवाद, वां ने कांगरेस में चंदो देवा खातर दीधा। चाढी नूं चावनो यो ई मांड दीधो के एड़ा आदमी रो भळो मिलियां कांगरेस ने घणो हेलो मिलियो। कांगरेस ने हेलो मिलियो ? हाय रे सुगणां रा वाणी पिता पुर्णेन्दुसेखरजी, कांगरेस ने हेलो देवा ने थां ई सपूत ने जनम दीधो हो कांई।

दुख सुख रो जोड़ो व्है। नवेन्दु ने एक तरै रो थांवस ई आयो। नवेन्दु कोई छोटो मोटो मिनख नीं है। एक आडी ने तो कांगरेस थां ने आसा दे न हूलार री है दूजी आडी ने अंगरेज थांवड़ो पकड़ न तार रिया है। या बात छाने दिखाव न राखवा री ही कांई ? नवेन्दुजी तो मुळकता मुळकता पसार न अखबार रो पानो लावण्य ने दिखायो। लावण्य अखबार ने यूं बांच्यो जाणे कांई ठा ई नीं है। अचरज ने अजार न बोली 'हैं, यो यो। यो कांई कुण फोड़ियो ?

पक्र यां रो कोई बैरी है। भगवान वीं री कलम में कीड़ा पड़के, वी री स्याई में धूळो पड़े, वीं रा अखबार रे उदई लागे।'

दो दिनां पछे ई ज अंगरेजां रो एक अखबार नवेन्दुजी कनें आयो। यो अखबार कांगरेस रे उलटो बोलतो। वी अखबार में, पैला वाळा अखबार री बात रो काट कीधो। वी मे मंडियोड़ो हो 'नवेन्दुजी पे कांगरेस में चंदो देवा रो कूड़ो दोस लगायो है। नवेन्दुजी कदे ई, कांगरेस ने चंदो नी दे। न्हार आप री खाल रा रंग ने बदल दे तो बदल दे पण नवेन्दुजी कदी कांगरेस में नीं भळे। वे कोई टाला मिनख नी है। वे बिना मुवक्कला रा उकील थोड़ा ई है जो कांगरेस में रळे। वे वां मिनखां मांयला कोयनी जो दो दिन बलायत मे फिर न खाली कोट पेंट पैरणो सीख न, कठे ई याग नी लागियो जो लपलप करता मूंडो लेय न पाछा आय गिया। वे तो वां मिनखां मायला है जो........' वगैरा वगैरा।

हाय, म्हारा बाप, थां तो वेंकुंठा में वासो कीधो। थां तो अंगरेजां में मतरो नामून कमायो, कुरब कायदो लीधो। आज ?'

यो अखबार ई, बिछाय न साठी ने बंचावा जोग हो। ई सूं साफ है के नवेन्दु कोई ईंगजी धींगजी आदमी नी है, वां रो बाप रो एक नियरो रूतबो है।

बाचता ई लावण्य अचरज भरयोड़ी बोली 'यो कागज थां रे कुण से सेए छपायो ? कुण है यो ? टिकट कलक्टर है के चामड़ा रो दलाल है ?

नीलरतन सल्ला दीधी 'ई अखबार रो या ने पडूत्तर देवणो चावे।'

नवेन्दु मोटा बण न बोलिया 'क्यूं दा ? मिनख लिखवो ई करे। वींरो वींरो जुवाब दूं।'

लावण्य ठट्ठो लगायो।

नवेन्दु लजाय गियो। बोलियो 'क्यूं हंसी ?'

लावण्य तो हंसे रे हंसे रे। जोबन फूलड़ा रा भार मूं लुळियोड़ी देही बेवड़ी झोला खाय री। नवेन्दु हैरान व्हे गियो। मसखरी री सिवकारियां सूं नवेन्दु खगाबोळ व्हेगियो तो चिरड़न बोलियो 'थां जांणता व्होला जुवाब देवतो म्हूं डरूं ?

लावण्य बोली, 'डरपवा क्यूं लागा। म्हने तो सोच लागियो के आमा रा आधार री घुड़दौड़ रा मैदान रो कांई व्हेला। खैर व्हेला जो दीठी जावेला। सांसा जद लग आसा।'

नवेन्दु बोलियो 'जाणूं। थां जांणो के म्हूं जूं ई ज जुवाब नीं लिख दियो हूं।' रीस मे आय न वी ज साळ मांडवा ने बैठियो। पण लिखावट में रीस रा राता डोरा नीं पडिया। लावण्य अर नीलरतन पाछो साळ मांडवा री भळावन मेली। पछे तो जांणे फूल्हा मायें कड़ाई मेलगी आयगी। नवेन्दु तो पाणी में अखबार

न घी लगाय न, सीळी सीळी नरम नरम पूडियां बंटतो, ये दो दो सुथारणियां। या जुगल जोड़ी घट देणी री कळवळती कड़ाई में पूड़ी न्हाक वीं ने करड़ी कर फुलाय देवती, गरमा गरम पख्सता जाता। ब्रेवट में लिख्यो के 'घर रा मिनख ई जद वेरी बण जावे तो बारला वैरियां सूं बत्ती हांण करे। म्हाज सरकार रा दुसमण पठांण र रूसियां सूं बत्ता ऍंगलो इंडियन है। वे जनता ने अर सरकार ने एक रस नी व्हेवा दे। सरकार बीचे अर लोगां रे बीचै यां रा अखबार भींत व्हे न आडा ऊभा है।'

नवेन्दु मायने ई मांयने डरप रियो हो पण या जाण न के लेख घणो आछो लिखणी आयो, मन राजी व्हेतो जाय रियो हो। माथो पटक देवतो तो वीं सूं एड़ो नीं लिखणी आवतो।

दोई कानी सूं अखबारां में उत्तर पडूत्तर चालता रिया। नवेन्दु रे चंदो देवा रे अर कांगरेस में मिलणे रो हाको फूट गियो। नवेन्दुजी यूं बातां करवा लागा जांणे साळियां री सभा में वे एक अडर देस भगत व्हेगिया है।

लावण्य मन में हँस न कैवती 'ठैरो तो, थां री भगती परीखा तो मोडूं बाकी है।'

एक दिन सुबे री वगत, सांपड़वा सूं पैला नवेन्दु तेल री मालस कर रिया हा, चाकर आय न हाथ में एक कारड झेलायो। वीं रा पै खुदो खुद मजिस्ट्रेट रो नाम छपियोड़ो हो। लावण्य जीं वेळा कौगत री नजर सूं यां आनी झांक री ही।

तेल चौपड़ियां तो सा'ब सूं मिलणी आवे नीं। नवेन्दु कटियोड़ी माछळी री नांई फड़फड़ावा लागियो। झट देणी रो माथे पांणी कूदतां ई हाथे पड़ियो जो ई गाबो पेर न बारे भागियो। नौकर बोलियो 'सा'ब अठे बेठा हा अबारू' अबारू' बारै निकळिया ई ज है।'

यो मूठ आधो पड़यो नौकर रे हो आधो पड़यो लावण्य रो हो। बिमूंबरा री कटियोड़ी पूंछ तड़फड़ावे ज्यूं नवेन्दु रो मन मांयने ई मांयने पछाड़ां खावा लागो। आखो दिन अमूजतो रियो, रोटी पांणी गळा हेटे सावळ नीं उतरिया, वीं में ई ज जीव नीं लागियो।

लावण्य हाँसी ने रोक न, फिकर जतावती घड़ी घड़ी रो पूछती री, 'आज थांरे व्हे कांई गियो है। जीव सोरो तो है?'

नवेन्दु माझागो मूंडा पे हाँसी लाय न मौसागर जुवाब देतो रियो, 'थां रे घरे आय न म्हने तकलीफ व्हे? थां तो म्हारी धनवन्तरणी हो।'

मांडाणी लायोड़ी हँसी वीं ज टाळ मूंडा मूं उडगी। विचारवा लागियो,

न घी लगाय न, सीळी सीळी नरम नरम पूड़ियां बंटती, ये दो दो सू या जुगल जोड़ी चट देणी री कळकळती कड़ाई में पूड़ी न्हाक वी ने फुलाय देवती, गरमा गरम परसता जाता। छेवट में लिख्यो के 'घर रा जद वैरी बण जावे तो बारळा वैरियां सूं वत्ती हांण करे। आज रे दुसमण पठांण र रूसियां सूं बत्ता ऍंगलो इंडियन है। वे जनता ने अर एक रस नीं व्हेवा दे। सरकार बीचे मर लोगां रे बीचै यां रा अखबार भी आडा ऊभा है।'

नवेन्दु मांयने ई मांयने डरप रियो हो पण या जाण न के लेख घर लिखणो आयो, मन राजी व्हेतो जाय रियो हो। मायो पटक देवतो तो एड़ो नीं लिखणी आवतो।

दोई कानी सूं अखबारां में उत्तर पड़ूत्तर चालता रिया। नवेन्दु देवा रे अर कांगरेस में मिलणे रो हाको फूट गियो। नवेन्दुजी यूं वात लागा जांणे साळियां री सभा में वे एक अडर देस भगत व्हेगिया है।

लावण्य मन में हँस न कैवती 'ठैरो तो, थां री असली परीक्षा तो बाकी है।'

एक दिन सुबै री वगत, सांपड़वा सूं पैला नवेन्दु तेल री माल रिया हा, चाकर आय न हाथ में एक कारड झेलायो। वीं रा पै सु मजिस्ट्रेट रो नाम छपियोड़ो हो। लावण्य जी वेळा कौतक री नजर सू कानी झांक री ही।

तेल चौपड़ियां तो सा'ब सूं मिलणो आवे नीं। नवेन्दु कटियोड़ी म री नांई फड़फड़ावा लागियो। झट देणी रो माथे पांणी कूढतां ई हाथे पड़ियो गाबो पेर न बारे भागियो। नौकर बोलियो 'सा'ब अठै बैठा हा अबार मं बारे निकळिया ई ज है।'

यो झूठ आधो पड़ियो नौकर रो हो आधो पड़ियो लावण्य रो हो। बिच्छू री कटियोड़ी पूंछ तड़फड़ावे ज्यूं नवेन्दु रो मन मांयने ई मांयने पछाड़ां खा लागो। आखो दिन अमूजतो रियो, रोटी पांणी गळा हेटे सावळ नीं उतरिया, मैं ई ज जीव नी लागियो।

लावण्य हांसी ने रोक न, फिकर जतावती घड़ी घड़ी रो पूछती 'आज थांरे व्हे कांई गियो है। जीव सोरो तो है?'

नवेन्दु माळागी मूंडा पे हांसी लाय न ... सुजाव देवो दि थां रे घरे आय न म्हने तकलीफ व्हे? थां

मांडाणी लायोड़ी हँसी वीं

री डर भी सूं वां ने संभाळ री है। छोरी रो रूप बिलकुल नुवो नुवो, तुरत रो हाळा हो, यूं लागरियो बिरमाजी मबाड़ं मबाड़ं ढाळ न सांचा बारे काढी ज है। मोत्या रो अटकल लगावणो ई सौरो नीं, देहो तो विगसियोड़ा फूल ज्यूं ही पण मूंडो तो काची कली ज्यूं लाग रियो, मूंडा पै मतरो कावाणणो हो के जाणें दुनिया रे बायरे श्रोजू ई ने भीटो नीं व्हे। वा श्राप नीं जाणती के वी में जोबन भोला लेवा लागगियो है।

; कातिचंदर रा नळी साफ करता हाथ हा जठै थम गिया। वे देखता रैगिया, माख्यां वीं रा मूंडा पै मड़ी नी गड गी। वा सपना में ई नीं सोच्यो हो के एड़ी जगा एड़ो रुप देखग ने मिलेला। राजा रां रणवासा बीचे ई वो मुखड़ो घठै ई जगा घणो मनहर लाग रियो। यूं लाग रियो के घाड़ पामे जो कुदरत री कारीगरी दीख री है वा सब ई मुखड़ा रा रुप ने चौगणी करवारे ई ज सिरजी गी है। सोना रा गुलदस्ता बीचे गोड़ माये फूलड़ा बस्ता सूं एा लागे।

¶ छोरी रे पाछे सरद रुत री श्रोस सूं भीजियोड़ी, लांबी लाबी सैवण माथे परभात री सौनेरी सौनेरी किरणा पड़री। सैवण बायरा सूं श्रोला लेव री लेरड़ा सूं चमक री। मूंडागे धीमा धीमा पवन सूं नदी रो पांणी ल्हेराय रियो। वां दोनां रे ई बीचे ऊभी वीं नान्हकड़ी नाजु ने कांतिचंदर मंतरियोड़ा नाग री भाई ऊभा देख रिया। कालिदासजी वारी पोथियां मे निरगो सून गिया दीखता हा के गंगा रे कनारे नान्हकड़ी पारबती ई या ई ज हंस बद्दा ने छाती रे लगायां फिरती हो।

मतराक में वा छोरी एकाएक चमक न डरगी, भोगग लागी, रोवणी गयगियो व्हे ज्यूं व्हेगी। दोई बतखां ने छाती रे थमटाय, श्रींख्या गळा मूं गैरळी मारती घाट पर मूं भाग गी। कातिचंदर ज्ञान कांई है जांणवा ने बारे निकळिया। देखे तो वां रो दैनो हजूरी हाथ में रीती बंदूक लेय दनतां पै निसाणो ताकियां ऊभो है। कातिचंदर पाछी सूं जाय मूंडागे वस एक रैपट री मारी, हाथ मांयनूं बंदूक खोस लीधी। रंग में भंग पड़गियो हजूरीजी ठांणिया। कातिबाबू मांयो जाय पाछी बंदूक साफ करवा लागा।

!: कातिचंदर रा मन में कुतूळ जागो। किनारो पार कर न, कं का हारी में ल्हेवा एक घर बनै मान हरिया। मोटो आंगणो हो जिणें छोटामोटा घार रा कोटा बेयरिया हा के सारणा पीवना मिनख रो घर है। घरा रा कंवाड़ रे बीचे परसार बाळी वा छोरी, बरमायर एकेंह ने छाती रे लगार गांवड़गी हो, इयुरा कर कर न रोय री ही। घरा रा टूंडा मांयनूं पासो में बी री पड़ो भागो कर कर वीं री थांद में बुहार री ही। कने टेनियोड़ी दिस्री डोडी

सेग रिणां मूं उरिण व्हे जावूं । नजीक नेड़ो तो कोई टाबर लाधियो नी, म्हारा में मतरी मासंग नी के बारे जाय हेरूं । घर में श्रीगोपीनाथजी री मूरती विराज्योड़ी है वा ने छोड़ बारै जावा रो जीव नीं करै।'

कांतिचंदर कहियो 'आप नाव पे श्राय न मिलजो । आपां वात करांला ।' अठी ने कांतिचंदरजी जिग रिग ने ई पूछताछो कांधो, वो या ई कही के वां रे पेढ़ी सुलखणी बेटी दूजा घर में दीवो ले हेरियां नीं लाधे।'

दूजे दिन पिंड़तजी बोट पे गिया तो कांतिचंदरजी वा रा पगां रे हाथ लगाय मिलिया । वां कहियो के वारो टाबरी ने वे खुद परण लेय । अगवेल्या आंगद मूं विरामण रा नैणां में पाणी भर आयो, गळो रुंध गियो, घणी देर तई तो बोल ई नीं फूटियो । वा ने वा रा काना पे भरोसो नी आयो खरायन पूछियो ' म्हारी बेटी रे लारे आप ब्याव करोला ?'

'आप री मन्सा व्हे तो म्हूं राजी हूं ।'

'सुधा रे लारै ?'

'हां ।'

'देला वी ने देख तो लो.........'

कांतिचंदर भोळा बण न बोलिया जाणे वां पैलां कदी देखी ई नीं व्हे । बोलिया, 'ब्याउ' कांई देखूं । सुभद्रष्टि री वेळा ई देख लेवूं ।'

नवीनचंदर भरियोड़ा गळा मूं बोलिया 'सुधा म्हारी बेटी घणी स्याणी समझणी है । घर रा काम काज में तो वी री जोड़ री दूजी नी लाधे । थां वीं ने बिना देखियां परण रिया हो तो म्हारो ई अंतस यूं थाने आसीरवाद है के सुधा सती, सीता अर लिछमी री नांई थां री चाकरी करती रे । एक दिन सारूं ई थां ने ऊनो बायरो नी दे ।

कांतीबाबू केय दीधो के अठे लांबो चगत संचवा मूं कांई फायदो । माह रा म्हीना में सावा पिरप गिया । मजूमदारां री जूनी हवेली में ब्याव मंडियो । थान आई, बींद हाथी रे होदे, मसालां रा चानणा, दारूते ढोलां परणवा ने पौळ पे आय ऊभो रियो ।

सुभद्रष्टि री वेळा बीनणी रो मूंडो बींद देखियो । बीनणी रो परणूं पैसाक में ढांकी हूंकी ही । चंदण मूं चरचियोड़ो मूंडो लाजळ देखणी नीं आयो । पण हिवड़ा रा उछळता कायदा मूं बींद री अखियां चूंघोड़गी ।

सुबावसान आई । मोहल्ला री दासी इरी बींद रा हाथ मूं बीनणी री मदानरी करतो घूंघटो उघाड़ायो, कांतिचंदर मूंडो देखियो तो एक हेडकी जिमक दी । या तो वा नी वीं ने दां देखी ही । मूणगारी र मूनबोरी बोबड़ी मारबे पड़ी ।

पानगपी पे दोई मागता पगां ने मेन पी पंखेरू ने टुगर टुगर देख री ही। छोरी आंगळो ने नाक पे मेन थों लुगाई मिनी ने गमभार री ही के छानी मानो बैठो रे।

गोमड़िया गांम रा दोरा में गुनगुणो रे। वीं माळा घोनघा लोंघा, मांडघा धूंडघा घर रा आंगणा री सोमा, सांति देख कांतिचंदर मारो मून रिया। करणा मूं भरो रळियावणी छब री छाप वांरा हिवड़ा पे छपगी। छीना पानड़ा वाळा रूंख री छाया घर तावड़ो दोई वीं नानकड़ी नाजु पे पड़ रिया जांणे एक दूजा ने पकड़णो चावे पण हाथे नीं आवता व्हे जूं लाग रियो। वनं ई घाटियोड़ी घासां वागोल कर री ही। घड़ी ही मस्त व्हियां। धूंडां सूं माखियां उडाव री ही। उतराद री वायरा रो झोनो भगतो अद वांम रा झाड़ सूं खड़खड़ाट करता आंगें कानां में बातां कर रिया है। आज सुबे नंदी रे कनारे जंगळ में वन कन्या दीख री या अबारूं आंगणा में बैठी साख्यात निदमी सी दीखी।

कांतिचंदर बदूक हाथ में लीधा वीं कन्या रे आगे आंगण में पड़रिया हा। जांणे माल सूधी चोर पकड़ाईज गियो व्हे। मांयनो जीव यंवा लागो के किण तरे ईं ने जताय दूं के म्हारी गोळी सूं थारी बतख घायल कोनी व्ही है। बात चलावे किण तरे या सोच ई रिया हा के कांई हेलो पाड़ियो, 'सुधा!' छोरी चमकी। लारे रो लारे पाछो हेलो सुणिजियो 'सुधा।' वा झट देणी री जखमायल पंखेरू ने लीयां घर में वळगी। कांतिचंदर केवा लागिया 'केड़ा लखण है वेको ई नाम टाळ न राखियो है सुधा।'

कांतिबाबू पाछा फिरिया। बंदूक चाकर ने भळाय थोड़ीक देर पाछे भगवाड़ा सूं आय पोळ रे बारे ऊभा। मांयने एक अधकड़ आदमी बैठो हनुमान चाळीसा रो पाठ कर रियो। बिरामण लागियो। सोडमोड़ माथो, मूंडा पे साति, साधुपणो दीखियो। वां रा मन में दीखवा लागो के छोरी रा करुणा भरिया मूंडा सूं ई गैर गंभीर आदमी रो उणियारो मिले।

कांतिबाबू जैरामजी री कर न कहियो, 'तिस लागी है पिंडतजी म्हाराज। पाणी रो लोटो...... '

पिंडतजी झट देणी रा उठिया, आव आदर कर बैठाया। माय जाय कांसी री वाटकी में थोड़ाक पतासा लाया, पांणी रो लोटियो लाया। बटाउ रे मूंडागे राखिया। पांणी पीधां पछे वां कांतिचंदरजी ने पूछियो, 'आप रो बिराजणो कठे?'

कांतिचंदर आपरो नाम ठाम बताय बोलिया, 'म्हाराज, म्हां लायक कांई काम चाकरी व्हे तो बतावो।'

नवीनचंदर बंदोपाध्याय बोलिया, 'बेटा, म्हारे काम कांई है ओ ब्यावण जोग एक टाबरी है सुधा। वीं रा पीळा हाथ कर दूं तो

पछै वीं ने पूछियो, 'थांरो नाम कांई है ?'

वा तो क्यूं ई बोली नीं, खाली हालवा लागी। सैग कामणियां हो हो कर हँस दीधो।

कांतिचंदर फेरूं पूछियो, 'थांरी बतखां अबै कतरीक मोटी व्हेगी ?' छोरी रै मांत में संको को हो नीं, छानी मानी वीद रो मूंडो देख री ही।

हैरानगत व्हे कांतिचंदर अबकाळे छाती कर पूछियो, 'थां री वा बतख मूल व्हेगी कांई ?

क्यूं न कांई। वठै भेळी व्हियोड़ी नान्हकड़ी नारां यूं हँस री जांणे वीद री भाळी मसखरी व्हेवरी है, श्राप री कौमत श्राप रे हाथां कराय रिया है। छेवट में पूछियां ठा पड़ी के छोरी जनम री बोबड़ी श्रर बैरी है। पसु पंछी ज ई रा संगीड़ा साथीड़ा है। वी दिन 'सुधा' नाम रा हेला सागे मांयनै परीगी जो तो इतफाक हो।

सुणतां ई कांतिचंदरजी रा हिवड़ा पै फूंबा मेलणी श्रायां। जीं रै बिना संसार वांने सूनो दीखरियो हो अबै वी सूं पिंड छूटियो जांण लागियो के गंगा न्हायो। जो ई छोरी रा बाप कनै पूग गियो व्हेतो तो वो जरूर ई छोरी ने म्हारे गळै बांध नीहाल व्हियो व्हेतो। भगवान भली कीधी।

श्रोहूं तांई तो कातिचंदर रो मन मनचीती छोरी रा मोह में आंधो व्हे रियो, वीनणी साम्हा भली भांत झांकिया ई नी हा। ज्यूं ई वां ने लंगे पड़ी के वा छोरी तो बोबड़ी र बैरी है, वां ने यूं लागियो के काळो पड़दो एकाएकम अळगो व्हेगियो। सासा री सांस लेय लाज सूं सुळी जावरी वींनणी रा मूंडा साम्हा जुगती सूं भांकिया। सांचेली सुभद्रस्टी तो अबै व्ही। हिया में चानणो सो ठिटक गियो। मन रा सैग बुझियोड़ा दीवला एकण साथै जग गिया। वा दीवला रो उजाळो एकण ठौड़ भेळो व्है गियो, वी चानणा में दमकवा लागियो सीळ सांति छायोड़ो फूल गुलाबी मुखड़ो। वे टमर टमर झांकता ई रैगिया। मन केवा लागो, वीं रिहन री श्रासीस जरूर फळेला।

▬

सुवागरात री सुखसेज रा फूलड़ा सूळां री चुभवा लागिया। सुवाग मिंदर रा घेरा दीवला बुझ गिया, अंधारो छाय गियो। वीं अंधारा रा काजळ सूं नुवी बींनणी रा मुखड़ा पे ई सांवळी झांई छायगी।

पैलां वाळी बीनणी मरियां पछै कांतिचंदरजी तो मन में झाखड़ी लेय लीधी ही के कदी दूजो ब्याव नीं करूंला पण भाग वां री वीं झाखड़ी ने तोड़ाय एड़ी मसखरी वां रे लारे करेला सपनां में ई वां या नीं जाणी ही! कतरा भाळा सगपण आया पण वां धियान ई नी दीधो। मितरां घणां घणां न्होरा खाया, गरजां कीधी मनवारां कीधी, पण मानिया नीं। मोटा मोटा ठिकाणां सूं सगपण व्हे जावा रा लोभ ने वां ठाकियो, धन सामा वे नीं भांकिया, रूप रा मोह फंसियोड़ा मन ने ई वां समझायो। देवट में जावता परणिया एक रांखड़िया गांम में, कांजी र कादा सूं भरी नेहर रे किनारे, एक गरीब बिरामण रे घरे जीं ने कोई ओळखे पिछांणे ई नीं। वाह रे करम! लागती बिलगनी रा नें, मितरां ने, पांच बरोबरिया ने मूंडो कांई बताय अबै।

पैलां तो रीस चढ़ी सुसरा पे, 'आछी धींगाडोई कीधी म्हारे सागे! बताई दूजी छोरी परणाई दूजी छोरी।' पण पाछा आपी आप ई कैवा लागा, 'ब्याव रे पैलां तो वां लड़की देख लेवा ने आगे व्हे न कहियो हो, म्हूं ई ज नट गियो तो पछै वां में कांई दूसण। हाथां कीधा कामड़ा की ने दीजे दोस। अबै कैंणो न सुणणो कहियां मिनख मांरा री ई हांसी करेला।'

कड़वी ओखद ने गन तो लिया पण मूंडा रो सुवाद बिगड़ गियो। सुवाग रात री हंसी मसखरियां मगसावणी लागवा लागी, बींदणी री हथेळियां री मेंदी ई सुंवाई नीं, साळियां पर गाळाहेलियां रा सुवरा ई अखूणा लागिया। पार रे माथे पर दूजां रे माथे एड़ी रीस भाय री ही के दांत मांयने भींटो रड़ री ही।

मनराक में, वा रे कनें बैठी बींदणी, डरप, भीप्योड़ा गळा सूं ईं ईं कर ने बमकी। कणाणां कठा सूं मूं गिया री बचो फरणो घणो बी री खोळा मांयने ह्रेनो मार लियो। सारे री सारे वीं दिन वाळी छोरी, मूंगिया रा बस्ता मारे आवणो घणो चाई। मूंगिया ने खोळा में लेय न [illegible] रे [illegible], [illegible] झळोळी [illegible], प्यारिया लेवा लागी। घरे बैठा [illegible], घरे बैठा [illegible] बैंनी घणो [illegible] [illegible] वीं ने [illegible] आखा ने हाथां सूं [illegible] लागी। [illegible] वीं [illegible] ने कांई ब परवा नीं, [illegible] बींदणी रे [illegible] मूंडा [illegible] न [illegible], [illegible] री वांरे [illegible] [illegible] कांई [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] लिया, "[illegible] दो, [illegible] दो।"

पछै वीं ने पूछियो, 'थांरो नाम कांई है ?'

वा तो क्यूं ई बोली नी, खाली हालवा लागी। सैग कामणियां ही ही कर हँस दीवी।

कांतिचंदर फेरूं पूछियो, 'थांरी वत्तलां अबै कतरीक मोटी व्हेगी ?' छोरी रे मांख में संको को हो नीं, छानी मानी बीद रो मूंडो देख री ही।

हैरानगत व्हे कांतिचंदर मवकाळे छाती कर पूछियो, 'थां री वा वत्तल भूल व्हेगी कांई ?

क्यूं न कांई। वठै भेळी व्हियोडी नान्हकडी नारां यूं हँस री जांणे वींद री म्हाळी मसखरी व्हेयरी है, म्राप री कौमत म्राप रे हाथां कराय रिया है। छेवट में पूछियां ठां पड़ी के छोरी जनम री बोबडी म्रर बैरी है। पमु पंछी ज ई रा संगीडा साथीडा है। वीं दिन 'सुधा' नाम रा हेला सागे मायने परोगी जो तो इतफाक हो।

सुणतां ई कांतिचंदरजी रा हिवडा पे फूंबा मेलणी म्राया। जी रे बिना संसार वां ने सूनो दीखरियो हो ग्रबै वी यूं पिंड छूटियो जांग लागियो के गंगा न्हायो। जो ई छोरी रा बाप कनें पूग गियो व्हेतो तो वो जरूर ई छोरी ने म्हारे गळे बांध नीहाल व्हियो व्हेतो। भगवान भली कीधी।

म्रोळूं दाई तो कांतिचंदर रो मन मनचींती छोरी रा मोह में म्रांधो व्हे रियो, बीनणी साम्हा भली भांत झांकिया ई नी हा। ज्यूं ई वां ने मंगे पड़ी के वा छोरी तो बोबड़ी र बैरी है, वां ने यूं लागियो के काळो पडदो एकाएकम मळगो व्हेगियो। साला री सास लेय लाज मूं मुळी जावरी बीनणी रा मूंडा साम्हा जुगती यूं भांकिया। सांवेली सुमद्रष्टी तो ग्रबै व्ही। हिया में थानणो मो दिटक गियो। मन रा सैग बुलियोरा दीवला एकण सागै जग गिया। वो दीवलो रो उजाळो एकण ठौड भेळो व्हे गियो, वीं थानणा में दमकवा लागियो सोळ सालि छायोडो फूल गुलाबी मुखडो। वे टमर टमर झांकता ई रैगिया। मन केवा लागो, वीं सिद्ध री म्रासीस जरूर फळैला।

अपूर्व लाजां मरगियो। गाबा हड़कानो भट उठियो। चारूं आडी नै मांकवा लागियो। वीं देख्यो के कनारा माथे जठै नाव पर मूं बाणिया री ईंटा ऊतार ऊतार न एक जगा भेळी कीधी है, वां ईंटा माथे एक छोरी हँसती हँसती ऊंची व्हियां जाय री है।

अपूर्व मोळख सीधी वा वीं री नुवीं पाड़ोसण री बेटी मृण्मयी है। पैलां तो यां रो घर घठा मूं घणो दूरो मोटी नंदी रे तटां पे हो। पण दो तीन बरस व्हिया नंदी री बाढ़ रे दुखां यां ने वो घर छोड़ मठै मावणो पड़ियो।

ई छोरी री वातां चोखी सुणवा में नी आवे। गांम रा मोटयार तो इ नै लाड सूं बावळी कैवे पण लुगायां वीं रा फटोळ सुभाव सूं मन में चमकती रे अर घणां वेम राखे। वा रमे तो गांम रा छोरां रे लारे ई ज, हमउमर छोरियां लारे तो वीं री पटे ई ज नीं। टाबरां रा राज में तो या छोरी दुसमणां रा हल्ला ज्यूं लागती।

बाप री लाडली बेटी री जो किण री ई डर भौ तो उण नै रियो नी। मृण्मयी री मां आपरी सायणियां में बैठती जदी वा आपरा धणी री सिकायत करबो ई ज करती के वां बेटी नै लड बावळी कर राखी है, माथे चढ़ाय राखी है। पण बेटी नै वा ई घणो कांई केंवतो काजती नीं। वा जाणती के बेटी री प्राख्यां में प्रांनू देख न बाप रा काळजा पे कतरणियां चालवा लागे। धणी परदेस गयोड़ो है, बेटी नै धाकलतो तो परदेस गयोड़ा धणी री याद आय जावती के वे अवार मठे व्हेता तो कांई कैवा थोड़ा ई देवता। ई री आंख्यां रा प्रासू वां ने वठे बैठिया ने पीड़ा पुगावेला।

मृण्मयी री रंग सांवळो है। छोटा छोटा घूंघरवाळा केस कड़ियां पे पड़िया रे। मूंडा पे बिलकुल ई टाबर पणो। मोटीमोटी काळीकाळी प्राख्यां में नीं तो लाज सरम, नीं डर भौ, हाव भाव रो कोई नाम ई नी। डील लाबी रास रो, दौलड़ां हाडां री, सबळी देही। उण री उमर कत्ती है के ओछी, यो सुवाल तो किरा ई मन में आवे ई ज नी। जै यो सुवाल किरा ई मन मे आवतो तो मिनख वातां कीधां बिना थोड़ा ई रैवता के 'मोटी व्हेयगी, ब्याव रो पत्तो पत्तो ई नीं।' गाव रा जमीदार री, जद कदी नंदी रा घाटा पै आय नाव लागती तो आखो गांम जमींदार री सरभरा में लाग जावतो। लुगायां मूंडा पै लांबा लांबा घूंघटा खेंच लेती। पण मृण्मयी ने कांई परवा नी, वा तो कोई उघाड़ा पुघाड़ा छोरा छोरी ने कांख में घाल्यां, कड़ियां तांई घूंघरिया केसां ने विखेरिया आय ऊभी रैवती। जी मुलक मे कोई सिकारी नीं व्हे, कोई डर भी नीं व्हे, वठा रा बाखोटिया किण मूं ई चमके नी, डरपे नीं। मृण्मयी वस्या देस री मोडियाण री

नाई निरभै घणी मोटी मोटी पांख्यां में झुलुक भरियां टमर टमर देखतो करती। घटा सूं भाणी जाव पारखा बाळ गोडियां बीचे बैठ वां नुवा मिनख री हानी चानी री बातां पटाव पटाव वां ने सुणावती।

मपूर्वकुमार छुट्टियां में घरे आयो जद दो चार दाण ई छूटनळा छोरी ने पैना ई देखी ही। ठाने बेठा ई वीं देखी ही, काम रे वास्ते ई वी देखी ही। छोरी देखी ज नीं ही वी विचार ई कीधो हो। यूं तौ धरती माथै अनेकानेक उगियारा देखवो करां पण कोईक उगियारो एड़ो व्है है के देख्यो नीं के काळजा में ऊंडो गड़ग्यो नीं, काढ्या बारे कढे नीं। रूप रे पूंदड़े यूं व्हेतो व्हे जो बात नीं, वा तौ कांई सिफत ई ज घणेरा व्है। बदायन वा मिनख मुळकदार व्हेगी जावे। घणां सरा उगियारा माथै परकरती री आभा पूरी झलके कोयनी। हिवड़ा री मुळक-ताई भर परकरती री आभा सूं जो उगियारो पळका करे वो लाखां उगियारा में छिपियो नीं रे, आंख्यां आगे आवतां ई हिवड़ा में कोरणी माल जावे। ई छोरी रा उगियारा पे मारुया में घणपळो बैठी परकरती नारी री आभा पळकती रैं। वा वन रा अगला री कांई सुळी भागती रे, रमती फिरती रे ज्यूं ई ज एकर वीं रो पांणीदार अघराळो उगियारो देखियां पछे सोरे ई नीं भूलगी जावे।

मृण्मयी हंसी जो मीठी भलां ई घणी व्हो पण बापड़ा मपूर्व रा जीव ने तो दुखायां ई ज। लाजां मरता रो वीं रो मूंडो लाल बूंद व्हेगियो। हाथ मायलो बेग नावड़िया रा हाथ में झेलावतो ई वो तो मूधो घर रो गेलो पकड़ियो।

मौसम ई रळियावणो हो। नदी रो तट, रूंखा री छायां, चड़कलियां रा मीठा मीठा गीत, परभात रो सुंवावतो सुंवावतो तावड़ो सगळां ऊपर बीस साल री मोस्या। ईंटा रो ढगलो मलवता बखाण करा जेड़ो नीं हो पण वीं माथे मानस कन्या जो बेठी ही। ईंटा रा करड़ा आसण पे ई वीं रा रूप रो उजाळो छाय रियो हो। एड़ी रळियावणी वेळा में पग देवतां ई अपूर्व रा कविपणा री रोळ उडगो।

[२]

ईंटा रे ढेर ऊपर सूं हंसी सुणतो सुणतो, कादा सूं भरिया गाबा ने भवेरतो, वेग लीधां अपूर्व घरे पूग्यो। अचाणचक्को बेटा ने देख विधवा मां घणी राजी व्ही। वीं ज वगत आदमी दौड़ाया, मावो, दूध, दही, माछळा लेन आवा ने। आड़ा पाडा में हालोमेलो लागगियो।

जीम्यां चूंट्यां पछे मां बेटा रे आगे सगपण रो चरचा चलाई। अपूर्व जाणतो हो के या चरचा चालेला। वडाळा तो पेलां रा ई आयोड़ा हा पण बेटा ने नुवा जमाना री वायरो लागगियो जो वो अड़्यो बेठ्यो, के बी॰ ए॰ पास

कर न ब्याव करूंला। अबै बी० ए० पास कर न मायगियो हो जो अबै आगे पाछे व्हेवा री गुंजाइस ई नी, जे व्हेतो साफ आळखा लेणां है।

अपूर्व बोलियो, 'पैलां लड़की तो देखो, पछे देखी जाय।'

मा बोली 'लड़की तो देख राखी है, थूं सोच मत कर।'

अपूर्व बोलियो, 'लड़की देख्यां बिना म्हूं तो ब्याव नी करूं।'

मां विचारवा लागी, 'एड़ी अणव्हेणी वात आज ताईं नी तो देखी नीं सुणी।' पण राजी व्हेगी।

रात रा, दीवो बड़ो कर न अपूर्व बिछाणां माथे जाय पड़ियो। पड़तां ई मीठा गळा री हंसी री ऊंची अवाज वी रा कानां मे भणकवा लागी।

दूजे दिन अपूर्व ने लड़की देखवा ने जावणो हो। कोई घणो दूरो नीं, वास में ई ज लड़की वाळां रो घर हो। चतराई सूं गाभा पैरया। धोवती दुपट्टो नी पैरयो। रेसम री अचकण अर पतलून पैरयो। माथा मे रईसाना तरज री गोळ पागड़ी बांधी। पगां मे रोगन वीधा पळका करता बूंट पैरया। रेसमी कपड़ा री मूंघा मोल री छतरी हाथ में लेय, चाल्यो। व्हेवा वाळा सासरा मे पधारतां ई आव भगत, मान मनवार री धज बंधगी। लाडी रो काळजो धगधग कर रियो पण सिणगार सिणगूर, पैराय ओढाय, माथा मे चोटी गूंथ गूंथाय, झीणी ओढणी में पळेट न लाडी ने लाडा रे मूंडागे लाया। बापड़ी लडकी एक खूंणा मे गोडा बीचे माथो घाल काठ रा कुंवाड़िया ज्यूं बैठी री। वी रे पाछे हीमत देवावा ने एक मथकड़ दासी ऊभी ही। लडकी रो एक भाई जो टाबर ई हो, घर में आयोड़ा ई आदमी री पागडी ने घडी री चैन ने टुगर टुगर देख रियो हो।

अपूर्व थोड़ी देर मूंछ्यां पे हाथ फेर न बड़ो टावो व्हे न पूछ्यो 'काईं पढो हो ?'

गैणां कपड़ा सूं लदियोड़ी लाज री गांठड़ी अपूर्व रा सवाल रो कोई जवाब नीं निकळ्यो। वा मथकड़ डावड़ी पाछे ऊभी मोर थोड बोलवा री हीमत देवावती आयरी ही। दो चार दांण पूछ्यां पछे धीरेकरो साद निकळ्यो, 'कन्या बोधिनी दूजो भाग, व्याकरण सार, भूगोल, अंक गणित, भारत वर्ष रो इतिहास।' एक ई सास में बोल न साता री सांस लीधी।

अतराक में तो बारणे किरा ई भागता आवता पावां रा पग सुणीज्या। दूजे ई पल भागती थकी, मोरां पे केस बिखेर्यां मुएमरो आय ऊभी री। माथ ऊंची कर न अपूर्व साम्हो झांकी तक नी। वा तो सूधी व्हेणवाळी लाडी रा भाई रासार कनें पूगी, वीं रो हाथ पकड़ न खेंचवा लागी। रामाल वीं बगत व्हेणवाळा लाडा साहो ने देखवा रो मजो लेदरियो हो। वा हाथ छैचे घर को सरके नीं। दासी आपरा गळा ने मीच, साद मुधरो कर मृण्मयी ने धमकारा

मूंडा पे भुक, वी री मचपळी आंख्यां में आंख्यां घाल झाक्यो। पछे धीरेकरी मुट्ठी ढीली कर न बंधण में बंधी मृणमयी ने छोड दीधी। मपूर्व रीस मे श्राय न टोकतो तो मृण्मयी ने नांई ज अचंभो नी आवतो। पण ई मुणमाण गैला में ई अजब डंड रो अरथ वा कांई ज नीं समझी।

नाचती थकी परकरती रा रमझोळां री झम्मक जेडी वा हांसो एकर पाछी आभा में गूंजगी। चिंता में डूबियोड़ो अपूर्व धीमा धीमा पगलिया भरतो घरे वळियो।

अपूर्व वीं दिन भांत भांत रा आळखा लेय नीं तो घर रे मांयने गियो, नी मां सूं ई मिलियो। कठा रो ई नूंतो हो जो वठे ई ज जीम आयो। अपूर्व जेड़ो भणियो गुणियो, ठावा सुभाव रो जुवान एक मामूली अणभणी छोरी रे मूंडागे आपरी गयोड़ी इज्जत ने पाछी जमावाने अर आपरो बड़ापणो बतावाने अतरो आगतो क्यूं व्हेगियो, समझ मे नी आवे। राखड़िया गाम री एक मचपळी छोरी वी ने मामूली मिनख समझ लीवो तो व्हे कांई गियो? पैलां तो एक पल सारू वीं अपूर्व री कौगत कीवी पछे अपूर्व री हस्ती ने ई भूल राखाल जेड़ा अण समझ टाबर रे लारे खेलवा में लागगी तो ई मे अपूर्व रो बिगड़यो कांई? या टाबरा रे आगे वीं ने बतावा री जरूरत ई कांई ही के 'विश्वदीप' जेड़ा म्हीनावार अखबार मे वो समालोचना लिखे है। वी री पेटी रे मांयने ऐसेंस, बूंट, पाती लिखवा रा रंगदार कागज पडिया है। 'हारमोनियम शिक्षा' पोथी रे लारे एक पूरी त्यार कीयोड़ी प्रेम कापी पड़ी है जो आधी रात रा आगन में भोभरका री नांई, छपवा री वाट नाळ री है। मन ने समझावणो दोरो व्हे। ई गांमडेल, मचपळी छोरी रे आगे श्री अपूर्वकुमार राय बी० ए० हार मानवा नै त्यार नीं।

सांझ रा अपूर्व घर रे मांयने गियो तो मां पूछ्यो, 'लड़की देख आयो कांई? कसीक है, दाय आई के नी?'

अपूर्व थोड़ोसोक सरमावतो बोलियो, 'हां, देख आयो। वां मांयली एक लड़की म्हारे दाय आयगी।'

मां अचूंक अचंभो कर न बोली, 'कतरीक लड़कियां देखी थें बठे? दो चार उत्तर पड़ूत्तरां पछे मां ने ठा पड़ी के वीं रा बेटा रे, पड़ोसण शारदा री बेटी मृण्मयी दाय आई है। अतरो भणगुण न या पसंद।

पैलां तो वो सरमावतो रियो पण मां वीं री पसंद ने बिसरावा लागी तो वीं री सरम भळगी व्हेगी। जिद मे आय वीं तो मन नांई केय दीवो के मृण्मयी रे सिवा दूजी ने तो म्हूं परणूं ई ज नीं। वीं ने बताबोड़ी बाळ री गुड़िया

जेड़ी लड़की रो ज्यूं ज्यूं नजीक आवतो ज्यूं ज्यूं परणवा सूं मन फाटवा लागतो।

दो तीन दिनां ताईं मां बेटा एक दूजा सूं मणमणा रिया। मां खावणो, पीवणो, सोवणो तक बंद कर दीधो पण जीत बेटा री ज व्ही। मां आपरा मन ने मोळायो के मृण्मयी ओजूं टाबरी है, वीं री मां री धामंग नीं है। वीं ने मनावा पटावा री। परण घरे आयां पछे वा वीं ने सुधार लेय। धीरे धीरे वीं ने दीखवा लाग गियो के मृण्मयी रो मूंडो ई फूटरो है। पण वीं रा कोजा केसां री याद आवतां ई मन मणमणो व्हेगियो पण पाछो मन ने समझायो के ठीक तरे सूं जूड़ो बांधियां, आछी तरें तेल घालियां या वगर ई सुधरणी आय जावेला।

पाड़ापाड़ा रा सैंग मिनख अपूर्व री इण पसंद ने 'अपूर्व पसंद' केवा लागा। बावळी मृण्मयी रा लाड तो घणा जणां करता पण वीं ने आपरा बेटा ने परणावा जोग नी समझता। मृण्मयी रा बाप ईशानचंद्र मजूमदार ने समीचार घाल दीधा। वे एक स्टीमर कंपनी रा मैनकार हा। वे एक नंदी रे किनारे छोटाक टेसण पे टिगट वेचता। पतरड़ा छाई लगी ओवरी में माल लदावा रो उतरावा रो काम करता। देस सूं बेटी रा सगपण रा समाचार मिलिया तो दो ई आंख्यां सूं घरघर पांणी पड़वा लागियो। वां आंसूवां में कतरो दुख हो अर कतरो आणंद हो उण रो अंदाजो लगाणो दोरो है।

बेटी ने परणावा ने ईशानचंद्र वड़ा दफ्तर में सा'ब कने सीख री अरजी भेजी। सा'ब ईं काम ने मामूली समझ सीख नामंजूर कर दीधी। वां घरे समीचार भेज्या के दसरावा पे एक अठवाड़ा री छुट्टी मिलेला जद ब्याव मांडाला।

अपूर्व री मां पाछो लिखियो, 'ईं म्हीना रो सावो आछो है आगे ब्याव नीं डिगावूं।'

दोई कानी सूं अरजियां ना मंजूर व्हेगी तो दुखी बाप कांई नीं बोलियो, हमेसा री नाईं माल तोलवा लाग गियो, टिगट बेचवा लाग गियो। अठी ने मृण्मयी री मां अर आखा गाम रा दाना बूढा सब जणां मिल मृण्मयी ने नसीता देवा लागिया आवावाळा दिनां में कांई करणो है। रात दिन सीख लागती रेती। वीं ने अकल देवता के बोलणो नी रमणो नीं, छोरा रे सागे खेलणो नीं। सांतरो सांतरो नीं चालणो। ही ही करन हंसणो नी। भूख लागे तो खावा ने नीं मांगणो। जो देखो जो ई अकल देवतो रेवतो, यो ई मतकर, यो ई मतकर। यूं ई मत चाल। मनमांनी अंट संट नसीतां कर कर मृण्मयी आगे तो ब्याव रो भूत ऊभो कर दीधो।

खुली फिरियोड़ी मृण्मयी तो जाणियो के बस जलम केद री सजा देय रिया

है पछे फांसी पे टांक देय। वा तो खोड़ीली मूंडा जोर रोंड री नाईं अड न कभी रैंगी के म्हूं तो नीं परणूं, जावो।

[४]

परणणो ई पड़ियो। अबै सिखावां लागवा लागी। अपूर्व री मां रे घरे आवतां ई पैलोड़ी रात में ई मृण्मयी री सारी दुनिया जांणे कैद मे बंद व्हेगी। सासूजी बीदणी ने आंगन में राखवा लागा। वां घणां करड़ा व्हेय न बीनणी ने कियो 'देखो लाडी, थां कोई बोबो घूंघटा टाबर नीं हो। म्हारा घर में यो फटोळ पणो चालवा ने नी है।'

सासू जीं भाव सूं वे बातां कही ही मृण्मयी वी रो असली अरथ नीं समझी। वी जांणियो यां रा घर में नी चाले तो कोई दूजी जायगा जावणों पड़ेला।

दुपेरा में बीनणी घर में दीखी नीं। 'बीनणी कठै परी गी, बीनणी कठै परी गी' हेरो पड़ गियो। छेवट में राखाल विस्वासघात कर न छिपवा री जायगा बताय वी ने पकड़ाय दीधी। वा तो बड़ला रे नीचे पड़िया राधारांनजी रा टूटोड़ा रथ रे नीचे जाय न छिपगी ही।

सासू, मां, पाड पाड़ोसणियां, भली चावणियां धाकलवा लागी। वा कनरी घालती व्हेला, मांजनो पाड़ियो व्हेला जो तो आप ई अंदाजो लगाय लो।

रात ने बादळा घूब घड़ गिया। झरमर झरमर मेहूलो बरसवा लागियो। अपूर्व धीरे धीरे मृण्मयी रा ढोल्या कने जाय वी रा कान नके मूंडो ले जाय न बोलियो 'मृण्मयी, म्हूं थनें साऊ नीं लागूं कांई ?'

मृण्मयी बीजळी री नांई कड़की, 'नीं नीं, म्हनें बिलकुल साऊ नीं लागो।' वां तो आपरी सगळी भेळी व्हियोड़ी रीस अपूर्व रे माथे काडी।

अपूर्व घणो दुखी व्हेन बोलियो, 'क्यूं, म्हें थारो कांई कसूर कीधो ?' कसूर री बातें वा कांई बतावती। अपूर्व मनोमन धार लीधी के ई बाळेलिया व्हियोड़ा मन ने थारे ज्यूं म्हो लारे करणो है।

दूजे दिन सासू, बीनणी ने ओरड़ी मांयने देय सांकळ में ताळो जड़ दीधो। पींजरा में फसियोड़ी चिड़कली री नांईं घणी देर तांई वा फफड़ाटा करती री। आपरा ने कठे ई देखी नीं लाधो तो बिछाणां पे रीस काढी। दोनां मूं [illegible] [illegible] [illegible] रा पोंचड़ा पोंचड़ा कर फेंक दीधा। ऊंधे मूंडे धरती पे [illegible] [illegible] कर कर रोवा लागी।

धीरेकरो अपूर्व वीं रे कने आय न बैठ [illegible], घणा हेत सूं दूजा पै [illegible] बेरा ने दाबा पर मूं दूजा करवा लागो। मृण्मयी रो [illegible] [illegible]

रो हाथ ने परमो कर दीधो।

अपूर्व धीरेकरो वीं रा कान कने मूंडो ले जाय न घणा ई ज मिठास सूं बोलियो, 'म्हें छानेकरो माडो खोल दीधो है। चाल, आंपां पछोकड़े बाड़ी में भाग जावां।'

मृणमयी जोर सूं रोवती थकी गाबड़ भंझेड़ी, 'नीं।'

अपूर्व वीं री ठोडी ने ऊंची कर न बोलियो, 'देख तो खरी, यो कुण आयो है।' राखाल मृणमयी ने धरती पे पड़ी देख चकरायो थको बारणा री डेळी पे ऊभो हो। मृणमयी तो मूंडो ऊंचो ई नीं कीधो, झटको देय अपूर्व रा हाथ ने अळगो कर दीधो।

अपूर्व पाछो बोलियो, 'देख तो खरी, राखाल थारे सागे रमवाने आयो है। खेलवा ने नीं जावेला ?'

'नीं।' मृणमयी रीस में ई ज बोली।

राखाल देखियो या तो कांई गड़बड़ है, भाग गियो घर बारणें। अपूर्व छानो मानो बैठियो रियो। मृणमयी रोवती रोवती थाक न सोयगी तो अपूर्व उठियो माडो जड़ बारणे सांकळ लगाय वठा सूं परो गियो।

दूजे ई दिन मृणमयी ने बाप रो कागद मिलियो। बाप आपरी काळजा री कोर बेटी रे ब्याव में नीं आवा रा घणां घणां विलाप लिख न बेटी जंमाई ने घणी आसीसां लिखी।

मृणमयी सासू कनैं जाय न बोली, 'म्हूं तो बापूजी कनैं जाऊंला।'

सासू बींनणी री अचाणचकां री अणहोणी अरज सुण न धाड़ल दीधी, 'बाप रो बठै ई ठोड़ ठिकाणो ई है के यूं ई बापूजी कनै परी जाय। थारी तो तीन लोक सूं ई मुधरा न्यारो है। म्हनें नीं सुंवावे ये अगूंता लाड।'

बींनणी कांई बोली नीं। ओवरा में जाय मांयनूं माडो जड़ लीधो घर छीमजहार मिनख री नांई रोवा लागी, भगवान रे हाथ जोड़वा लागी। रोवा लागी बाप ने कर कर याद, 'ओ बापूजी, म्हनें आय न ले जावो रे, अठे म्हारो कोई नीं है रे, म्हूं मर जाऊंला रे।'

घणी रात परी गी, आंगिदो के मबे तो पागळियो सोवणियां देखा। बा छटी छानेकरी सारो सोसियो, सारै निरखणी। यूं तो बारळिया आसा रै दार री ही पण तो ई ऐसो दीनै घणरी चांदणी परी हां। बाबूजी कनैं जावा री ऐसो कण्यो बो बा जाणै नी। बा तो घणोड जाणती ही के बी गैरे दाह मे बारणियां बांकिया बाजै है बो ऐरा सूं दुनिया में बठै ई पड जावो। मृणमयी तो डाकगाड़ी री ऐडो पकड़ लीनी। कांकड़ में एक दो दंडेक डोकड़ा फड़फड़ार न बोलवा

बाळा हा पण वगत री पक्की टा नीं पड़वा सूं बोलिया नी दीखता हा। वी वेळा रा मृण्मयी गैलो खतम व्हेतो हो वठे नंदी रे किनारे जाय पूगी। चौवटो सौ दीखियो। वा मन में सोच री ही के अबै कठो ने जावूं अतराक में तो जांणी पिछाणी 'झमझम' री अवाज सुणी। थोड़ी देर में तो कांधा पे डाक रो थैलो लटकायां हांफतो लगो डाक रो हलकारो आय गियो।

मृण्मयी भागती थकी वी रे कने जाय न दया आय जावै एड़ा साद में बोली,'म्हनें म्हारा बावू कनें कुसीगंज जावणो है, थां म्हने साथै लेता जावो नी ?' हलकारो बोलियो, 'म्हूं नीं जाणूं कुसीगंज कठै है।' दो टप्पा जुवाब देता ई वो तो घाटा पै परोगियो। घाटा पे बांधियोड़ी डाक री नाव पै बैठ न नावड़िया ने जगाय नाव खोलाई। वी वेळा वी ने पूछवा ताछवा री के कीं पै ई दया बतावा री फुरसत थोड़ी ही।

देखता देखता जगैरो व्हेगियो, चौवटा में बजार में मिनखा रो हेरौ फेरो व्हेगियो। मृण्मयी घाटां पै जाय न एक नावड़िया ने पूछियो, 'म्हनें कुसीगंज ले चालोला।

नावड़ियो कांई बोले जठां पैलां तो पासे पड़ियोड़ी नाव में बैठिये थके कोई पूछियो, 'अरे, कुण ? मीनूं बेटी, थूं अठे कस्या आई ?'

: मृण्मयी घणी ज आगती व्हे न बोली, 'बनमाळी, म्हूं बाबूजी कनै कुसीगंज जावूंला, थूं म्हनें थारी नाव पे ले चाल।'

बनमाळी वीं रा ई ज गाम रो नावड़ियो हो। वो ई उछांदळा सुभाव री छोरी ने भली भांत ओळखतो हो। वीं कहियो 'बाबू कने जावेला के ? चाल म्हूं थनें पूगाय दूं।

मृण्मयी नाव पे चढ़ गी। नावड़िये नाव छोड दीधी। बादळा चढ़ रिया बरखा री टूक पड़वा लागी। सावण भादवा री नांई डाबपूर चढ़ियोड़ी नंदी उछाळा खाय खाय नावड़ा ने झंझेड़वा लागी। मृण्मयी रो सारो डील थकैला सूं भर नींद सूं भांगवा लागो, आंख्यां नींद रा बोझा सूं नमगी। वा तो पलो बिछाय नाव में पड़गी। पड़तांई वा उछांदळी चाळागारी छोरी, सोवगी। नंदी हीड़ा देयरी ही अर वा परकरती री गोद में लाड सूं उछेरिया थका ल्हांरा टाबर री नांई निसंक व्हेय सोयगी।

आंख्यां उघड़ी तो देखे सासरा रा घर में माचा पै पड़ी है। वीं ने जागती देखी तो डावड़ी बड़बड़ करवा लागी। वी रो बड़बड़ावणो सुणनांई सासू ई आर ऊभी री अर सगूण जीनावा लागी। मृण्मयी आंख्यां फाड़ियां छाती मानो सासू रो मूंडो देखती री। सासू तो सुणाय सुणावती मृण्मयी री पीढियां कोड़वा

बाळा रा मन में जमता जाय रिया।

दूजे दिन संझ्या रा नाव कुसीगंज पूगी।

पतरड़ा छायोड़ी एक सूगली लालटेण बाळ नान्हीक डेस्क माथे चामड़ा री जिल्द वाळो चोपन्योमेल, उघाड़ा पुघाड़ा बैठ्या ईशानचंद्रजी हिसाब मांड रिया। गुंवा परणिया बींद बीदणी झूंपड़ा में पधारिया।

मृण्मयी हेलो पाड़ियो, 'बापूजी।'

बीं झूंपड़ा में आज तांई गळा रो एड़ो साद कदेई नी सुणवा में आयो हो। आणंद अर मोह सूं ईसान री आंख्यां सूं टप टप आंसूड़ा टपकण लागिया। बेटी जमाई जांणे मुलक रा कंवर कंवराणी है अबै वो पटसण री गांठां बीचे बीरे गादी कठे लगावे, यो विचार करता करतां बीं री अटकियोड़ी अकल और बती भटक गी। जीमावा चूंटावा रो काई करे, ई री चिंता और सिवाय लागगी। बापड़ो गरीब कामेती हाथ सूं रोटी टेक लाय लेवतो। पण आज मूंघा पावणा री मनवार काई करे।

मृण्मयी बोली, 'बापूजी, आज आपां सैंग जणा मिल न रसोई बणावां।' या बात अपूर्व ने घणी ज दाय आई। बीं छोटाक झूंपड़ा में जगा रो टोटो नी हो। टोटो हो मिनखां रो, अन्नदेव रो। छोटा बेचरा मांयनूं पाणी रो फुंवारो छोड़ण वेग सूं छूटे ज्यूं ईसान री गरीबी रा सांकड़ा बेचरा मांयनूं आणंद रा फुंवारा जोर सूं छूटवा लागा।

यूं करता तीन दिन निकळ गिया। दिन में दो दाण नाव पे जहाज आय न किनारे लागतो, पंथी आवता जावता, हाको हल्लो व्हेतो। सांज व्हेतां व्हेतां नंदी किनारा रो हाको हड़बड़ सब मिट जावतो तो अपूर्व ने घणो सुनो सुनो लागतो, पाजाड़ी दीसती। तीनूं जणा मिल न रसोई करता, [illegible] जावता बाई तो बणावता न बाई बण जावतो। [illegible] करतो बूढ़ियाबाळा हाथां सूं मृण्मयी जीमण परूसती, सुसरा जमाई साथे बैठ न जीमता। मृण्मयी ने काम करणो नी आवतो जो बीं री हंसी करता जावता। वा राजी टाबरां री नाईं भड़ती लगड़ती आपरा काम रा बखाण करती। सबड़ा ने घणो मजो आवतो।

अपूर्व बाबा री सीख मांगी। मृण्मयी [illegible] दो-चार दिन और रैवा री अरदास करवा लागी पण ईशान बोलियो के नी, अबै थें जावणो चाईजे।

सीख देवतां वेळा ईशान बेटी ने छाती रै लगाय माथा पे हाथ फेर, डोकरे री आंसू भरियां सबदां बेटी ने आशीष दीधी, हौंसलो दीधी, 'बेटा, [illegible] थूं थार जावणो करजे, जिणसूं बात न रैवे। कोई काम एड़ो मत करजे के म्हारे मोनू केवा में कोई बांक आवे।'

मृण्मयी रोवती रोवती परणिया रे लारे व्हेगी । ईशान कोण टेगा पड़ियोड़ी झूंपड़ी में पाछो घाणी रा बळद री नांई काम में लाग गियो ।

[६]

दोई कमूरवारां री जुगलजोड़ी पाछी घरे आई तो मां किण सूं ई बोली नीं । मूंडो चढ़ायां बैठी री । मां दोवा मायनूं कीं रे ई माथे कोई दोस नी लगायो, कीं रो ई कोई वांक नी काढ़ियो जो वा ने सफाई देवा री जरूरत ई नीं पड़ी । दोई माडी ने मून धार रियो, मन में करड़ा व्हेयरिया ।

छेवट में अपूर्व ने मून तोड़णो पड़ियो, 'मां कालेज खुल गियो । अबे म्हनें कानून भणवा ने जावणो है ।'

चित भंग व्हियां थकी मां बोली, 'बींनणी रो कांई करेला ?'

'अठै ई रेवा दे ।'

'नीं, बेटा, म्हारे नीं राखणी । था थांके लारे ई रियां जावो ।'

यूं मा हमेसा अपूर्व ने 'थूं' केय न बतळावती ।

अपूर्व ई ऐंकार भरियो बोलियो, 'अच्छा ।'

कलकत्ता जावा री त्यारियां व्हेवा लागी । जावा रे एक दिन पैलां रात रा अपूर्व सोवा ने साळ में गियो तो देखे मृण्मयी बिछाणा पे पड़ी रोय री है ।

अपूर्व ने अवचाई आई, दुखी व्हेन बोलियो, 'मृण्मयी म्हारे सारे कलकत्ता आवा रो थारो जीव नीं करे ?'

'नी ।'

'म्हूं थने आच्छो नीं लागूं ?'

ई सवाल रो कांई जुवाब नीं मिलियो । यूं देखो तो एड़ा सवाल रो जवाब देणो घणो सोरो व्हेवो करे । पण कदी कदी मन री गुत्थी एड़ी उळझियोड़ी व्हे के छोरियां सूं ई रो वाजिब जवाब देवणो दोरो व्हे जावे । अपूर्व पूछियो, 'राखाल ने छोड़ न थारो जीव अठासूं जावा रो नीं करे ?'

मृण्मयी घणी सोरी बोलगी, 'हां ।'

ई बी. ए. तांई भणियोड़ा विदवान जुवान रा मन में टावर राखाल तांई ईसको जाग गियो । बोलियो, 'म्हूं घणां दिनां तांई पाछो घरे नीं आवूंला ।' मृण्मयी ने ई बारे में कांई केवणो ई नीं हो । अपूर्व पाछो बोलियो, 'दो ढाई बरस सूं बत्ता लाग जाय म्हनें वठै ।'

मृण्मयी हुकम दीधो, 'पाछा आवो जदी राखाल सारू तीन फळांवाळो चक्कू लेता आवजो ।'

अपूर्व छोड़ो व्हेयरियो हो, बैठो व्हेन बोलियो, 'तो अठै ई रेवेला ?'

मृणमयी बोली, 'हां, मां कने रेवूंला ।'

अपूर्व धीरेकरो एक लाबी सास ले बोलियो, 'आच्छी बात, वठे ई रैवजे । पण सुण, जठा तांई थारो म्हैन म्हनें आवा ने कागद नीं भेजेला जतरे म्हूं नीं आवूंला । अबे तो राजी व्हेगी के ?'

मृणमयी ईं बात रो जुवाब देवणो फिजूल समझ न सोवा लागी । पण अपूर्व ने नींद नीं आई । तकियो ऊंचो कर वी रे भडो लगायां बैठ्यो रियो ।

सुबै वेगा अपूर्व मृणमयी ने जगाय दीधी । कहियो, 'म्हारे जावा री वगत व्हेयगी । चाल, म्हूं थनें थारी मां रे अठै पूगाय दूं ।'

मृणमयी बिछाणा सूं ऊठ झट देगी री चालवा ने त्यार व्हेगी । अपूर्व वीं रा दोई हाथ पकड़ न बोलियो, 'म्हारी एक बात मानेला । देख, म्हूं थारे कतरी दाण आडो आयो हूं । आज परदेस जावती वेळा थूं म्हनें एक ईनाम देवेला ?'

मृणमयी अचरज सूं पूछियो, 'कांई ?'

'थूं थारा चित मन सूं म्हने एक च्यारियो दे ।'

अपूर्व री ईं अजब अरज ने सुण, वीं रो ठावो मूंडो देख मृणमयी हंसवा लागी । पछे घणी दोरी हंसी रोक न च्यारियो देवा ने आगे पांवडो भरियो । अपूर्व रा मूंडा कने मूंडो लेजावतां लेजावतां वो वीं सूं नीं रैवणी आयो ही ही करन हंसवा लागगी । अपूर्व कांई करतो, धाकलवा रे मिस वीं रा कान री लोळ ने पकड़ न हिलाय दीधी ।

अपूर्व धीरा मन में करड़ी आखड़ी लेय राखी ही के वो लूट न के धाडो पाड़ न कांई नीं लेवेला । खोस न खावा में आपरी हेटी समझतो । वो तो चावतो हो के देवता री नांई भाव भगती सूं भेंट करियोड़ी वसत ने अंगीकारे हाथ उठाय न तो वो लेवणो नीं चावतो ।

मृणमयी पछे नी हंसी । परभात रा पोहर में, अपूर्व सूना गेला सूं वीं ने वीं री मां कने पूगाय आयो । पाछो घरे आय मां ने कहियो, 'मां, म्हैं खूब सोची विचारी जोनणो ने साथे कलकत्ते लेगियां म्हारी पढ़ाई में हरजानो व्हे । दां दोरा कने रासणो चावो नीं जो वी ने वीं री मां कने छोड़ आयो हूं ।

मन में ऐंनार भरिया मा बेटा सूं बिछड़िया ।

[७]

पीयर आयां मृणमयी ने लागवा लागियो के घरे तो वी रो घणो जीव ई नीं लागे । आंणे वो घर ई आखो और व्हेगियो, टैंताशाळो कांई बात ई ज नीं रो । वगत काटियो नीं कटतो । कांई करे, कठे जावे, किणूं काम करे, बैठी

लीवो व्हे।

मर्द सापू वीनणी ने समझगो, वीनणी सापू ने समझगी। गोड रे लारे लारे डाळा पानड़ा जुड़ियोड़ा व्हे ज्यूं सापू वीनणी मिल घर ने एक अखंड बणाय लीधो।

मृणमयी रो सारी देही में, हिवड़ा में, आतमा मे, नस नस मे लुगाईपणो छायगियो। वो नारीपणो अबे वी ने पीड़ा देवा लागो। आसाढ रा काळा अर पांणी सूं भरिया बादळा री नाई हिवड़ो भरियो रे। वीं री केरी री फांक जेड़ी आंखियां में हिवड़ा में छाया बादळां री छाया और ई गेरी गेरी दीखवा लागी। था मनोमन, आपरा मन बसिया ने ओळभा देवती, म्हूं तो नादान ही पण थां तो नादान नीं हा। थां म्हनें म्हारी गलतियां पे दंड क्यूं नी दीधो? थां थारी मरजी पे म्हनें क्यूं नी चलाई? म्हूं पापण थांरे सागे कलकत्ता जावा ने नटगी तो थां मांडाणी क्यूं नी म्हनें साथे ले गिया? थां म्हारी बाता मानीज क्यूं? क्यूं म्हारी जिद्दां पूरी करता गिया?'

पछे वीं ने वो दिन चीता आयो पेलापेल सुनसान गेला मे अपूर्व वी ने पकड़ केर कर राखी पण मूंडा सूं कांई कहियो नी, खाली मूंडो देखतो रियो। वीं ने वीं दिन री तळाव री, गेला री, रूंख रे नीचे छाया री, परभात रा सोनेरी तावड़ा री याद आई। लारे री लारे याद आई अपूर्व कसी निजर सूं वी कानी झांकियो हो, आज अचांणचक रा वीं निजर रो अरथ वा समझगी। पछे रवानगी रे दिन वां रा मूंडा तांई मूंडो ले जायन पाछो मूंडो कर लीधो जो याद आयो अबे वो अधूरो प्यारियो, तिरसाया हिरण री नाई अगतिसणा रे लारे भागवा लागो पण तिरस नीं मिटी। अबे वा याई ज मृता में डूबी रे, वी दगन सूं कर लीधो व्हेतो, यूं जुवाब देय दीधो व्हेतो।

अपूर्व रा मन मे घणो दुख हो के मृणमयी वी ने समझी नीं। आज मृणमयी सोच री ही के वा म्हनें कांई जाणी व्हेला, कांई सोचता व्हेला। वा जाणी व्हेला के उछाछळी, चरपरी, गंवार छोरी है, वा रा पलायल हेत सूं भरिया सरोवर सूं प्रेम प्यास बुझावावाळी लुगाई वा म्हनें नीं समझी। वी ने पछतावो आयग्यो, लाज सूं धरती मे गड़ी जाय री है। अपूर्व लाड करतो वो दिन वीं रा ढोकना रा लाड कर कर न उतरवा लागी। यूं घणा दिन बीत गिया।

अपूर्व जावती वेळा केय गियो हो के, 'जठा तांई आवे व्हे नी जितरा पतरे म्हूं घरे नीं आवूंसा।' मृणमयी वीं बात ने याद कर एक दिन साठ री मांडो पड़ कागद मांडवा लागी। अपूर्व वो ने सुनेरी किनारा रा कागद देय गियो हो, वां ने काढिया। अबे सोचवा लागी कांई लिखूं। घणो घबराई सूं

अपूर्व ने राजी करवाने मनावा ने ।

कलकत्ते जाय अ र्व री मां आपरा जंमाई रे घरे उतरी ।

वीं ज दिन संभया रा मृणमयी रा कागद आवा रो भरोसो छोड़ अपूर्व कागद मांडवा बैठियो । कोई तो लफज वीं ने जच नीं रियो हो । वो एड़ो संबोधन हेर रियो हो के जीं में प्रीत तो भरी व्हे पण लारे अभेमान ई पूरो झलके । एड़ो लफज नीं लाधो तो वीं ने आपरी मातृभासा पे रीस आई । अतराक में तो बैनोईजी रो रुक्को आयो के 'थांरी मां आया, झट आय न मिलजो । सांझ रा अठे ई ज जीमजो ।' समीचार भलां व्हेतां ई वीं रा मन में खोटा वेम उठिया, झट देणी रो बैनोईजी रे घरे चालियो ।

मिलतां ई माने पूछियो, 'मां, घरे सब राजी खुसी है ?'

'हां, बेटा, सब राजी खुसी है । छुट्टिया में यूं घरे नीं आयो जो म्हारो मन मानियो नीं । थनें लेवाने आई हूं ।'

'थे फिजूल क्यूं फोड़ा देखिया । म्हनें कानून रो इमतिहान देवणो हो·····।' असी घणी वातां कैय दीधी ।

जीमती वेळा बैन पूछियो, 'दादा, थां आया जदी भाभी ने साथे क्यूं नीं लाया ? वठे ई ज क्यूं छोड़ आया ?'

भाई बड़ा ठिमरास सूं बोलियो, 'कानून री पढ़ाई हो··· ····' वगैरा वगैरा ।

बैनोई हंस न बोलियो, 'ये सैंग वातां झूठी । असल में म्हारा सूं डरपता थां ने नीं लाया ।'

बैन बोली, 'होई ज अस्या के डरपणो आवे । छोटा मोटा टाबर देख ले तो डरप न ताव चढ जावे ।'

यूं रोळ मसखरी करवा लागा । अपूर्व उदास ई बैठियो रियो । कोई वात वीं ने सुंवाय नीं री ही । वो सोच रियो हो के मां अठे आई तो मृणमयी ने लारे ले आवती तो कांई व्हे जातो । कदाच वी कहियो ई व्हेला सारे आवा ने सो मा बावळी छोरी नटगी व्हेला । कांण मुलाहिजा सूं मां ने पूछणी नीं आयो । संसार री अर मिनख री रचना वीं ने फिजूल लागवा लागी ।

बैन बोली, 'दादा अठे ई सोय जावो ।'

'नीं म्हारे काम है, म्हनें जावा दे ।'

बैनोई बोलिया, 'रात ने एड़ो कांई काम है थांरे । एक रात रेय जावो तो व्हे कांई ? थां ने अबार जाय न कठे ई हाजरी थोड़ी भरावणी है ।'

घणो कहियो कांइयो तो बन नीं व्हेतां ई अपूर्व बठे सोवा ने ठरो

व्हे गियो। बैन बोली, 'दादा, थां थाकिया थाकिया लागो, जावो सोय जावो।'

अपूर्व या ई ज चावतो के अंधारा में अकेलो जाय पड़ रेवे। वीं बोलणो ई नी सुवाय रियो हो।

सोवा ने जीं कमरा में गियो वीं में अंधारो व्हेय रियो हो। बैन बोल 'दीवो वायरा सूं बुझ गियो दीसे, दूजो लेय आवूं।'

अपूर्व नट गियो, 'रेवादे, दीवो बळतो राख न म्हारी सोवा री वा कोयनीं।' बैन परी गी। अपूर्व ढोलिया माथे पग दीधा। ढोलिया पे बैठ्या था ई ज हो के चूड़ियां बाजी, सागे ई कंवळी कंवळी बांहियां वों ने बाथ में सीधो। फूलां जेड़ा नाजक होठ वी रे मूंडा रे आय लागिया। अपूर्व एकर धमकियो पछे समझियो के घणां दिनां पैलां जो काम हुस देवा सूं अधू रेगियो वो आज संपूरण व्हेय रियो है।

●